

श्री महानिश्चित श्रुतस्कंध सूत्र

॥ श्री आगम-गुण-मञ्जूषा ॥

॥ श्री आगम-गुण-मंजूषा ॥

॥ Sri Agama Guna Manjusa ॥

(संक्षिप्त)

प्रेरक-संपादक

अचलगच्छाधिपति प.पू.आ.भ.स्व. श्री गुणसागर सूरीश्वरजी म.सा.

४५ आगमो का संक्षिप्त परिचय

११ अंगसूत्र

- १) **श्री आचारांग सूत्र :-** इस सूत्र में साधु और श्रावक के उत्तम आचारों का सुंदर वर्णन है। इनके दो श्रुतस्कंध और कुल २५ अध्ययन हैं। द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, धर्मकथानुयोग और चरणकरणानुयोगों में से मुख्य चौथा अनुयोग है। उपलब्ध श्लोको की संख्या २५०० एवं दो चुलिका विद्यमान हैं।
- २) **श्री सूत्रकृतांग सूत्र :-** श्री सुयगडांग नाम से भी प्रसिद्ध इस सूत्र में दो श्रुतस्कंध और २३ अध्ययन के साथ कुलमिला के २००० श्लोक वर्तमान में विद्यमान हैं। १८० क्रियावादी, ८४ अक्रियावादी, ६७ अज्ञानवादी अपरंच द्रव्यानुयोग इस आगम का मुख्य विषय रहा है।
- ३) **श्री स्थानांग सूत्र :-** इस सूत्र ने मुख्य गणितानुयोग से लेकर चारों अनुयोगों की बाते आती हैं। एक अंक से लेकर दस अंकों तक में कितनी वस्तुओं है इनका रोचक वर्णन है, ऐसे देखा जाय तो यह आगम की शैली विशिष्ट है और लगभग ७६०० श्लोक हैं।
- ४) **श्री समवायांग सूत्र :-** यह सूत्र भी ठाणांगसूत्र की भांति कराता है। यह भी संग्रहग्रंथ है। एक से सो तक कौन कौन सी चीजे हैं उनका उल्लेख है। सो के बाद देढसो, दोसो, तीसो, चारसो, पांचसो और दोहजार से लेकर कोटाकोटी तक कौनसे कौनसे पदार्थ हैं उनका वर्णन है। यह आगमग्रंथ लगभग १६०० श्लोक प्रमाण में उपलब्ध है।
- ५) **श्री व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र (भगवती सूत्र) :-** यह सबसे बड़ा सूत्र है, इसमें ४२ शतक है, इनमें भी उपविभाग है, १९२५ उद्देश है। इस आगमग्रंथ में प्रभु महावीर के प्रथम शिष्य श्री गौतमस्वामी गणधरादि ने पुछे हुए प्रश्नों का प्रभु वीर ने समाधान किया है। प्रश्नोत्तर संकलन से इस ग्रंथ की रचना हुई है। चारों अनुयोगों की बाते अलग अलग शतकों में वर्णित हैं। अगर संक्षेप में कहना हो तो श्री भगवतीसूत्र रत्नो का खजाना है। यह आगम १५००० से भी अधिक संकलित श्लोकों में उपलब्ध है।
- ६) **ज्ञातार्थधर्मकथांग सूत्र :-** यह सूत्र धर्मकथानुयोग से है। पहले इसमें साडेतीन करोड़ कथाएं थी अब ६००० श्लोकों में उन्नीस कथाओं उपलब्ध हैं।
- ७) **श्री उपासकदशांग सूत्र :-** इसमें बाराह व्रतों का वर्णन आता है और १० महाश्रावकों

के जीवन चरित्र हैं, धर्मकथानुयोग के साथ चरणकरणानुयोग भी इस सूत्र में सामील है। इसमें ८०० से ज्यादा श्लोक हैं।

- ८) **श्री अन्तकृद्दशांग सूत्र :-** यह मुख्यतः धर्मकथानुयोग में रचित है। इस सूत्र में श्री शत्रुंजयतीर्थ के उपर अनशन की आराधना करके मोक्ष में जानेवाले उत्तम जीवों के छोटे छोटे चरित्र दिए हुए हैं। फिलाल ८०० श्लोकों में ही ग्रंथ की समाप्ति हो जाती है।
- ९) **श्री अनुत्तरोपपातिक दशांग सूत्र :-** अंत समय में चारित्र की आराधना करके अनुत्तर विमानवासी देव बनकर दूसरे भव में फीर से चारित्र लेकर मुक्तिपद को प्राप्त करने वाले महान् श्रावकों के जीवनचरित्र हैं इसलिये मुख्यतया धर्मकथानुयोगवाला यह ग्रंथ २०० श्लोक प्रमाणका है।
- १०) **श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र :-** इस सूत्र में मुख्यविषय चरणकरणानुयोग है। इस आगम में देव-विद्याधर-साधु-साध्वी श्रावकादि ने पुछे हुए प्रश्नों का उत्तर प्रभु ने कैसे दिया इसका वर्णन है। जो नंदिसूत्र में आश्रव-संवरद्वार है ठीक उसी तरह का वर्णन इस सूत्र में भी है। कुलमिला के इसके २०० श्लोक हैं।
- ११) **श्री विपाक सूत्र :-** इस अंग में २ श्रुतस्कंध हैं पहला दुःखविपाक और दूसरा सुखविपाक, पहले में १० पापीओं के और दूसरे में १० धर्मीओं के द्रष्टांत हैं मुख्यतया धर्मकथानुयोग रहा है। १२०० श्लोक प्रमाण का यह अंगसूत्र है।

१२ उपांग सूत्र

- १) **श्री औपपातिक सूत्र :-** यह आगम आचारांग सूत्र का उपांग है। इस में चंपानगरी का वर्णन १२ प्रकार के तपों का विस्तार कोणिक का जुलुस अम्बडपरिव्राजक के ७०० शिष्यों की बाते हैं। १५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।
- २) **श्री राजप्रश्रीय सूत्र :-** यह आगम सुयगडांगसूत्र का उपांग है। इसमें प्रदेशीराजा का अधिकार सूर्याभदेव के जरीए जिनप्रतिमाओं की पूजा का वर्णन है। २००० श्लोकों से भी अधिक प्रमाण का ग्रंथ है।

दश प्रकीर्णक सूत्र

- ३) श्री जीवाजीवाभिगम सूत्र :- यह ठाणांगसूत्र का उपांग है। जीव और अजीव के बारे में अच्छा विश्लेषण किया है। इसके अलावा जम्बुद्वीप की जगती एवं विजयदेव ने कि हुइ पूजा की विधि सविस्तर बताई है। फिलाल जिज्ञासु ४ प्रकरण, क्षेत्रसमासादि जो पढ़ते हैं वह सभी ग्रंथे जीवाभिगम अपरग्व पत्रवणासूत्र के ही पदार्थ हैं। यह आगम सूत्र ४७०० श्लोक प्रमाण का है।
- ४) श्री प्रज्ञापना सूत्र- यह आगम समवायांग सूत्र का उपांग है। इसमें ३६ पदों का वर्णन है। प्रायः ८००० श्लोक प्रमाण का यह सूत्र है।
- ५) श्री सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र :-
- ६) श्री चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र :- इस दो आगमों में गणितानुयोग मुख्य विषय रहा है। सूर्य, चन्द्र, ग्रहादि की गति, दिनमान ऋतु अयनादि का वर्णन है, दोनों आगमों में २२००, २२०० श्लोक हैं।
- ७) श्री जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र :- यह आगम भी अगले दो आगमों की तरह गणितानुयोग में है। यह ग्रंथ नाम के मुताबित जम्बूद्वीप का सविस्तर वर्णन है। ६ ओरों के स्वरूप बताया है। ४५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।
- ८) श्री निरयावली सूत्र :- इन आगम ग्रंथों में हाथी और हारादि के कारण नानाजी का दोहित्र के साथ जो भयंकर युद्ध हुआ उस में श्रेणिक राजा के १० पुत्र मरकर नरक में गये उसका वर्णन है।
- ९) श्री कल्पावतंसक सूत्र :- इसमें पद्मकुमार और श्रेणिकपुत्र कालकुमार इत्यादि १० भाइयों के १० पुत्रों का जीवन चरित्र है।
- १०) श्री पुष्पिका उपांग सूत्र :- इसमें १० अध्ययन हैं। चन्द्र, सूर्य, शुक्र, बहुपुत्रिका देवी, पूर्णभद्र, माणिभद्र, दत्त, शील, जल, अणाढ्य श्रावक के अधिकार हैं।
- ११) श्री पुष्पचुलीका सूत्र :- इसमें श्रीदेवी आदि १० देवीओं का पूर्वभव का वर्णन है।
- १२) श्री वृष्णिदशा सूत्र :- यादववंश के राजा अंधकवृष्णि के समुद्रादि १० पुत्र, १० में पुत्र वासुदेव के पुत्र बलभद्रजी, निषधकुमार इत्यादि १२ कथाएं हैं। अंतके पांचों उपांगों को निरयावली पञ्चक भी कहते हैं।

- १) श्री चतुशरण प्रकीर्णक सूत्र :- इस पयत्रे में अरिहन्त, सिद्ध, साधु और गच्छधर्म के आचार के स्वरूप का वर्णन एवं चारों शरण की स्वीकृति है।
- २) श्री आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :- इस आगम का विषय है अंतिम आराधना और मृत्युसुधार
- ३) श्री भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक सूत्र :- इस पयत्रे में पंडित मृत्यु के तीन प्रकार (१) भक्त परिज्ञा मरण (२) इंगिनी मरण (३) पादोपगमन मरण इत्यादि का वर्णन है।
- ६) श्री संस्तारक प्रकीर्णक सूत्र :- नामानुसार इस पयत्रे में संधारा की महिमा का वर्णन है। इन चारों पयत्रे पठन के अधिकारी श्रावक भी हैं।
- ७) श्री तंदुल वैचारिक प्रकीर्णक सूत्र :- इस पयत्रे को पूर्वाचार्यगण वैराग्य रस के समुद्र के नाम से चीन्हित करते हैं। १०० वर्षों में जीवात्मा कितना खानपान करे इसकी विस्तृत जानकारी दी गई है। धर्म की आराधना ही मानव मन की सफलता है। ऐसी बातों से गुंफित यह वैराग्यमय कृति है।
- ८) श्री चन्दाविजय प्रकीर्णक सूत्र :- मृत्यु सुधार हेतु कैसी आराधना हो इसे इस पयत्रे में समजाया गया है।
- ९) श्री देवेन्द्र-स्तव प्रकीर्णक सूत्र :- इन्द्र द्वारा परमात्मा की स्तुति एवं इन्द्र संबंधित अन्य बातों का वर्णन है।
- १०A) श्री मरणसमाधि प्रकीर्णक सूत्र :- मृत्यु संबंधित आठ प्रकरणों के सार एवं अंतिम आराधना का विस्तृत वर्णन इस पयत्रे में है।
- १०B) श्री महाप्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :- इस पयत्रे में साधु के अंतिम समय में किए जाने योग्य पयन्ना एवं विविध आत्महितकारी उपयोगी बातों का विस्तृत वर्णन है।

१०C) श्री गणिविद्या प्रकीर्णक सूत्र :- इस पयत्रे में ज्योतिष संबधित बड़े ग्रंथों का सार है।

उपरोक्त दसों पयन्नों का परिमाण लगभग २५०० श्लोकों में बध्य है। इसके अलावा २२ अन्य पयन्ना भी उपलब्ध हैं। और दस पयन्नों में चंदाविजय पयन्नो के स्थान पर गच्छाचार पयन्ना को गिनते हैं।

छह छेद सूत्र

(१) निशिथ सूत्र (२) महानिशिथ सूत्र (३) व्यवहार सूत्र (४) जीतकल्प सूत्र
(५) पंचकल्प सूत्र (६) दशा श्रुतस्कंध सूत्र

इन छेद सूत्र ग्रन्थों में उत्सर्ग, अपवाद और आलोचना की गंभीर चर्चा है। अति गंभीर केवल आत्मार्थ, भवभीरू, संयम में परिणत, जयणावंत, सूक्ष्म दष्टि से द्रव्यक्षेत्रादिक विचार धर्मदष्टि से करने वाले, प्रतिपल छहकाया के जीवों की रक्षा हेतु चिंतन करने वाले, गीतार्थ, परंपरागत उत्तम साधु, समाचारी पालक, सर्वजीवो के सच्चे हित की चिंता करने वाले ऐसे उत्तम मुनिवर जिन्होंने गुरु महाराज की निश्रा में योगद्वहन इत्यादि करके विशेष योग्यता अर्जित की हो ऐसे मुनिवरों को ही इन ग्रन्थों के अध्ययन पठन का अधिकार है।

चार मूल सूत्र

१) श्री दशवैकालिक सूत्र :- पंचम काल के साधु साध्वीओं के लिए यह आगमग्रन्थ अमृत सरोवर सरीखा है। इसमें दश अध्ययन हैं तथा अन्त में दो चूलिकाए रतिवाक्या व, विवित्त चरिया नाम से दी हैं। इन चूलिकाओं के बारे में कहा जाता है कि श्री स्थूलभद्रस्वामी की बहन यक्षासाध्वीजी महाविदेहक्षेत्र में से श्री सीमंधर स्वामी से चार चूलिकाए लाइ थी। उनमें से दो चूलिकाएं इस ग्रंथ में दी हैं। यह आगम ७०० श्लोक प्रमाण का है।

२) श्री उत्तराध्ययन सूत्र :- परम कृपालु श्री महावीरभगवान के अंतिम समय के उपदेश इस सूत्र में हैं। वैराग्य की बातें और मुनिवरों के उच्च आचारों का वर्णन इस आगम ग्रंथ में ३६ अध्ययनों में लगभग २००० श्लोकों द्वारा प्रस्तुत हैं।

३) श्री निर्युक्ति सूत्र :- चरण सत्तरी-करण सत्तरी इत्यादि का वर्णन इस आगम ग्रन्थ में है। पिंडनिर्युक्ति भी कई लोग ओध निर्युक्ति के साथ मानते हैं अन्य कई लोग इसे अलग आगम की मान्यता देते हैं। पिंडनिर्युक्ति में आहार प्राप्ति की रीत बताई हैं। ४२ दोष कैसे दूर हों और आहार करने के छह कारण और आहार न करने के छह कारण इत्यादि बातें हैं।

४) श्री आवश्यक सूत्र :- छह अध्ययन के इस सूत्र का उपयोग चतुर्विध संघ में छोट बड़े सभी को है। प्रत्येक साधु साध्वी, श्रावक-श्राविका के द्वारा अवश्य प्रतिदिन प्रातः एवं सायं करने योग्य क्रिया (प्रतिक्रमण आवश्यक) इस प्रकार हैं :-

(१) सामायिक (२) चतुर्विंशति (३) वंदन (४) प्रतिक्रमण
(५) कार्योत्सर्ग (६) पच्चक्खाण

दो चूलिकाए

१) श्री नंदी सूत्र :- ७०० श्लोक के इस आगम ग्रन्थ में परमात्मा महावीर की स्तुति, संघ की अनेक उपमाए, २४ तीर्थकरों के नाम ग्यारह गणधरों के नाम, स्थविरावली और पांच ज्ञान का विस्तृत वर्णन है।

२) श्री अनुयोगद्वार सूत्र :- २००० श्लोकों के इस ग्रन्थ में निश्चय एवं व्यवहार के आलंबन द्वारा आराधना के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी गई है। अनुयोग-याने शास्त्र की व्याख्या जिसके चार द्वार हैं (१) उत्क्रम (२) निक्षेप (३) अनुगम (४) नय

यह आगम सब आगमों की चावी है। आगम पढ़ने वाले को प्रथम इस आगम से शुरुआत करनी पडती है। यह आगम मुखपाठ करने जैसा है।

॥ इति शम् ॥

Introduction

45 Āgamas, a short sketch

I Eleven Āngas :

- (1) **Ācārāṅga-sūtra** : It deals with the religious conduct of the monks and the Jain householders. It consists of 02 Parts of learning, 25 lessons and among the four teachings on entity, calculation, religious discourse and the ways of conduct, the teaching of the ways of conduct is the main topic here. The Āgama is of the size of 2500 *Ślokas*.
- (2) **Sūyagaḍāṅga-sūtra** : It is also known as Sūtra-Kṛtāṅga. It's two parts of learning consist of 23 lessons. It discusses at length views of 363 doctrine-holders. Among them are 180 ritualists, 84 non-ritualists, 67 agnostics and 32 restraint-propounders, though it's main area of discussion is the teaching of entity. It is available in the size of 2000 *Ślokas*.
- (3) **Thāpāṅga-sūtra** : It begins with the teaching of calculation mainly and discusses other three teachings subordinately. It introduces the topic of one dealing with the single objects and ends with the topic of eight objects. It is of the size of 7600 *Ślokas*.
- (4) **Samavāyāṅga-sūtra** : This is an encompendium, introducing 01 to 100 objects, then 150, 200 to 500 and 2000 to crores and crores of objects. It contains the text of size of 1600 *Ślokas*.
- (5) **Vyākhyā-prajñapti-sūtra** : It is also known as Bhagavati-sūtra. It is the largest of all the Āngas. It contains 41 centuries with subsections. It consists of 1925 topics. It depicts the questions of Gautama Gaṇadhara and answers of Lord Mahāvira. It discusses the four teachings in the centuries. This Āgama is really a treasure of gems. It is of the size of more than 15000 *Ślokas*.
- (6) **Jñātādharmā-Kathāṅga-sūtra** : It is of the form of the teaching of the religious discourses. Previously it contained three and a half crores of discourses, but at present there are 19 religious discourses. It is of the size of 6000 *Ślokas*.
- (7) **Upāsaka-daśāṅga-sūtra** : It deals with 12 vows, life-sketches of 10 great Jain householders and of Lord Mahāvira, too. This deals with the teaching of the religious discourses and the ways of conduct.

It is of the size of around 800 *Ślokas*.

- (8) **Antagaḍa-daśāṅga-sūtra** : It deals mainly with the teaching of the religious discourses. It contains brief life-sketches of the highly spiritual souls who are born to liberate and those who are liberating ones : they are Andhaka Vṛṣṇi, Gautama and other 9 sons of queen Dhārīnī, 8 princes like Akṣobhakumāra, 6 sons of Devaki, Gajasukumāra, Yādava princes like Jāli, Mayālī, Vasudeva Kṛṣṇa, 8 queens like Rukmiṇī. It is available of the size of 800 *Ślokas*.
- (9) **Anuttarovavāyi-daśāṅga-sūtra** : It deals with the teaching of the religious discourses. It contains the life-sketches of those who practise the path of religious conduct, reach the *Anuttara Vimāna*, from there they drop in this world and attain Liberation in the next birth. Such souls are Abhayakumāra and other 9 princes of king Śrenika, Dīrghasena and other 11 sons, Dhannā *Aṇagāra*, etc. It is of the size of 200 *Ślokas*.
- (10) **Praśna-vyākaraṇa-sūtra** : It deals mainly with the teaching of the ways of conduct. As per the remark of the Nandī-sūtra, it contained previously Lord Mahāvira's answers to the questions put by gods, Vidyādhara, monks, nuns and the Jain householders. At present it contains the description of the ways leading to transgression and the self-control. It is of the size of 200 *Ślokas*.
- (11) **Vipāka-sūtrāṅga-sūtra** : It consists of 2 parts of learning. The first part is called the Fruition of miseries and depicts the life of 10 sinful souls, while the second part called the Fruition of happiness narrates illustrations of 10 meritorious souls. It is available of the size of 1200 *Ślokas*.

II Twelve Upāṅgas

- (1) **Uvavāyi-sūtra** : It is a subservient text to the *Ācārāṅga-sūtra*. It deals with the description of Campā city, 12 types of austerity, procession-arrival of Koṛīka's marriage, 700 disciples of the monk Ambaḍa. It is of the size of 1000 *Ślokas*.
- (2) **Rayapasenī-sūtra** : It is a subservient text to *Sūyagaḍāṅga-sūtra*. It depicts king Pradesī's jurisdiction, god Sūryabha worshipping the Jina idols, etc. It is of the size of 2000 *Ślokas*.

- (3) **Jivābhigama-sūtra** : It is a subservient text to Tānāṅga-sūtra. It deals with the wisdom regarding the self and the non-self, the Jambū continent and its areas, etc. and the detailed description of the veneration offered by god Vijaya. The four chapters on areas, society, etc. published recently are composed on the line of the topics of this Sūtra and of the Pannāvaṇa-sūtra. It is of the size of 4700 Ślokas.
- (4) **Pannāvaṇa-sūtra** : It is a subservient text to the Samavāyaṅga-sūtra. It describes 36 steps or topics and it is of the size of 8000 Ślokas.
- (5) **Sūrya-prajñapti-sūtra** and
- (6) **Candra-prajñapti-sūtra** : These two falls under the teaching of the calculation. They depict the solar and the lunar transit, the movement of planets, the variations in the length of a day, seasons, northward and the southward solstices, etc. Each one of these Āgamas are of the size of 2200 Ślokas.
- (7) **Jambūdīpa-prajñapti-sūtra** : It mainly deals with the teaching of the calculations. As it's name indicates, it describes at length the objects of the Jambū continent, the form and nature of 06 corners (āra). It is available in the size of 4500 Ślokas.
- Nirayāvali-pañcaka** :
- (8) **Nirayāvali-sūtra** : It depicts the war between the grandfather and the daughter's son, caused of a necklace and the elephant, the death of king Śreṇika's 10 sons who attained hell after death. This war is designated as the most dreadful war of the Downward (avasarpinī) age.
- (9) **Kalpāvatamsaka-sūtra** : It deals with the life-sketches of Kālakumara and other 09 princes of king Śreṇika, the life-sketch of Padamakumra and others.
- (10) **Pupphiyā-upāṅga-sūtra** : It consists of 10 lessons that covers the topics of the Moon-god, Sun-god, Venus, queen Bahuputrīkā, Pūrṇabhadra, Maṇibhadra, Datta, Śīla, Bala and Anāḍḍhiya.
- (11) **Pupphaculiya-upāṅga-sūtra** : It depicts previous births of the 10 queens like Śrīdevī and others.
- (12) **Vahnidaśa-upāṅga sūtra** : It contains 10 stories of Yadu king Andhakavṛṣṇi, his 10 princes named Samudra and others, the tenth

one Vāsudeva, his son Balabhadra and his son Niṣadha.

III Ten Payannā-sūtras :

- (1) **Aurapaccakhāṇa-sūtra** : It deals with the final religious practice and the way of improving (the life so that the) death (may be improved).
- (2) **Bhattacharinnā-sūtra** : It describes (1) three types of Paṇḍita death, (2) knowledge, (3) Inḡini devotee (4) Pādapopagamāna, etc.
- (4) **Santhāraga-payannā-sūtra** : It extols the Samstāraka.

**** These four payannās can also be learnt and recited by the Jain householders. ****

- (5) **Tandula-viyāliya-payannā-sūtra** : The ancient preceptors call this Payannā-sūtra as an ocean of the sentiment of detachment. It describes what amount of food an individual soul will eat in his life of 100 years, the human life can be justified by way of practising a religious life.
- (6) **Candāvijaya-payannā-sūtra** : It mainly deals with the religious practice that improves one's death.
- (7) **Devendrathui-payannā-sūtra** : It presents the hymns to the Lord sung by Indras and also furnishes important details on those Indras.
- (8) **Maraṇasamādhī-payannā-sūtra** : It describes at length the final religious practice and gives the summary of the 08 chapters dealing with death.
- (9) **Mahāpaccakhāṇa-payannā-sūtra** : It deals specially with what a monk should practise at the time of death and gives various beneficial informations.
- (10) **Gaṇivijaya-payannā-sūtra** : It gives the summary of some treatise on astrology.

These 10 Payannās are of the size of 2500 Ślokas.

Besides about 22 Payannās are known and even for these above 10 also there is a difference of opinion about their names. The Gacchācāra is taken, by some, in place of the Candāvijaya of the 10 Payannās.

IV Six Cheda-sūtras

- (1) Vyavahāra-sūtra, (2) Nisītha-sūtra,
- (3) Mahānisītha-sūtra, (4) Pancakalpa-sūtra,
- (5) Daśāsruta-skandha-sūtra and (6) Brhatkalpa-sūtra.

These Chedasūtras deal with the rules, exceptions and vows.

The study of these is restricted only to those best monks who are

- (1) serene, (2) introvert, (3) fearing from the worldly existence, (4) exalted in restraint, (5) self-controlled, (6) rightfully discerning the subtlety of entity, territories, etc. (7) pondering over continuously the protection of the six-limbed souls, (8) praiseworthy, (9) exalted in keeping the tradition, (10) observing good religious conduct, (11) beneficial to all the beings and (12) Who have paved the path of Yoga under the guidance of their master.

V Four Mūlasūtras

- (1) **Daśavaikalika-sūtra** : It is compared with a lake of nectar for the monks and nuns established in the fifth stage. It consists of 10 lessons and ends with 02 Cūlikās called Rativākya and Vivittacariya. It is said that monk Sthūlabhadra's sister nun Yakṣā approached Simandhara Svāmī in the Mahāvīdeha region and received four Cūlikās. Here are incorporated two of them.
- (2) **Uttarādhyayana-sūtra** : It incorporates the last sermons of Lord Mahāvira. In 36 lessons it describes detachment, the conduct of monks and so on. It is available in the size of 2000 Ślokas.
- (3) **Anuyogadvāra-sūtra** : It discusses 17 topics on conduct, behaviour, etc. Some combine Piṇḍaniryukti with it, while others take it as a separate Āgama. Piṇḍaniryukti deals with the method of receiving food (*bhikṣā* or *gocari*), avoidance of 42 faults and to receive food, 06 reasons of taking food, 06 reasons for avoiding food, etc.
- (4) **Āvaśyaka-sūtra** : It is the most useful Āgama for all the four groups of the Jain religious constituency. It consists of 06 lessons. It describes 06 obligatory duties of monks, nuns, house-holders and housewives. They are : (1) *Sāmāyika*, (2) *Caturvimsatistava*, (3) *Vandanā*, (4) *Pratikramaṇa*, (5) *Kāyotsarga* and (6) *Paccakhāṇa*.

VI Two Cūlikās

- (1) **Nandi-sūtra** : It contains hymn to Lord Mahāvira, numerous similes for the religious constituency, name-list of 24 *Tirthaṅkaras* and 11 *Gaṇadharas*, list of *Sthaviras* and the fivefold knowledge. It is available in the size of around 700 Ślokas.
- (2) **Anuyogadvāra-sūtra** : Though it comes last in the serial order of the 45 Āgamas, the learner needs it first. It is designated as the key to all the Āgamas. The term *Anuyoga* means explanatory device which is of four types : (1) Statement of proposition to be proved, (2) logical argument, (3) statement of accordance and (4) conclusion.

It teaches to pave the righteous path with the support of firm resolve and wordly involvements.

It is of the size of 2000 Ślokas.

આગમ ૩૫

મહાનિશીય શ્રુતસ્કંધ સૂત્ર

અધ્યયન - - - - -	૬
ઉદ્દેશક - - - - -	૧૬ (?)
ઉપલબ્ધ મૂલપાઠ - - - - -	૪૫૦૪ શ્લોક પ્રમાણ

(૧) અધ્યયન: શાસ્ત્રોદ્ધરણ

આમાં અરિહંતોને નમસ્કાર કરીને શાસ્ત્રોનું પ્રયોજન બતાવીને આવશ્યક નિર્યુક્તિની ઉદ્ધૃત ગાથાઓ અને દશ વૈકાલિકની ઉદ્ધૃત ગાથાઓનું વિવરણ કરીને અંતે પોતાનો અપરાધ છુપાવનાર દુર્ગતિ પામે છે એમ જણાવ્યું છે.

(૨) અધ્યયન : કર્મવિપાકવિવરણ

આના પ્રથમ ઉદ્દેશકમાં જીવોનાં દુઃખોનું વર્ણન છે.

(ઉદ્દેશકો ૨-૫ લુપ્ત લાગે છે.)

છઠા ઉદ્દેશકમાં શારીરિક તથા અન્ય દુઃખોનું વર્ણન કરીને આશ્રવદ્રાઢારના નિરોધથી જ દુઃખોનો અંત થાય છે એમ જણાવ્યું છે.

સાતમાં ઉદ્દેશકમાં સ્ત્રી-વર્ણન સંબંધી ગૌતમ સ્વામી અને ભગવાન મહાવીરનો સંવાદ, પરિગ્રહના દોષ, શ્રમણધર્મ, શ્રાવકધર્મ વગેરે વર્ણન છે.

(૩) અધ્યયન :

આ અધ્યયનના ઉદ્દેશક ૧ અને ૨ આપવામાં આવ્યા નથી. પણ લખ્યું છે કે “તે બે નો સમાવેશ સામાન્ય વાચનમાં છે. એ બધું યોગ્ય વ્યક્તિ માટે છે, અયોગ્ય માટે નહિ.” વળી આગળ જણાવ્યું છે કે “આ બધું વિચ્છેદ પામ્યું હતું. વજ્રસ્વામીએ ઉદ્ધાર કરીને મૂળ સૂત્રોમાં લખ્યું. આચાર્ય હરિભદ્રે ખંડિત હસ્તપ્રતના આધારે ઉદ્ધાર કર્યો છે. ત્રુટિ જણાય તો દોષ આપતા નહિ.” વગેરે વગેરે.

(૪) અધ્યયન :

આમાં કુસંગના દષ્ટાંત રૂપે સુમતિની કથા આપીને સારરૂપે જણાવ્યું છે કે કુશીલ સંસર્ગથી અનંત સંસારભ્રમણ અને કુશીલ સંસર્ગ ત્યાગવાથી સિદ્ધિ મળે છે.

અંતે પૂજ્ય આચાર્ય હરિભદ્રસૂરિજીનો મત છે કે ચોથા અધ્યયનના કેટલાક

આલાપકો શ્રદ્ધેય નથી, છતાં ય વૃદ્ધવાદના અનુસાર એમાં શંકા કરવી નહિ. વળી આ અધ્યયનની મૂળવાતનું સમર્થન સ્થાનાંગસૂત્ર વગેરેમાં મળતું નથી.

(૫) અધ્યયન : નવનીતસાર

આ અધ્યયનમાં ગચ્છમાં કેવી રીતે રહેવું એની ચર્ચા કરી તીર્થયાત્રાથી સાધુઓનો અસંયમ, ૧૦ આશ્ચર્યો વગેરેનું વર્ણન છે.

(૬) અધ્યયન : ગીતાર્થવિહાર

આ અધ્યયનમાં દસ પૂર્વી નંદિષેણનું વેશ્યાગૃહમાં જવું, પ્રાયશ્ચિત્ત વિધિ, મેઘમાલાનું દષ્ટાંત, રજ્જ આર્યકાનું દષ્ટાંત, અ-ગીતાર્થ વિષયમાં લક્ષણાર્થનું દષ્ટાંત વગેરે વર્ણન છે.

દ્વિતીય ચૂલિકા :

આમાં વિધિપૂર્વક ધર્માચરણની પ્રશંસા અને ચૈત્યવંદન સંબંધી પ્રાયશ્ચિત્ત, સ્વાધ્યાયમાં બાધા ઉપજાવવા માટેનું પ્રાયશ્ચિત્ત, પ્રાયશ્ચિત્તના સૂત્રોના વિચ્છેદની ચર્ચા, જલ વગેરેમાં રક્ષા કરનારા વિદ્યામંત્રોની ચર્ચા, સુષ્ઠની કથા અને રાજકુળની બાલિકાની કથા પણ તિબેમિ પદ્યથી આ આગમની સમાપ્તિ કરી છે.

સિરિ ઉસહદેવ સામિસ્સ ણમો । સિરિ ગોડી - જિરાઉલા - સવ્વોદયપાસણાહાણં ણમો । નમોડત્થુણં સમણસ્સ ભગવઓ મહઙ્ગ મહાવીર વદ્ધમાણ સામિસ્સ । સિરિ ગોયમ - સોહમ્માઇ સવ્વ ગણહરાણં ણમો । સિરિ સુગુરુ - દેવાણં ણમો । **શ્રીમહાનિશીથસૂત્રમ્** ॐ નમો તિત્થસ્સ, ॐ નમો અરહંતાણં । સુયં મે આઉસંતેણં ભગવયા એવમક્ર્વાયં - ઇહ ચ્ચલુ છઉમત્થસંજમકિરિયાએ વદ્ધમાણે જે ણં કેઈ સાહૂ વા સાહુણી વા સે ણં ઇમેણં પરમતત્તસારસમ્બુલયત્થપસાહગસુમહત્થાતિસયપવરવરમહાનિસીહસુયચ્ચંધસુયાણુસારેણં તિવિહંતિવિહેણં સવ્વભાવંતરંતરેહિં ણં ણીસલ્લે ભવિત્તાણં આયહિયદ્વાએ અચ્ચંતઘોરવીરુગ્ગકટ્ટવસંજમાણુદ્વાણેસુ સવ્વપમાયાલંબણવિપ્પમુક્કે અણુસમયમહણિસમણાલસત્તાએ સયયં અણિવ્વિણ્ણે અણૂણ(ણણ)પરમસદ્ધાસંવેગવેરગ્ગમગ્ગાએ ણિણિયાણે અણિગૂહિયબલવિરિયપુરિસકારપરક્કામે અગિલાણીએ વોસદ્ધચ્ચત્તદેહે સુણિચ્છિએ એગ્ગચિત્તે અભિક્કરં અભિરમિજ્ઞા ॥૧॥ ણો ણં રાગદોસમોહવિસય કસાયનાણાલંબણાણેગપ્પ - માયઇદ્ધિરસસાયાગાર - વરોદ્ધડ્ડજ્ઞાણવિગહા - મિચ્છત્તાવિર - ઇદુદ્ધજોગ અણાયયણસેવણા કુસીલાદિસં સગ્ગીપેસુણ્ણડબ્બક્ર્વાણ - કલહજાત્તાદિમયમચ્છ - રામરિસમમીકાર - અહંકારાદિઅણેગભેયભિણ્ણતામસભાવકલુસિએણં હિયએણં હિંસાલિયચોરિક્રમેહુણપરિગ્ગહારંભસંકપ્પાદિગોયરઅજ્ઞવસિએ ઘોરપયંડમહારોદ્ધઘણચિક્કણપાવકમ્મમલલેવચ્ચલિએ અસંવુડાસવદારે ॥૨॥ એકચ્ચલવમુહુત્તણિમિસણિમિસદ્ધબ્બંહતરતરમવિ સસલ્લે વિરત્તેજ્ઞા તંજહા - ॥૩॥ ‘ઉવસંતે સવ્વભાવેણં, વિરત્તે ય જયા ભવે । સવ્વત્થ વિસએ આયા. રોગતરંમોહવજ્જિરે ॥૧॥ તયા સંવેગમાવણે પારલોઝયવત્તણિં । એગ્ગેણેસતી સંમં, હા મઓ કત્થ ગચ્છિહં ? ॥૨॥ કો ધમ્મો કો વઓ ણિયમો, કો તવો મેડુણિચિદ્ધિઓ । કિં સીલં ધારિયં હોજ્જ, કો પુણ દાણો પયચ્છિઓ ? ॥૩॥ જસ્સાણુભાવઓડણ્ણત્થ, હીણમજ્ઞુત્તમે કુલે । સગ્ગે વા મણુયલોએ વા, સોકચ્ચં રિદ્ધિં લભેજ્જડહં ॥૪॥ અહવા કિંચ વિસાએણં ?, સવ્વં જાણામિ અત્તિયં । દુચ્ચરિયં જારિસો વાડહં, જે મે દોસા ય જે ગુણા ॥૫॥ ઘોરંધયારપાયાલે, ગમિસ્સેડહમણુત્તરે । જત્થ દુકચ્ચસહસ્સાઇ, ડુણુભવિસ્સં ચિરં બહુ ॥૬॥ એવં સવ્વં વિયાણંતે, ધમ્માધમ્મં સુહાસુ (હં દુ) હં । અત્થેગે ગોયમા ! પાણી, જે મોહાડડયહિયં ન ચિદ્ધએ ॥૭॥ જે યાડવાડડયહિયં કુજ્ઞા, કત્થઈ પારલોઝયં । માયાડંભેણ તસ્સાવી, સયમવી (મ્પી) તં ન ભાવએ ॥૮॥ આયામમેવ અત્તાણં, નિઉણં જાણે જહઠ્ઠિયં । આયા ચેવ દુપ્પત્તિજ્જે, ધમ્મમવિય અત્તસચ્ચિયં ॥૯॥ જં જસ્સાણુમયં હિએ સો તં ઠાવેઝ સુંદરપએસુ । સદલી નિયતણે તારિસ કૂરેવિ મન્નઇ વિસિદ્ધે ॥૧૦॥ અત્તત્તીયાડસમિચ્ચા સયલપા (યજ) ણિણો કપ્પયંતડપ્પડણ્ણં, દુઢં વઙ્કાયચેદ્ધં મણસિ ય ચ્ચલુ સંસંજુયં તે ચરંતે । નિદ્ધોસં તં ચ સિદ્ધે વવગયકલુસે પચ્ચવાયં વિમુચ્ચા, વિકચ્ચંતચ્ચંતપાવં કલુસિયહિયં દોસજાલેહિં ણદ્ધં વઙ્કાયચેદ્ધ મણસિ ય ચ્ચલુ સંસંજુયં તે ચરંતે । નિદ્ધોસં તં ચ સિદ્ધે વવગયકલુસે પચ્ચવાયં વિમુચ્ચા, વિકચ્ચંતચ્ચંતપાવં કલુસિયહિયં દોસજાલેહિં ણદ્ધં ॥૧॥ પરમત્થં તત્તસિદ્ધં, સમ્બૂયત્થપસાહગં । તબ્બણિયાણુદ્વાણેણં, તે આયા રંજએ સકં ॥૨॥ તેસુત્તમં ભવે ધમ્મં, ઉત્તમા તવસંપયા । ઉત્તમં સીલચારિત્તં, ઉત્તમા ય ગતી ભવે ॥૩॥ અત્થેગે ગોયમા ! પાણી, જે એરિસમવિ કાઢિ ગએ । સસલ્લે ચરતી ધમ્મં, આયહિયં નાવબુદ્ધઈ ॥૪॥ સસલ્લો જઙ્ગિ કદ્ધુગ્ગં, ઘોરં વિરં તવં ચરે । દિવ્વં વાસસહસ્સંપિ, તતોડવી તં તસ્સ નિપ્પલં ॥૫॥ સલ્લંપિ મન્નઈ પાવં, જં નાલોઝયનિદિયં । ન ગરહિયં ન પચ્છિત્તં, કયં જં જહયં ભાણિયં ॥૬॥ માયાડંભમકત્તવ્વં, મહાપચ્છન્નપાવયા । અયજ્જમણાયારં ચ, સલ્લં કમ્મઢ્ઠસંગહો ॥૭॥ અસંજમં અહમ્મં ચ, નિસીલડવ્વતતાવિય । સકલુસત્તમસુદ્ધી ય, સુકયનાસો તહેવય ॥૮॥ દુગ્ગઇગમણડુણુત્તારં, દુકચ્ચે સારીરમાણસે । અવ્વાચ્છિન્ને ય સંસારે, વિગ્ગોવણયા મહંતિયા ॥૯॥ કેસિં વિરૂવરૂવત્તં, દારિદ્ધય (દં) દોહગ્ગયા । હાહાભૂયસવેયણયા, પરિભૂયં ચ જીવિયં ॥૨૦॥ નિગ્ધેણ નિત્તિહસ કૂરત્તં, નિદ્ધય નિક્કિવયાવિય । નિલ્લજ્જત્ત ગૂઢહિયત્તં, વંકં વિવરીયચિત્તયા ॥૧॥ રાગો દોસો ય મોહો ય, મિચ્છત્તં ઘણચિક્કણં । સમગ્ગણાસો તહય, એડેજસ્સિત્તમેવય ॥૨॥ આણાભંગમબોહી ય, સસલ્લત્તા ય ભવે ભવે । એમાદી પાવસલ્લસ્સ, નામે એઢ્ઠિયા બહુ ॥૩॥ જેણં સલ્લિયહિયયસ્સ, એગસ્સી બહુ ભવંતરે । સવ્વંગોવંગસંધીઓ, પસલ્લંતિ પુણો પુણો ॥૪॥ સે દુવિહે સમક્ર્વાએ, સલ્લે સુહુમે ય બાયરે । એકેકે

સોજન્ય :- માતુશ્રી કુંવરબાઈ મેઘજી લઘાભાઈ છેડા પરિવાર લાયજી (કચ્છ) પ્રેરણાથી બીકેશકુમાર (રાયણ)

तिविहे णेए, घोरूगुग्गतरे तहा ॥५॥ घोरं चउव्विहा माया, घोरूगं माणसंजुया । माया लोभो य कोहो य, घोरूगुग्गयरं मुणे ॥६॥ सुहुमबायरभेएणं, सप्पभेयपिमं मुणी । अइरा समुद्धरे खिप्पं, ससल्लो णो वसे खणं ॥७॥ खुड्डलगित्ति अहिपोए, सिद्धत्थयतुल्ले सिही । संपलग्गे खयं णेइ, णवि पुठ्ठे विजोडई ॥८॥ एवं तणुतणुयरं, पावसल्लमणुद्धियं । भवभवंतरकोडीओ, बहुसंतावपदं भवे ॥९॥ भयवं ! सुदुद्धरे एस, पावसाले दुहप्पए । उद्धरिउं पि ण याणंती, बहवे जहमुद्धरिज्जइ ॥३०॥ गायम ! निम्मूलमुद्धरणं, निययमेतस्स भासियं । सुदुद्धरस्सावि सल्लस्स, सव्वंगोवंगभेदिणो ॥१॥ सम्मदंसणं पढमं, सम्मं नाणं बिइजियं । तइयं च सम्मचारित्तं, एगभूयमिमं तिगं ॥२॥ खेत्तीभूतेवि जे जित्ते (जीए), जे गूढेऽदंसणं गए । जे अत्थीसुं ठिए केई, जेऽत्थिमज्झ (ब्भं) तरं गए ॥३॥ सव्वंगोवंगसंखुत्ते, जे सव्वभंतरबाहिरे । सल्लंति जेण सल्लंती, ते निम्मूले समुद्धरे ॥४॥ हयं नाणं कियाहीणं, हया अन्नाणतो किया । पासंतो पंगुलो दह्ठो, धावमाणो य अंधओ ॥५॥ संजोगसिद्धी अउ गोयमा ! फलं, नहु एगचक्केण रहो पयाइ । अंधो य पंगू य वणे समिचचा, ते संपउत्ता नगरं पविट्ठा ॥६॥ नाणं पयासयं सोहओ तवो संजमो य गुत्तिकरो । तिण्हं पि समाओगे गोयम ! मोक्खो न अण्णहा ॥७॥ ता णीसल्ले भवित्ताणं, सव्वसल्लविवज्जिए । जे धम्ममणुचेट्ठेज्जा, सव्वभूयऽप्पकंपिवा ॥८॥ तस्स तज्जंम (तं स) फलं होज्जा, जम्मजंमंतरेसुवि विउला सय (म्प) रिद्धी य, लभेज्जा सासयं सुहं ॥९॥ सल्लमुद्धरिउकामेणं, सुपसत्थे सोहणे दिणे । तिहिकरणमुहुत्ते नक्खत्ते, जोगे लग्गे ससीबले ॥१०॥ कायव्वायंबिलक्खमणं, दस दिणे पंचमंगलं । परिजवियव्वऽट्ठसयं (यहा), तदुवरिं अट्ठमं करे ॥१॥ अट्ठमभत्तेण पारित्ता, काऊणायंबिलं तओ । चेइय साहू य वंदित्ता, करिज्ज खंतमरिसियं ॥२॥ जे केइ दुट्ठु संलत्ते, जस्सुवरिं दुट्ठु चित्तियं । जस्स य दुट्ठु कयं जेणं, पडिदुट्ठं वा कयं भवे ॥३॥ तस्स सव्वस्स तिविहेणं, वायां मणसा य कम्मणा । णीसल्लं सव्वभावेणं, दाउं मिच्छामिदुक्कडं ॥४॥ पुणोवि वीरागाणं, पडिमाओ चेइयाए । पत्तेयं संथुणे वंदे, एगग्गो भत्तिनिब्भरो ॥५॥ वंदित्तु चेइए सम्मं, छट्ठंभत्तेण परिजवे । इमं सुयदेवयं विज्जं, लक्खहा चेइयाए ॥६॥ उवसंतो सव्वभावेणं, एगचित्तो सुनिच्छिओ । आउत्तो अव्ववक्खित्तो, रागरइअरइवज्जिओ ॥७॥ अउम्णअम्ओ कउट्ठअबउद्धईणम् अउम्णअम्ओ पअय्आणउस्आरईणम् अउम्णअम्ओ सअम्भइण्णसउईणम् अउम्णअम्ओ खईर्आसवलद्धईणम् अउम्णअम्ओ सव्वउसहिलद्धईणम् अउम्णअम्ओ अक्खईणम्अहआणस्अलद्धईणम् अउम्णअम्ओ भगवओ अरहओ महइमहावीरवद्धमाणस्स धम्मतित्थंकरस्स अउम्णअम्ओ भगवओ अउहइण्आणस्स अउम्णअम्ओ भवगओ मणपज्जवण्आणस्स अउम्णअम्ओ अअआउअम् अआउअम् णम्ओ आऊअभिवत्तीलक्खणं सम्मदंसणं अउअम्णअम्ओ अट्ठआरस्असईलअमगसहस्साहिट्ठियस्स णईस्अमग्ग णइण्णइय्आण णईसल्ल सयसल्लगत्तण सव्वदुक्खणिम्महणपरमनिव्वुईकारस्स णं पवयणस्स परमपवित्तुत्तमस्सेति ॥४॥ एसा विज्जा सिद्धंतिएहिं अक्खरेहिं लिखिया, एसा य सिद्धंतिया लिवी अमुणियसमयसन्भावाणं सुधरेहिं ण पण्णवेयव्वा तहय कुसीलाणं च ॥५॥ इमाए पवरविज्जाए, सव्वहा उ अत्ताणगं । अहिमंतेऊण सोविज्जा, खंतो दंतो जिइंदिओ ॥४८॥ णवरं सुहासुहं सम्मं, सुविणगं समवधारए । जं तत्थ सुविणगं (गे) पासे, तारिसगं तं तहा भवे ॥९॥ जइ णं सुंदरगं पासे, सुमिणगं तो इमं महा । परमत्थतत्तसारत्थं, सल्लुद्धरणं मुणेतु णं ॥५०॥ देज्जा आलोयणं सुद्धं, अट्ठमयठाणविरहिओ । रं (भ) जंतो धम्मतित्थयरे, सिद्धे लोगगसंठिए ॥१॥ आलोएत्ताण णीसल्लं, सामण्णेण पुणोविय । वंदित्ता चेइए साहू, विहिपुव्वेण खमावए ॥२॥ खामित्ता पावसल्लस्स, निम्मूलुद्धरणं पुणो । करेज्जा विहिपुव्वेण, रंजंतो ससुरासुरं जगं ॥३॥ एवं होऊण निस्सल्लो, सव्वभावेण पुणरवि । विहिपुव्वं चेइए वंदे, खामे साहम्मिए तहा ॥४॥ नवरं जेण समं वुच्छो, जेहिं सद्धिं पविहरिओ । खरफुरूसं चोइओ जेहिं, सयं वा जो य चोइओ ॥५॥ जोऽविय कज्जमपज्जे वा, भणिओ खरफुरूसनिट्ठुरं । पडिभणियं जेणवी किंचि, सो जइ जीवइ जइ मओ ॥६॥ खमियव्वो सच्च (व्व) भावेण, जीवंतो जत्थ चिट्ठई । तत्थ गंतूण विणएण, मओऽवी साहुसक्खियं ॥७॥ एवं खामणमरिसामणं काउं, तिहुयणस्सवि भावओ । सुद्धो मरवइकाएहिं, एयं घोसिज्ज निच्छओ ॥८॥ खमावेमि अहं सव्वे, सव्वे जीवा खमंतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ ण केणई ॥९॥ खमामहं पि सव्वेसिं, सव्वभावेण सव्वहा । भवे भवेसुवि जंतूणं, वाया मणसा य कम्मणा ॥६०॥ एवं वंदिज्जा चेइय, साहू सक्खं विही यऽओ । गुरूस्सावि विही पुव्वं, खामणमरिसामणं करे ॥१॥ खमावेत्तुं गुरू

सम्मं, नाणमहिमं ससत्तिओ । काऊणं वंदिऊणं च, विहिपुव्वेण पुणोऽविय ॥२॥ परमत्थतत्तसारत्थं, सल्लुद्धरणमिमं मुणे । मुणेत्ता तहमालोए (जह आलोयंतो चेव), उप्पए केवलं नाणं ॥३॥ दिन्नेरिसभावत्थेहिं, नीसल्ला आलोयणा । जेणालोयमाणेण चेव, उप्पन्नं तत्व केवलं ॥४॥ केसिंचि साहेमो नामे, महासत्ताण गोयमा ! जेहिं भावेणालोययंतेहिं, केवलनाण समुप्पाइयं ॥५॥ हाहा दुट्ठु कडे साहू, हा दुट्ठु विचित्तिरे । हा दुट्ठु भाणिरे साहू हा दुट्ठु मणुमते ॥६॥ संवेगालोयगे तहय, भावालोयणकेवली । पयखेवकेवली चेव, मुहरंतगकेवली तहा ॥७॥ पच्छित्तकेवली सम्मं, महावेरग्गकेवली । आलोयणाकेवली तहयं, हाऽहं पावित्ति केवली ॥८॥ उम्मुत्तुम्मग्गपन्नवए, हाहा अणयारकेवली । सावज्जं न करेमिति, अक्खंडियसीलकेवली ॥९॥ तवसंजमवयसंरक्खे, निंदणे गरिहणे तहा । सव्वतो सीलसंरक्खे, कोहीपच्छित्तएऽविय ॥१०॥ निप्परिकम्मे अकंडूयणे, अणिमिसच्छी य केवली । एगपासित्त दो पहरे, तह मूणव्वयकेवली ॥१॥ न सक्को काउ सामन्नं, अणसणे ठामि केवली । नवकारकेवली तहय, तिब्वालोयणकेवली ॥२॥ निस्सल्लकेवली तहय, सल्लुद्धरणकेवली । धन्नोमिति संपुत्ते, सताहंपी किन्न केवली ॥३॥ ससल्लोऽहं न पारेमि, चलकट्टपयकेवली । पक्खसुद्धाभिहाणे य, चाउम्मासी य केवली ॥४॥ संवच्छरमहपच्छित्ते, हा चलं जीवियं तहा । अणिच्चे खणविद्धंसी, मणुयत्ते केवली तहा ॥५॥ आलोयनिंदवंदियए, घोस्पच्छित्तदुक्करे । लक्खोवस्सगपच्छित्ते, समहियासणकेवली ॥६॥ हत्थोसरणनिवासे य, अद्धकवलासिकेवली । एगसित्थपच्छित्ते, दसवासे केवली तहा ॥७॥ पच्छित्तावढवगे चेव, पच्छित्तद्वयकेवली । पच्चित्तपरिसमत्ती य, अट्ठसंउक्कोसकेवली ॥८॥ न सुद्धीवि न पच्छित्ता, ता वरं खिप्पकेवली । एगं काऊण पच्छित्तं, बीयं न भवे (जहेव) केवली ॥९॥ तं चायरामि पच्छित्तं, जेणागच्छइ केवली । तं चायरामि जेण तवं, सफलं होइ केवली ॥१०॥ किं पच्छित्तं चरंतोऽहं चिट्ठं रो तव केवली । जिणाणमाणं ण लंघेऽहं, पाणपरिच्चयणकेवली ॥१॥ अन्नं होही सरीरं मे, नो बेही चेव केवली । सुलद्धमिणं सरीरेणं, पावणिद्वहण केवली ॥२॥ अणाइपावकम्ममलं, निद्धोवेमीह केवली । बीयं तं न समायरिअं, पमाया केवली तहा ॥३॥ देहे खओव (वओ) सरीरं मे, निज्जरा भवओ केवली । सरीरस्स संजमं सारं, निक्कलंकं तु केवली ॥४॥ मणसावि खंडिए सीले, पाणे ण धरामि केवली । एवं वइकायजोगेणं, सीलं रक्खे अहं केवली ॥५॥ एवं मया अणादीया, कालाणंते पुणो मुणी । केई आलोयणासिद्धे, पच्छित्ता केई गोयमा ॥६॥ खंता दंता विमुत्ता य, जिइंदी सच्चभासिणो । छक्कायसमारंभाउ, विरत्ते तिविहेण उ ॥७॥ तिदंडासवसंविरिया, इत्थिकहासंगवज्जिया । इत्थीसंलावविरया य, अंगोवंगणिरिक्खणा ॥८॥ निम्ममत्ता सरीरेवि, अप्पडिबद्धा महासया (यसा) । भीया इत्थिगम्भवसहीणं, बहुदुक्खाउ भवाउ तहा ॥९॥ ता एरिसेणं भावेण, दायव्वा आलोयणा । पच्छित्तंपिय कायव्वं तहा जहा चेव एहिं कयं ॥१०॥ न पुणो तहा आलोएयव्वं, मायाडंभेण केणई । जह आलोएमाणेण, चेव संसारवुद्धी भवे ॥१॥ अणंतेऽणाइकालाउ, अत्तकम्मेहिं दुम्मई । बहुविकप्पकल्लोले, आलोएंतावी अहो गए ॥२॥ गोयम ! केसिंचि नामाई साहिमो तं निबोधय । जेसालोयणपच्छित्ते, भावसोसिक्ककलुसिए ॥३॥ ससल्ले घोरमहं दक्खं, दुरहिआसं सुदूसहं । अणुहवंतेवि चिट्ठंति, पावकम्मे नराहमे ॥४॥ गुरूगासंजमे नाम, साहू निद्धधसे तहा । दिट्ठी वायाकुसीले य, मणुकुसीले तहेव य ॥५॥ सुहुमालोयगे तहय, परववएसालोयगे तहा । किं किं चालोयगा तह य, ण किंचालोयगे तहा ॥६॥ अकयालोयणे चेव, जणरंजवणे तहा । नाहं काहामि पच्छित्तं, छम्मालोयणमेव य ॥७॥ मायादंभपवंची य, पुरकडतवचरणकहे । पच्छित्तं नत्थि मे किंचि, न कयालोयणुच्चरे ॥८॥ आसण्णालोयणक्खाइ, लहुपच्छित्तजायगे । अम्हाणालोइयणं चेठ्ठे, सुहबंधालोयगे तहा ॥९॥ गुरूपच्छित्ताहमसक्के य, गिलाणालंबणं कहे । आरभडालोयेगे साहू, सुण्णासुण्णी तहेव य ॥१०॥ निच्छिन्नेवि य पच्छित्ते, न काहं तुट्ठिजायगे । रंजवणमेत्त लोगाणं, वायापच्छित्ते तहा ॥१॥ पडिवज्जणपच्छित्ते, चिरयालपवेसगे तहा । अणुणुट्ठियपायच्छित्ते, अणुभणियऽण्णहायरे तहा ॥२॥ आउट्ठीय महापावे, कंदप्पा दप्पे तहा । अजयणासेवणे तह य, सुयासुयपच्छित्ते तहा ॥३॥ दिट्ठपोत्थयपच्छित्ते, सयंपच्छित्तकप्पगे । एवइयं इत्थ पच्छित्तं, पुव्वालोइयमणुस्सरे ॥४॥ जाईमयसंकिए चेवं कुलमयसंकिए तहा । जातिकुलोभयमयासंके, सुतलाभेस्सरियसंकिए तहा ॥५॥ तवोमए संकिए चेव, पंडिच्चमयसंकिए तहा । सक्कारमयलुद्धे य, गारवसंधूसिए तहा ॥६॥ अपुज्जो वाविऽहं जंमे, एगज्जंमेव चिंतगे । पाविट्ठाणंपि पावतरे, सकलुसचित्तालोगये ॥७॥ परकहावगे चेव, अविणयालोयगे साहू, एवमादी दुरप्परो ॥८॥

अणंतेऽणाइकालेणं, गोयमा ! अत्तदुक्खिया। अहो अहो जाव सत्तमियं, भावदोसकओ गए ॥९॥ गोयम ! ऽणंते चिट्ठति जे, अणादिए ससल्लिए। नियभावदोससल्लाणं, भुंजंते विरसं फलं ॥११०॥ चिट्ठइस्संति अज्जावि, तेण सल्लेण सल्लिए। अणंतं पि अणागयं कालं, तम्हा सल्लं न धारए ॥१११॥ खणं मुणित्ति बेमि। गोयम ! समणीण णो संखा जाओ निकलुसनीसल्लविसुद्धसुद्धनिम्मलवयणमाणसाओ अज्झप्पविसोहीए आलोइत्ताण सुपरिफुडं नीसकं निखिलं निरवयवं नियदुच्चरयिमाइयं सव्वंपि भावसल्लं अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तमणुचरित्ताणं निद्धोयपावकम्ममललेवकलंकाओ उप्पन्नदिव्ववरकेवलणाणाओ महाणुभागाओ महायसाओ सहासत्तसंपन्नाओ सुगहियनामधेयाओ अणंतुत्तमसोक्खमोक्खं पत्ताओ ॥६॥ कासिचि गोयमा ! नामे, पुन्नभागाण साहिमो। जासिमालोयमाणीणं, उप्पणं समणीण केवलं ॥११२॥ हाहाहा पावकम्माहं, पावा पावमती अहं। पाविट्ठाणंपि पावयरा, हाहाहा दुट्ठि चित्तिमो ॥३॥ हाहाहा इत्थिभावं मे, ताविह जंमे उवट्ठियं। तहावी णं घोरवीरूग्गं, कट्ठ तवसंजमं धरं ॥४॥ अणंतपावरासीओ, संमिलियाओ जया भवे। तइया इत्थित्तणं लब्भे, सुद्धं पावाण कम्मणा ॥५॥ एगत्थपिंडीभूताणं, समुदये तणुतं तह। करेमि जह न पुणो, इत्थीऽहं होमि केवली ॥६॥ दिट्ठीएवि न खंडामि, सीलं हं समणिकेवली। हाहा मणेण मे किंपि, अट्ठदुहट्ठं विचित्तियं ॥७॥ तमालोइत्ता लहुं सुद्धिं, गिण्हेऽहं समणिकेवली। दट्ठुण मज्झ लावणं, रूवं कंतिदित्तिं सिरिं ॥८॥ मा णरपयंगाहमा जंतु, खयमणसणसमणी य केवली। वातं मोत्तूण नो अत्तो, निमा (च्छि) यं मह तणु च्छिवे ॥९॥ छक्कायसमारंभं, न करेऽहं समणिकेवली। पोग्गलकक्खोरूग्गुज्झंतं, णाहिजहणंतरे तहा ॥१२०॥ जणणीएवि ण दंसेमि, सुसंगुत्तंगोवंगा समणी य केवली। बहुभवंतरकोडीओ, घोरं गब्भपरंपरं ॥१॥ परियट्ठंतीए सुलद्धं मे, णाणं चारित्तसंजुयं। माणुसजम्मं ससंमत्तं, पावकम्मक्खयंकं ॥२॥ ता सव्वं भावसल्लं, आलोएमि खणे खणे। पायच्छित्तमणुट्ठामि, बीयं तं न समारंभं ॥३॥ जेणागच्छइ पच्छित्तं, वाया मणसा य कम्मुणा। पुढविदगागणिवाऊहरियकायं तहेव य ॥४॥ बीयकायसमारंभं, बित्तियचउपंचिंदियाण य। मुसाणंपि न भासेमि, ससरक्खंपि अदिन्नयं ॥५॥ न गिण्हं सुमणंतेवि, ण पत्थं मणसावि मेहुणं। परिग्गहं न काहामि, मूलुत्तरगुणखलणं तहा ॥६॥ मयभयकसायदंडेसुं, गुत्तीसमित्तिदिएसु य। तह अट्ठारससीलंगसस्साहिट्ठियतणू ॥७॥ सज्झायज्झाणजोगेसुं, अभिरमं समणिकेवली। तेलोक्करक्खणक्खंभधम्मतित्थंकरेण जं ॥८॥ तमहं लिंगं धरेमाणा, जइवि हु जंते निवीलितं। मज्झोमज्झीय दो खंडा, फालिज्जामि तहेव य ॥९॥ अह पक्खिप्पामि दित्तगिं, अहवा छिज्जे जई सिरं। तोऽवीऽहं नियमवयभंगं, सीलचारित्तखंडणं ॥१३०॥ मणसावी एक्कजम्मकए, ण कुणं समणिकेवली। खरूट्ठसाणजाईसुं, सरागा हिडिया अहं ॥१॥ विकम्मंपि समायरियं, अणंते भवभवंतरे। तमेव खरकम्ममहं, पव्वज्जापट्ठिया कुणं ॥२॥ घोरंधयारपायाला जा (जे) णं णो णीहरं पुणो। वेदिय हे माणुसं जम्मं, तं च बहुदुक्खभायणं ॥३॥ अणिच्चं खणविद्धंसी, बहुदंडं दोससंकं। तत्थावि इत्थी संजाया, सयलतेलोक्कनिदिया ॥४॥ तहावि पावियं (उं) धम्मं, णिव्विग्घमणंतराइयं। ताहं तं न विराहामि, पावदोसेण केणई ॥५॥ सिगरागसविगारं, साहि लासं न चिट्ठिमो। पसंताएवि दिट्ठीए, मोत्तुं धम्मोवएसगं ॥६॥ अन्नं पुसिं न निज्झायं, णालवं समणिकेवली। तं तारिसं महापावं, काउं अक्कहणीययं ॥७॥ तं सल्लमवि उप्पन्नं, जहदत्तालोयणसमणिकेवली। एमादिअणंतसमणीओ, दाउं सुद्धालोयणं निसल्ला ॥८॥ केवलं पप्प सिद्धाओ, अणादिकालेण गोयमा ! खंता दंता विमुत्ताओ, जिईदिआउ सच्चभाणिरीओ ॥९॥ छक्कायसमारंभा, विरया तिविहेण उ। तिदंडासवसंवुत्ता, पुरिसकहासंगवज्जिया ॥१४०॥ पुरिससंलावविरयाओ, पुरिसंगोवंगनिरिक्खणा। निम्ममत्ताउ ससरारे, अप्पडिबद्धाउ महायसा ॥१॥ भीया थीगब्भवसहीणं, बहुदुक्खाउ भवसंसरणओ तहा। ता एरिसेणं भावेणं, दायव्वा आलोयणा ॥२॥ पायच्छित्तंपि कायव्वं, तह जह एयाहिं समणीहिं कयं। ण उणं तह आलोएयव्वं, मायादंभेण केणई ॥३॥ जह आलोयमाणीणं, पावकम्मवुट्ठी भवे। अणंताणाइकालेणं, मायादंभछम्मदोसेणं ॥४॥ कवडालोयणं काउं, समणीओ ससल्लाओ। असभओगपरंपरेणं, छट्ठियं पुढविं गया ॥५॥ कासिचि गोयमा ! नामे, साहिमो तं निबोदय। जाउ आलोयमाणीओ, भावदोसेण सुट्ठतरणं पावकम्ममलखवलियं ॥६॥ तह संजमसीलंगाणं, णीसल्लत्तं पसंसियं। तं परमभावविसोहीए, विणा खणद्धंपि नो भवे ॥७॥ तो गोयमा ! केसिमित्थीणं, चित्तविसोही सुनिम्मला। भवंतरेवि नो होही, जेण नीसल्लया भवे ॥८॥ छट्ठदुमदसमदवालसेहिं सक्खंति केवि समणीओ। तहवि य सरागभावं

णालोयंती ण छडुंति ॥९॥ बहुविहविकप्पकल्लोलमालाउक्कलिगाहिणं । वियरंतं तेण लक्खेज्जा, दुरवागहमण (भव) सागरं ॥१५०॥ ते कहमालोयणं देंतु, जासि चित्तंपि नो वसे ?। सल्लज्जा ताणमुद्धरे, स वंदणीओ खणे खणे ॥१॥ असिणेहपीइपुव्वेण, धम्मज्झाणुल्लसावियं । सीलंगुणट्ठाणेषु, उत्तमेसुं धरेइ जो ॥२॥ इत्थीबहुबंधणा विमुक्कं, गिहकलत्तादिचारगा । सुविसुद्धसुनिम्मलं चित्तं, णीसल्लं सो महायसो ॥३॥ दट्ठव्वो वंदणीओ य, देविंदाणं स उत्तमो । दीण (कय) त्थी सव्वपरिभूय, विरइट्ठाणे जो उत्तमे धरे ॥४॥ णालोएमि अहं समणी, दे कहं किच्चिं साहुणी । बहुदोसं न कहं समणी, जं दिट्ठ समणीहिं तं कहे ॥५॥ असावज्जकहा समणी बहुआलंबणा कहा । पमायखामगा समणी, पाविट्ठा बलमोडीकहा ॥६॥ लोगविरूद्धकहा तह य, परववएसलोयणी । सुयपच्छित्ता तह य, जायादीमयसंकिया ॥७॥ मूसागारभीरूया चेव, गारवतियदूसिया तहा । एवमादिअणेगभावदोसवसगा पावसल्लेहिं पूरिया ॥८॥ अणंता अणंतेण कालसमएण, गोयमा ! अइक्कंतेणं । अणंताओ समणीओ, बहुदुक्खावसहं गया ॥९॥ गोयमा ! अणंताओ चिट्ठंति, जाऽणादी सल्लसल्लिया । भावदोसेक्कसल्लेहिं (भुंजमाणीओ कडुविरसं) घोरूग्गुगतं फलं ॥१६०॥ चिट्ठइस्संति अज्जावि, तेहिं सल्लेहिं सल्लिया । अणंतंपि अणागयं कालं, तम्हा सल्लं सुहुममवि, समणी णो धारेज्जा खणंति ॥१॥ धगधगधगस्स पज्जलिए, जालामालाउले दढं । हुयवहेवि महाभीसे, सरीरं इज्झए सुहं ॥२॥ पयलंतंगाररासीए, एगसि झंप पुणे जले । थल्लितो सरितो सरियं, जं मरिज्जिउं पि सुक्करं ॥३॥ खंडियस्स सहत्थेहिं, एक्केक्कमंगावयवं । जं होमिज्जइ अग्गीए, अणुदियहंपि सुक्करं ॥४॥ खरफरूसतिक्खकरवत्तदंतेहिं फालाविउं । लोणूससज्जियाखारं, जं घत्ता ससरीरं अच्चंतसुक्करं । जीवंतो सयमवी सक्कं, सल्लं उत्तारिऊण ण ॥५॥ जवखारहलिद्वादिहिं, जं आलिपे नियं तणुं । मयंपि सुकरं छिदेऊण, सहत्थेणं जो घेत्ते सीसं नियं ॥६॥ एयंपि सुक्करमलीहं, दुक्करं तवसंजमं । नीसल्लं जेण तं भणियं, सल्लो य नियदुक्खिओ ॥७॥ मायादंभेण पच्छन्नो, तं पायडिउं ण सक्कए । राया दुच्चरियं पुच्छे, अह साहइ देहसव्वस्सं ॥८॥ सव्वस्संपि पएज्जा उ, नो नियदुच्चरिं कहे । राया दुच्चरियं पुच्छे, साह पुहइं पि देमि ते ॥९॥ पुहइं रज्जं तणं मन्ने, नो नियदुच्चरियं कहे । राया जीयं निकिंतामि, अह नियदुच्चरिं कह ॥१७०॥ पाणेहिं पि खयं जंतो, नियदुच्चरियं कहेइ नो । सव्वस्सहरणं च रज्जं च, पाणेवी परिच्चएसु णं ॥१॥ मयावि जंति पायाले, नियदुच्चरियं कहंति नो । जे पावाहम्मबुद्धिया, काउरिसा एगजंमिणो । ते गोवंति सदुच्चरियं, नो सप्पुरिसा महामती ॥२॥ सप्पुरिसा ते ण वुच्चंति, जे दाणवईह दुज्जणे । सप्पुरिसाणं चरित्ते भणिया, जे निस्सल्ला तवे रया ॥३॥ आया अणिच्छमाणाऽवी, पावसल्लेहिं गोयमा ॥ णिमिसद्धाणंतगुणिएहिं, पूरिज्जे नियदुक्खिया ॥४॥ ताइं च ज्ञाणसज्झायघोरतवसंजमेण य । निदंभेण अमाएणं, तक्खणं जो समुद्धरे ॥५॥ आलोएत्ताण णीसल्लं, निदिउं गरहिउं दढं । तह चरई पायच्छित्तं, जह सल्लाणमंतं करे ॥६॥ अन्नजम्मपहुत्ताणं, खेत्तीभूयाणवी दढं । णिमिसद्धखणमुहुत्तेणं, आजम्मेणेव निच्छिओ ॥७॥ सो सुहडो सो य पुरिसो, सो तवस्सी स पंडिओ । खंतो दंतो विमुत्तो य, सहलं तस्सेव जीवियं ॥८॥ सूरु य सो सलाहो य, दट्ठव्वो य खणे खणे । जो सुद्धालोयणं देंतो, नियदुच्चरियं कहे फुडे ॥९॥ अत्थेगे जेयमा ! पाणी, जे सल्लं अद्धउद्धियं । माया लज्जा भया मोहा, मुसकरा हियए धरे ॥१८०॥ तं तस्स गुरुतरं दुक्खं, हीणसत्तस्स संजणे । से चित्ते अन्नाणदोसाओ, णोद्धरं दुक्खिज्जिहं किल ॥१॥ एगधारो दुधारो वा, लोहसल्लो अणुद्धिओ । सल्लेग त्थाम जंमेगं, अहवा मंसीभवेइ सो ॥२॥ पावसल्लो पुणासंखे, तिक्खधारो सुदारूणो । बहुभवंतर सव्वंगे, भिदे कुलिसो गिरी जहा ॥३॥ अत्थेगे गोयमा ! पाणी, जे भवसयसाहस्सिए । सज्झायज्झाणजोगेण, घोरतवसंजमेण य ॥३॥ सल्लाइं उद्धरेऊणं, विरया ता दुक्खकेसओ । पमाया बिउणतिउणेहिं, पूरिज्जंती पुणोविय ॥४॥ जम्मंतरेसु बहुएसु, तवसा निद्वह्मम्मणो । सल्लुद्धरणस्स सामत्थं, भवंती कहवि जं पुणो ॥५॥ तं सामग्गिं लभित्ताणं, जे पमायवसं गए । ते मुसिए सव्वभावेणं, कल्लाणाणं भवे भवे ॥६॥ अत्थेगे गोयमा ! पाणी, जे पमायवसं गए । चरंतेवी तवं घोरं, सल्लं गोवंति सव्वहा ॥७॥ णेयं तत्थ वियाणंति, जहा किमम्हेहिं गोवियं ?। जं पंचलोगपालऽप्पा, पंचेदियाणं च न गोवियं ॥८॥ पंचमहालोगपालेहिं, अप्पा पंचेदिएहिं य । एक्कारसेहिं एतेहिं, जं दिट्ठं ससुरासुरे जगे ॥९॥ ता गोयम ! भावदोसेणं, आया वंचिज्जइ परं । जेणं चउगइसंसारे, हिंडइ सोक्खेहिं वंचिओ ॥१९०॥ एवं नाऊण कायव्वं, निच्छियहिययधीरिया । महउत्तिमसत्तकुंतेणं, भिदेयव्वा मायारक्खसी ॥१॥ बहवे अज्जवभावेण, निम्महिऊण

अणेगहा । विरयातीअंकुसेण पुणो, माणगइदं वसीकरे ॥२॥ मद्दवमुसलेण ता चूरे, वीसयरि (स) यं जाव दूरओ । दडुणं कोहको (लो) हाही (ई) मयरे निदे संघडे ॥३॥ कोहो य माणो य अणिग्गहीया, माया य लोभो य पवहुमाणा । चत्तारि एए कसिणा कसाया, पोयंति सल्ले सुदुरुद्धरे बहुं ॥४॥ उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे । मायं चऽज्जवभावेणं लोभं संतुट्ठिओ जिणे ॥५॥ एवं निज्जियकसाए जे, सत्तभयट्ठाणविरहीए । अट्ठमयविप्पमुक्के य, देज्जा सुद्धालोयणं ॥६॥ सुपरिफुडं जहावत्तं, सव्वं नियदुक्कियं कहे । णीसंके य असंखुद्धे, निब्भीए गुरुसंतियं ॥७॥ भूतोवुद्धडगे बाले, जह पलवे उज्जुए दूरं । अवि उप्पन्नं तहा सव्वं, आलोयव्वं जहट्ठियं ॥८॥ जं पायाले पविसित्ता, अंतरजलमंतरेस वा कयमह रातोऽंधकारे वा, जणणीएवि समं भवे ॥९॥ तं जहवत्तं कहेयव्वं, सव्वमण्णंपि णिक्खित्तं । नियदुक्कियसक्कियमादी, आलोयंतेहिं गुरुयणे ॥२००॥ गुरुवि तित्थयरभणियं, जं पच्छित्तं तहिं कहे । नीसल्लीभवति तं काउं, जइ परिहरइ असंजमं ॥१॥ असंजमं भन्नई पावं, तं पावमणेगहा मुणे । हिंसा असव्वं चोरिक्कं, मेहुणं तह परिग्गहं ॥२॥ सद्दाइंदियकसाए य, मणवइतणदंडे तहा । एते पावे अछडुंतो, णीसल्लो णो य णं भवे ॥३॥ हिंसा पुढवादिछब्भेया, अहवा णवदसचोदसहा उ । अहवा अणेगहा णेया, कायभेदंतरेहिं णं ॥४॥ हिओवदेसं पमोत्तूण, सव्वुत्तमपारमत्थियं । तत्तधम्मस्स सव्वसल्लं मुसावायं अणेगहा ॥५॥ उग्गमउप्पायणेसणया, बायालीसाए तह य । पंचेहिं दोसेहिं दूसियं, जं भंडोवगरणपाणमाहारं, नवकोडीहिं असुद्धं, परिभुंजंते भवे तेणो ॥६॥ दिव्वं कामरईसुहं, तिविहंतिविहेण अहव उरालं । मणसा अज्झवसंतो, अबंभयारी मुणेयव्वो ॥७॥ नवबंभचेरगुत्ती विराहए जो य साहु समणी वा । दिट्ठिमहवा सरागं, पउंजमाणो अइयरे बंभं ॥८॥ गणणा (प) वमाणअइरित्तं, धम्मोवगरणं तहा । सकसायकूरभावेणं, जा वाणी कलुसिया भवे ॥९॥ सावज्जवइदोसेसुं जा पुट्ठा तं मुसा मुणे । ससरक्खमवि अदिण्णं, जं गिण्हे तं चोरिक्कयं ॥२१०॥ मेहुणं करकम्मेणं, सद्दादीण वियारणे । परिग्गहं जहिं मुच्छा, लोहो कखा ममत्तयं ॥१॥ अणूणोयरियमाकंठं, भुंजे राईभोयणं । सद्दस्सणिठ्ठ इयरस्स, रूवरसगंधफरिसस्स वा ॥२॥ ण रागं ण प्पदोसं वा, गच्छेज्जा उ खणं मुणी । कसायस्स व चउक्कस्स, मणसि विज्झावणं करे ॥३॥ दुट्ठे मणोवईकायादंडे णो णं पउंजए । अफासुपाणपरिभोगं, बीयकायसंघट्ठणं ॥४॥ अछडुंतो इमे पावे, णो णं णीसल्लो भवे । एसिं महंतपावाणं, देहत्थं जाव कत्थई ॥५॥ एकंपि चिट्ठए सुहुमं, णीसल्लो ताव णो भवे । तम्हा आलोयणं दाउं, पायच्छित्तं करेऊणं । एयं निक्कवडनिहंभं, नीसल्लं काउं तवं ॥६॥ जत्थ जत्थोवज्जेज्जा, देवेसु माणुसेसु वा । तत्थुत्तमा जाई. उत्तमा सिद्धिसंपया । लभेज्जा उत्तमं रूवं, सोहग्गं जइ णं नो सिज्झिज्जा तब्भवे ॥२१७॥ त्ति बेमि ।

☆☆☆ महानिसीहसुयक्खंधस्स पढमं अज्झयणं सल्लुद्धरणं नाम ॥१॥ ☆☆☆ एयस्स य कुलिहियदोसो न दायव्वो सुयहरेहिं, किंतु जो चेव एयस्स पुव्वायरिसो आसि तत्थेव कत्थई सिलोगो कत्थई सिलोगद्धं कत्थई पयक्खरं कत्थई अक्खरपंतिया कत्थई पत्तगपुट्ठिया कत्थई तिन्नि पत्तगाणि एवमाइ बहुगंथं परिगलियंति ॥७॥ निम्मूलुद्धियसल्लेणं, सव्वभावेण गोयमा ॥ झाणे पविसेत्तु सम्मेयं, पच्चक्खं पासियव्वयं ॥१॥ जे सण्णी जेवी यासन्नी, भव्वाभव्वा उ जे जगे । सुहत्थी तिरियमुट्ठाहं, इहमिहाडेति दसदिसिं ॥२॥ असन्नी दुविहे णेए, वियलिदि एगिदिए । वियले किमिकुंथुमच्छादी, पुढवादी एगिदिए ॥३॥ पसुपक्खीमिगा सण्णी, नेरइया मणुया नरा । भव्वाभव्वावि अत्थेसुं, नीरए उभयवज्जिए ॥४॥ घम्मत्ता जंति छायाए वियलिंदी सिसिराऽऽवयं । होही सोक्खं किलऽम्हाणं, ता दुक्खं तत्थवी भवे ॥५॥ सुकुमालगं गयतालुं, खणदाहं सिसिरं खणं । न इमं अहियासेउं, सक्कुणं एवमादियं ॥६॥ मेहुणसंकप्परागाओ, मोहा अण्णाणदोसओ । पुढवादीसु गएगिंदी, ण याणंती दुक्खं सुहं ॥७॥ परिव्वत्तं चऽणंतेवि, काले बेइंदियत्तणं । केई जीवा ण पावेंती, केई पुणोऽणादियाविय ॥८॥ सीउणहवायविज्झडिया, मियपसुपक्खीसिरीसिवा । सुमिणंतेवि न लब्भंते, ते णिमिसिद्धब्भंतरं सुहं ॥९॥ खरफरूस्तिकक्खकरवत्ताइएहिं, फालिज्जंता खणे खणे । निवसंते नारया नरए, तेसिं सोक्खं कुओ भवे ? ॥१०॥ सुरलोए अमरया सरिसा, सव्वेसिं तत्थिमं दुहं । उवइ (ट्टि) ए वाहणत्ताए, एणो अण्णो तमारूहे ॥१॥ समतुल्लपाणिपादेणं, हाहा मे अत्तवेरिणा । मायादंभेण धिद्धिद्धि, परितप्पेदं आया वंचिओ ॥२॥ सुहेसी किसिकंमंतं, सेवावाणिज्जसिप्पयं । कुव्वंताऽहन्निसं मणुया, धुप्पंते एसिं कओ सुहं ? ॥३॥ परघरसिरिए दिट्ठाए, एगे इज्झति बालिसे । अन्ने अपहुप्पमाणीए, अन्ने खीणाइ लच्छिए ॥४॥ पुन्नेहिं वहुमाणेहिं, जसकित्ती लच्छी य वहुई । पुन्नेहिं, जसकित्ती लच्छी

य खीयई ॥५॥ वाससाहस्सियं केई, मन्नंते एगदिणं (पुणो) । कालं गमेति दुक्खेहिं, मुणया पुत्तेहिं उज्झिया ॥६॥ संखेवेत्थमिमं भणियं, सव्वेसिं जगजंतुणं । दुक्खं माणुसजाईणं, गोयमा ! जं तं निबोधय ॥७॥ जमणुसमयमणुभवताणं, सयहा उव्वेवियाणवि । निव्विन्नाणंपि दुक्खेहिं, वेरगं न तहावि भवे ॥८॥ दुविहं समासओ मणूएसुल दुक्खं सारीरमाणसं । घोरं पचंडमहरोदं, तिविहं एक्केकं भवे ॥९॥ घोरं जाण मुहुत्तंतं, घोरपयंडंति समयवीसामं । घोरपयंडमहारोदं, अणुसमयमविस्सामगं मुणे ॥२०॥ घोरं मणुस्सजाईणं, घोरपयंडं मुणे तिरिच्छीसु । घोरपयंडमहारोदं, नारयजीवाण गोयमा ! ॥१॥ माणसं तिविहं जाणे, जहन्नमज्झुत्तमं दुहं । नत्थि जहन्नं तिरिच्छाणं, दुहमुक्कोसं तु नारयं ॥२॥ जं तं जहन्नं दुक्खं, माणुसं तं दुहा मुणे । सुहुमबायरभेणं, निव्विभागे इतरे दुवे ॥३॥ संमुच्छिमेसुं मणूएसुं, सुहुमं देवेसु बायरं । चवणकाले महिद्धीणं, आजम्मं आभिओगाणं ॥४॥ सारीरं नत्थि देवाणं, दुक्खेणं माणसेण य । अइबलियं वज्जिमं हिययं, सयखंडं जं नवी फुडे ॥५॥ णिव्विभागे य जे भणिए, दोन्नि मज्झुत्तमे दुहे । मणुयाणं ते समक्खाए, गम्भवक्कंतियाण उ ॥६॥ असंखेयाउमणुयाणं, दुक्खं जाणे विमज्झिमं संखेआउमणउस्साणं तु । दुक्खं चेवुक्कोसगं ॥७॥ असोक्खं वेयणा वाही, पीडा दुक्खमणिव्वुई । अणरागमरई केसं, एवमादी एगट्ठिया बहू ॥८॥ सारीरेयरभेदंति, जं भणियं तं पवक्खई । सारीरं गोयमा ! दुक्खं, सुपरिफुडं तमवधारय ॥९॥ वालग्गकोडिलक्खमयं, भागमित्तं छिवे धुवे । अचिरअणणपदेससरं, कुंथुमणहवित्तिं खणं ॥३०॥ तेणवि करकत्तिसल्लेउं, हिययसु (मु) द्दसए तणू । सीयंती अंगमंगाई गुरु, उवेइ सव्वसरीरं सभ्भंतरं. कंपे थरथरस्स य ॥१॥ कुंथुफरिसियमेत्तस्स, जं सलसलसले तणुं । तमवसं भिन्नसव्वंगे, कलयलडज्झंतमाणसे ॥२॥ चिंतंतो हा किं किमेयं, बाहे गुरुपीडाकरं ? । दीहुण्हमुक्कनीसासे, दुक्खं दुक्खेण नित्थरे ॥३॥ किमेयं ? कियचिरं बाहे ? कियचिरेणेव णिट्ठिही ? । कहं वाऽहं विमुच्चीसं ? , इमाउ दुक्खसंकडा ॥४॥ गच्छं चेदं सुवं उदं, धावं णासं पलामि उ । कं डुगयं ? किं व पक्खोडं ? , किं वा पत्थं करेमिऽहं ? ॥५॥ एवं तिवग्गवावारतिव्वोरुदुक्खसंकडे । पविट्ठो बाढं संखेज्जा, आवलियाओ किलिस्सियं ॥६॥ मुणेऽहमेस कंडू मे, अण्णहा णो उवस्समे । ता एवज्झवसाएणं, गोयम ! निसुणेसु जं करे ॥७॥ अह तं कुंथुं वावाए, जइ णो अन्नत्थ गयं भवे । कंडूयमाणोऽह भित्तादी, अणुघसमाणो किलिस्सए ॥८॥ जइवा वावज्जंतं कुंथुं, कंडूयमाणो व इयरहा । तो तं अइरोदज्झाणंमि, पविट्ठं णिच्छयओ मुणे ॥९॥ अह किलमेतउभयण्णे, रोदज्झाणेयरस्स उ । कंडूयमाणस्स उण देहं, सुद्धमद्वज्झाणं मुणे ॥१०॥ स मज्झे रोदज्झाणट्ठो, उक्कोसं नारगाउयं । दुभगित्थीपंडतेरिच्छी, अद्वज्झाणो समज्जिणे ॥१॥ कुंथुपदफरिसजणियाओ, दुक्खाओ उवसमत्थिया । पच्छ हल्लफलीभूते, जमवत्थंतरं वए ॥२॥ विवण्णमुहलावण्णे, अइदीणा विमणदुम्मणा । सुणे चुण्णे य मूढे से, मंददरदीहनिस्ससे ॥३॥ अविस्सामदुक्खहेऊहिं, असुहं तेरिच्छनारयं । कम्मं निब्बंधइत्ताणं, भमिही भवपरंपरं ॥४॥ एवं खओवसमाओ, तं कुंथुवइयरजं दुहं । कहकहवि बहुकिलेसेणं, जइ खणमेक्कं तु उवसमे ॥५॥ ता महकिलेसमुत्तिन्नं, सुहियं से अत्ताणयं । मन्नंतो पमुइओ हिट्ठो, सत्थचित्तो विचिट्ठई ॥६॥ चिंतई किल निव्वुओमि अहं, निदलियं दुक्खंपि मे । कंडुयणादीहिं सयमेव, न मुने एवं जहा मए ॥७॥ रोदज्झाणगएणं इहं, अद्वज्झाणे तहेव य । संवग्गइत्ता उ तं दुक्खं, अणंताणंतगुणं कडं ॥८॥ जं वाणुसमयमणवरयं, जहा राई तहा दिणं । दुहमेवाणुभवमाणस्स, वीसामो नो वसे (भवे) ज्ज मो ॥९॥ खणंपि नरयतिरिएसु, सागरोवमसंख्या । रसरस विलिज्जए हिययं, जं वा इच्चंतताणवि ॥१०॥ अहवा किं कुंथुजणियाउ, मुक्को सो दुक्खसंकडा । खीणट्ठकम्मस रिसा मो, भवेज्ज जणुमेत्तेणेव उ ॥१॥ कुंथुमुवलक्खणं इहइं, सव्वं पच्चक्खं दुक्खदं । अणुभवमाणोवि जं पाणी, ण याणंती तेण वक्खई ॥२॥ अन्नेवि उ गुरुयरे, दुक्खे सव्वेसिं संसारिणं । सामन्ने गोयमा ! ताकिं, तस्स ते णोदए गए ? ॥३॥ हण मरहं जम्मजम्मेसुं, वायावि उ केइ भाणिरे । तमवीह जं फलं देज्जा, पावं कम्मं पवुज्जयं ॥४॥ तस्सुदया बहुभवग्गहणे, जत्थ जत्थोववज्जइ । तत्थ तत्थ स हम्मंतो, मारिज्जंतो भमे सया ॥५॥ जे पुण अंगउवंगं वा, आक्खिं कण्णं च णासियं । कडिअट्ठिपट्ठिभंगं वा, कीडपयंगाइपाणिणं ॥६॥ कयं वा कारियं वावि कज्जंतं वाऽह अणुमयं । तस्सुदया चक्कनालिवहे, पीलीही सो तिले जहा ॥७॥ इक्कं वा णो दुवे तिण्णि, वीसं तीसं न पाविय । संखेज्जे वा भवग्गहणे, लभते दुक्खपरंपरं ॥८॥ असूया मुसाऽनिद्वयणं, जं पमायअन्नाणादोसओ । कंदप्पनाहवाएणं, अभिनिवेसेण वा पुरो (णो) ॥९॥ भणियं भणावियं वावि, भन्नमाणं च अणुमयं । कोहा लोहा भया हासा, तस्सुदया एयं भवे ॥१०॥ मूगो पूइमुहो

मुक्खो, कल्लविलल्लो भवे भवे । विहलवाणी सुयट्ठोवि, सब्बत्थऽब्भक्खणं लभे ॥१॥ अवितह भणियं नु तं सब्बं, अलियवयणंपि नालियं । जं छज्जसिनियायहियं, निदोसं सब्बं तयं ॥२॥ एवं-चोरिकादिफलं सब्बं, कम्मरंभं किसानियं । लब्धस्सावि भवे हाणी, अन्नजम्मकया इहं ॥३॥ एवं मेहुणदोसेणं, वेदित्ता थावरत्तणं । केसिणमणंतकालाउ, माणुसजोणी समागया ॥४॥ दुक्खं जरति आहारं, अहियं सित्थंपि भुजियं । पीडं करेइ तेसिं तु, तण्हा वाहि (बाहे) खणे खणे ॥५॥ अब्बाणं मरणं तेसिं, बहुजप्पं कट्ठासणं । थाणुव्वालं णिविन्नाणं, निद्दाए जंति णो वणिं ॥६॥ एवं परिग्गहारंभदोसेणं नरगाउयं । तेत्तीससागरूक्कोसं, वेइत्ता इहमागया ॥७॥ छुहाए पीडिज्जंति, तत्तभुत्तुत्तरेऽविय । वरंता हत्तिसंतत्तिं, नो गच्छती पवसे जहा ॥८॥ कोहादीणं तु दोसेणं, घोरमासीविसत्तणं । वेइत्ता नारयं भूओ, रोदमिच्छा भवंति ते ॥९॥ दढकूडकवडनियडीए, डंभाओ सुइयं गुरू । वेइत्ता चित्ततेरित्तं, माणुसजोणिं समागया ॥१०॥ केई बहुवाहिरोगाणं, दुक्खसोगाण भायणं । दारिदकलहमभिभूया, खिंसणिज्जा भवंतिह ॥१॥ तक्कम्मोदयदोसेणं, निच्चं पज्जलियबोदिणं । ईसाविसायजालाहिं, धगधगधगधगस्स (य) ॥२॥ जेमंपि गोयमा ! बाले, बहुदुहसंधुक्कियाण य । तेसिं दुच्चरियदोसो, कस्स रूसंतु ते इह ? ॥३॥ एवं वयनियमभंगेणं, सीलस्स उ खंडणेण वा । असंजमपवत्तणया, उस्सुत्तमगायरणा ॥४॥ णेगेहिं वितहायरणेहिं, पमायासेवणाहि य । मणेणं अहवा वायाए, अहवा काएण कत्थई, कयकारगाणुमएहिं वा, पमायासेवणेण य ॥५॥ तिविहेणमणिदियमगरहियमणालोइयम-पडिक्कंतमकयपायच्छित्तमविसुद्धसयदोसउससल्ले आमगब्भेसुं पच्चिय अणंतसो वियलंते, दुतियचउपंचछणहं मासाणं असंबद्धी करसिरचरणछवी ॥१॥ लब्धेवि माणुसे जम्मे, कुट्ठादीवाहिसंजुए । जीवते चेव किमिएहिं, खज्जंती मच्छियाहि य, अणुदियहं खडखंडेहिं, सडं हडस्स सडे तणु ॥६॥ एवमादीदुक्खाभिभूयए, पलज्जणिज्जे खिंसणिज्जे, निंदणिज्जे गरहणिज्जे उव्वेयणिज्जे अपरिभोगे, नियसुहिसयणबंधवाणंपि भवतीति दुरप्पणो ॥७॥ अज्झवसायविसेसं तं, पडुच्चा केइ तारिसं । अकामनिज्जराए उ, भूयपिसायत्तणं लभते ॥८॥ पुव्वसल्लस्स दोसेणं, बहुभवंतरछाइणो । अज्झवसायविसेसं तं, पडुच्चा केई तारिसं ॥९॥ दससुवि दिसासु उब्बुद्धो, निच्चदूरप्पिए दढं । णिरूत्थल्लनिरूस्सासो, निराहारेण पाणए ॥१०॥ संपिडियंगमंगो य, मोहमदिराए घुम्मरिए । अदिट्ठुग्गमणअत्थमणे, भवे पुढवीए गोलया किमी ॥१॥ भवकायट्ठितीए वेएत्ता, तं तहिं किमियत्तणं । जइ कहवि लहंति मणुयत्तं, तो उ तो हुंति णपुंसगे ॥२॥ अज्झवसायविसेसं तं, पवंहंते अइकूरघोररूढं । तारिसेवं महसंधुक्किया, मरितुं जम्म जंति वणस्सइ ॥३॥ वणस्सइ गए जीवे, उब्बपाए अहोमुहे । विचिट्ठति अणंतयं कालं, नो लभे बेईदियत्तणं ॥४॥ भवकायट्ठितीए वेएत्ता, तमेगेबितिचउरिंदियत्तणं । तं पुव्वसल्लदोसेणं, तेरिच्छेसूवज्जिउं ॥५॥ जइ णं भवे महामच्छे, पक्खीवसहसीहादओ । अज्झवसायविसेसंत तं, पडुच्च अच्चंतकूरयरं ॥६॥ कुणिममाहारत्ताए, पंचेदियवहेण य । अहो अहो पविस्संति, जाव पुढवी उ सत्तमा ॥७॥ तं तारिसं महाघोरं, दुक्खमणुभविउं चिरं । पुणोवि कूरतिरिएसु. उव्वज्जिय नरयं वए ॥८॥ एवं नरयतिरिच्छेसुं, परियट्ठंतो विचिट्ठई । वासकोडीएवि नो सक्का कहिउं, जं तं दुक्खं अणुभवमाणगे ॥९॥ अह खरूढबइल्लेसुं, भवेज्जा तब्भवंतरे । सगडाइट्ठा (यड्ढ) णभरूव्वहणखुत्तुण्हसीयायवं ॥१०॥ वहबंधणंकणणासाभेदणिल्लंछणं तहा । जमलाराईहिं कुच्चाहि कुच्चिज्जंताण य, जहा राई तहा दियहं, सब्बद्धा उ सुदारूणं ॥१॥ एवमादीदुक्खसंधं, अणुहवंति चिरेण उ । पाणे य एहिंति कहकहवि, अट्ठज्झाणदुहट्टिए ॥२॥ अज्झवसायविसेसं तं, पडुच्चा केइ कहवि लब्भंते माणुसत्तणं । तप्पुव्वसल्लदोसेणं, माणुसत्तेवि आगया ॥३॥ भवंति जम्मदारिद्दा, वाहीखसपामपरिगया । एवं अदिट्ठकल्लाणे, सब्बजणस्स सिरिं हाइउं ॥४॥ संतप्पंते दढं मणसा, अकयभवे णिहणं वए । अज्झवसायविसेसं तं, पडुच्चा केइ तारिसं ॥५॥ पुणोवि पुढविमाईसुं, भमंती ते दुतिचउरोपंचेदिएसु वा । तं तारिसं महादुक्खं, सुरूढं घोरदारूणं ॥६॥ चउगइसंसारकंतारे, अणुभवमाणे सुदूसहं । भवकायट्ठितीए हिंडते, सब्बजोणीसु गोयमा ॥७॥ चिट्ठंति संसरेमाणा जम्ममरणबहुवाहिवेयणारोगसोगदालिदकलहब्भक्खाणसंभवि (वावि) गब्भव सादिसुक्खसंधुक्किए तप्पुव्वसल्लदोसेणं निव्वाणाणंदमहूस-वथामजोग्गअट्ठारससीलंगसहस्साहिट्ठियस्स सब्वासुहपावकम्मट्ठरासिनिदहण-अहिंसालक्खणसमणधम्मस बोहिं णो पावेतित्ति ॥२॥ 'अज्झवसायविसेसं तं, पडु (मु) च्चा केई तारिसं । पोग्गलपरियट्ठलक्खेसुं, बोहिं कहकहवि पावए ॥८॥ एवं सुदुल्लहं बोहिं, सब्बदुक्खखयंकरं ।

लद्धुणं जे पमाएज्जा, तहुत्तं सो पुणो वए ॥९॥ तासुं तासुं च जोणीसुं, पुव्वुत्तेण कमेण उ । पंथेणं तेणई चेव, दुक्खे ते चेव अणुभवे ॥१०॥ एवं भवकायद्वितीए, सव्वभावेहिं पोग्गले । सव्वे सपज्जए लोए, सव्ववन्नंतरेहिं य ॥१॥ गंधत्ताए रसत्ताए, फासत्ताए संठाणत्ताए । परिणामेत्ता सरीरेणं, बोहिं पाविज्ज वा ण वा ॥२॥ एवं वयनियमभंगं, जे कज्जमाणमुवेक्खए । अह सीलं खंडिज्जंतं, अहवा संजमविराहणं ॥३॥ उम्मग्गपवत्तणं वावि, उस्सुत्तायरणंपि वा । सोऽविय अणंतरूत्तेण, कमेणं चउगई भवे (मे) ॥४॥ रूसउ तुसओ परो मा वा, विसं वा परियत्तओ । भासियव्वा हिया भासा, सपक्खगुणकारिया ॥५॥ एवं लद्धामवि बोहिं, जइ णं तो भवइ निम्मला । ता संवुडासवदारे (पगइठिइपएसाणुभावियबंधो) नेहो सो नो य निज्जरे ॥६॥ एमादीघोरकम्मट्टजालेणं कसियाण भो ॥ सव्वसिमवि सत्ताणं, कुओ दुक्खविमोयणं ? ॥७॥ पुव्विं दुक्कयदुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं निययकम्माणं ण अवेइयाणं मोक्खो घोरतवेण अज्झोसियाण वा ॥३॥ अणुसमयं वच्च (बन्ध) ए कम्मं, णत्थि अबंधो उ पाणिणो । मोत्तुं सिद्धा यऽजोगी य, सेलेसीसंठिए तहा ॥८॥ सुहं सुहज्झवसाएणं, असुहं दुट्ठज्झवसायओ । तिक्खयरेणं तु तिक्खयरं, मंदं मंदेण संचिणे ॥९॥ सव्वेसिं पावयम्माणं एगीभूयाण जेतियं रासिं भवे तमसंखगुणं वयतवसंजमचारित्तखंडणविराहणेणं उस्सुत्तम्गपन्नवणपवत्तणआयरणोवेक्खणेण य समज्जिणे ॥४॥ 'अपरिमाणगुरुतुंगा, महंती घणनिरंतरा । पावरासी खयं गच्छे, जहा तं सव्वो बाहिं (वा हिय) मायरे ॥११०॥ आसवदारे निरुंभित्ता, अप्पमादी भवे जया । बंधिमप्पं बहुं वेदे, जइ सम्मत्तं सुनिम्मलं ॥१॥ आसवदारे निरुंभेत्ता, आणं नो खंडए जया । दंसणनाणचरित्तेसुं, उज्जुत्तो जो दढं भवे ॥२॥ तया वेए खणं बंधिं, पोराणं सव्वं खवे । अणुइण्णमवि उईरित्ता, निज्जियघोरपरिसहो ॥३॥ आसवदारे निरुंभित्ता, सव्वासायणविरहिओ । सज्झायज्झाणजोगेसुं, धीरवीर तवे रओ ॥४॥ पालिज्जा संजमं कसिणं, वाया मणसा उ कम्मुणा । जया तया ण बंधिज्जा, उक्कोसमणंतं च निज्जरे ॥५॥ सव्वावस्सगमुज्जुत्तो, सव्वालंबणविरहिओ । विमुक्को सव्वसंगेहिं, सबज्झभंतरेहिं य ॥६॥ गयरागदोसमोहे य, निन्नियाणो भवे जया । नियत्तो विसयतत्तीए, भीए गब्भपरंपरा ॥७॥ आसवदारे निरुंभित्ता, खंतादी यमेवि संठिए । सुक्कज्झाणं समारूहिय, सेलेसिं पडिवज्जए ॥८॥ तया न बंधए किंचि, चिरबद्धं असेसंपि निद्वहिय झाणजोगअग्गीए भसमीकरे दढं लहुपंचक्खरूगिरणमित्तेण कालेण भवोवग्गाहियं ॥५॥ 'एवं- 'जीववीरियसामत्था, पारंपरण गोयमा ॥ पविमुक्ककम्ममलकवया, समएणं जंति पाणिणो ॥९॥ सासयसोक्खमणाबाहं, रोगजरमरणविरहियं । अदिट्ठदुक्खदारिदं, निच्चाणंदं सिवालयं ॥१२०॥ अत्थेगे गोयमा ! पाणी, जे एयमणुपवेसिय । आसवदारनिरोहादी, इयराहयसोक्खं चरे ॥१॥ ता जाव कसिणट्ठकम्माणि, घोरतवसंजमेण उ । णो णिद्वहे सुहं ताव, नत्थि सिविणेऽवि पाणिणं ॥२॥ दुक्खमेवमविस्सामं, सव्वेसिं जगजंतूणं । एक्कसमयं न समभावे, जं सम्मं अहियासियंतरे ॥३॥ थेवमवि थेवतरं, थेवयरस्सावि थेवयं । जेणं गोयमा ! ता पेच्छ, कुंथु तस्सेव य ण तणू ॥४॥ पायतलेसु न तस्सावि, तसिमेगदेसमणु । फरिसंतो कुंथु जेणं, चरई कस्सइ सरीरगे ॥५॥ कुंथुणं सयसहस्सेणं, तोलियं णो पलं भवे । एगस्स कित्तिय गत्तं ?, किं वा तुल्लं भवेज्ज से ? ॥६॥ तस्स य पाययलदेसेणं, तस्स फरिसिउ तमवत्थंतरं । पुव्वुत्तं गोयमा ! गच्छे, पाणी ता णं इमं मुणे ॥७॥ भमंतसंचरंतो य, हिडिणो मइले तणू । न करे कुंथूखयं ताणं, णियवासी य चिरं वसे ॥८॥ अह चिट्ठे खणमेगं तु बीयं नो परिवसे खणं । अह बीयंपि विरत्तेज्जा, ता जुज्जउऽयं तु गोयमा ! ॥९॥ रागेणं नो पओसेणं, मच्छरेणं न केणई । नं यावि पुव्ववेरेणं, खेड्ढातो कामकारओ ॥१३०॥ कुंथू कस्सइ देहिस्स, आरूहेइ खणं तणुं । वियलिंदी भुण पाणे वा, जलंतग्गिं वावी विसे ॥१॥ न चित्ते तं जहा मेस, पुव्ववेरीऽहवा सुही । ता किंची मम (ह) पावं वा, संजणेमि एयस्सऽहं ॥२॥ पुव्वकडपावकम्मस्स, विराभे पुंजतो फले । तिरिउड्ढाहदिसाणुदिसं, कुंथू हिडे वराय से ॥३॥ चरंते व महावाए, सारीरं दुक्खमाणसं । कुंथूवि दूसहं जत्ते, रोद्वट्ठज्झाणवड्ढणं (२८०) ॥४॥ ता सल्लमारभेत्ताण, मणजोगन्नयरेण वा । समयावलियमुहुत्तं वा, सहसा तस्स विवागयं ॥५॥ कह सहिहं बहुभवग्गहणे, दुहमणुसमयमहणिसं । घोरपयंडं व महारोदं ? हाहाऽऽकंदपरायणा ॥६॥ नारयतिरिच्छजोणीसु. अज्झा (त्ता) णासरणोऽविय । एगागी ससरीरेणं. असहाया कडु विरसं घणं ॥७॥ असिवणवेयरणीजंते, करवत्ते कूडसामलिं । कुं भीयवायसा सीह, एमादी नारए दुहे ॥८॥ णत्थं कणवहबंधे य, पल्लुक्कं तविकत्तणं । सगडाकड्ढणभरूव्वहणं, जमला य तणहा छुहा ॥९॥

खरखुरचमृणसत्यग्गीखोभणंजणमाइए । परयत्ताऽवसणित्तिसे, दुक्खे तेरिच्छे तहा ॥१४०॥ कुंथूपयफरिसजणयंपि, दुक्खं नऽहियासिउं तरे । ता तं महदुक्खसंघट्टं, कह नित्थरिहि सुदारुणं ? ॥१॥ नारयतेरिच्छदुक्खाउ, कुंथूजणियाउ अंतरं । मंदरगिरिअणंतगुणियस्स, परमाणुस्सावि नो घडे ॥२॥ चिरयाले संमुहं पाणी, कंखंतो आसाए निच्च (च्छि) ओ । भवे दुक्खमईयंपि, सरंतोऽच्चंतदुक्खिओ ॥३॥ बहुदुक्खसंकडट्टेत्थं, आवयालक्खपरिणए । संसारे परिवसे पाणी, अयंडे महुबिंदु जहा ॥४॥ पत्थापत्थं अयाणते, कज्जाकज्जं हियाहियं । सच्चासच्चमसच्चं च, चरणिज्जाचरणिज्जं तहा ॥५॥ एवइयं वइयरं सोच्चा, दुक्खस्संतगवेसिणो । इत्थीपरिगगहारंभे, चेज्जा घोरं तवं चरे ॥६॥ बियासणत्था सयिया परंमुही, सुयलंकरिया वा अनलंकिया वा । तिरिक्खमाणोपमया हि दुब्बलं, मणुस्समालेहगयावि करिसई ॥७॥ चित्तभित्तिं न निज्झाए, नारिं वा सुयलंकियं । भक्खरंपिव दट्टुणं, दिट्ठिं पडिसमाहरे ॥८॥ हत्थपायपडिच्छिन्नं, कन्ननासोडुवियप्पियं । सडमाणीं कुट्टवाहीए, (तमवित्थीयं दूरयरेणं) बंभयारी विवज्जए ॥९॥ थेरभज्जा य जा इत्थी, पच्चंगुभडजोव्वणा । जुन्नकुमारिं पउत्थवइयं, बालविहवं तहेव य ॥१५०॥ अंतेउरवासिणीं चेव, सपरपासंडसंसियं । दिक्खियं साहुणीं वावि, वेसं तहय नपुंसगं ॥१॥ कण्हिं गोणिं खरिं चेव, वडवं अविलं अविं तहा । सिप्पित्थिं पंसुलिं वावि जंमरोगमहिलं तहा ॥२॥ चिरसंसट्ठमविलक्खं, पमादी पावित्थिओ । पगमंती जत्थ रयणीए, अइपइरिक्के दिणस्स वा ॥३॥ तं वसहियं संनिवेसं वा, सब्बोवाएहिं सब्बहा । दूरयरं सुदूरदूरेणं, बंभयारी विवज्जए ॥४॥ एसिं सद्धिं संलावं, अब्बाणं वावि गोयमा ॥ अन्नासु वावि इत्थीसु, खणद्धं विवज्जए ॥१५५॥ से भयवं ! किमित्थीयं णो णं णिज्झाएज्जा ?, गोयमा ! णो णं णिज्झाएज्जा, से भयवं ! किं मुणियत्थं वत्थालंकरियविहूसियं इत्थीयं नो णं निज्झाएज्जा उयाहुणं विणियंसणिं ?, गोयमा ! उभयहावि णं णो णं णिज्झाएज्जा. से भयवं ! किमित्थीयं नो आलवेज्जा ?, गोयमा ! नो णं आलवेज्जा, से भयवं ! किमित्थीसु सद्धिं खणद्धमवि णो संवसेज्जा ?. गोयमा ! नो णं संवसिज्जा. से भयवं ! किमित्थीसु सद्धिं नो अब्बाणं पडिवज्जेज्जा ?. एगे बंभयारी एगित्थीए सद्धिं नो पडिवज्जेज्जा ॥६॥ से भयवं ! केणं अट्टेणं एवं वुच्चइ-जहा णं नो इत्थीणं निज्झाएज्जा नो णमालवेज्जा नो णं तीए सद्धिं परिवसेज्जा नो णं अब्बाणं पडिवज्जेज्जा ?, गोयमा ! सब्बप्पयारेहिं णं सव्वित्थीयं अच्चत्थं गउक्कडत्ताए रागेणं संधुक्किज्जमाणी कामग्गीए संपलित्ता सहावओ चेव विसएहिं बाहिज्जइ, तओ सब्बप्पयारेहिं णं बाहिज्जमाणी अणुसमयं सब्बदिसिविदिसासां णं सब्बत्थ विसए पत्थिज्जा, जाव णं सब्बत्थ विसए पत्थिज्जा ताव णं सब्बत्थ पयारेहिं णं सब्बहावि पुरिसे संकप्पेज्जा. जाव णं पुरिसे संकप्पेज्जा ताव णं सोईदिओवओगत्ताए चक्खुरिदिओवओगत्ताए रसणिदिओवओगत्ताए घाणिदिओवओगत्ताए फासिदिओवओगत्ताए जत्थ णं केई पुरिसे कंतरूवेइ वा अकंतरूवेइ वा पडुप्पन्नजोव्वणेइ वा अपडुप्पन्नजोव्वणेइ वा दिट्ठपुव्वेइ वा अदिट्ठपुव्वेइ वा इट्ठिमंतेइ वा अणिट्ठिमंतेइ वा इट्ठिपत्तेइ वा अणिट्ठिपत्तेइ वा विसयाउरेइ वा निव्विन्नकामभोगेइ वा उद्धयबोदीएइ वा अणुद्धयबोदीएइ वा महासत्तेइ वा हीणसत्तेइ वा महापुरिसेइ वा कापुरिसेइ वा समणेइ वा माहणेइ वा अन्नयरे वा निदियाहमहीणजाइए वा तत्थ णं ईहापोहवीमंसं पउजित्ताणं संजोगसंपत्तिं परिकप्पेज्जा, जाव णं संजोगसंपत्तिं परिकप्पेज्जा ताव णं से चित्ते संखुद्धे भवेज्जा, जाव णं से चित्ते संखुद्धे भवेज्जा ताव णं से चित्ते विसंवएज्जा, जाव णं से चित्ते विसंवएज्जा ताव णं से देहे सेएणं अब्बासेज्जा, जाव णं से देहे सेएणं अब्बासेज्जा ताव णं से दरविदरे इहपरलोगावाए पम्हुसेज्जा, जाव णं से दरविदरे इहपरलोगावाए पम्हुसेज्जा ताव णं चेच्चा लज्जं भयं अयसं अकित्तिं मेरं अच्चट्टाणाओ णीयट्ठाणं ठाएज्जा, जाव णं उच्चट्टाणाओ नीयट्ठाणं ठाएज्जा ताव णं वच्चेज्जा असंखेज्जाओ समयावलियाओ, जाव णं निज्जंति असंखेज्जाओ समयावलियाओ ताव णं जं पढमसमयाओ कम्मट्ठिइयं तं बियसमयं पडुच्च तइयादियाण समयाणं संखेज्जं असंखेज्जं अणंतं वा अणुक्कमसो कम्मठिइं संचिणिज्जा. जाव णं अणुक्कमसो अणंतकम्मट्ठिइं सचिणिज्जा ताव णं असंखेज्जाइ अवसप्पिणीकोडिलक्खाइ जावइएणं कालेणं परिवत्तंति तावइयं कालं दोसुं चेव निरयतिरिच्छासु गतीसुं उक्कोसट्ठिइयं कम्मं आसंकलेज्जा. जाव णं उक्कोसठितियं कम्ममासंकलेज्जा ताव णं से विवण्णुजुत्तिविवण्णकंतिविचलियलायण्णसिरीयं निज्जट्ठदित्तितेयं बोदी भवेज्जा, जाव णं चुयकंतिलावण्णसिरीयं णित्तेयं बोदी भवेज्जा ताव णं सेसीइज्जा फरिसिदिए.

जाव णं सीएज्जा फरिसिदिए ताव णं सब्बहा विवट्टेज्जा सब्बत्थ चक्खुरागे. जाव णं सब्बत्थ विवट्टेज्जा चक्खुरागे ताव णं रागारूणे नयणजुयले भवेज्जा. जाव णं रागारूणे नयणजुयले भवेज्जा ताव णं रागंधत्ताए ण गणेज्जा सुमहंतगुरूदोसे वयभंगे न गणेज्जा सुमहंतगुरूदोसे नियमभंगे न गणेज्जा सुमहंतघोरपावकम्मसमायरणं सीलखंडणं न गणेज्जा सुमहंतसव्वगुरूपावकम्मसमायरणं संजमविराहणं न गणेज्जा घोरंधयारपरलोगदुक्खभयं न गणेज्जा आयं न गणेज्जा सकम्मगुणट्टाणं न गणेज्जा ससुरासुरस्सावि णं जगस्स अलंघणिज्जं आणं न गणेज्जा अणंतहुत्तो चुलसीइजोणिलक्खपरिवत्तगब्भपरंपरं अलद्धणिमिसद्धसोक्खं चउगइसंसारदुक्खं ण पासिज्जा जं पासणिज्जं पासेज्जा जं अपासणिज्जं सब्बजणसमूहमज्झसंनिविट्ठुट्ठिया णिवन्नचकमियनिरिक्खिज्जमाणी वा दिप्पंतकिरणजालदसदिसी-पयासियतवंततेयरासी सूरीएवि तहावि णं पासेज्जा सुन्नंधयारे सब्बदिसाभाए, गाव णं रागंधत्ताए ण गणेज्जा सुमहल्लगुरूदोसवयभंगे सीलखंडणे संयमविराहणे परलोगभए आणाभंगाइक्कमे अणंतसंसारभए पासेज्जा अपासणिज्जे सब्बजणपयडदिणयरेवि णं मन्नेज्जा सुन्नंधयारे सब्बे दिसाभाए ताव णं भवेज्जा अच्चंतनिब्भट्ठसोहग्गाइसए. विच्छाए रागारूणपंडुरे दुइंसणिज्जे अणिरिक्खणिज्जे वयणकमले भवेज्जा, जाव च णं अच्चंतनिब्भट्ठ जाव भवेज्जा ताव णं फुरूफुरेज्जा सणियं सणियं पोंडुपुडनियबवच्छोरुहबाहुलइरकंठपएसे, जाव णं फुरूफुरेति पोंडुपुडनियं बवच्छोरुहबाहुवलयउरकंठप्पएसे ताव णं मोट्टायमाणी अंगपाडियाहिं निरुवलक्खे वा सोवलक्खे वा भंजेज्जा सब्बंगोवंगे, जाव णं मोट्टायमाणी अंगपालियाहिं भंजेज्जा सब्बंगोवंगे ताव णं मयणसरसन्निवाएणं जज्जरियसंभिन्ने (निभे) सब्बे रोमकूवे तणू भवेज्जा, जाव णं मयणसरसन्निवाएणं विद्धंसिए बोदी भवेज्जा ताव णं तहा परिणमेज्जातणूजहा णं मणं पयलंति धातूओ, जाव णं मणं पयलंति धातूओ ताव णं अच्चत्थं बाहिज्जंति पोग्गलनियंबोरुबाहुलइयाओ, जाव णं अच्चत्थं बाहिज्जइ नियं ताव णं दुक्खेणं धरेज्जा गत्तयट्ठिं, जाव णं दुक्खेणं धरेज्जा गत्तयट्ठिं तव णं से णोवलक्खेज्जा अतीयं सरीरावत्थं, जाव णं णोवलक्खेज्जा अतीयं सरीरावत्थं ताव णं दुवालसेहिं समएहिं दरनिच्चिट्ठं भवे बोदी, गव णं दुवालसहिं दरनिच्चिट्ठे बोदि भवेज्जा ताव णं पडिखलेज्जा से ऊसासनीसासे, जाव णं पडिखलेज्जा उस्सासनीसासे ताव णं मंदं मंदं ऊससेज्जा मंदं मंदं नीससेज्जा, जाव णं एयाइं इत्तियाहं भावंतरअवत्थंतराईं विहारेज्जा ताव णं जहा गहग्घत्थे केइ पुरिसेइ वा इत्थिएइ वा विसंतुलाए पिसायाए भारतीए असंबद्ध संलवियं विसंतुलं तं अच्चंतं उल्लविज्जा एवं सिया णं इत्थीयं, विसमावत्तमोहणमम्मणालावेणं पुरिसे दिट्ठपुव्वेइ वा अदिट्ठपुव्वेइ वा कंतरूवेइ वा अकंतरूवेइ वा गयजोव्वणेइ वर पडुप्पन्नजोव्वणेइ वा महासत्तेइ वा हीणसत्तेइ वा सप्पुरिसेइ वा जाव णं अन्नयरे वा केई निदियाहमहीणजाइए वा अज्झत्थेणं ससज्झसेणं आमंतेमाणी उल्लावेज्जा, जाव णं संखेज्जभेदभिन्नेणं सरागेणं सरेणं दिट्ठीए वा पुरिसे उल्लावेज्जा निज्झाएज्जा ताव णं जं तं असंखेज्जाइ अवसप्पिणीउस्सप्पिणीकोडिलक्खाइं दोसुं नरयतिरिच्छासु गतीसुं उक्कोसट्ठितीयं कम्मं आसंकलियं आसि तं निबंधिज्जा, नो णं बद्धपुट्ठुं करेज्जा, सेऽवि णं जंसमयं पुरिसस्स णं सरीरावयवफरिसणाभिमुहे भवेज्जा णो णं फरिसेज्जा तंसमयं चेव तं कम्मट्ठिइं बद्धपुट्ठुं करेज्जा, नो णं बद्धपुट्ठनिकायंति ॥७॥ एयावसरम्मि उ गोयमा ! संजोगेणं संजुज्जेज्जा, सेऽवि णं संजोए पुरिसायत्ते, पुरिसेऽवि णं जे णं ण संजुज्जे से धन्ने जे णं संजुज्जे से अधण्णे ॥८॥ से भयवं ! केणं अट्टेणं एवं वुच्चइ जहा पुरिसेवि णं जे णं न संजुज्जे से धन्ने जे णं संजुज्जे से णं अधन्ने ?, गोयमा ! जे णं से तीए इत्थीए पावाए बद्धपुट्ठकम्मट्ठिइं चिट्ठइ से णं पुरिससंगेणं निकाइज्जइ, तेणं तु बद्धपुट्ठनिकाइएणं कम्मेणं सा वराई त तारिसं अज्जवसायं पडुच्चा एगिदियत्ताए पुढवादीसुं गया समाणी अणंतकालपरियट्टेणवि णं णो पावेज्जा बेइतियत्ताणं, एवं कहकहवि बहुकेसेण अणंतकालाओ एगिदियत्तणं खविय बेइदियत्तं तेइदियत्तं चउरिदियत्तमवि केसेणं वेयइत्ता पंचेदियत्तणं आगया समाणी दुब्भगित्थियं पंडतेरिच्छं वेयमाणी हाहाभूयकट्ठसरणा सिविणेवि अदिट्ठसोक्खा निच्चं संतोवुव्वेविया सुहिसयणबंधवविवज्जिया आजम्मं कुच्छणिज्जं गरहणिज्जं निंदणिज्जं खिंसणिज्जं बहुकम्मंतेहिं अणेगचाडुसएहिं लद्धोदरभरणा सब्बलोगपरिभूया चउगईए संसरेज्जा, अन्नं च णं गोयमा ! जावइयं तीए पावइत्थीए बद्धपुट्ठनिकाइयं कम्मट्ठिइयं समज्जियं तावइयं इत्थियं अभिलसिउकामे पुरिसे उक्किट्ठुक्किट्ठयरं अणंतं कम्मट्ठिइं बद्धपुट्ठनिकाइयं समज्जिणिज्जा. एतेणं अट्टेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहा णं पुरिसेऽवि णं जे णं नो संजुज्जे से णं धन्ने णं संजुज्जे से णं

अधत्ते ॥९॥ भयवं ! (केस णं) पुरिसेस णं पुच्छा जाव णं वयासी ? गोयमा ! छव्विहे पुरिसे नेये, तंजहा-अहमाहमे अहमे विमज्झिमे उत्तमे उत्तमुत्तमे सव्वुत्तमे ॥१०॥ तत्थ णं जे सव्वुत्तमे पुरिसे से णं पच्चंगुब्भडजोव्वणसव्वुत्तमरूवलावण्णकंतिकलियाएवि इत्थीए नियंबारूढो वाससयंपि चेद्विज्जा णो णं मणसावि तं इत्थियं अभिलसेज्जा ॥११॥ जे णं तु से उत्तमुत्तमे से णं जहकहवि तुडितिहाएणं मणसा समयमेकं अभिलसे तहावि बीयसमए मणं संनिरुंभिय अत्ताणं निदेजा गरहेज्जा, न पुणो बीएणं तज्जंमे इत्थीयं मणसावि उ अभिलसेज्जा. जे णं से उत्तमे पुरिसे से णं जहकहवि खणं मुहुत्तं वा इत्थियं कामिज्जमाणिं पेक्खिज्जा तओ मणसा अभिलसेज्जा जाव णं जामं वा अब्बजामं वा णो णं इत्थीए समं विकम्मं समायरेज्जा ॥१२॥ जइ णं बंभयारी कयपच्चक्खाणाभिग्गहे, अहा णं नो बंभयारी नो कयपच्चक्खाणाभिग्गहे तो णं नियकलत्ते भयणा, ण उणं तिव्वेसु कामेसुं अभिलासी भविज्जा, तस्स एयस्स णं गोयमा ! अत्थि बंधे, किं तु अणंतसंसारियत्तणं नो निबंधिज्जा ॥१३॥ जे णं से विमज्झिमे से णं नियकलत्तेण सद्धिं चिय इमं समायरेज्जा, णो णं परकलत्तेणं, एसे य णं जइ पच्छा उग्गबंभयारी नो भवेज्जा तो णं अज्झवसायविसेसं तं तारिसमंगीकाऊणं अणंतसंसारियत्तणे भयणा, जओ णं केई अभिगयजीवाइपयत्थे भव्वसत्ते आगमाणुसारेणं सुसाहूणं धम्मोवद्वंभदाणाई दाणसीलतवभावणामइए चउव्विहे धम्मखंधे समणुद्वेज्जा से णं जइकहवि नियमवयभणं न करेज्जा तओ णं सायपरंपरणं सुमाणुसत्तदेवत्ताए जाव णं अपरिवडियसम्मत्ते निसग्गेण वा अभिगमेण वा जाव अट्टारससीलंगसहरस्सधारी भवित्ताणं निरूद्धासवदारे विहूयरयमले पावयं कम्मं खवेत्ताणं सिज्झिज्जा ॥१४॥ जे य णं से अहमे से णं सपरदारासत्तमाणसे अणुसमयं कूरज्झवसायज्झवसियचित्तेहिं सारंभपरिग्गहाइसु अभिरए भवेज्जा. तहा णं जे य से अहमाहमे से णं महापावकम्मे सव्वाओ इत्थीओ वाया मणसा य कंमुणा तिविहंतिविहेणं अणुसमयमभिलसेज्जात हा अच्चंतकूरज्झवसायज्झवसिएहिं चित्तेहिं सारंभपरिग्गहासत्ते कालं गमेज्जा. एसिं दोणहंपि णं गोयमा ! अणंतसंसारियत्तणं णेयं ॥१५॥ भयवं ! जे णं से अहमे जेऽवि णं से अहमाहमे पुरिसे तेसिं च दोणहंपि अणंतसंसारियत्तणं समक्खायं तो णं एगे अहमे एगे अहमाहमे एतेसिं दोणहंपि पुरिसावत्थाणं के पइविसेसे ? , गोयमा ! जे णं से अहमपुरिसे से णं जइवि उ सपरदारासत्तमाणसे कूरज्झवसायज्झवसिएहिं चित्तेहिं सारंभपरिग्गहासत्तचित्ते तहावि णं दिक्खियाहिं साहुणीहिं अन्नयरासुं (हिं) च सीलसंरक्खणपोसहोववासनिरयाहिं दुक्खियाहिं गारत्थीहिं वा सद्धिं आवडियपिल्लियामंतिएवि समाणे णो य चियमंसमायरेज्जा. जे य णं से अहमाहमे पुरिसे से णं नियजणणिपभिई जाव णं दिक्खियाहिं साहुणीहिं समं चियमंसं समायरिज्जा. तेण चेव से महापावकम्मे सव्वाहमाहमे समक्खाए. से णं गोयमा ! पइविसेसे, तहा य जे णं से अहमपुरिसे से णं अणंतेणं कालेणं बोहिं पावेज्जा, जे य उण से अहमाहमे महापावकारी दिक्खियाहिं साहुणीहिं समं चियमंसं समायरिज्जा से णं अणंतहुत्तोवि अणंतसंसारमाहिंडिऊणंपि बोहिं नो पावेज्जा, एस णं गोयमा ! बितिए पइविसेसे ॥१६॥ तत्थ णं जे से सव्वुत्तमे से णं छउमत्थवीयरगे णेये, जे णं तु से उत्तमुत्तमे से णं अणिट्ठिपत्तपभितीए जाव णं उवसमगे वा खवए वातव णं निओयणीए. जे णं च से उत्तमे से णं अप्पमत्तसंजए णेए, एवमेएसिं निरूवणा कुज्जा ॥१७॥ जे उण मिच्छदिट्ठि भावेऊणं उग्गबंभयारी भवेज्जा हिसारंभपरिग्गहाईणं विरए से णं मिच्छदिट्ठि चेव, णो णं सम्मदिट्ठि, तेसिं चे णं अवेइयजीवाइपयत्थसब्भावाणं गोयमा ! नो णं उत्तमत्ते अभिनंदणिज्जे पसंसणिज्जे वा भवइ, जओ णं अणंतरभविए दिव्वोरालिए विसए पत्थेज्जा, अन्नं च कयादी तिदिवित्थियादओ संचिक्खिया तओ णं बंभव्वयाओ परिभंसिज्जा, णियाणकडे वा हवेज्जा ॥१८॥ जे य णं से विमज्झिमे से णं तारिसमज्झवसायमंगीकिच्चाणं विरयाविरए दद्वव्वे ॥१९॥ तहा णं जे से अहमे तहा जेणं से अहमाहमे तेसिं तु एणंतेणं जहा इत्थीसुं तहा णं नेए जाव णं कम्मद्विइयं समज्जेज्जा, णवरं पुरिसस्स णं संचिक्खणगेसुं वच्छरूहोवरितलपक्खएसुं लिगे य अहिययरं रागमुप्पज्जे, एवं एते चेव छ पुरिसविभागे ॥२०॥ कांसि च इत्थीणं गोयमा ! भव्वत्तं सम्मवददत्तं च अंगी काऊणं जाव णं सव्वुत्तमे पुरिसविभागे ताव णं चिंतणिज्जे, नो णं सव्वेसिमित्थीणं ॥२१॥ एवं तु गोयमा ! जीए इत्थीए तिकालं पुरिससंजोगसंपत्ती ण संजाया अहा णं पुरिससंजोगसंपत्तीएवि साहीणाए जाव णं तेरसमे चोदसमे पन्नरसमे णं च समए

णं पुरिसेणं सद्धिं ण संजुत्ता णो चियसंममायरियं से णं जहा घणकट्ठतणदारूसमिद्धे केइ गामेइ वा नगरेइ वा रत्तेइ वा संपलित्ते चंडानिलसंधुक्खिए पयलित्ताण २ णिडज्झिय २ चिरेणं उवसमेज्जा एवं तु णं गोयमा ! से इत्थीकामग्गी संपलित्ता समाणी णिडज्झिय २ समयचउक्केणं उवसमेज्जा, एवं इगधीसइमे बावीसइमे जाव णं सत्ततीसइमे समए, जहा णं पदीवसिहा वावन्ना पुणरवि सयं वा तहाविहेणं चुन्नजोगेण वा पयलेज्जा एवं सा इत्थी पुरिसदंसणेण वा पुरिसालावगकरिसणेण वा मदेणं कंदप्पेणं कामग्गीए पुणरवि उप्पयलेज्जा ॥२२॥ एत्थं च गोयमा ! जमित्थीयं भएण वा लज्जाए वा कुलंकुसेण वा जाव णं धम्मसद्धाए वा तं वेयणं अहियासेज्जा नो णं चियमंसं समायरिज्जा से णं धन्न से णं पुत्ता से य णं वंदा से णं पुज्जा से णं दट्ठवा से णं सब्बलक्खणा से णं सब्बकल्लाणकारया से णं सब्बुत्तममंगलनिही से णं सुयदेवया से णं सरस्सती से णं अवहुंडी से णं अच्छुया से णं इंदाणी से णं परमपवित्तुत्तमा सिद्धी मुत्ती सासया सिवगइत्ति ॥२३॥ जमित्थीयं तं वेयणं नो अहियासेज्जा चियमंसं समायरेज्जा से णं अधन्ना से णं अपुण्णा से णं अवंदा से णं अपुज्जा से णं अदट्ठवा से णं अलक्खणा से णं भग्गलक्खणा से णं सब्बअमंगलअकल्लाणभायणा से णं भट्ठसीला से णं भट्ठायारा से णं परिभट्ठचारित्ता से णं निंदणीया से णं खिंसणिज्जा से णं कुच्छणिज्जा से णं पावा सेणं पावपावा से णं महापावपावा से णं अपवित्तत्ति, एवं तु गोयमा ! चडुलत्ताए भीरुत्ताए कायरत्ताए लोलत्ताए उम्मायओ वा कंदप्पओ वा दप्पओ वा अणप्पवसओ वा आउट्टियाए वा जमित्थीयं संजमाओ परिभस्सियं दूरद्धाणे वा गामे वा नगरे वा रायहाणीए वा वेसग्गहणं अच्छड्डिय पुरिसेण सद्धिं चियमंसमायरेज्जा भुज्जो २ पुरिसं कामेज्ज वा रमेज्ज वा अहा णं तमेव दोयद्धियं कज्जमिइ पक्खिप्पेत्ताणं तमाइंचेज्जा, तं चेव आइंचमाणीं पस्सिया णं उम्मायओ वा दप्पओ वा कंदप्पओ वा अणप्पवसओ वा आउट्टियाए वा केइ आयरिएइ वा सामन्नंसंजएइ वा रायसंसिएइ वा वायलद्धिजुत्तेइ वा विन्नाणलद्धिजुत्तेस वा जुगप्पहाणेइ वा पवयणप्पभावगेइ वा तमित्थीयं अन्नं वा रमेज्ज वा कामेज्ज वा अभिलसेज्ज वा भंजेज्ज वा परिभुंजेज्ज वा जाव णं चियमंसमायरेज्जा से णं दुरंतपंतलक्खणे अहन्ने अवंदे अदट्ठवे अपत्थिए अपत्थे अपसत्थे अकल्लाणे अमंगल्ले निदणिज्जे गरहणिज्जे खिंसणिज्जे कुच्छणिज्जे से णं पावे से णं पावपावे से णं महापावे से णं महापावपावे से णं भट्ठसीले से णं भट्ठायारे से णं निब्भट्ठचारित्ते महापावकम्मकारी, जया णं पायच्छित्तमब्भुट्ठिज्जा तओ णं मंदतुरंगेणं वइरेणं उत्तमेणं संघयणेणं उत्तमेणं पोरूसेणं उत्तमेणं सत्तेणं उत्तमेणं तत्तपरिन्नत्तणेणं उत्तमेणं वीरियसामत्थेणं उत्तमेणं संवेगेणं उत्तमाए धम्मसद्धाए उत्तमेणं आउक्खएणं तं पायच्छित्तमणुचरेज्जा, ते णं तु गोयमा ! साहूणं महाणुभागाणं अट्टारसपरिहारट्ठाणाइं णव बंभचेरगुत्तीओ वागरिज्जंति ॥२४॥ से भयवं ! किं पच्छित्तेणं सुज्झेज्जा ?, गोयमा ! अत्थेगे जे णं सुज्झेज्जा, अत्थेगे जे णं नो सुज्झेज्जा, भयवं ! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ-जहा णं गोयमा ! अत्थेगे जे णं सुज्झेज्जा अत्थेगे जे णं नो सुज्झेज्जा ?, गोयमा ! अत्थेगे नियडीपहाणे सढसीले वंकसमायारे से णं ससल्ले आलोइत्ताणं ससल्ले चेव पायच्छित्तमणुचेट्ठिज्जा, से णं अविसुद्धसकलुसासए णो विसुज्झेज्जा, एतेणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहाणं गोयमा ! अत्थेगे जे णं नो सुज्झेज्जा अत्थेगे जे णं सुज्झेज्जा ॥२५॥ तहा णं गोयमा ! इत्थी य णाम पुरिसाणमहम्माणं सब्बपावकम्माणं वसुहारा तमरयपंकखाणी सोग्गइमग्गस्स णं अग्गला नरयावयारस्स णं समोयरणवत्ती अभुमयं विसकंदलिं अणग्गियं चडुलिं अभोयणं विसूइयं अणामियं वाहिं अचेयणं मुच्छं अणोवसग्गिं मारिं अणियलिं गुत्तिं अरज्जुए पासे अहेउए मच्चू, तहा य णं गोयमा ! इत्थिसंभोगे पुरिसाणं मणसावि णं अर्चित्तिणिज्ज अणज्झवसणिज्जे अपत्थणिज्जे अणीहणिज्जे अवियप्पणिज्जे असंकप्पणिज्ज अणभिलसणिज्जे सअंभरणिज्जे तिविहंतिविहेणंति, जओ णं इत्थीणं नाम पुरिसस्स णं गोयमा ! सब्बप्पगारेहिं पि दुस्साहियं विज्जंपिव दोसुप्पायणं संरंभसंजणंपिवअपट्ठधम्मं खलियचारित्तंपिव अणालोइयं अणिदियं अगरहियं अकयपायच्छित्तज्झवसायं पडुच्च अणंतसंसारपरियट्ठणं दुक्खसंदोहं कयपायच्छित्तविसोहियंपिव पुणो असंजमायरणं महंतपावकम्मसंचयं हिंसंपिव सयलतेलोक्कनिदियं अदिट्ठपरलोगपच्चवायं घोरंधयारणरयवासो इव णिरंतराणेगदुक्खनिहित्ति, 'अंगपच्चंगसंठाणं, चारूललवियपेहियं । इत्थीणं तं न निज्झाए, कामरागविवह्णं ॥१५६॥ तहा य इत्थीओ नाम गोयमा !

www.jainelibrary.org

॥७॥ जीवे संमग्गमोइत्ते, घोरवीरतवं चरे । अचयंतो इमे पंच, कुज्जा सव्वं निरत्थयं ॥८॥ कुसीलोसन्नपासत्थे, सच्छंदे सबले तहा । दिट्ठीएवि इमे पंच, गोयमा ! न निरिक्खए ॥९॥ सव्वन्नुदेसियं मग्गं, सव्वदुक्खप्पणासगं । सायागारवग्गुफाते, अन्नहा भणियमुज्झए ॥१०॥ पयमक्खरंपि जो एणं, सव्वन्नूहिं पवेदियं । न रोएज्जऽन्नहा भासे, मिच्छदिट्ठी स निच्छियं ॥१॥ एवं नाऊण संसग्गिं, दरिसणालावसंथवं । संवासं च हियाकंखी, सव्वोवाएहिं वज्जए ॥२॥ भयवं ! निब्भट्ठसीलाणं, दरिसणं तंपि निच्छसि । पच्छित्तं वागरेसीय, इति उभयं न जुज्जए ? ॥३॥ गोयमा ! भट्ठसीलाणं, दुत्तरे संसारसागरे । धुवं तमणुकंपित्ता, पायच्छित्ते पदरिसिए ॥४॥ भयवं ! किंपायच्छित्तेण, छिदिज्जा नारगाउयं ? । अणुचरिऊण पच्छित्तं, बहवे दुग्गइ गए ॥५॥ गोयमा ! जे समज्जेज्जा, अणंतसंसारियत्तणं । पच्छित्तेणं धुवं तंपि, छिदे किं पुणो नरयाउयं ? ॥६॥ पायच्छित्तस्स भुवणेऽत्थ, नासज्झं किंचि विज्जए । बोहिलाभं पमोत्तूणं, हारियं तं न लब्भए ॥७॥ तं चाउकायपरिभोगे, तेउकायस्स निच्छियं । अबोहिलाभियं कम्मं, वज्जए मेहुणेण य ॥८॥ मेहुणं आउकायं च, तेउकायं तहेव य । तम्महा तओवि जत्तेणं, वज्जेज्जा संजइंदिए ॥९॥ से भयवं ! गारत्थीणं, सव्वमेवं पवत्तइ । (तो जइ अबोही भवेज्ज) एसु तओ सिक्खागुणाणुव्वयधरणं तु निप्पलं ॥१०॥ गोयमा ! दुविहे पहे अक्खाए, सुसमणे अ सुसावए । महव्वयधरे पढमे, बीएऽणुव्वयधारए ॥१॥ तिविहंतिविहेण समणेहिं, सव्वसावज्जमुज्झियं । जावज्जीवं वयं घोरं, पडिवज्जियं मोक्खसाहणं ॥२॥ दुविहेगविहं व तिविहं वा, थूलं सावज्जमुज्झियं । उद्विड्ढकालियं तु वयं (देसेण) संवसे गारत्थी हि ॥३॥ तहेव तिविहंतिविहेणं, इच्छारंभपरिग्गहं । वोसिरंति अणगारे, जिणलिंगं धरेति य ॥४॥ इयरे (य) अणुज्जित्ता, इच्छारंभपरिग्गहं । सदाराभिरए स गिही, जिणलिंगं तू पूयए (ण धारयंति) ॥५॥ ता गोयमेगदेसस्स, पडिक्कंते गारत्थे भवे । तं वयमणुपालयंताणं, नो सि आसायणं भवे ॥६॥ जे पुण सव्वस्स पडिक्कंते, धारे पंच महव्वए । जिणलिंगं तु समुव्वहइ, तं तिगं नो विवज्जए ॥७॥ तो भहयासायणं तेसिं, इत्थिऽग्गीआउसेवणे । अणंतनाणी जिणे जम्हा, एयं मणसावि णऽभिलसे ॥८॥ ता गोयमा ! साहियं एयं, एवं वीमंसिउं दढं । विभावय जई बंधिज्जा, गिहिणो न अबोहिलाभियं ॥९॥ संजए पुण निबंधिज्जा, एयाहिं हेऊहि य । आणाइक्कम वयभंगा, तह उम्मग्गपवत्तणा ॥१०॥ मेहुणं चाउकायं च, तेउकायं तहेव य । हवइ तम्हा तितयंति, (जत्तेणं) वज्जेज्जा सव्वहा मुणी ॥१॥ जे चरंते व पच्छित्तं, मणेणं संकिलिस्सए । जह भणियं वाऽह णाणुट्ठे, निरयं सो तेण वच्चई ॥२॥ भयवं ! मंदसुद्धेहिं, पायच्छित्तं न कीरई । अह काहंति किलिड्ढमणे, ताऽणुकंपं विरूज्झए ? ॥३॥ नो रायादीहिं संगामे, गोयमा ! सल्लिए नरे । सल्लुद्धरणे भवे दुक्खं, नाणुकंपा विरूज्झए ॥४॥ एवं संसारसंगामे, अंगोवंगंतबाहिरं । भावसल्लुद्धरितंताणं, अणुकंपा अणोवमा ॥५॥ भयवं ! सल्लंमि देहत्ये, दुक्खिए होति पाणिणो । जंसमयं निप्फिडे सल्लं, तक्खणा सो सुही भवे ॥६॥ एवं तित्थयरे सिद्धे, साहू धम्मं विवंचिउं । जं अकज्जं कयं तेणं, निरिरिएणं सुही भवे ॥७॥ पायच्छित्तेणं के तत्थ, कारिएणं गुणो भवे ? । जेणं कीवस्सवी देसि, दुक्करं दुरणुच्चरं ॥८॥ उद्धरिउं गोयमा ! सल्लं, वणभंगे जाव णो कये । वणपिंडीपट्टबंधं च, ताव णं किं परूज्झए ? ॥९॥ भावसल्लस्स वणपिंडपट्टभूओ इमो भवे । पच्छित्तो दुक्खरोहंपि, पाववणं फिप्पं परोहए ॥२००॥ भयवं ! किमणुविज्जंते, सुव्वंते जाणिए इ वा ? । सोहेइ सव्वपावाइं, पच्छित्ते सव्वन्नुदेसिए ? ॥१॥ सुसाऊ सीयले उदगे, गोयमा ! जाव णो पिए । णरे गिम्हे वियाणंते, ताव तण्हा ण उवसमे ॥२॥ एवं जाणित्तु पच्छित्तं असढभावेण जा चरे । ताउ तस्स तयं पावं, वड्डए उ ण हायए ॥३॥ भयवं ! किं तं वड्डेज्जा, जं पमादेण कत्यई । आगयं ? पुणो आउत्तस्स, तेत्तियं किं न ठायए ? ॥४॥ गोयमा ! जह पमाएणं, निच्छंतो अहिडंकिए । आउत्तस्स जहा पच्छा विसं, वड्डे तह चेव पावणं ॥५॥ भयवं ! जे विदियपरमत्थे, सव्वपच्छित्तजाणगे । ते किं परेसिं साहंति, नियमकज्जयं जहट्ठियं ? ॥६॥ गोयमा ! मंततंतेहिं, दियहे जो कोडिमुट्ठवे । सेवि दट्ठे विणिच्चिट्ठे, धारियल्लेहिं भल्लिए ॥७॥ एवं सीलुज्जले साहू, पच्छित्तं न दढव्वए । अन्नेसिं निउणं (लद्धट्ठं) साहे, ससीसं व ण्हावओ जहत्ति ॥२०८ ★★★★★॥ महानिसीयसुयक्खंधस्स कम्मविवागवागरणं नाम बीयमज्झयणं ॥२॥ ★★★★★ एसिं तु दोण्हं अज्झयणाणं विहीपुव्वगेणं सव्वसामन्नं वायणंति ॥३॥ 'अओ परं चउक्कन्नं, सुमहत्थाइसयं परं । आणाए सदहेयव्वं, सुत्तत्थं जं जहट्ठियं

॥१॥ जे उग्घाडं परूवेज्जा, देज्जा वऽसुजोगस्स उ । वाएज्ज अबंभचारीं वा, अविहीए णुद्धिद्वं पि वा ॥२॥ उम्मायं व लभेज्जा रोगायकं व पाउणे दीहं । भंसेज्ज संजमाओ मरणंते वा णयावि आराहे ॥३॥ एत्थं तु जं विहीपुवं, पढमज्झयणे परूवियं । बीए चेव विही एवं, वाए सेसाणिमं विहिं ॥४॥ बीयज्झयणेऽबिले पंच, नवुद्देसा तहिं भवे । तइए सोलस उद्देसा, अट्ठ तत्तेव अंबिले ॥५॥ जं तइए तं चउत्थेऽवि, पंचमंमि छायंबिले । छट्ठे दो सत्तमे तिन्नि, अट्ठमे आयंबिले दस ॥६॥ अणिक्खित्तभत्तपाणेण, संघट्टेणं इमं महा । निसीहवरं सुयक्खंधं, वोढव्वं च आउत्तगपाणगेणंति ॥७॥ गंभीरस्स महामइणो उ, संजुयस्स तवोगुणे । सुपरिक्खियस्स कालेणं, सयमज्झेगस्स वायणं ॥८॥ खेतसोहीए निच्चं तु, उवउत्तो भविया जया । तया वाएज्ज एयं तु, अन्नहा उ छलिज्जइ ॥९॥ संगोवंगसुयस्सेयं, णीसंदं तत्तं परं । महानिहिव्व अविहिए, गिण्हंतेणं छलिज्जए ॥१०॥ अहवा सव्वाइं सेयाइं, बहुविग्घाइं भवंति उ । सेयाणं तु परं सेयं, सुयक्खंधं निव्विग्घं ॥१॥ जे धन्ने पुत्ते महाणुभागे से वाइया, 'से भयवं ! केरिसं तेसिं, कुसीलादीण लक्खणं ? । सम्मं विन्नाय जेणं तु, सव्वहा ते विवज्जए ॥२॥ गोयमा ! सामन्नओ तेसिं, लक्खणमेयं निबोधय । जं नच्चा तेसिं संसग्गी, सव्वहा परिवज्जए ॥३॥ कुसीले ताव दुस्सयहा, ओसन्ने दुविहे मुणे । पासत्थे नाणमादीणं, सबले बावीसतीविहे ॥४॥ तत्थ जे ते उ दुसयहा उ, वोच्छं ते ताव गोयमा ॥ कुसीले जेसिं संसग्गीदोसेणं भस्सई मुणी खणे ॥१५॥ तत्थ कुसीले ताव समासओ दुविहे णेए-परंपरकुसीले यऽपरंपरकुसीले य, तत्थ णं जे ते परंपरकुसीले ते दुविहे णेए-सत्तट्ठगुरूपरंपरकुसीले एगदुतिगुरूपरंपरकुसीले य ॥१॥ जेवि य ते अपरंपरकुसीले तेवि उ दुविहे णेए-आगमओ णोआगमओ य ॥२॥ तत्थ आगमओ गुरूपरंपरिणं आवलियाएण केई कुसीले आसी उ ते चेव कुसीले भवंति ॥३॥ नोआगमओ अणेगविहा, तंजहा-णाणकुसीले चारित्तकुसीले तवकुसीले वीट्ठकुसीले ॥४॥ तत्थ णं जे से नाणकुसीले से णं तिविहे णेए-पसत्थापसत्थनाणकुसीले अपसत्थनाणकुसीले सुपसत्थनाणकुसीले ॥५॥ तत्थ जे से पसत्थापसत्थनाणकुसीले से दुविहे णेए-आगमओ नोआगमओ य, तत्थ आगमओ विहंगनाणीपन्नवियपसत्थापसत्थपयत्थजालअज्झयणऽज्झावणकुसीले, नोआगमओ अणेगहा पसत्थापसत्थपरपासंडसत्थत्थजालाहिज्जणऽज्झावण-वायणाणुपेहणकुसीले ॥६॥ तत्थ जे ते अपसत्थनाणकुसीले ते एगूणतीसइविहे दट्ठव्वे, तंजहा-सावज्जवायविज्जमंततंतपउंजणकुसीले १ विज्जमंततंताहिज्जणकुसीले २ (विज्जामंततंताहिज्जावणकुसीले) गहरिक्खचारजोइसत्थपउंजणाहिज्जणकुसीले ३ निमित्तलक्खणपउंजणाहिज्जणकुसीले ४ सउणलक्खणपउंजणा-हिज्जणकुसीले ५ हत्थिसिक्खापउंजणाहिज्जणकुसीले ६ धणुव्वेयपउंजणाहिज्जणकुसीले ७ गंधव्वेयपउंजणाहिज्जणकुसीले ८ पुरिसिन्थीलक्खण-पउंजणज्झावणकुसीले ९ कामसत्थपुउंजणाहिज्जरकुसीले १० कुहुगिंदजालसत्थपउंजणाहिज्जणकुसीले ११ आलेक्खविज्जाहिज्जणकुसीले १२ लेप्पकम्मविज्जाहिज्जणकुसीले १३ वमणविरेयणबहुवल्लींदजालसमुद्धरणकहणकाहणवणस्सइवल्लिमोडणतच्छणाइ-बुदोसविज्जगसत्थपउंजणा-हिज्जणज्झावणकुसीले १४ एवं जा (वंज) ण १५ जोगचुन्न १६ वन्नधाउव्वाय १७ रायदंडणीई १८ सत्थव्वऽसणिपव्वअ १९ ऽच्छकंड २० रयणपरिक्खा २१ सरवेहसत्थ २२ अमच्चसिक्खा २३ गूढमंततंत २४ कालदेस २५ संधिविग्गहोवएस २६ सत्थ २७ मम्म (ग्ग) २८ जाणववहार २९ निरूवणत्थसत्थपउंजणाहिज्जणअपसत्थनाणकुसीले, एवमेएसिं चेव पावसुयाणं वायणापेहणापरावत्तणाअणुसंधणासवसायन्नणअपसत्थनाणकुसीले ॥७॥ तत्थ जे य ते सुपसत्थनाणपकुसीले तेवि य दुविहे णेए-आगमओ णोआगमओ य, तत्थ आगमओ सुपसत्थं पंचप्पयारं णाणं आसायंते सुपसत्थनाणधरे वा आसायंते सुपसत्थनाणकुसीले ॥८॥ नोआगमओ य सुपसत्थनाणकुसीले अट्ठहा णेए, तंजहा-अकालेणं सुपसत्थनाणहिज्जणज्झावणाकुसीले अविणएणं सुपसत्थनाणाहिज्जणज्झावणाकुसीले अबहुमाणेणं सुपसत्थनाणाहिज्जणकुसीले अणोवहाणेणं सुपसत्थनाणाहिज्जणज्झावणकुसीले जस्स य सयासे सुपसत्थं सुत्तत्थोभयमहीयं तंनिहवणसुपसत्थनाणकुसीले सरवंजणहीणक्खरियच्चक्खरियहिज्जणज्झावणसुपसत्थनाणकुसीले विवरीयसुत्तत्थोभयाहिज्जणज्झावण-सुपसत्थनाणकुसीले संदिद्धसुत्तत्थोभयाहिज्जणज्झावणसुपसत्थनाणकुसीले ॥९॥ तत्थ एएसिं अट्ठहंपि पयाणं गोयमा ! जे केई अणोवहाणेणं सुपसत्थं नाणमहीयंति

श्री अगमगणमञ्जूषा - १३७८

Digitized by eGangotri International 2010-03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भिगगहविसेससंजमपरिवालणसम्मंपरीसहोवसग्गाहियासणेणं सव्वदुक्खविमोक्खं मोक्खं साहयंतित्ति साहवो, अयमेव इमाए चूलाए भाविज्जइ-एतेसिं नमोक्कारो एसो पंचनमोक्कारो, किं करेज्जा ?, सव्वं पावं-नाणावरणीयादिकम्मविसेसं तं पयरि (अपरिसे) सेणं दिसोदिसं णासयइ सव्वपावप्पणासणो, एस चूलाए पढमो उद्देसओ, एसो पंचनमोक्कारो सव्वपावप्पणासणो किंविहो उ ?, मंगो-निव्वाणसुहसाहणेक्खमो सम्मदंसणाइआराहओ अहिंसालक्खणो धम्मो तं मे लाएज्जति मंगलं, ममं भवाउ-संसाराओ गलेज्जा, तारेज्जा वा मंगलं, बद्धपुट्टनिकाइयट्ठप्पगारकम्मरासिं मे गालिज्जा-विलिज्जवेज्जति वा मंगलं, एएसिं मंगलाणं अन्नेसिं च मंलाणं सव्वेसिं किं ?, पढमं-आदीए अरहंताणं थुई चेव हवइ मंगलं, इति एस समासत्थो, वित्थरत्थं तु इमं तंजहा-तेणं कालेणं तेणं समएणं गोयमा ! जे केई पुव्ववावन्नियसद्धत्थे अरहंते भगवंते धम्मतित्थगरे भवेज्जा से ण परमपुज्जाणंपि पुज्जयरे भवेज्ज, जओ णं ते सव्वेऽवि एयलक्खणसमन्निए भवेज्जा, तंजहा-अचिंतअप्पमेयनिरूवमाणणसरिसपवरवरूत्तमगुणोहाहिट्ठियत्तेणं तिण्हंपि लोगाणं संजणियगुरूयमहंतमाणसाणंदे, तहा य जंमंतरसंचियगुरूयपुण्ण-पब्भारसंविट्ततित्थयरनाकम्मोदएणं दीहरगिम्हायवसंतावकिलंतसिहिउलाणं व पढमपाउसधाराभस्सवरिसंतघणसंधायमिव परमहिओवएसपयाणाइणा घणरागदोसमोहमिच्छत्ताविरइ-पमायदुट्ठकिललिट्ठज्झवसायाइसमज्जियासुहघोरपावकम्मायवसंतावस्स णिण्णासगे भव्वसत्ताणं सव्वचू अणेगजम्मंतरसंविट्तगुरूयपुत्रपब्भाराइसयबलेणं समज्जियाउलबलवी रिएसरियसत्तपरक्कमाहिट्ठियतणू सुकंतदित्तचारूपायंगुट्ठग्गरूवाइसएणं सयलगहनक्खत्तचंदपंतीणं सूरिए इव पयंडपयावदसदिसिपयासविप्फुरंतकिरणपब्भारेणं णियतेयसा विच्छायगे सयलाणवि विज्जाहरणरामरीणं सदेवदाणविंदाणं सुरलोगाणं सोहग्गकंतिदित्तिलावन्नरूवसमुदयसिरीए साहावियकम्मक्खयजणियदिव्वकयपवरनिरूवमाणन्नसरिसाविसेसाइसयाइसयलक्खणकला-कलावविच्छड्डपरिदंसणेण भवणवइवाणमंतरजोइसवेमाणियाहमिंदसइदच्छराकिन्नर णरविज्जाहरस्स ससुरासुरस्साविणं जगस्स अहो ३ अज्ज अदिट्ठपुव्वं दिट्ठमम्हेहिं इणमो सविसेसाउलमहंताचिंतपरमच्छेयसंदोहं समग्गलमेवेगट्ठसमुइयं दिट्ठंति तक्खणउप्पन्नघणनिरंतरबहलप्पमोया चिंतयंतो सहरिसपीयाणुरायवसपवियंभंताणुसमयअहिणवाहिणवपरिणामविसेसत्तेणमहमहंतिजंपपरपरोप्पराणं विसायमुवग्गयहहहधीधिरत्थुअधन्नाऽपुन्नावयमिइणिंदिर अत्ताणगमणंतरसंखुहियहिययमुच्चिरसुलद्धचेयणसुपुण्णसिद्धिलियसगत्तआउंचणं पसण्णो उ मे सनिमेसाइसारीरियवावारमुक्ककेवलअणोवल्खक्खल-तमंदमंददीहहुंहुंकारविमिस्समुक्कदीहउण्हबहलनीसासगत्तेणं अइअभिनिविट्ठबुद्धीसुणिच्छियमणस्स णं जगस्स, किं पुण तं तवमणुचिट्ठेमो जेणेरिसं पवररिद्धिं लभिज्जति, तग्गयमणस्स णं दंसणं चेव णियणियवच्छत्थलनिहिज्जंतंतकरयलुप्पाइयमहंतमाणसचमक्कारे, ता गोयमा ! णं एवमाइअणंतगुणगणाहिट्ठियसरीराणं तेसिं सुगहियनामधेज्जाणं अरहंताणं भगवंताणं धम्मतित्थगराणं संतिए गुणगणो हरयणसंधाए अहन्निसाणुसमयं जीहासहस्सेणंपि वागरंतो सुरवईवि अन्नयरे वा केई चउनाणी महाइसई य छउमत्थे सयंभुरमणोयहिस्स इव वासकोडीहिंपि णो पारं गच्छेज्जा, जओ णं अपरिमियगुणरयणे गोयमा ! अरहंति भगवंते धम्मत्थिगरे भवंति, ता किमित्थ भन्नउ ?, जत्थ य णं तिलोगनाहाणं जगगुरूणं भुवणेक्कबंधूणं तेलोक्कतग्गुणखंभपवरधम्मतित्थंकराणं केई सुरिंदाइपायंगुट्ठग्गएणदेसाउ अणेगगुणगणालंकरियाउ भत्तिभरनिब्भरिक्करसियाणं सव्वेसिंपि वा सुरीसाणं अणेगभवंतरसंचियअणिट्ठदुट्ठदुट्ठकम्मरासिजणियदोगच्चदोमण-स्सादिसयलदुक्खदारिदकिलेसजम्मजरामरणरोगसोगसंतावुव्वेयवाहिवेयणाईण खयट्ठाए एगगुणस्साणंतभागमेगं भणमाणाणं जमगसमगमेव दिणयरकरे इव अणेगगुणगणोहे जीहग्गे विफुरंति ताइं च न सक्का सिंदावि देवगणा समकालं भणिऊणं, किं पुण अकेवली मंसचक्खुणो ?, ता गोयमा ! णं एस इत्थं परमत्थे वियाणेयव्वो, जहा णं चइ तित्थगराणं संतिए गुणगरोहे तित्थयरे चेव वायरंति, ण उण अन्ने, जओ णं सातिसया तेसिं भारती, अहवा गोयमा ! किमित्थ पभूयवागरणेणं ?, सारत्थं भन्नए ॥ १३ ॥ तंजहा-नामंपि सयलकम्मट्ठमलकलंकैहिं विप्पमुक्काणं । तियसिंदच्चियचलणाण चिणरिंदाण जो सरइ ॥ १६ ॥ ति विहकरणोवउत्तो खणे खणे सीलसंजमुज्जुत्तो । अविराहियवयनियमो सोऽवि हु अइरेण सिज्जेज्जा ॥ १७ ॥ जो पुण दुहउव्विग्गो सुहतण्हालू अलिव्व कमलवणे थयथुइमंगलजयसद्दावडो

झणझणे किंचि ॥१८॥ भक्तिभरनिम्भरो जिणवरिंदपायारविंदजुगपुरओ । भुमिनिठवियसिरो कयंजलीवावडो चरित्तडो ॥१९॥ एकंपि गुणं हियए धरेज्ज संकाइसुद्धसम्मत्तो । अक्खंडियवयनियमो तित्थयरत्ताए सो सिज्जे ॥२०॥ जेसिं च णं सुगहियनामग्गहणाणं तित्थयराणं गोयमा ! एस जगपायडमहच्छेरयभूए भुवणस्स वियडपायडमहंताइसयपवियंभो, तंजहा- खीणट्टपायकम्मा मुक्का बहुदुक्खगम्भवसहीणं । पुणरविअ पत्तकेवलमणपज्जवणाणचरिततणू ॥२१॥ महजोइणो विविहदुक्खमयरभवसागरस्स उव्विग्गा दहूणऽरहाइसए भवहुत्तमणा खणं जंति ॥२२॥ अहवा चिट्ठउ ताव सेसवागरणं गोयमा ! एवं चेव धम्मतित्थगरेति नाम सन्निहियं पवरक्खरूव्वहणं तेसिमेव सुगहियनामधिज्जाणं भुवणबंधूणं अरहंताणं भगवंताणं जिणवरिंदाणं धम्मतित्थंकराणं छज्जे, ण अन्नेसिं, जओ य गेगजंमंतरपुट्ट- मोहोवसमसंवेग- निव्वेयणुकं पाअत्थित्ता- भिवत्तीसलक्खणपवर- सम्मदंसणुल्लसंत- विरियाणिगूहियउग्गकट्टघोर- दुक्करतवनिरंतरज्जिय- उत्तुंगपुन्नखंधसमुदयमहपब्भार- संविट्तउत्तमपवरपवित्तविस्स- कसिणबंधुणाहसामिसाल- अणंतकालवत्तभवभावणच्छिन्नपाव- बंधणेक्कअबिइज्जतित्थयर- नामकम्मनयणमाणसाउलमहंत- विम्हयपमोयकारया- असेसकसिणपावक- म्ममलकलंकविप्प- मुक्कसमचउरंसपवरपढम- वज्जरिसहनारायसंघयणा- हिट्ठियपरमपवित्तुत्तममुत्तिधरे, ते चेव भगवंते महायसे महासत्ते महानुभागे परमिठ्ठी सद्धम्मतित्थंकरे भवंति ॥१४॥ अन्नं च सयलनरामरतिय- सिंदसुंदरीरूवकंतिलावन्नं । सव्वंपि होज्ज जइ एगरासिण संपिण्डियं कहवि ॥२३॥ तं च जिणचलणंगुट्ठगकोडिदेसेगलक्खभागस्स । संनिज्जंमि न सोहइ जह छारउडं कंचणगिरिस्स ॥२४॥ त्ति, 'अहवा नाऊण गुणंतराई अन्नेसिं ऊण सव्वत्थ । तित्थयरगुणाणमणंतभागमलभंमत्तत्थ ॥२५॥ जं तिहुयणंपि तयलं एगीहोऊणमुब्भमेगदिसिं । भागे गुणाहिओऽम्हं तित्थयरे परमपुज्जे ॥२६॥ त्ति, तेच्चिय अच्चे वंदे पूए अरिहे गइमइसमन्ने । जम्हा तम्हा ते चेव भावओ णमह धम्मतित्थयरे ॥२७॥ लोगेवि गामपुरनगरविसयजणवयसमग्गभरहस्स । जो जित्तियस्स सामी तस्साणत्तिं ते करेति ॥२८॥ नवरं गामाहिवई सुट्ठु सुतट्ठे एकगाममज्झाओ । किं देज्ज ? जस्स नियगे तेलोए एत्तियं पुव्वं ॥२९॥ चक्कहरो सीलाए सुट्ठु सुयेवंपि देइ न हु मन्ने । तेण य कमागयगुरूदरिदनामं समासेइ ॥३०॥ (सयलबंधुवग्गस्सत्ति) सो मंता चक्कहरं चक्कहरो सुखइत्तणं कंखे । इंदो तित्थयरे उण जगस्स जहिच्छियसुहफलए ॥३१॥ तम्हा जं इंदेहीवि कंखिज्जइ एगबद्धलक्खेहिं । अइसाणुरागहियएहिं उत्तमं तं न संदेहो ॥३२॥ तो सयलदेवदाणवगहरिक्खसुरिंदचंदमादीणं । तित्थयरे पुज्जयरे ते च्विय पावं पणासंति ॥३॥ तेसि य तिलोगमहियाण धम्मतित्थंकराण जगगुरूणं । भावच्चणदव्वच्चणभेदेण दुहच्चणंभणियं ॥४॥ भावच्चण चारित्ताणुट्ठाणकट्ठगघोरतवचरणं । दव्वच्चण विरयाविरयसीलपूयासक्कारदाणादी ॥५॥ ता गोयमा ! णं एसेऽत्थ परमत्थे तंजहा- 'भावच्चणमुग्गविहारया य दव्वच्चणं तु जिणपूया । पढमा जईण दोन्निवि गिहीण पढमच्चिय पसत्था ॥६॥ एत्थं च गोयमा ! केई अमुणियसमयसब्भावे ओसन्नविहारी णियवासिणो अदिट्ठपरलोगपच्चवाए सयंमतीइडिठरससायगारवाइमुच्छिए रागदोसमोहाहंकारममीकाराइसुपडिबुद्धो । कसिणसंजमसद्धम्मपरंमुहे निद्वयनित्तिसनिग्घिणअकलुणनिक्रिवे पावायरणेक्कअभिनिविट्ठबुद्धि एगंतेणं अइचंडरोदकूरोभिग्गहिए मिच्छदिट्ठिणो कयसव्वसावज्जजोगपच्चक्खाणे विप्पमुक्कोसेससंगारंभपरिग्गहे तिविहंतिविहेणं पडिवन्नसामाइए य दव्वत्ताए, न भावत्ताए, नाममेव मुंडे अणगारे महव्वयधारी समणेऽवि भवित्ताणं एवं मन्नमाणे सव्वहा उम्मग्गं पवत्तंति, जहा किल अम्हे अरहंताणं भगवंताणं गंधमल्लपदीवसंमज्जणोवलेवणविचित्तवत्थलधूवाइएहिं पूयासक्कारेहिं अणुदियहमब्भच्चणं पकुव्वाणा तित्थुच्छप्पणं करेमो, तं च णो णं तहत्ति, गोयमा ! तं वायाएवि णो णं तहत्ति समणुजाणेज्जा, से भयवं ! केण अट्ठेणं एवं वुच्चइ-जहा णं तं च णो णं तहत्ति समणुजाणेज्जा ?, गोयमा ! तयत्थाणुसारेणं असंजमबाहुल्लेणं च मूलकम्मासवाओ य अज्झवसायं पडुच्च थूलेयरसुहासुहकम्मपयडीबंधो सव्वसावज्जविरयाणां च वयभंगो वयभंगेणं च आणाइक्कमे आणाइक्कमेणं तु उम्मग्गगामित्तं उम्मग्गगामित्तेणं च सम्मग्गविप्पलोवणं उम्मग्गपवत्तणसम्मग्गविप्पलोवणेणं च जईणं महती आसायणा, तओ अ अणंतसंसाराहिंडणं, एएणं अट्ठेणं गोयमा ! एवं

बुच्चइ जहा णं गोयमा ! णो णं तं तहत्ति समणुजाणेज्जा ॥१५॥ 'दव्वत्थवाओ भावत्थवं तु दव्वत्थवो बहुगुणो भवउ तम्हा । अबुहबहुजाणबुद्धीयं छक्कायहियं तु गोयमाऽणुठ्ठे ॥७॥ अकसिणपवत्तगाणं विरयाविरयाण एस खलु जुत्तो । जे कसिणसंजमविऊ पुप्फादीयं न कप्पए तेसिं तु ॥८॥ किं मन्ने गोयमा ! एस, बत्तीसिंदाणुचिट्ठिए । जम्हा तम्हा उभयंपि, अणुठ्ठेज्जेत्थं नु बुज्झसी ॥९॥ विणिओगमेवेत्तं तेसिं, भावत्थवासंभवो तहा । भावच्चणा य उत्तमयं (दसन्नभहेण) उयाहरणं तहेव य ॥१०॥ चक्कहरभाणुससिदत्तदमगादीहिं विणिहिसे । पुच्छंते गोयमा ! ताव, जं सुरिदेहिं भत्तीओ ॥१॥ सव्विट्ठिए अणणसमे, पूयासक्कारे य कए । ता किं तं सव्वसावज्जं ?, ति विहं विरएहिंऽणुठ्ठितं ॥२॥ उयाहु सव्वथामेसुं, सव्वहा अविरएसु उ ? । णणु भयवं ! सुरवरिदेहिं, सव्वथामेसु सव्वहा ॥३॥ अविरएहिं सुभत्तीए, पूयासक्कारे कए । ता जइ एवं तआ बुज्झ, गोयमेमं नीसेसयं, देसविरय अविरयाणं तु, विणिओगमुभयत्थवि ॥४॥ सयमेव सव्वतित्थंकरेहिं जं गोयमा ! समायरियं । कसिणद्वकम्मक्खयकारयं तु भावत्थयमणुठ्ठे ॥५॥ भवती उ गमागम जंतुफरिसणाईपमद्दणं जत्थ । सपरऽहिओवरयाणं ण मणंपि पवत्तए तत्थ ॥६॥ तासपरऽहिओवरएहिं उवरएहिं सव्वहा णेसियव्व सुविसेसं । जं परमसारभूयं विसेसवंतं च अणुठ्ठेयं ॥७॥ ता परमसारभूयं विसेसवं च अणणवग्गस्स । एगंतहियं पत्थं सुहावहं पयडपरमत्थं ॥८॥ तंजहा-मेरुत्तुंगे मणिगणमंडिएक्ककं चणमए परमरंमे । नयणमणाणंदयरे पभूयविन्नाणसाइसए ॥९॥ सुसिलिठ्ठविसिठ्ठसुलठ्ठदसुविभत्तसुद्धुसुणिवेसे । बहुसिंघयत्तघंटाधयाउले पवरतोरणसणाहे ॥१०॥ सुविसाल सुविच्छिन्ने पए पए पत्थिय (व्वय) सिरीए । मधमधमघेतं डज्झंतअगालकप्पलाचंदणामोए ॥१॥ बहुविहविचित्तबहुपुप्फमाइपूयारूहे सुपूए य । णच्चपणच्चिरणशदुयसयाउले महुरमुरवसद्दाले ॥२॥ कुट्टंतरासयजणसयसमाउले जिणकहाखित्तचित्ते । पकहंतकहगणच्चंतच्छत्त (च्छरा) गंधव्वतूरनिग्घोसे ॥३॥ एमादिगुणोवेए पए पए सव्वमेइणीवट्ठे । नियभुयविट्तपुन्नज्जिएण नायागएण अत्थेण ॥४॥ कंचणमणिसोमाणे थंभसहस्सूसिए सुवण्णतले । जो कारवेज्ज जिणहरे तओवि तवसंजमो अणंतगुणो ॥५॥ त्ति, तवसंजमेण बहुभवसमज्जियं पावकम्मललेवं । निद्धोविऊण अइरा अणंतसोक्खं वए सोक्खं ॥६॥ काउंपि जिणाययणेहिं मंडियं सव्वमेइणीवट्ठं । दाणाइचउक्केणं सुद्धुवि गच्छेज्ज अच्चुयगं ॥७॥ ण परओ गोयम ! गिहित्ति । जइ ता लवसत्तमसुरविमाणवासीवि परिवडंति सुरा । सेसं चित्तिज्जंतं संसारे सासयं कयरं ? ॥८॥ कह तं भन्नइ सुक्खं सुचिरेणवि जत्थ दुक्खमल्लियइ । जं च मरणावसाणेसु थेवकालियं तुच्छं तु ? ॥९॥ सव्वेणं चिरकालेण जं सयलनरामराण हवइ सुहं । तं न घडइ सुयमणुभूय मोक्खसुक्खस्स अणंतभागेवि ॥१०॥ संसारियसोक्खाणं सुमहंताणंपि गोयमा ! णेगे । मज्झे दुक्खसहस्से घोरपयंडेण पुज्जंति ॥१॥ ताइं च सायवेओयएण ण याणंति मंदबुद्धीए । मणिकणगसेलमयलोढगंगली जह व वणिधूया ॥२॥ मोक्खसुहस्स उ धम्मं सदेवमणुयासुरे जगे इत्थं । तो भाणिउं ण सक्को नगरगुणे जहेवय पुलिंदो ॥३॥ कइ तं भन्नइ पुत्तं सुचिरेणवि जस्स दीसए अंतं । जं च विरसावसाणंजं संसाराणुबंधिं च ? ॥४॥ तं सुरविमाणविहवं चित्तियचवणं च देवलोगाओ । अइसिक्कयचिय हिययं जं नवि सयसिक्करं जाइ ॥५॥ नरएसु जाइं अइदुस्सहाइं दुक्खाइं परमतिक्खाइं । को वन्नेई ताइं जीवंतो वासकोडिपि ॥६॥ ता गोयम ! दसविहधम्मघोरतवसं जमाणुठ्ठाणस्स । भावत्थवमिति नामं तेणेव लभेज्ज अक्खयं सोक्खं ॥७॥ ति, नारगभवतिरियभवे अमरभवे सुरवइत्तणे वावि । नो तं लब्भइ गोयम ! जत्थ व तत्थ व मणुयजम्मे ॥८॥ सुमहच्चंतपहीणेसु संजमावरणनामधेज्जेसु । ताहे गोयम ! पाणी भावत्थयजोग्गयमुवेइ ॥९॥ जम्मंतरसंचियगुरूयपुन्नपब्भारसंविट्ठेणं । माणुसजंमेण विणा णो लब्भइ उत्तमं धम्मं ॥१०॥ जस्साणुभावओ सुचरियस्स निस्सल्लदंभरहियस्स । लब्भइ अउलमणंतं अक्खयसोक्खं तिलोयग्गे ॥१॥ तं बहुभवसंचियतुंगपावकम्मठ्ठरासिडहणठ्ठं । लब्धं माणुसजम्मं विवेगमाईहिं संजुत्तं ॥२॥ जो न कुणइ अत्तहियं सुयाणुसारेण आसवनिरोहं । छत्तिगसीलंगसहस्सधारणेणं तु अपमत्ते ॥३॥ सो दीहरअव्वोच्छिन्नघोरदुक्खग्णिदावपज्जलिओ । उच्चोव्वेयसंसत्तो अणंतहुत्तो सुबहुकालं ॥४॥ दुग्गंधामेज्जविलीणखारपित्तोज्जसिंभपडिहत्थे । वसजलुसपूयदुदिणचिल्लिचिले रूहिरविक्खल्ले ॥५॥ कढकढकढंतचलचलच-लस्सढलढलढलस्स रज्जंतो ।

संपिडियंगमंगो जोणी जोणी वसे गम्भे । एक्केक्कगम्भवासेसु, जंतियं पुणरवि भमेज्ज ॥६॥ ता संतावुव्वेयगजम्मजरामरणगम्भवासाइ । संसारियदुक्खाणं विचित्तरूवाणं भीएणं ॥७॥ भावत्थवाणुभावं असेसभवभयखयंकरं नाउं । तत्थेव महता उज्जमेण दढमच्चंतं पयइयव्वं ॥८॥ इय विज्जाहरकिन्नरनरेणं ससुरासुरेणवि जगेण । संथुव्वंते दुविहत्थवेहिं ते तिहुयणुक्कोसे ॥९॥ गोयमा ! धम्मतिथ्यंकरे जिणे अरिहंतेत्ति, अह तारिसेवि इह्दीपवित्थरे सयलतिहुयणाउलिए । साहीणे जगबंधू मणसावि जे खणं लुद्धे ॥८०॥ तेसिं परमीसरियं रूवसिरीवण्णबलपमाणं च । सामत्थं जसकित्ती सुरलोगचुए जहेह अवयरिए ॥१॥ जह काऊणऽन्नभवे उग्गतवं देवलोगमणुपत्ते । तिथयरनामकम्मं जह बद्धं एगाइवीसइयामेसु ॥२॥ जह सम्मत्तं पत्तं सामन्नाराहणा य अन्नभवे । जह तिसलाओ सिद्धत्थघरिणीचोदसमहासुमिणलंभं ॥३॥ जह सुरहिगंधपक्खेव गम्भवसहीए असुहमवहरणं । जह सुरनाहो अंगुठुपव्वणसियं महंतभत्तीए ॥४॥ अमयाहारं भत्तीए देइ संथुणइ जाव य पसूओ । जह जायकम्मविणिओगकारियाओ दिसिकुमारीओ ॥५॥ सव्वं नियकत्तव्वं निव्वत्तंती जहेव भत्तीए । बत्तीससुरवरिंदा गरूयपमोएण सव्वरिद्धीए ॥६॥ रोमंचकंचुपुलइयभत्तिभरमाइयस्सगत्ता ते । मन्नंते सकयत्थं जंमं अम्हाण मेरूगिरिसिहरे ॥७॥ होही खणमप्फालियसूसरगंभीरदुंदुहिनिघोसं । जयसद्धमुहलमंगलकयंजली जह य खीरसलिलेणं ॥८॥ बहुसुरहिगंधवासियकंचणमणितुंग (रयण) कलसेहिं । जम्माहिंसेयमहिमं करेति (जह) जिणवरो गिरिं चाले ॥९॥ जह इंदं वायरणं भयवं वायरइ अट्टवरिसोवि । जह गमइ कुमारत्तं (परिणे बोहिति) जह व लोगंतिया देवा ॥१०॥ जह वयनिकखमणमहं करेति सव्वे सुरासुरा मुइया । जह अहियासे घोरे परीसहे दिव्वमाणुसतिरिच्छे ॥१॥ जह घणघाइचउक्कं (कम्मं) इहइ घोरतवज्ञाणजोगअग्गीए । लोगालोगपयासं उप्पाए जह व केवलं नाणं ॥२॥ केवलमहिमं पुणरवि काऊणं जह सुरासुराईया । पुच्छंति संसए धम्मणीइतवचरणमाईए ॥३॥ जह व कहेइ जिणिठदो सुरकयसीहासणोवविट्ठो य । तं चउविहदेवनिकायनिम्मियं, जह पवरसमवसरणं, तुरियं करंति देवा, जं रिद्धीए जगं तुलइ ॥४॥ जत्थ समोसरिओ सो भुवणेक्कगुरू महायसो अरहा । अट्टमहपाडिहेरयसुचिधियं हवइ य तिथियं नामं ॥५॥ जह निदलइ असेसं मिच्छंतं चिक्कणंपि भव्वाणं । पडिबोहिऊण मग्गे ठवेइ जह णणहरा दिक्खं ॥६॥ गिणहंति महामइणो सुत्तं गंथंति जहव य जिणिंदो । भासे कसिणं अत्थं अणंतगमपज्जवेहिं तु ॥७॥ जह सिज्झइ जगनाहो महिमं निव्वाणनामियं जहय । सव्वेवि सुरवरिंदा असंभवे तह विमोच्चंति ॥८॥ सोगत्ता पगलंतंसुधोयगंडयलसरसइपवाहं । कलुणं विलावसद्धं हा सामि ! कया अणाहत्ति ॥९॥ जह सुरहिगंधगम्भीणमहंतगोसीसचंदणदुमाणं । कट्ठेहिं विहिपुव्वं सक्कारं सुरवरा सव्वे ॥१०॥ काऊणं सोगत्ता सुन्न दसदिसिपहे पलोयंता । जह खीरसागरे जिणवराणं (अट्ठी) पक्खालिऊणं च ॥१॥ सुरलोए नेऊणं आलिपेऊण पवरचंदणरसेणं । मंदारपारियाययसयवत्तसहस्सपत्तेहिं ॥२॥ जह अच्चेऊण सुरा नियनियभवणषसु जहवय थुणंति (तं सव्वं महया वित्थरेण अरहंतचरियाभिहाणे) । अंतकडदसाणं तं, मज्झाउ कसिण विन्नेयं ॥३॥ एत्थं पुण जं पगयं तं मोत्तुं जइ भणेज्ज तावेयं । हवइ असंबद्धरूयं गंथस्स य वित्थरमणंतं ॥४॥ एयंपि अपत्थावे सुमहंतं कारणं समुवइट्ठं । जं वागरियं तं जाण भव्वसत्ताणऽणुग्गहट्ठाए ॥५॥ जह वा जत्तो जत्तो भक्खिज्जइ मोयगो सुसंकरिओ । तत्तो तत्तोवि जणे अइगुरूयं माणसं पीइ ॥६॥ एवमिह अपत्थावेवि भत्तिभरनिब्भराण परिओसं । जणयइ गुरूयं जिणगुणगहणेक्करसक्खित्तचित्ताणं ॥७॥ एयं तु जं पंचमंगलमहासुयक्खंधस्स वक्खाणं तं महया पबंधेणं अणंतगमपज्जवेहिं सुत्तस्स य पिहंभूयाहिं निज्जुत्तीभासचुणीहिं जहेव अणंतनाणदंसणधरेहिं तिथरयेहिं वक्खणियं तहेव समासओ वक्खाणिज्जंतं आसि, अहऽन्नया कालपरिहाणिंदोसेणं ताउ निज्जुत्तीभासचुत्रीओ वोच्छिन्नाओ ॥१६॥ इओ य वच्चंतेणं कालसमएणं महिह्दीपत्ते पयाणुसारी वइरसामी नाम दुवालसंगसुयहरे समुप्पन्ने, तेणेयं पंचमंगलमहासुयक्खंधस्स उद्धारो मूलसुत्तस्स मज्झे लिहिओ, मूलसुत्तं पुण सुत्तत्ताए गणहरेहिं अत्थत्ताए अरहंतेहिं भगवंतेहिं धम्मतिथ्यगरेहिं तिलोगमहिएहिं वीरजिणिदेहिं पन्नवियंति एस वुड्ढसंपयाओ ॥१७॥ एत्थ य जत्थ पयंपण्णाणुलगं सुत्तालावगं न संपज्जइ तत्थ तत्थ सुयहरेहिं कुलिहियदोसो न दायव्वोत्ति, किं

तु जो सो एयस्स अचिंतचिंतामणिकप्पभूयस्स महानिसीहसुयकखंधस्स पुव्वायरिसो आसी तहिं चेव खंडाखंडीए उदेहियाइएहिं हेऊहिं बहवे पत्तगा परिसडिया तहावि अच्चंतसुमहत्थाइसयंति इमं महानिसीहसुयकखंधं कसिणपवयणस्स परमसारभूयं परं तत्तं महत्थंति कलिऊणं पवयणवच्छल्लत्तणेणं बहुभव्वसत्तोवयारियं च काउं तहा य आयहियड्डयाए आयरियहरिभदेणं जं तत्थायरिसे दिट्ठं तं सव्वं समतीए साहिऊणं लिहियंति, अन्नेहिपि सिद्धसेणदिवाकरवुद्धवाइजक्खसेण- देवगुत्तजसवद्धणखमासमणसीसरविगुत्तणेमिचंदजिणदासगणिखमगसच्चसिरिपमुहेहिं जुगप्पहाणसुयहरेहिं बहु मन्नियमिणंति ॥१८॥ से भयवं ! एवं जहुत्तविणओ वहाणेणं पंचमंगलमहासुयकखंधमहिज्जित्ताणं पुव्वाणुपुव्वीए पच्छाणुपुव्वीए सरवंजणमत्ताबिंदुपयक्खरविद्धं थिरपरिचियं काऊणं महया पबंधेणं सुत्तत्थं च विन्नाय तओ य णं किमहिज्जेज्जा ?, गोयमा ! ईरियावहियं, से भयवं ! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ-जहा णं पंचमंगलमहासुयकखंधमहिज्जित्ताणं पुणो ईरियावहियं अहीए ?, गोयमा ! जे एस आया से णं जया गमणागमणाइपरिणामपरिणए अणेगचीवपाणभूयसत्ताणं अणोवउत्तपमत्ते संघट्टणअवदावणकिलामणं काऊणं अणालोइयअपडिक्कंते चेव असेसकम्मक्खयड्डयाए किं चि चिइवंदणसज्झायज्झाणाइएसु अभिरमेज्जा तया से एगचित्ता समाही भवेज्जा ण वा, जओ णं गमणागमणाइअणेगअन्नवावारपरिणामासत्तचित्तयाए केई पाणी तमेव भावंतरमच्छडिडय अट्ठदुहट्ठज्झवसिए कंचि कालखणं विर (व) तेजा ताहे तं तस्स फलेणं विसंवएज्जा, जया उण कहिंचि अन्नाणामोहपमायदोसेण सहसा एगिदियादीणं संघट्टणं परियावणं वा कयं भवेज्जा तया य पच्छा हाहाहा दुट्ठु कयमम्हेहिं घणरागदोसमोहमिच्छत्तअन्नाणंधेहिं अदिट्ठपरलोगपच्चवाएहिं कूरकम्मनिग्घिणेहिंति परमसंवेगमावन्ने सुपरिफुडं आलोइत्ताणं निदिताणं गरहित्ताणं पायच्छित्तमणुरित्ताणं णीसल्ले अणाउलचित्ते असुहकम्मक्खयट्ठा किंची आयहियं चिइवंदणाइ अणुट्ठेज्जा तया तयट्ठे चेव उवउत्ते से भवेज्जा, जया णं से जयत्थे उवउत्ते भवेज्जा तया तस्स णं परमेगगचित्तसमाही हवेज्जा, तया चेव सव्वजगजीवपाणभूयसत्ताणं जहिट्ठफलसंपत्ती भवेज्जा, ता गोयमा ! णं अपडिक्कंताए ईरियावहियाए न कप्पइ चेव काउं किंचि चेइयवंदणसज्झायाइयं फलासायमभिकंखुगाणं, एएणं अट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहा णरं गोयमा ! ससुत्तत्थोभयं पंचमंगल थिरपरिचियं काऊणं तओ ईरियावहियं अज्झीए ॥१९॥ से भयवं ! कयराए विहीए तमिरियावहियमहीए ?, गोयमा ! जह णं पंचमंगलमहासुयकखंधं ॥२०॥ से भयवमिरियावहिवमहिज्जित्ताणं तओ किमहिज्जे ?, गोयमा ! सक्कत्थयाइयं चेइयवंदणविहाणं, णवरं सक्कत्थयं एगेणड्डमेण बर्त्त. साए आयंबिलेहिं, अरहंतत्थयं एगेण चउत्थेणं पंचहिं आयंबिलेहिं, चउवीसत्थयं एगेणं छट्ठेणं एगेण चउत्थेणं पणवीसाए आयंबिलेहिं, णाणत्थयं एगेणं चउत्थेणं पंचहिं आयंबिलेहिं, एवं सरवंजणमत्ताबिंदुपयच्छेयपयक्खरविसुद्धं अविच्चांमेलियं अहिज्जित्ताणं गोयमा ! तओ कसिणं सुत्तत्थं विन्नेयं, जत्थ य संदेहं भवेज्जा तं पुणो २ वीमंसिय णीसंकमवधारेऊणं णीसंदेहं करिज्जा ॥२१॥ एवं सुत्तत्थोभयत्तगं चिइवंदणाइविहाणं अहिज्जेत्ताणं तओ सुपसत्थे सोहणे तिहिकरणमुहुत्तनक्खत्तजोगलगससीबले जहासत्तीए जगगुरूणं संपाइयपूओवयारेणं पडिलाहियसाहुवग्गेणं य भत्तिभरनिब्भरेणं रोमंचकंचुयपुलइज्जमाणतणू सहरिसाविसिद्धवयणारविन्देणं सद्धासंवेगविवेगपरमवेरग्गमूलविणिहयरागदोसमोहमिच्छत्तमलकलंकेणं सुविसुद्धसुनिम्मलविमलसुभसुभयरऽणुसमयसलुल्ल-संतसुपसत्थऽज्झवसायगएणं भुवणगुरूजिणइंदपडिमविणिवेसि यणयणमाणसेणं अणणमाणसेणमेगगचित्तयाए धन्नोऽहं पुन्नोऽहंति जिणवंदणाइसहलीकयजम्मोत्ति इइ मन्नमाणेणं विरइयकरकमलंजलिणा हरियतणबीयजंतुविरहियभूमीए निहिओभयजाणुणा सुपरिफुडसुविइयणीसंकीकयजहत्थसुत्तत्थोभयं पए पए भावेमाणेणं दढचरित्तसमयन्नुअप्पमायाइअणेगगुरसंपओववेएणं गुरूणा सद्धिं साहुसाहुणीसाहम्मिय असेसबंधुपरिक्कणपरियरिणं चेव पढमं चेइए वंदियव्वे, तयणंतरं च गुणट्ठे य साहुणो तहा साहंमियजणस्स णं जहासत्तीए पाणिवायजाएणं सुहमग्घयमउयचोक्खवत्थपयाणाइणा वा मह्हासंमाणो कायव्वो, एयावसरंमि सुविइयसमयसारेणं गुरूणा पबंधेणं अक्खेवनिक्खेवाइएहिं पबंधेहिं संसारनिव्वेयजणं सद्धासंवेगुप्पायगं धम्मदेसणं कायव्वं ॥२२॥ तओ परमसद्धासंवेगपरं नाऊणं आजम्माभिग्गहं

च दायव्वं, जहा णं सहलीकयसुलद्धमणुस्सभवा भो भो देवाणुप्पिया ! तए अज्जप्पभिइए जावजीवं तिकालियं अणुदिणं अणुत्तावलेगगचित्तेणं चेइए वंदेयव्वे, इणमेव भो मणुयत्ताउ असुइअसासयखणभुंराओ सारंति, तत्थ पुव्वणहे ताव उदगपाणं न कायव्वं जाव चेइए साहू य ण वंदिए, तहा मज्झणहे ताव असणाकिरियं न कायव्वं जाव चेइए ण वंदिए, तहा अवरणहे चेव तहा कायव्वं जहा अवंदिएहिं चेइएहिं णो सज्झायालमइक्कमेज्जा ॥२३॥ एवं चाभिग्गहबंधं काऊणं जावजीवाए, ताहे य गोयमा ! इमाए चेव विज्जाए अहिमंतियाउ सत्त गंधमुट्ठीओ तस्सुत्तमंगे नित्थारगपारगो भवेज्जा सित्तिउच्चारमाणेणं गुरूणा खेत्तव्वाओ, अउम्णमउ भगवओ अरहओ सइज्झउ मए भगवती महाविज्जआ वईएए महआवईएए जय्अवईएए वद्धमआण्वईएए जय्ए वइजय्ए जय्अंतए अपरआज्इए सव्आहा, उपचारो चउत्थभत्तेणं साहिज्जइ, एयाए विज्जाए सव्वगओ नित्थारगपारगो होइ, उवट्ठावणाए वा गणिस्स वा अणुत्ताए वा सत्त वारा परिजवेयव्वा नित्थारगपारगो होइ, उत्तमट्ठपडिवण्णे वा अभिमंतिज्जइ आराहगो भवइ, विग्घविणायगा उवसंमंति, सूरुो संगामे पविसंतो अपराजिओ भवइ, कप्पसमत्तीए मंगलवहणी खेमवहणी हवइ ॥२४॥ तहा साहुसाहुणीसमणोवासगसट्ठिगासेसासन्नासहम्मियजणचउव्विहेणंपि समणसंघेणं नित्थारगपारगो भवेज्जा, धन्नो सपुन्नसलक्खणोऽसि तुमंति उच्चारमाणेणं गंधमुट्ठीओ घेत्तव्वाओ, तओ जगगुरूणं जिणिंदाणं पूएगदेसाओ गंधह्ममिलाण सियमल्लदामं गहाय सहत्थेणोभयखंधेसुमारोवयमाणेणं गुरूणा णीसंदेहमेव भाणियव्वं जहा भो भो जम्मंतरसंचियगुरूयपुन्नपब्भार ! सुलद्धसुविट्ठत्तसुसहलमणुयजम्म ! देवाणुप्पिया ! ठइयं च णरयतिरियगइदारं तुज्झंति, अबंधगो य अयसऽकित्तीनीयागोत्तकम्मविसेसाणं तुमंति, सवंतरगयस्सावि उ णइदुलहो उज्झ पंचनमोक्कारो, भाविजम्मंतरे पंचनमोक्कारपभाओ य जत्थ जत्थोववज्जिज्जा तत्थ तत्थुत्तमा जाई उत्तमं च कुलरूवारोगगसंपयंति, एयं ते निच्छइओ भावेज्जा, अन्नंच पंचनमोक्कारपावओ ण भवइ दासत्तं ण दारिदोहगगीणजोणियत्तं ण विगलिदियत्तंति, किं बहुएणं ?, गोयमा ! जे केई एयाए विहीए पंचनमोक्कारादिसुयणाणमहिज्जित्ताणं तयत्थाणुसारेणं पयओ सव्वावस्सगाइणिच्चाणुंठुणिज्जेसु अट्ठारससीलंगसहस्सेसु अभिरमेज्ज से णं सरागत्ताए जइ णं ण निव्वुडे तओ गेवेज्जणुत्तरादीसु चिरमभिरमेऊणेह उत्तमकुलप्पसूई उक्किट्ठलट्ठसव्वंगसुंदरत्तं सव्वकलापत्तट्ठजणमणाणं दयारियत्तणं च पाविऊणं सुरिंदोवमाए रिद्धीए एगंतेणं च दयाणुकंपापरे निव्विन्नकामंभोगे सद्धम्ममणुट्ठेऊणं विहुयरयमले सिज्झेज्जा ॥२५॥ से भयवं ! किं जहा पंचमंगलं तहा सामाइयाइयसमेसंपि सुयनाणमहिज्जिणेयव्वं ?, गोयमा ! तहा चेव विणओवहाणेणमहीएयव्वं, णवरं अहिज्जिणिउकामेहिं अट्ठविहं चेव नाणायारं सव्वपयत्तेणं कालादी रक्खिज्जा, अन्नहा महयाऽऽसायणत्ति, अन्नंच-दुवालसंगस्स सुयनाणस्स पढमचरिमज्जामअहन्निमज्झयणज्झावणं पंचमंगलस्स सोलसद्धजामियं चं अन्नंच-पंचमंगलं कयसामाइए वा अकयसामाइए वा अहीए सामाइयमाइयं तु सुयं चत्तारंभपरिग्गहे जावजीवकयसामाइए अहिज्जिणइ, ण उण सारंभपरिग्गहे अकयसामाइए, तहा पंचमंगलस्स आलावगे २ आयंबिलं तहा सक्कत्थवाइसुवि, दुवालसंगस्स पुण सुयनाणस्स उद्देसगवज्झयणेसु ॥२६॥ से भयवं ! सुदुक्करं पंचमंगलमहासुयक्खंधस्स विणओवहाणं पन्नत्तं, महती य एसा णियंतणा कहं बालेहिं कज्जइ ?, गोयमा ! जे णं केई ण इच्छेज्जा एयं नियंतणं अविणओवहाणेणं चेव पंचमंगलाइसुयनाणं अहिज्जिणे अज्झावेइ वा अज्झावयमाणस्स वा अणुत्तं वा पयाइ से णं ण भविज्जा पियधम्मे ण हवेज्जा दढधम्मे ण भवेज्जा भत्तीजुए हीलिज्जा सुत्तं हीलेज्जा अत्थं हीलिज्जा सुत्तत्थउभयं हीलज्जि सुत्तत्थोभए जाव णं गुरूं से णं आसाएज्जा अतीताणागयवट्ठमाणे तित्थयरे आसाइज्जा आयरियउवज्झायसाहुणो, जे णं आसाइज्जा सुयणाणमरिहंतसिद्धसाहू से तस्स णं सुदीहयालमणंतसंसारसागरमाहिडेमाणस्स तासु तासु संबुडवियसडासु चुलसीइलक्खपरिसंखाणासु सीओसिणमिस्सजोणीसु तिमिसंधयारदुग्गधऽमिज्झविलिरखारमुत्तोज्झसिंभपडिहत्थवसाजलुल (स) पूयदुद्धिणचिलिचिल्लरूहिरचिल्लदुद्धंसणजंबालपंकबीभच्छघोरगब्भवासेसु कढकढकढेतचलचलचलचलस्सटलयलयलस्सरज्जंतर (जंत) संपिडियंगमंगस्स सुइरं नियंतणा, जे ऊण एयं विहिं फासेज्जा नो णं मणयंपि अइयरेज्जा जहुत्तविहाणेणं चेव पंचमंगलपभिइसुयनाणस्स विणओवहाणं करेज्जा से णं गोयमा ! नो

हीलिज्जा सुत्तं णो हीलिज्जा अत्थं णो हीलिज्जा सुत्तत्थोभए से णं नो आसाइज्जा तिकालभावी तित्थकरे णो आसाइज्जा तिलोगसिहरवासी विहयरयमले सिद्धे णो आसाइज्जा आयरियउवज्झायसाहुणो सुहुयरं चेव भवेज्जा पियधम्मो दढधम्मो भत्तीजुत्ते एगंतेणं भवेज्जा सुत्तत्थाणुरंजियमाणसे सद्धासंवेंगमावन्नो, से एस णं ण लभेज्जा पुणो २ भवचारगे गब्भवासाइयं अणेगहा जंतणंति ॥२७॥ णवरं गोयमा ! जे णं बाले जाव अविन्नायपुत्तपावाणं विसेसो ताव णं से पंचमंगलस्स णं गोयमा ! एगंतेणं अओगे, ण तस्स पंचमंगलमहासुयक्खंधस्स एगमवि आलावगं दायव्वं, जओ अणाइभवंतरसमज्जियासुहकम्मरासिदहणट्टमिणं लभेत्ताणं न बाले सम्ममाराहेज्जा लहुत्तं च आणेइ, ता तस्स केवलं धम्मकहाए गोयमा ! भत्ती समुप्पाइज्जइ, तओ नाऊणं पियधम्मं दढधम्मं भत्तिजुत्तं ताहे जावइयं पच्चक्खाणं निव्वाहेउं समत्थो भवइ तावइयं कारवेज्जइ, राइभोयणं च दुविहतिविहचउव्विहेण वा जहासत्तीए पच्चक्खाविज्जइ ॥२८॥ ता गोयमा ! णं पणयालाए नमोक्कारसहियाणं चउत्थं चउवीसाए पोरुसीहिं बारसहिं पुरिमहेहिं दसहिं अवहेहिं तिहिं निव्वीइएहिं चउहिं एगट्ठाणगेहिं दोहिं आयंबिलेहिं एगेणं सूद्धच्छायंबिलेणं, अव्वावारत्ताए रोइट्टज्झाणविगहाविरहियस्स सज्झाएगगचित्तस्स गोयमा ! एगमेवायंबिलं मासखमणं विसेसेज्जा, तओ य जावइयं तवोवहाणगं वीसमंतो करेज्जा तावइयं अणुगणेऊणं जाहे जाणेज्जा जहा णं एत्तियमित्तेणं तवोवहाणेणं पंचमंगलस्स जोगीभूओ ताहे आउत्तो पाढेज्जा, ण अन्नहत्ति ॥२९॥ से भयवं ! पभूयं कालाइक्कमं एयं, जइ कयाइ अवंतराले पंचत्तमुवगच्छे तओ नमोक्खारविरहिए कहमुत्तिमट्ठं साहेज्जा ?, गोयमा ! जंसमयं चेव सुत्तोवयारनिमित्तेणं असढभावत्ताए जहासत्तीए किंचि तवमारभेज्जा तंसमयमेव तदहीयसुत्तत्थोभयं दट्ठव्वं, जओ णं सो तं पंचनमोक्कारं सुत्तत्थोभयं ण अविहीण गिण्हे, किंतु तह गेण्हे जहा भवंतरेसुं पि ण विप्पणस्से, एयज्झवसायत्ताए आराहगो भवेज्जा ॥३०॥ से भयवं ! जेण पुण अन्नेसिमहीयमाणानं सुयावरणक्खओवसमेण कण्णहाडित्तणेणं पंचमंगलमहीयं भवेज्जा सेऽविय किं तवोवहाणं करेज्जा ?, गोयमा ! करेज्जा, से भयवं ! केणं अट्टेणं ?, गोयमा ! सुलभबोहिलाभनिमित्तेणं, एवं चेयाइं अकुव्वमाणे णाणकुसीले णेए ॥३१॥ तहा गोयमा ! णं पव्वज्जादिवसप्पभिईए जहुत्तविणओवहाणेणं जे केई साहू वा साहुणी वा अपुव्वनाणगहणं न कुज्जा तस्सासयिं विराहियं सुत्तत्थोभयं, सरमाणे एगगचित्ते पढमचरमपोरिसीसु दिया राओ य णाणुगणेज्जा से णं गोयमा ! णाणकुसीले णेए, से भयवं ! जस्स अइगरूयनाणावरणोदणं अनिसं पहोसेमाणस्स ण संवच्छरेणावि सिलोगद्धमवि थिरपरिचियं (ण) भवेज्जा (से किं कुज्जा ?,) तेणावि जावज्जीवाभिग्गहेणं सज्झायसीलाणं वेयावच्चं तहा अणुदिणं अट्ठाइज्जे सहस्से पंचमंगलाणं सुत्तत्थोभए सरमाणेगगमाणसे प्होसिज्जा, से भयवं ! केणं अट्टेणं ?, गोयमा ! जे भिक्खू जावज्जीवाभिग्गहेणं चाउक्कालियं वायणाइ जहासत्तीए सज्झायं न करेज्जा से णं णाणकुसीले णेए ॥३२॥ अन्नंच जे केइ जावज्जीवाभिग्गहेण अपुव्वं नाणाहिगमं करेज्जा तस्सासत्तीए पुव्वाहियं गुणेज्जा, तस्सावि यासत्तीए पंचमंगलाणं अट्ठाइज्जे सहस्से परावत्ते सेवि आराहगे, तं च नारावरणं खवेत्ताणं तित्थयरेइ वा गणहरेइ वा भवेत्ताणं सिज्झेज्जा ॥३३॥ से भयवं ! केणं अट्टेणं एवं वुच्चइ जहा णं चाउक्कालियं सज्झायं कायव्वं ?, गोयमा ! 'मणवयणकायगुत्तो नाणावरणं खवेइ अणुसमयं । सज्झाए वट्ठंतो खणे खणे जाइ वेरगं ॥८॥ उट्ठमहे तिरियंमि य जोइसवेमाणिया य सिद्धी य । सव्वो लोगालोगो सज्झायविउस्स पच्चक्खं ॥९॥ दुवालसविहंमिवि तवे सब्भिं तरबाहिरे कुसलदिट्ठे । णवि अत्थि णविय होही सज्झायसमं तवोकम्मं ॥११०॥ एगदुत्तिमासक्खमणं संवच्छरमवि य अणसिओ होज्जा । सज्झायझाणरहिओ एगोवासफलं पिण लभेज्जा ॥१॥ उग्गमउपायणएसणाहिं सुद्धं तु निच्च भुंजंतो । जइ तिविहेणाउत्तो अणुसमय भवेज्ज सज्झाए ॥२॥ ता तं गोयम ! एगगमाणसत्तं ण उवमिउं सक्का । संवच्छरखवणेणवि जेण तहिं पिज्जराऽणंता ॥३॥ पंचसमिओ तिगुत्तो खंतो दंतो य निज्जरापेही । एगगमाणसो जो करेज्ज सज्जाय मुणीभत्ते (सुणिब्भंतो) ॥४॥ जो वागरे पसत्थं सुयनाणं जो सुणेइ सुहभावो । ठइयासवदारत्तं तक्कालं गोयमा ! दोण्हं ॥५॥ एगंपि जो दुहत्तं सत्तं पडिबोहिउं ठवइ मग्गे । ससुरासुरंमिवि जगे तेणेह घोसिओ अमाघाओ ॥६॥ धाउपहाणो कंचणभावं न य गच्छई कियाहीणो । एवं सव्वोवि जिणोवएसहीणो न बुज्झेज्जा ॥७॥ गयरागदोसमोहा धम्मकहं जे करेति समयन् । अणुदियहमवीसंता सव्वप्पावाण

मुचंति ॥८॥ निसुणंति अ भयणिज्जं एगंतं निज्जरं कहंताणं । जइ अन्नहा ण सुतं अत्थं वा किंचि वाएज्जा ॥११९॥ एएणं अट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहा णं जावज्जीवं अभिग्गहेणं चाउक्कालियं सज्झायं कायव्वंति, तहा अ गोयमा ! जे भिक्खू विहिए सुपसत्थनाणमहिज्जेऊण नाणमयं करेज्जा सेवि नाणकुसीले, एवमाइनाणकुसीले अणेगहा पन्नविज्जंति ॥३४॥ से भयवं ! कतरे ते दंसणकुसीले ?, गोयमा ! ते दंसणकुसीले दुविहे नेए आगमओ णोआगमओ अ, तत्थ आगमओ सम्मइंसणं संकंते कंखंते विदुगुच्छंते दिट्ठीमोहं गच्छंते अणोववूहए परिवडियधम्मसद्धो सामन्नमुज्झिउकामाणं अथिरीकरणेणं साहम्मियाणं अवच्छल्लत्तणेणं अप्पभावणाए, एतेहिं अट्ठहिं थाणंतरेहिं कुसीले णेए ॥३५॥ णोआगमओ य दंसणकुसीले अणेगहा, तंजहाचक्खुकुसीले घाणकुसीले सवणकुसीले जिभाकुसीले सरीरकुसीले, तत्थ चक्खुकुसीले तिविहे णेए, तंजहा-पसत्थचक्खुकुसीले पसत्थापसत्थचक्खुकुसीले अपसत्थचक्खुकुसीले, तत्थ जे केइ पसत्थं उसभादितित्थयरबिंबं पुरओ चक्खुगोयरटितठअं तमेव पासेमाणे अण्णं कंपि मणसा पसत्थमज्झवसे से णं पसत्थचक्खुकुसीले, तहा पसत्थापसत्थचक्खुकुसीले तित्थयरबिंबं हियएणं अच्छीहिं च (पासेमाणे) अन्नं किंपि पीहिज्जा से णं पसत्थापसत्थचक्खुकुसीले तहा पसत्थापसत्थाइं दव्वाइं कागबगढंकतित्तिरमयूराइं सुकंतदित्तिथियं वा दट्ठुणं तयहुतं चक्खुं विसज्जे सेवि पसत्थापसत्थचक्खुकुसीले, तहा अपसत्थचक्खुकुसीले तिसट्ठेहिं पयारेहिं अपसत्था सरागा चक्खूत्ति, से भयवं ! कयरे ते अपसत्थे तिसट्ठी चक्खुभेए ?, गोयमा ! इमे तंजहा-सददु कक्खडहरवा (क्खा) तारा मंदा मदलसा वंका विवंका कुसीला अट्ठिक्खिया काणिक्खिया १० भामिया उब्भामिया चलिया वलिया चलवलिया अडुंमिल्ला मिलिमिला माणुसा पसवा पक्खा २० सरीसवा असंता अपसंता अथिरा बहुविगारा साणुरागा रोगोईरणी रोगजन्नाऽऽमयुप्पायणी मयणी ३० मोहणी भउईरणी भयजन्ना भयंकरी हिययभेइणी संसयावहरणी चित्तचमक्कुप्पायणी णिबद्धा अतिबद्धा ४० गया आगया गयागयप्पच्चागया निब्बाडणी अहिलसणी अरइकरा रइकरा दीणा दयावणा सूराधीराहणणी ५० मारणी तावणी संतावणी कुद्धा पकुद्धा घोरो महाघोरा चंडा रूद्धा सुद्धा हाहाभूयसरणा ६० रूक्खा सणिद्धा रूक्खसणिद्धत्ति, महिलाणं चलणंगुठुकोडिणऽडुकरसुविलिहियं दिन्नलत्तं गायं च णहं मणिकिरणनिबद्धसक्कचावं कुम्मुन्नयं चलणं संमग्गनिमग्गवट्ठगूढं जाणुं जंघा पिहुलकडियडभोगा जहणणियं बणाहीथण- गुज्झंतरकट्ठाभुयलट्ठीओ- अहरोट्टदसणपंतीकन्न- नासनयणजुयलभमुहानिलाड- सिररूहसीमंतयामोडय- पेढतिलगकुंडलकवोलकज्ज- लतमालकलावहार- कडिसुत्तगणेउराबहुर- क्खगमणिरयणकडगकंकण- मुद्धियाइसुकंतदित्ता- भरणदुगुल्लवसणनेवत्था कामगिसंधुक्खणी निरयतिरियगइसुं अणंतदुक्खदायगा एस साहिलाससरागदिट्ठति एस चक्खुकुसीले ॥३६॥ तहा घाणकुसीले जे केई सुरहिगंधेसु संगं गच्छइ दूरहिगंधे दुगुंचे से णं घाणकुसीले, तहा सवणकुसीले दुविहे णेए पसत्थे अप्पसत्थे य, तत्थ जे भिक्खू अप्पसत्थाइं कामगारसंधुक्खणुद्धीवणुज्जालणसंदीवणाइं गंधव्वनट्ठधणुव्वेयहत्थिसिक्खाकामरतीसत्थाइं सुणेऊणं णालोएज्जा जाव णं णो पायच्छित्तमणुचरेज्जा से णं अपसत्थसवणकुसीले णेए, तहा जे भिक्खू पसत्थाइं सिदंताचरियपुराणधम्मकहाओ य अन्नाइं च धम्मसत्थाइं सुणेत्ताणं न किंचि आयहियं अणुट्ठे णाणमयं च करेइ से णं पसत्थसवणकुसीले णेए, तहा जिब्भाकुसीले से णं अणेगहा तंजहा-तित्तकडुयकसायमहुरंबिललवणाइं रसाइं आसायंते अदिट्ठासुयाइं इहपरलोगोभयविरूद्धाइं सदोसाइं मयारजयारूच्चारणाइं अयसऽब्भक्खाणासंताभिओगाइं वा भणंते असमयन्नुधम्मदेसणापवत्तणेण य जिब्भाकुसीले णेए, से भयवं ! किं भासाएवि भासियाए कुसीलत्तं भवति ?, गोयमा ! भवइ, से भयवं ! जइ एवं ताव धम्मदेसणं न कायव्वं ?, गोयमा ! 'सावज्जऽणवज्जाणं वयणाणं जो न जाणइ विसेसं । वुत्तुपि तस्स न खमं किमंग पुण देसणं काउं ? ॥१२०॥३७॥ तहा सरीरकुसीले दुविहे णेए-चेट्ठाकुसीले विभूसाकुसीले य, तत्थ जे भिक्खू एयं किमिकुलनिलयं सउणसाणाइभत्तं सडणपडणविद्धंसणधम्मं असुइं असासयं असारं सरीरगं आहारादीहिं णिच्चं चेट्ठेज्जा णो इणमो भवसयसुलद्धनाणदंसणाइसमन्निएणं सरीरेणं अच्चंतघोरवीरूग्गकट्ठघोरतवसंजमणुट्ठेज्जा से णं चेट्ठाकुसीले, तहा जे रं विभूसाकुसीले सेऽवि अणेगहा, तंजहा- तेल्लाब्भंगण- विमइणसंवाहणसिणाणुव्वट्ठण- परिहसणतंबोलधूवणवासणदसणूघसणसमा (२८३) लहणपुप्फोमालणकेससमारण- सोवाहणदुवियहुगइ- भणिरहसिरउवविट्ठि- यसन्निवन्नक्खियविभू-

सावत्तिसविगारणीयंसणुत्तरीय-पाउरणदंडगगहणमाई-सरीरविभूसाकुसीले णेए, एते य पवयणउड्डाहपरे दुरंतपंतलक्खणे अदद्ववे महापावकम्मकारी विभूसाकुसीले भवन्ति. गए दंसणकुसीले ॥३८॥ तहा चारित्तकुसीले अणेगहा मूलगुणउत्तरगुणेसु. तत्थ मूलगुणा पंच महव्वयाणि राइभोयणच्छट्ठाणि. तेसुं जे पमत्ते भवेज्जा, तत्थ पाणाइवायं पुढवीदगागरिमारूयवणस्सइबित्तिचउपंचिदियाईणं संघट्टणपरियावणकिलामणोद्वणे. मुसावायं सुहुमं णयरं च, तत्थ सुहुमे पयलाउल्ला मरूए एवमादी बादरो कन्नालीगादि, अदिन्नादाणं सुहुमं बादरं च, तत्थ सुहुमं तणडगलच्छारमल्लगादीणं गहणे. बायरं हिरण्णसुवण्णादीण मेहुणं दिव्वोरालियं मणोवयकायकरणकारावणाणुमइभेदेण अट्टारसहा, तहा करकम्मादी सचित्ताचित्तभेदेणं, णवगुत्तीविराहणेण वा विभुसावत्तिण वा परिग्गहं सुहुमं बायरं च तत्थ सुहुमं कप्पट्टगरक्खणममत्तो बादरं हिरण्णमादीण गहणे धारणे वा, राईभोयणं दियागहियं दियाभुत्तं एवमादि, उत्तरगुणा 'पिंडस्स जा विसोही समितीओ भावणा तवो दुविहो । पडिमा अभिग्गहावि य उत्तरगुणमो वियाणाहि ॥१२१॥ तत्थ पिंडविसोही-सोलस उग्गमदोसा सोलस उप्पायणाय दोसा उ । दस एसणाय दोसा संजोयणमाइ पंचेव ॥२॥ तत्थ उग्गमदोसा-आहाकम्मुद्देसिय पूर्वकम्मे य मीसजाये य । ठवणा पाहुडियाए पाओयर कीय पामिच्चे ॥३॥ परियट्टिए अभिहडे उब्भिन्ने मालोहडे इय । अच्छिज्जे अणिसट्टे अज्झोयरए य सोलसमे ॥४॥ इमे उप्पायणादोसा-धाई दूई निमित्ते आजीव वणीमगे तिगिच्छाए । कोहे माणे माया लोभे य हवन्ति दस एए ॥५॥ पुव्विपच्छासंथव विज्जा मंते य चुण्णजोगे य उप्पायणाय दोसा सोलसमे मूलकम्मे य ॥६॥ एसणादोसा-संकियमक्खियनिक्खित्तपिहियसाहरियदायगुम्मीसे । अपरिणयलित्तछट्ठिय एसणदोसा दस हवन्ति ॥७॥ तत्थुग्गमदोसे गिहत्थसमुत्थे उप्पायणादोसे साहुसमुत्थे एसणादोसे उभयसमुत्थे, संजोयणा पमाणे इंगाल धूम काणे पंच मंडलीय दोसे भवन्ति, तत्थ संजोयणा उवगरणभत्तपाणसवब्भंतरबहिभेएणं, पमाणं 'बत्तीसं किर कवले आहारो कुच्छिपूरओ भणिओ । रागेण सइंगालं दोसेण सधूमगंति नायव्वं ॥८॥ कारणं 'वेयण वेयावच्चे इरियट्टाए य संजमट्टाए । तह पाणवत्तियाए छट्ठ पुण धम्मचिंताए ॥९॥ नत्थि छुहाइ सरिसिया वियणा भुजिज्ज तप्पसमणट्टा । छाओ वेयावच्चं ण तरइ काउं अओ भुजे ॥१३०॥ इरियं पि न सोहिस्सं पेहाइयं च संजमं काउं । थामे वा परिहायइ गुणणऽणुप्पेहासु य असत्तो ॥१॥ पिंडविसोही गया, इयाणिं समितीओ पंच तंजहा-ईरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आदाणभंडमत्तनिकखेवणासमिई उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिई, तहा गुत्तीउ तिन्नि मुणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती, ता भावणाओ दुवालस तंजहा=अणिच्चत्तभावणा असरणभावणा एगत्तभावणा अन्नत्तभावणा असुइभावणा विचित्तसंसारभावणा कम्मासवभावणा संवरभावणा विनिज्जरभावणा लोगवित्थरभावणा धम्मं सुयक्खायं सुपन्नत्तं तित्थयरेहिति तत्तचिंताभावणा बोही सुदुल्लभा जम्मंतरकोडीहिवित्ति भावणा, एवमादियाणंतरेसुं जे पमायं कुज्जा से णं चारित्तकुसीले णेए ॥३९॥ तहा तवकुसीले दुविहे णेए बज्झतवकुसीले य. तत्थ जे केई विचित्तअणसणऊणोदरियावित्तीसंखेवणरसपरिच्चाय-कायकिलेससंलीणयत्ति छट्ठाणेसु न उज्जमेज्जा से णं बज्झतवकुसीले, तहा जे केई विचित्तपच्छित्तविणयवेयावच्चसज्झायझाणउस्सगंमि चेएसुं छट्ठाणेसुं न उज्जमेज्ज से णं अब्भितरतवकुसीले ॥४०॥ तहा पडिमाओ बारस तंजहा - 'मासाद सत्तंता एगदुगतिगसत्तराइदिण तिन्नि । अहराती एगराती भिक्खूपडिमाण बारसगं ॥२॥ तह अभिग्गहा-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ, तत्थ दव्वे कुम्मासाइयं दवं गोहयव्वं, खेत्तओ गामे बाहिं वा गामस्स कालओ पढमपोरिसीमाईसु भावो कोहमाइसंपन्नो जं देहिइ तं गहिस्सामि, एवं उत्तरगुणा संखेवओ समत्ता, समत्तो य संखेवेणं चरित्तायारो, तवयारोऽवि संखेवेणेहंतरगओ. तहा वीरियायारो एसु चेव जा अहाणी, एसुं पंचसु आयाराइयारेसुं जं आउट्टियाए दप्पओ पमाया कप्पेण वा अजयणाए वा जयणाए वा पडिसेवियं तं तहेवालोइत्ताणं जं मग्गविऊ गुरू उवइसंति तं तहा पायच्छित्तं नाणुचरेइ. एवं अट्टारसण्हं सीलंगसहस्साणं जं जत्थ पए पमत्ते भवेज्जा से णं तेणं तेणं पमायदोसेणं कुसील णेए ॥४१॥ तहा ओसन्नेसु जाणे, गित्थ लिहिज्जइ, पासत्थे णाणामादीणं सच्छंदे उस्सुत्तमग्गमामी सबले णेत्थं लिहिज्जति, गंथवित्थरभयाओ, भगवया उण एत्थं पत्थावे कुसीलादी

महापबंधेण पन्नविण. एत्थं च जा जा कत्थई अण्णणवायणा सा सुमुणियसमयसारेहिंतो पउंसे (जे) यच्चा, जओ मूलादरिसे चेव बहुगंथं विप्पणट्ठंतहिं च जत्थ २ संबंधाणुल्लगं संबज्झइ एत्थं लिहियंति, ण उण सकव्वं कयंति ॥४२॥ पंचए सुमहापावे, जे ण वज्जज्ज गोयमा ॥ संलावादीहिं कुसीलादी, भमिही सो सुमती जहा ॥१३३॥ भवकायठितिए संसारे, घोरदुक्खसमोत्थओ । अलहंतो दसविहे धम्मे, बोहिमहिंसाइलक्खणे ॥४॥ एवं तु किर दिट्ठंतं. संसग्गीगुणढोसओ । रिसिभिल्लासमवासेणं, णिप्फणं गोयमा ! सुणे ॥५॥ तम्हा कुसीलसंसग्गी, सब्बोवाएहिं गोयमा ॥ वज्जियाऽऽयहियाकंखी, अंहजदिट्ठंतजाणगे ॥१३६ ★★ ★

॥ महानिसीसुयक्खंधस्स तइयमज्झयणं ॥३॥ ★★ ★ से णं भयवं ! कहं पुण तेण सुमइरा कुसीलसंसग्गी कायव्वा आसी जाए अ एयारिसे अइदारूणे अवसाणे समक्खाए, जेण भवकायट्ठिइए अणोरपारं भवसायरं भमिही से वराए दुक्खसंतते अलभंते सब्बण्णुवएसिए अहिंसालक्खणे खंतादिदसविहे धम्मे बोहिंति ?, गोयमा ! णं इमे तंजहा=अत्थि इहेव भारहे वासे मगहा नाम जणवओ, तत्थ कुसत्थलं नाम पुरं, तंमि य उवलद्धपुत्तपावे सुमुणियजीवाजीवादिपयत्थे सुमइणाइलणामधेज्जे दुवे सहोयरे महद्धीए सट्ठगे अहेसि अहऽन्नया अंतरायकम्मोदएणं वियलियं विहवं तेसिं, र उण सत्तपरक्कमे, एवं तु अचलियसत्तपरक्कमाणं तेसिं अच्चंतं परलोगभीरूणं विरयकूडकवडालियाणं पडिवन्नजहोवइट्ठदाणाइचउक्खंधउवासगधम्माणं अपिसुणामच्छरीणं अमायावीणं, किं बहुणा ?, गोयमा ! ते उवासगा णं आवसहा गुणरयणाणं पभवा खंतीए निवासे सुयणमेत्तीणं, एवं तेसिं बहुवासरवन्नणिज्जगुणरयणंणंपि जाहे असुहकम्मोएणं ण पट्ठुप्पए संपया ताहे ण पट्ठुप्पंति अट्ठहियामहयामहिमादओ इट्ठदेवयाणं जहिच्छिए पूयासक्कारे साहम्मियसंमाणो बंधुयणसंववहारे य ॥१॥ अहऽन्नया अचलंतेसु-अतिहिसक्कारेसु अपूरिज्जमाणेसु पणइयणमणोरहेसुं विहडंतेसु य सुहिसयणमित्तबंधवकलत्तपुत्तणत्तुयगणेसु विसायमुवगएहिं गोयमा ! चित्तियं तेहिं सट्ठगेहिं, तंजहा- 'जा विहवो तो पुरिसस्स होइ आणापडिच्छओ लोओ । गलिउदयं घणं विज्जुलावि दूरं परिच्चयइ ॥१॥ एवं च चित्तिऊण परोप्परं भणिउमारद्धे, तत्थ पढमो=पुरिसेण माणधणवज्जिएण परिहीणभागधेज्जेणं । ते देसा गंतव्वा जत्थ सवास ण दीसंति ॥२॥ तहा बीओ 'जस्स धणं तस्स जणो जस्सऽत्थो तस्स बंधवा बहवे । धणरहिओ उ मणूसो होइ समो दासपेसेहिं ॥३॥ अह एवमपरोप्परं संजोज्जेइ, संजोज्जेऊण गोयमा ! कयं देसपरिच्चायनिच्छयं तेहिंति जहा वच्चामो देसंतरंति, तत्थ ण कयाई पुज्जंति चिरचित्तिए मणोरहे हवइ पव्वज्जाए सह संजोगो जइ दिव्वो बहु मन्नेज्जा, जाव णं उज्झिऊणं तं कमागयं कुसत्थलं पडिवन्नं विदेसगमणं ॥२॥ अहऽन्नयाअणुप्पहेणं गच्छमाणेहिं दिट्ठा तेहिं पंच साहुणो छट्ठं समणोवासगंति, तओ भणियं णाइलेण-जहा भो भो सुमती ! भइमुह ! पेच्छ केरिसो साहुसत्थो ?, ता एएणं चेव साहुसत्थेणं गच्छामो, जइ पुणोवि नूणं गंतव्वं, तेण भणियं-एवं होउत्ति, तओ संमिलिया तत्थ सत्थे, जाव णं पयाणगमेणं वहंति ताव णं भणिओ सुमती णाइलेणं, जहा णं भइमुह ! मए हरिवंसतिलयमरयच्छविणो सुगहियनामधेज्जस्स बावीसइमत्तित्थगरस्स णं अरिट्ठनेमिनामस्स पायमूले सुहनिसण्णेणं एवमवधारियं आसी, जहा जे एवंविहे अणगाररूवे भवंति ते य कुसीले, जे य कुसीले ते दिट्ठिएवि निरिक्खिउं न कप्पंति, ता एते साहुणो तारिसे, मणागं न कप्पए एतेसिं समं अम्हाण गमरसंसग्गी, ता वयंतु एते, अम्हे अप्पसत्थेण चेव वइस्सामो, न कीरइ तित्थयरवयणस्सातिकमो, जओ णं ससुरासुरस्सावि जगस्स अलंघणिज्जा तित्थयरवाणी, अन्नंच जाव एतेहिं समं गम्मइ ताव णं चिट्ठउ ताव दरिसणं, आलावादी णियमा भवंति, ता किमम्हेहिं तित्थयरवाणिं उल्लंघिताणं गंतव्वं ?, एवं तमणुभाविऊणं तं सुमतिं हत्थे गहाय निव्वडिओ नाइलो साहुसत्थाओ ॥३॥ निविट्ठो य चक्खुविसोहिए फासुगे भूपएसे, तओ भणियं सुमइणा, जहा- 'गुरूणो मायावित्तस्स जेट्ठभाया तहेव भइणीणं । जत्थुत्तरं न दिज्जइ हा देव ! भणामि किं तत्थ ? ॥४॥ आएसेऽवि इमाणं पमाणपुव्वं तहत्ति ना (का) यव्वं । मंगुलममंगुलं वा तत्थ विचारो न कायव्वो ॥५॥ णवरं एत्थ य मे अज्ज दायव्वं अज्जमुत्तरमिमस्स । खरफरूसकक्कसाणिट्ठदुट्ठनिट्ठुरसरेहिं तु ॥६॥ अहवा कह उच्छलउ जीहा मे जेट्ठभाउणो पुरओ ? । जस्सुच्छंगे विणियंसणोऽह रमिओऽसुइविलित्तो ॥७॥ अहवा कीस ण लज्जइ एस सयं चेव एव पभणंतो ? । जं तु कुसीले एते दिट्ठीएवी ण

दठ्ठवे ॥८॥ साहुणोत्ति, जाव न एवइयं वायरे ताव णं इंगियागारकुसलेणं मुणियं णाइलेणं, जहा णं अलियकसाइओ एस मणगं सुमती, ता मिकहं पडिभणामिति चित्तिउं समाढतो जहा- 'कज्जेण विण अकंडे एस पकुविओ हु ताव संचिट्ठे । संपइ अणुणिज्जंतो ण याणिमो किं च बहु मन्ने ? ॥९॥ ता किं अणुणेमिमिणं उयाहु बोलउ खणद्धतालं वा । जेणुवसमियकसाओ पडिवज्जइ तं तहा सव्वं ॥१०॥ अहवा पत्थावमिणं एयस्सवि संसयं अवहरेमि । एस ण याणइ भद्दो जाव विसेसं णऽपरिकहियं ॥११॥ ति चित्तेऊणं भणिउमाढतो-नो देमि तुब्भ दोसं ण यावि कालस्स देमि दोसमहं । जं हियबुद्धीएँ सहोयरावि भणिया पकुप्पंति ॥१२॥ जीवाणं चिय एत्थं दोसं कम्मठ्ठजालकसियाणं । जं चउगइनिप्फिडणं हिओवएसं न बुज्झंति ॥१३॥ घणरागदोसकुग्गहमोहमिच्छत्तखवलियमणाणं । भाइ विसं कालउडं हिओवएसामयप्पइभं ॥१४॥ ति, एवमायन्निऊण तओ भणियं सुमइणा, जहा तुमं चेव सच्चवादी भणसु एयाइं, णवरं ण जुत्तमेयं जं साहूणं अवन्नवायं भासिज्जइ, अन्नं तु किं तं न पेच्छसि तुमं एसिं महाणुभागाणं चिट्ठियं ?, छठ्ठमदसमदुवालसमासखमणाईहिं आहारग्गहणं गिम्हासु यावणट्ठा वीरासणउक्कडुयासणनाणाभिग्गहधारणेणं च कदठवोऽणुचरणेणं च पसुक्खं मंससोणियंति, महाउवासगो सि तुमं महाभासासमिती विइया तए जेणेरिसगुणोवउत्ताणंपि महाणुभागाणं साहूण कुसीलत्ति नामं संकप्पियंति, तओ भणियं नाइलेणं-जहा मा वच्छ ! तुमं एतेणं परिओसमुवयासु, जहा अहयं आसवारेणं परामुसिओऽज्ज, अकामनिज्जराएवि किंचि कम्मखयं भवइ, किं पुण जं बालतवेणं ?, ता एते बालतवस्सिणो दठ्ठवे, जओ णं किं किंचि उस्सुत्तमग्गयामित्तमेएसिं न पईसे ?, अन्नं च-वच्छ सुमइ ! णत्थि ममं इमाणोवरिं कोवि सुहुमोवि मणसावि उ पओसो जेणाहमेएसिं दोसगहणं करेमि, किंतु मए भगवओ तित्थयरस्स सगासे एरिसमवधारियं जहा कुसीले अदठ्ठवे, ताहे भणियं सुमइणा, जहा जारिसो तुमं निब्बुद्धीओ तारिसो सोवि तित्थयरो जेण तुज्झमेयं वायरियंति, तओ एवं भणमाणस्स सहत्थेणं झंपियं मुहकुहरं सुमइस्स णइलेणं, भणिओ य जहा भद्दमुह ! मा जगेक्कगुरूणो तित्थयरस्सासायणं कुणसु, मए पुण भणसु जहिच्छियं, नाहं ते किंचि पडिभणामि तओ भणियं सुमइणा, जहा जइ एतेवि साहुणो कुसीला ता एत्थ जगे ण कोई सुसीलो अत्थि, तओ भणियं णाइलेणं जहा भद्दमुह ! सुमइ इत्थं जयालंघणिज्जवक्कस्स भगवओ वयणमाथरेयव्वं जं चऽत्थिक्कयाए न विसंवएज्जा, णो णं बालतवस्सीण चेट्ठियं, जओ णं जिणइंदवयणेण नियमओ ताव कुसीले इमे दीसंति, पव्वज्जाए पुण गंधं पि णो दीसए एसिं, जेणं पिच्छ २ तावेयस्स साहुणो बिइज्जयं मुहणंतगं दीसइ ता एस ताव अहिगपरिग्गहदोसेणंकुसीलो, ण एयं साहूण भगवयाऽऽइडं जमहियपरिग्गहविधरणं करे, ता वच्छ १ हीणसत्तेहिं नो एसेवं मणसाऽज्झवसे जहा जइ ममेयं मुहणंतगं विप्पणस्सिहिइ ता बीयं कत्थ कहं पावेज्जा ?, नो एवं चित्तेइ मूढो जहा अहिगाणुवओ गोवहीधारणेणं मज्झं परिग्गहवयस्स भंगं होही, अहवा किं संजमेऽभिरओ एस मुहणंतगाइसंजमोवओग्गधम्मोवगरणेणवी सीएज्जा ?, नियमओ ण विसाए, णवरमत्ताणयं हीणसत्तो ऽहमिइ पायडे उम्मग्गायरणं च पयंसेइ पवयणं च मइलेइत्ति, एसा उ ण पेच्छसि सामन्नवत्ता, एएणं कल्लं तीए विशियंसणाइ इत्थीए अंगयट्ठिं निज्झाइऊणं जं नालोइयपडिक्कंतं तं किं तए ण विन्नायं ?, एस उ ण पिच्छेसि परूढविप्फोडगविम्हियाणणो ?, एतेणं संपयं चेव लोयट्ठाए सहत्थेणमदिन्नछारगहणं कयं, तएवि दिट्ठमेयंति, एसो उ ण पेच्छसि संघाडिए कल्ले एएणं अणुग्गए सूरिए उट्ठेह वच्चाओ उग्गयं सूरियंति तहा विहसियमिणं, एसे उ पेच्छसीमेसिं जिट्ठसेहो एसो अज्ज रयणीए अणोवउत्तो पसुतो विज्जुक्काए फुसिओ, ण एतेणं कप्पगहणं कयं, तहा पभाए हरियतणं वासाकप्पंचलेणं संघट्ठियं, तहा बाहिरोदग्गस्स णं परिभोगं कयं, बीयकायस्सोप्परेणं परिसक्किओ, अविहीए एस खारथंडिलाओ महुं थंडिलं संकमिओ, तहा पहपडिवन्नेणं साहुणा कमसयाइक्कमे ईरियं पडिक्कमियव्वं, तहा चरेयव्वं तहा चिट्ठेयव्वं तहा भासयव्वं तहा सएयव्वं जहा छक्कायमइगयाणं जीवाणं सुहुमबायरपज्जत्तापज्जत्तगमागमसव्वजीवपाणभूयसत्ताणं संघट्ठणपरियावणकिलामणोद्वणं ण भवेज्जा, ता एतेसिं एवइयाणं एयस्स एक्कमवि ण एत्थं दीसए, जे पुण मुहणंतगं पडिलेहमाणो अज्ज मए एस चोइओ जहा एरिसं पडिलेहणं करेसि जेण वाछक्काय फट्ठफडस्स संघट्ठेज्जा सरियं च पडिलेहणाए संतियं कारणंति, जस्सेरिसं जयणं एरिसं सोवओगं बहुं काहिसि संजमं ण संदेहं जस्सेरिसमाउत्तत्तणं तुज्झंति, एत्थं ज तएऽहं विणिवारिओ जहा णं मूगो ठाहि, ण अम्हाणं साहूहिं समं किंचि भणेयव्वं कप्पे, ता किमेयं तं विसुमरियं ?, ता भद्दमुह ! एएण संमं संजमत्थाणंतराणं

एगमवि णो परिरक्खियं, ता किमेस साहू भन्नेज्जा जस्सेरिसं पमत्तत्तणं ?, ण एस साहू जस्सेरिसं णिद्धम्मं संपल (व) तं, भद्दमुह ! पेच्छ २ सुणो इव णित्तिं सो छक्कायनिमद्दणो कहाभिरमे एसो ?, अहवा वरं सूणो जस्स सुसुहुममवि नियमवयभंगं णो भवेज्जा, एसो उ नियमभंगं करेमाणो केणं उवमेज्जा ?, ता वच्छ सुमइ भद्दमुह ! ण एरिस, कत्तव्वायरणाओ भवन्ति साहू, एतेहिं च कत्तव्वेहिं तित्थयरवयणं सरेमाणो को एतेसिं वंदणगमवि करेज्जा ?, अन्नंच. एएसिं कयाई अम्हाणंपि चरणकरणेसु सिद्धिलत्तं भवेज्जा, जे णं पुणो २ आहिडेमो घोरं भवपरंपरं, तओ भणियं सुमइणा, जहा जइ एए कुसीले जइ वासुसीले तहावि मए एएहिं समं पवज्जा कायव्वा, जं पुण तुमं करे (हे) सि तमेव धम्मं, णवरं को अज्ज तं समायरिउं सक्को ?, ता मुयसु करं, मए एतेहिं समं गंतव्वं जाव णं णो दूरं वयन्ति ते साहुणोत्ति, तओ भणियं णाइलेणं. भद्दमुह ! सुमइ णो कल्लाणं एतेहिं समं गच्छमाणस्स तुब्भन्ति, अहयंच तुब्भं हियवयणं भणामि, एवं ठिए जं चेव बहुगुणं तमेवाणुसेवय, णशहं तए दुक्खेण धरेमि, अह अन्नया अणेगोवाएहिपि निवारिज्जंतो ण ठिओ गओ सो मंदभग्गो सुमती गोयमा ! पव्वइओ य, अह अन्नया वच्चंतेणं मासपंचगेणं आगओ महारोखो दुवालससंवच्छरिओ दुब्भिक्खो, तओ ते साहुणो तक्कालदोसेणं अणालोइयपडिक्कंता मरिऊणो-ववन्ना भूयजक्खरक्खसपिसायादीणं वाणमंतरदेवाणं वाहणत्ताए, तओ चविऊणं मिच्छजातीए कुणिमाहारकूरज्झवसायदोसओ सत्तमाए, तओ उव्वट्टिऊणं तइयाए चउवीसिगाए सम्मत्तं पावेहिति, तओ य सम्मत्तलंभभवाओ तइयभवे चउरो सिज्झिहिति, एगो ण सिज्झिहिइ जो सो पंचमगो सब्वजेट्ठो, जओ णं सा एगंतमिच्छदिट्ठी अभव्यो य, से भयवं ! जेणं से सुमती से भव्वे उयाहु अभव्वे ?, गोयमा ! भव्वे, से भयवं ! जइ णं भव्वे ता णं मए समाणे कहिंसमुप्पन्ने ?, गोयमा ! परमाहम्मियासुरेसुं । ४। से भयवं ! किं भव्वे परमाहम्मियासुरेसु समुप्पज्जइ ?, गोयमा ! जे केई घणरागादेसमोहमिच्छत्तादएणं सुववसि (कहि) यंपि परमहिओवएसं अवमन्नेत्ताणं दुवासंगं च सुयनाणमप्पमाणीकरिय अयाणित्ताण य समयसब्भावं अणायारं पसंसियाणं तमेव उच्छप्पेज्जा जहा सुमइणा उच्छप्पियं 'न भवन्ति एए कुसीले साहुणो, अहा णं एएऽवि कुसीले तो एत्थं जगे न कोई सुसीलो. अत्थि निच्छियं मए एतेहिं, समं पव्वज्जा कायव्वा, तहा जारिसो तं निव्वुद्धीओ तारिसो सोऽवि तित्थयरो' त्ति एवं उच्चारमाणेणं, से णं गोयमा ! महंतं पि तवमणुट्ठेमाणे परमाहम्मियासुरेसुं उववज्जेज्जा, से भयवं ! परमाहम्मियासुरदेवा णं उव्वट्ठे समाणे कहिं उववज्जे ?, भगवं ! परमाहम्मियसुरदेवाणं उव्वट्ठे समाणे से सुमती कहिं उववज्जेज्जा ?, गोयमा ! तेणं मंदभागेणं अणायारपसंसुच्छप्पणं करमाणेणं सम्मग्गपणासणं अभिणंदियं तक्कम्मदोसेणं अणंतसंसारियत्तणमज्जियं, तो केत्ति ए उववाए तस्स साहेज्जा ?, जस्स णं अणेगपोग्गलपरियट्ठेसुवि णत्थि चउगइसंसाराओ अ. वंसाणंति तहावि संखेवओ सुणसु, गोयमा ! इणमेव मज्झंतरं अत्थि पडिसंतावदायगं नाम अब्बतेरसजोयणपमाणं हत्थि कुंभायारं थलं, तस्स य लवणजलोदएणं अब्बुट्ठाजेयणाणि उस्सेहो, तहिं च णं अच्चंतघोरतिमिसंधयाराउ घडियालगसंठाणाउ सीयासीलं गुहाओ, तासुं च णं जुगं जुगं अंतरंतरे जलयारिणो मणुया परिवसन्ति, ते य वज्जरिसहनारायणसंधयणे महाबलपरक्कमे अब्बतेरसरयणीपमाणेणं संखेज्जवासाऊ महुमज्जमंसप्पिए सहावओ इत्थीलोले परमदुवन्नसुउमालअणिट्ठखररूसि (क्खि) यतणू मायंगवइकयमुहे सीहघोरदिट्ठी कयंतभीसणे अदावियपट्ठी असणिव्व नदुरपहारी दप्पुद्धरे य भवन्ति, तेसिति जाओ अंतरंडगगोलियाओ ताओ गहाय चमरीणं संति एहिं सेयपुच्छवालेहिं गुंथिऊणं जे केई उभयकन्नेसु निधिऊण महाग्घुत्तम- जच्चरयणत्थी सागरम- णुपविसेज्जा से णं जलहत्थिमहिसगाहगमयरमहामच्छतंतुसुं सुमारपभितीहिं दुट्ठसावतेहिं अभेसिए चेव सव्वंपि सागरजलं आहिडिऊण जहिच्छाए जच्चरयणसंगहं करिय अहयसरीरे आगच्छे, ताणं च अंतरंडगोलियाण संधेण ते वराए गोयमा ! अणोवमं सुघोरं दारूणं दुक्खं पुव्वज्जियरोद्धकम्मवसगा अणुभवन्ति, से भयवं ! केणं अट्ठेणं !? गोयमा ! तेसिं जीवमाणानं को समज्जे तओ गोलियाओ गहेउं जे ?, जया उण ते घेप्पन्ति तया बुहुविहाइं नियंतणाइं महया साहसेणं सन्नद्धकरवालकुंतचक्काइपहरणाडोवेहिं बहु. सूरधीरपुरिसेहिं बुद्धिपुव्वगेणं सजीवियडोलाए घेप्पन्ति, तेसिं च घिप्पमाणानं जाइं सारीरमाणसाइं दुक्काइं भवन्ति ताइं सव्वेसु नारयदुक्खेसु जइ परं उवमेज्जा, से ! भयवं को उण ताओ अंतरंडगोलियाउ गेण्हिज्जा ?, गोयमा ! तत्थेव लवणसमुदे अत्थि रयणदीवं नाम अंतरदीवं, तस्सेव पडिसंतावदायगाओ थलाओ एगतीसाए

जोयणसएहिं तंनिवासिणो मणुया, भयवं ! कयरेणं पओगेणं ?, खेत्तसभावसिद्धेण पुव्वपुरिसे सिद्धेणं च विहाणेणं, से भयवं ! कयरे उण से पुव्वपुरिसिद्धे विही तेसिति ?, गोयमा ! तहियं रयणदीवे अत्थि वीसएगूणवीसअट्ठारस. दसट्ठसत्तधणूपमाणाइं घरट्ठसठाणाइं वरिट्ठवरसिलासंपुडाइं, ताइं च विघाडेऊणं ते रयणदीवनिवासिणो मणुया पुव्वसिद्धखेत्तसहावसिद्धेणं चेव जोगेणं पभूय मच्छिया महूओ अज्झं. तरेउं अच्चंतलेवाडाइं काउणं तओ तेसिं पक्कमंसखंडाणि बहूणि जच्चमहुमज्जभंडगाणि पक्खिवंति, तओ एयाइं करिय सुरुंददीहमहदुमकट्ठेहिं आरुभत्ताणं सुसाउपोराणमज्जम- जिगामच्छियामहुयपडिपुत्ते बहुए लाउगे गहाय पडिंसंतावदायगथलभागच्छंति, जाव णं तत्थागए समाणे ते गुहावासिणो मणुया पेच्छंति ताव णं तेसिं रणयदीवगणिवासिमणुयाणं वहाय पडिधावंति, तओ ते तेसिं महुपडिपुत्तं लाउगं पयच्छिऊणं अब्भत्थपओगेणं तं कट्ठजाणं जइणयरवेगं दुवं खेविऊणं रयणदीवाभिमुहे वच्चंति, इयरे य णं तं महुमांसादीयं, पुणो सुट्ठयरं तेसिं पिट्ठीए (विक्खिरमाणा) धावंति, ताहे गोयमा ! जाव ण अच्चासन्ने भवंति ताव णं सुसाउमहुगंधदव्वसक्कारिय पेराणमज्जलाउगमेगं पमुत्तूण पुणोवि जइणयरवेगेणं रयणदीवहुत्तो वच्चंति, इयरे य तं सुसाउमहुगंधदव्वसक्कारियं पोराणमज्जमांसाहयं, पुणो सुदक्खयरे तेसिं पट्ठीए धावंति, पुणोवि तेसिं महुपडिपुत्तलाउगमेगं मुंचंति, एवं ते गोयमा ! महुमज्जलोलिए संपलग्गे तावाणयंति जाव णं ते घरट्ठसंठाणे वइरसिलासंपुडे, ता जाव णं तावइयं भूभागं संपरायंति तव णं जमेवासन्नं वइरसिलासंपुडं जंभायमाणपुरिसमुहागारं विहाडियं चिट्ठइ तत्थेव जाइं महुमज्जपडिपुत्ताइं समुद्धसिरयाइं सेसलाउगाइं ताइं तेसिं पिच्छमाणाणं ते तत्थ मोत्तूणं नियनियनिलएसु वच्चंति, इयरे य महुमज्जलोलिएजाव णं तत्थ पविसंति ताव णं गोयमा ! जे ते पुव्वमुक्के पक्कमंसखंडे जे य ते महुमज्जपडिपुत्ते भंडगे जं च महूए चेवालित्तं सव्वं तं सिलासंपुडं पेक्खंति ताव णं तेसिं महंतं परिओसं महई तुट्ठी महंतं पमोदं भवइ, एवं तेसिं महुमज्जपक्कमंसं परिभुंजेमाणाणं जाव णं गच्छंति सत्तट्ठ दसपंचेव वा दिणाणि ताव णं ते रयणदीवनिवासी मणुया एगे सन्नद्धसाउहकरग्गा तं वइरसिलं वेढि- ऊणं सत्तट्ठपंतीहिं णं ठंति, अन्ने तं घरट्ठसिलासंपुडमायलित्ताणं एगट्ठं मेलंति, तंमि अ मेलिज्जमाणे गोयमा ! जई णं कहिंचि तुडितिभागओ तेसिं एकस्स दोण्हं पि वा णिप्फेडं भवेज्जा तओ तेसिं रयणदीवनिवासिमणुयाणं सविडविपासायमंदिरस्स उप्पायणं, तक्खणा चेव तेसिं हत्था संघारकालं भवेज्जा, एवं तु गोयमा ! तेसिं तेणं वज्जसिलाघरट्ठसंपुडेणं गिलियाणंपि तहियं चेव जाव णं सव्वट्ठिए दलिऊणं ण संपीसिए सुकुमालिया य (ण) ताव णं तेसिं णो पाणाइक्कमं भवेज्जा, तौ य अट्ठी वइरमिव दुद्धले, तेसिं तु तत्थ य वइरसिलासंपुडं कण्हगगेणगेहिं आउत्तमादरेणं अरहट्ठघरट्ठखरसण्हिगचक्कमिव परिमंडलं भूमालियं ताव णं खंडंति जाव णं संवच्छरं, ताहे तं तारिसं अच्चंतघोरदारुणं सारीरमाणसं महादुक्खसन्निवायं समणुभवमाणाणं पाणाइक्कमं भवइ तहावि ते तेसिं अट्ठीउ णो फुडंति, नो दोफले भवन्ति, णो संदलिज्जंति णो पघरिसंति, नवरं जाइं काइवि संधिसंधाणबंधणाइं ताइं सव्वाइं, विच्छुडेत्ताणकिं जज्जरीभवन्ति, तओ णं इयरुवलघरट्ठस्सेव परिसवियं चुण्णमिव किंचि अंगुलाइयं अट्ठिखंडं दट्ठूणं ते रयणदीवगे परिओसमुव्वहंतो सिलासंपुडाइं उच्चियाडिऊणं ताओ अंतरंडगोलियाओ गहाय जे तत्थ तुच्छहणे ते अणेगरित्थसंघाएणं विक्किणंति, एतेणं विहाणेणं गोयमा ! ते रयणदीवनिवासिणो मणुया ताओ अंतरंडागेलियाओ जेण्हंति, से भयवं ! कहं ते वराए तं तारिसं अच्चंतघोरदारुणसुदुस्सहं दुक्खनियरं विसहमाणे निराहारपाणगे संवच्छरं जाव पाणे विधारयंति ?, गोयमा ! सकयक्कमाणुभावाओ, सेसं तु पण्हावारणवुद्धविवरणादवसेयं । ५। से भयवं तओऽवि स मए समाणे से सुमती जीवे कहिं उववायं लभेज्जा ?, गोयमा ! तत्थेव पडिसंतावदायगथले, तेणेव कमेणं सत्त भवंतरे, तओवि दुट्ठसाणे तओवि कण्हे तओवि वाणमंतरे, तओवि लिंबत्ताए वणस्सईए, तओवि मणुएसुं इत्थित्ताए, तओवि छट्ठीए, तओवि मणुयत्ताए कुट्ठी, तओवि वाणमंतरे तओवि महाकाए जूहाहिवती गए, तओवि मरिऊणं मेहुणासत्ते अणंतवणप्फतीए, तओवि अणंतकालाओ मणुएसु संजाए, तओवि मणुए महानेमिली, तओवि सवमाए, तओवि महामच्छे चरिमोयहिमि, तओ सत्तमाए, तओवि गोणे, तओवि मणुए, तओवि विडवकोइलियं, तओवि जलोयं, तओवि महामच्छे, तओवि तंदुलमच्छे, तओवि सत्तमाए, तओवि रासहे, तओवि साणे, तओवि किमी, तओवि दट्ठुरे, तओवि तेउकाए, तओवि कुंशु, तओवि महुयरे, तओवि चडए, तओवि उद्देहियं, तओवि वणप्फईए, तओवि अणंतकालाओ मणुएसु इत्थीरयणं,

तओ छट्ठीए, तओ कणेरु, तओ वेसामंडियं नाम पट्टणं तत्थोवज्झायगेहासन्ने लिंब (पत्त) तेण वणस्सई, तओवि मणुएसुं खुज्जित्थी, तओवि मणुयत्ताए पंडगे, तओवि मणुयत्तेणं दुग्गए, तओवि दमए, तओवि पुढवादीसुं भवकायट्ठिईए पत्तेयं, तओ मणुए, तओ बालतवससी, तओ वाणमंतरे, तओवि पुरोहिए, तओवि सत्तमीए, तओ मच्चै, तओ सत्तमाए, तओवि गोणे, तओवि मणुए महासम्मदिट्ठी अविरए चक्कहरे, तओ पढमाए, तओवि इब्भे, तओवि समणे अणगारे, तओवि अणुत्तरसुरे, तओवि चक्कहरे महासंघयणे भवित्ताणं निव्विन्नकामभोगे जहोवइडं संपुत्तं जंगमं काऊण गोयमा ! से णं सुमइजीवे पडिनिव्वुडेज्जा ॥६॥ तहा य जे भिक्खू वा भिक्खुणी वा परपासंडीणं पसंसं करेज्जा जे यावि णं णिण्हगाणं पसंसं करेज्जा जे णं निण्हगाणं अणुकूलं भासेज्जा जे णं निण्हगाणं आययणं पवेसेज्जा जे णं निण्हगाणं गंथसत्थपयाक्खरं वा परुवेज्जा जे णं निण्हगाणं संतिए कायकिलेसाइए तवेइ वा संजमेइ वा नाणेइ वा विन्नाणेइ वा सुएइ वा पंडिच्चेइ वा अभिमुहमुद्धपरिसामज्झगए सलाहेज्जा सेऽविय णं परमाहम्मिएसु उववज्जेज्जा जहा सुमती ॥७॥ से भयवं ! तेणं सुमइजीवेणं तक्कालं समणत्तणं अणुपालियं तहावि एवंविहेहिं नारयतिरियनरामरविचित्तोवाएहिं एवइयं संसाराहिंडणं ?, गोयमा ! णं जं आगमबाहाए लिंगगहणं कीरइ तं डंभमेव केवलं सुदीहसंसारहेउभूयं, णो णं तं परियायं लिक्खइ, तेणेव संजमं दुक्करं मत्ते, अन्नंच-समणत्ताए से य पढमें संजमपए जं कुसीलसंसग्गीणिरिहरणं, अहा णं णो णिरिहरे ता संजममेव ण ठाएज्जा, ता तेणं सुमइणा तमेवायरियं तमेव पसंसियं तमेव उस्सप्पियं तमेव सलाहियं तमेवाणुट्ठियंति, एयं च सुत्तमइक्कमित्ताणं एत्थं पए जहा सुमती तहा अन्नेसिमवि सुंदरविउरदंसणसेहरणीलभद्दसभोमेय-खग्गधारितेणगसमणदुद्धंतदेवरक्खियमुणिणामादीणं को संखाणं करेज्जा ?, ता एयमडं विइत्ताणं कुसीलसंभोगे सव्वहा वज्जणीए ॥८॥ से भयवं ! किं ते साहुणो तस्स णं णाइलसड्ढगस्स छंदेणं कुसीले उयाहु आगमजुत्तीए ?, गोयमा ! कहं सड्ढगस्स वरायस्सेरिसो सामत्थो ? जेणं तु सच्छंदत्ताए महाणुभावाण सुसाहुणं अवन्नवायं भासे, तेणं सड्ढगेणं हरिवंसतिलयमरगयच्छविणो बावीसइमधम्मतित्थयरअरिठ्ठनेमिनामस्स सयासे वंदणवत्तियाए गएणं आयारंगं अणंतगमएज्जवेहिं पन्नविज्जमाणं समवधारियं, तत्थ य छत्तीसं आयारे पन्नविज्जंति, तेसिं च णं जे केइ साहु वा साहुणी वा अन्नयरमायारमइक्कमेज्जा से णं गारत्थीहिं उवमेयं, अहऽन्नहा समणट्ठे वाऽऽयरेज्जा वा पण्णविज्जा वा तओ णं अणंतसंसारी भवेज्जा, ता गोयमा ! जे णं तु मुहणंतगं अहिणं परिग्गहियं तस्स ताव पंचममहव्वयस्स भंगो, जे णं तु इत्थीए अंगोवंगाइं णिज्झाइऊण णालोइयं तेणं तु बंभचेरगुत्ती विराहिया, तव्विराहणेणं जहा एगदेसदड्ढो दडो दड्ढो भन्नइ तथा चउत्थमहव्वयं भग्गं, जेण य सहत्थेणुप्पाइऊणादिन्ना भूई पडिसाहिया तेणं तु तइयमहव्वयं भग्गं, जेण य अणुगओ सूरिओ उग्गओ भणिओ तस्स य बीयवयं भग्गं, जेण उण उफासुगोदगेण अच्छीणि पयोयाणि तहा अविहीए पहयंडिल्लाणं संकमणं कयं बीयकायं च अक्कंतं वासाकप्पस्स अंचलगेणं हरियं संघट्ठियं विज्जूए फुसिओ मुहणंतगेणं अजयणाए फडफडस्स वाउकायमुदीरियं तेणं तु पढमवयं भग्गं, तब्भंगे पंचणहंपि महव्वयाणं भंगो कओ, ता गोयमा ! एते कुसीला साहुणो, जओ णं उत्तरुगुणाणंपि भंगं ण इट्ठं, किं पुण जं मूलगुणाणं, से भयवं ! ता एयणाएणं वियारिऊणं महव्वए घेतव्वे ?, गोयमा ! इमे अट्ठे समट्ठे, से भयवं ! केणं अट्ठेणं ? गोयमा ! सुसमणाइ वा सुसावएइ वा, ण तइयं भेयंतरं, अहवा जहोवइट्ठे सुसमणवमणुपालिया अहा णं जहोवइडं सुसावगत्तमणुपालिया, णो समणो समणत्तमइयरेज्जा नो सावए सावयत्तमइयरेज्जा, निरइयारं वयं पसंसे, तमेव य समणुट्ठे, णवरं जे समणधम्मसे णं अचंचंतघोरदुच्चरे तेणं असेसकम्मक्खयं, जहत्तेणंपि अट्ठ भवब्भंतरे मोक्खो, इयरेणं तु सुद्धेणं देवगइं सुमाणुसत्तं वा सायपरंपरेणं मोक्को, नवरं पुणोवि तं संजमाओ, ता जे से समणधम्मसे अवियारे सुवियारे पण (पुण्ण) वियारे तहत्तिमणुपालिया, उवासगाणं पुण सहस्साणि विधाणे जो जं परिवाले तस्साइयारं व ण भवे तमेव गिण्हे ॥९॥ से भयवं ! सो उण णाइलसड्ढगो कहिं समुप्पन्नो ?, गोयमा ! सिद्धीए, से भयवं कहं ? गोयमा ! तेणं महाणुभागेणं तेसिं कुसीलाणं णिउट्ठेऊणं तीए चैव बहुसावयतरूसंडसंकुलाए घोरकंताराडईए सव्वपावकलिमलकलंकविप्पमुक्कं तित्थयरवयणं परमहियं सुदुल्लहं भवसएसुंपित्ति कलिऊणं अचंचंतविसुद्धासएणं फासुयदेसंमि निप्पडिकम्मं निरइयारं पडिवन्नं पायवोवगमणमणसणंति, अह अन्नया तेणेव पएसेणं विहरमाणो समागओ तित्थयोरो अरिठ्ठनेमी तस्स अ अणुगहट्ठा एतेतेणेव अचलियसत्तो भव्वसत्तोत्तिकाऊणं,

उत्तिमद्वपसाहणी कया साइसया देसणा, तमायन्नमाणो सजलजलहरनिनायदेवदुंदुहीनिग्घोसं तित्थयरभारइं सुहज्झवसायपरो आरूढो खवगसेढीए अउव्वकरणेणं, अंतगडकेवली जाओ, एतेणं अट्टेणं एवं वुच्चइ जहा णं गोयमा ! सिद्धीए, ता गोयमा ! कुसीलसंसग्गीए विप्पहियाए एवसयं अंतरं भवइत्ति । १०। ★★

महानिसीहस्स चउत्थमज्झयणं ॥४॥ ★★ अत्त चतुर्थाध्ययने बहवः सैद्धांतिकाः केचिदालापकान्न सम्यक् श्रद्धथत्येव, तैरश्रद्धधानैरस्माकमपि न सम्यक् श्रद्धानं इत्याह हरिभद्रसूरिः, न पुनः सर्वमेवेदं चतुर्थाध्ययनं, अन्यानि वा अध्ययनानि, अस्यैव कतिपयैः परिमितैरालापकैरश्रद्धानमित्यर्थः, यत् स्थानसमवायजीवाभिगमप्रज्ञापनादिषु न कथंचिदिदमाचरुये यथा प्रतिसंतापकस्थलमस्ति, तद्गुहावासिनस्तु मनुजास्तेषु च परमाधार्मिकाणां पुनः पुनः सप्ताष्टवारान् यावदुपपातः तेषां च तैर्दारुणैर्वज्रशिलाघरट्टसंपुटैर्गिलितानां परिपीड्यमानानामपि संवत्सरं यावत्प्राणव्यापत्तिर्न भवतीति, वृद्धवादस्तु पुनर्यथा तावदिदमार्थं सूत्रं, विकृतिर्न तावदत्र प्रविष्टा, प्रभूताश्चात्र श्रुत. स्कंधे अर्थाः, सुष्ठवतिशयेन स्मृतिशयानि गणधरोक्तानि चेह वचनानि, तदेवं स्थिते न किंचिदाशंकनीयं । ११। एवं कुसीलसंसग्गिं, सव्वोवाएहिं पयहिउं । उम्मग्गपट्टियं गच्छं, जे वासे लिंगजीविणं ॥१॥ से णं निविग्घमकिलिठुं, सासन्नं संजमं तवं । ण लभेज्जा ते सिया भावे, मोक्खे दूरयरं ठिए ॥२॥ अत्थेगे गोयमा ! पाणी, जे ते उम्मग्गपट्टियं । गच्छं संवासइत्ताणं, भमती भवपरंपरं ॥३॥ जामब्बजामं दिणपक्खं, मासं संवच्छांपि या । सम्मग्गपट्टिए गच्छे, संवसमाणस्स गोयमा ! ॥४॥ लीलायऽलसमाणस्स, निरूच्छाहस्स धीमणं । पक्खोवेक्खीय यत्तेए, महाणुभागाण साहुणं ॥५॥ उज्जमं सव्वथामेसु, घोरवीरतवाइयं । ईसक्खासंकभयलज्जा, तस्स वीरियं समुच्छले ॥६॥ वीरिएणं तु जीवस्स, समुच्छलिएण गोयमा ! जंमंतरकए पावैं, पाणी हियएण निठुवे ॥७॥ तम्हा निउणं निभालेउं, गच्छं सम्मग्गपट्टियं । निवसेज्ज तत्थ आजम्मं, गोयमा ! संजए मुणी ॥८॥ से भयवं ! कयरे णं से गच्छे जे णं वासेज्जा ?, एवं तु गच्छस्स पुच्छा जाव णं वयासी ?, गोयमा ! जत्थ णं समसत्तुमित्तपक्खे अच्चंतसुनिम्मलविसुद्धंतकरणे आसायणाभीरू सपरोवयारमब्भुज्जए अच्चंतं छज्जीवनिकायवच्छले सव्वालंबणविप्पमुक्के अच्चंतमप्पमादी सविसेसचेतियसमयसब्भावे रोद्धट्टज्झाणविप्पमुक्के सव्वत्थ अणिगूहियबलवीरियपुरिसकारपरक्कमे एगंतेणं संजइक्कप्पपरिभोगविरए एगंतेणं धम्मंतरायभीरू एगंतेणं त(स) तरूई एगंतेणं इत्थिकहाभत्तकहातेणकहारायकहाजणवयकहापरिभट्टायारकहा एवं तिन्नितियअट्टारसबत्तीसविचित्तमप्पमेयसवविगहाविप्पमुक्के एगंतेणं जहासत्तीए अट्टारसण्हं सीलंगसहस्साणं आराहगे सयलमहन्निसाणुसमयमगिलाए जहोवइद्धमग्गपरूवए बहुगुणकलिए मग्गठिए अखलियसीलेगमहायसे महासत्ते महाणुभागे नाणदंसरचरणगुणोववेए गणी । १। से भयवं ! किमेस वासेज्जा ?, गोयमा ! अत्थेगे जे णं वासेज्जा अत्थेगे जे णं णो वासेज्जा, से भयवं ! केणं अट्टेणं एवं वुच्चइ जहा णं गोयमा ! अत्थेगे जे णं वासेज्जा अत्थेगे जे णं नो वासेज्जा ?, गोयमा ! अत्थेगे जे णं आणाए ठिए अत्थेगे जे णं आणाविराहगे, जे णं आणाठिए से णं सम्मइंसणनाणचरित्ताराहगे, जे णं सम्मइंसणनाणचरित्ताराहगे से णं गोयमा ! अच्चंतविऊ सुपव (यह) रकडुज्जए मोक्खमग्गे, जे य उण आणाविराहगे से णं अणंताणुबंधी कोहे से णं अणंताणुबंधी माणे से णं अणंताणुबंधी कइयवे से णं अणंताणुबंधी लोभे, जे णं अणंताणुबंधीकोहाइकसायचउक्के से णं घणरागदोसमोहमिच्छत्तपुंजे जे णं घणरागदोसमोहमिच्छत्तपुंजे से णं अणुत्तरघोरसंसारसमुदे जे णं अणुत्तरघोरसंसारसमुदे से णं पुणा २ जंमे पुणो २ जरा पुणो २ मच्चू जे णं पुणो २ जम्मजरामरणे से णं पुणो २ बहुभवंतरपरावत्ते जे णं पुणो २ बहुभवंतरपरावत्ते से णं पुणो २ चुलसीइजोणिलक्खमाहिंडणं जे णं पुणो २ चुलसीइजोणिलक्खमाहिंडणं से णं पुणो २ सुदूसहे घोरतिमिसंधयारे रूहिरच्चिलिच्चिले वसपूयवंतपित्तसिंभचिक्खल्लदुग्गंधासुइवि-लीणजंबालकेयकिव्विसखरंटपडिपुत्ते अणिद्वव्वियणिज्जऽइघोरचंडमहारोद्धदुक्खदारूणे गब्भपरंपरापवेसे जे णं पुणो २ दारूणे गब्भपरंपरापवेसे से णं दुक्खे से णं केसे से णं रोगायंके से णं सोगसंतावुव्वेयगे जे णं दुक्खकेसरोगायंकसोगसंतावुव्वेयगे से णं अणिव्वुत्ती जेणं अणिव्वुत्ती से णं जहट्टियमणोरहाणं असंपत्ती जे णं जहट्टियमणोरहाणं असंपत्ती से णं ताव पंचप्पयारअंतरायकम्मोदए जत्थ पंचप्पयारकम्मोदए एत्थ णं सव्वदुक्खाणं

For Private & Personal Use Only

एते य णं एयारिसेणं गुरूगुणे वित्रेए तंजहा=गुरू ताव सव्वजगजीवपाणभूयसत्ताणमाया भवस, किं पुण गच्छस्स ? , से णं सीसगणाणं एगंतेणं हियं मियं पत्थं इहपरलोगसुहावहं आगमाणुसारेणं हिओवएसं पयाइ, से णं देविंदनरिंदरिद्धीलंभाणंपि पवरूत्तमे गुरूवएसप्पयाणलंभे तं चा (सत्ता) णुकंपाए परमदुक्खिए जम्मजरामरणादीहिं णं इमे भव्वसत्ता कहं णु णाम सिवसुहं पावंतित्तिकाऊणं गुरूवएसं पयाइ, णो णं वसणाहिभूए जहा णं गहग्घत्थे उम्मत्ते, अत्थिएइ वा जहा णं मम इमेणं हिओवएसपयाणेणं अमुगट्टलाभं भवेज्जा. णो णं गोयमा ! गुरू सीसाणं निस्साए संसारमुत्तरेज्जा, णो णं परक्कएहिं सव्वसुहासुहेहिं कस्सइ संबद्धं अत्थिए । ७। 'ता गोयम ! एत्थ एवं ठियंमि जइ दढचरित्तगीयत्थो । गुरूगणकलिए य गुरूरा भणेज्ज असइं इमं वयणं ॥९॥ मिण गोणसंगुलीए गणेहिं वा दंतचक्कलाइं से । तं तहमेव करेज्जा कज्जं तु तमेव जाणंति ॥१०॥ आगमविऊ कयाई सेयं कायं भणिज्ज आयरिया । तं तह सदहियव्वं भवियव्वं कारणेण तहिं ॥१॥ जो गेणहइ गुरूवयणं भन्नंतं भावओ पसन्नमणो । ओसहमिव पिज्जंतं तं तस्स सुहावहं होइ ॥२॥ पुत्तेहिं चोइया पुरक्खएहिं सिरिभायणं भवियसत्ता । गुरूमागमेसिभद्वा देवयमिव पज्जुवासंति ॥३॥ बहुसोक्खसयसहस्साण दायगा मोयगा दुहसयाणं । आयरिया फुडमेयं केसि पएसीय ते हेऊ ॥४॥ नरयगइगमणपरिहत्थए कए तह पएसिणा रत्ता । अमरविमाणं पत्तं तं आयरियप्पभावेणं ॥५॥ धम्ममइएहिं अइसुमहुरेहिं कारणगुणोवणीएहिं । पल्हायंतो हिययं सीसं चोइज्ज आयरिओ ॥६॥ एत्थं चायरिआणं पणपन्नं होति कोडिलक्खाओ । कोडी सहस्से कोडी सए य तह एत्तिए चेव ॥७॥ एतेहिं मज्झाओ एगे निव्वुडइ गुण (रू) गणाइत्ते । सव्वुत्तमभंणेणं तित्थयरस्सऽणुसरिस गुरू ॥८॥ सेऽविय गेयम ! देवयवयणा सूरित्थणाइं सेसाइं । तं तह आराहेज्जा जह तित्थयरे चउव्वीसं ॥९॥ सव्वमवी एत्थ पए दुवालसंगं सुयं तु भणियव्वं । भवइ तहा अविमिणिमो समाससारं पर भन्ने ॥२०॥ तंजहा=मुणिणो संघं तित्थं गण पवयण मोक्खमग्ग एगट्ठा । दंसणनाणचरित्ते घोरूग्गतवं चेव गच्छणामे य ॥१॥ पयलंति जत्थ धगधगधगस्स गुरूणोवि चोइए सीसे । रागदोसेणं अह अणुसएण तं गोयम ! ण गच्छं ॥२॥ गच्छं महाणुभागं तत्थ वसंताण निज्जरा विउला । सारणवारणचोयणमादीहिं ण दोसपडिवत्ती ॥३॥ गुरूणो छंदणुवत्ते सुविणीए जियपरीसहे धीरे । णवि थद्धे णवि लुद्धे णवि गारविए न विगहसीले ॥४॥ खंतं दंते मुत्ते गुत्ते वेरग्गमग्गमल्लीणे । दसविहसामायारीआवस्सगसंजमुज्जुत्ते ॥५॥ खरफरूसकक्कसाणिदुद्धुनिदुरगिराइ सयहुत्तं । निब्भच्छणनिद्धाडणमादीहिं न जे पओसंति ॥६॥ जे य ण अकित्तिजणए णाजसजणए णऽकज्जकारी य । न य पवयणुड्डाहकरे कंठगयपाणसेसेवि ॥७॥ सज्झायझाणनिरए घोरतवच्चरणसोसियसरीरे । गयकोहमाणकइयव दूरूज्झियरागदोसे य ॥८॥ विणओवयारकुसले सोलसविहवयणभासणाकुसले । णिरवज्जवयरभणिरे ण य बहुभणिरे ण पुणऽभणिरे ॥९॥ गुरूणा कज्जमकज्जे खरकक्कसफरूसनिदुरमणिद्वं । भणिरे तहत्ति इच्छं भणंति सीसे तयं गच्छं ॥३०॥ दूरूज्झिय पत्ताइसु ममत्तं निप्पिहे सरीरेवि । जायामायाहारे बायालीसेसणाकुसले ॥१॥ तंपि ण रूवरसत्थं भुंजंताणं न चेव दप्पत्थं । अक्खोवंगनिमित्तं संजमजोगाण वहणत्थं ॥२॥ वेयण वेयावच्चे इरियट्ठाए य संजमट्ठाए । तह पाणवत्तियाए छट्ठं पुण धम्मचिंताए ॥३॥ अप्पुव्वनाणगहणे थिरपरिचियधारणेक्कमुज्जुत्ते । सुत्तं अत्थं उभयं जाणंति अणुद्वयंति सया ॥४॥ अट्ठट्ठ नाणदंसणचारित्तायार णवचउक्कमि । अणिगूहियबलवीरिए अगिलाए धणियमाउत्ते ॥५॥ गुरूणा खरफरूसाणिदुद्धुनिदुरगिराइ सयहुत्तं । भणिरे णो पडिसूरिति जत्थ सीसे तयं गच्छं ॥६॥ तवसा अचिंतउप्पन्नलद्धिसाइयसयरिद्धिकलिएवि । जत्थ न हीलंति गुरू सीसे तं गोयमा ! गच्छं ॥७॥ तेसट्ठितिसयपावाउयाण विजया विढत्तजसपुंजे । जत्थ न हीलंति गुरू सीसे तं गोयमा ! गच्छं ॥८॥ जत्थाखलियममिलियं अव्वाइद्धं पयक्खरविसुद्धं । विणओवहाणपुव्वं दुवालसंगंपि सुयनाणं ॥९॥ गुरूचलभत्तिभरनिब्भरिकपरिओसलद्धमालावे । अज्झीयंति सुसीसा एगग्गमणा स गोयमा ! गच्छं ॥४०॥ सगिलाणसेहबालाउलस्स गच्छस्स दसविहं विहिणा । कीरइ वेयावच्चं गुरूआणत्तीए तं गच्छं ॥१॥ दसविहसामायारी जत्थ ठिए भव्वसत्तसंघाए । सिज्झंति य बुज्झंति य ण य खंडिज्जइ तयं गच्छं ॥२॥ इच्छा मिच्छा तहक्कारो, आवस्सिया य निसीहिया । आपुच्छणा य पडिपुच्छा, छंदणा य निमंतणा ॥ उवसंपया य काले सामायारी भवे दसविहा उ ॥३॥ जत्थ य

जिदुकणिद्धा जाणिज्जइ जेदुविणयबहुमाणं । दिवसेणवि जो जेदुो णो हीलिज्जइ तयं गच्छं ॥४॥ जत्थ य अज्जाकप्पं पाणच्चाएवि रोरदुब्भिकखे । ण य परिभुज्जइ सहसा गोयम ! गच्छं तयं भणियं ॥५॥ जत्थ य अज्जाहिं समं थेरावि ण उल्लवंति गयदसणा । ण य णिज्झायति त्थीअंगोवंगाइ तं गच्छं ॥६॥ जत्थ य सन्निहिउक्खडआहडमादीण नामगहणेऽवि । पूईकम्मा भीए आउत्ता कप्पतिप्पमि ॥७॥ जत्थ य पच्चंगुब्भडदुज्जयजोव्वणमरद्वदप्पेण । वाहिज्जंतावि मुणी णिक्खंति तिलोत्तमंपि तं गच्छं ॥८॥ वायामेत्तेणवि जत्थ भट्टसीलस्स निग्गहं विहिणा । बहुलद्धिजुयसेहस्सवी कीरइ गुरुणा तयं गच्छं ॥९॥ मउए निहुयसहावे हासदवविवज्जिए विगहमुक्के । असमंजसमकरेते गोयरभूमऽदु विहरंति ॥१०॥ मुणिणो णाणाभिग्गहदुक्करपच्छित्तमणुचरंताणं । जायइ चित्तचमक्कं देविदाणपि तं गच्छं ॥११॥ जत्थ य वंदणपडिक्कमणमाइमंडलिविहाणनिउणनू । गुरुणो अखलियसीले सययं कहुग्गतवनिरए ॥१२॥ जत्थ य उसभादीणं तित्थयरणं सुरिंदमहियाणं । कम्मद्वविप्पमुक्काण आणं न खलिज्जइ स गच्छो ॥१३॥ तित्थयरे तित्थयरे तित्थं पुण जाण गोयमा ! संघं । संघे य ठिए गच्छे गच्छठिए नाणदंसणचरित्ते ॥१४॥ नादंसणस्स नाणं दंसणनाणे भवंति सव्वत्थ । भयणा चारित्तस्स तु दंसणनाणे धुवं अत्थि ॥१५॥ नाणी दंसणरहिओ चरित्तरहिओ य भमइ संसारे । जो पुण चरित्तजुत्तो सो सिज्जइ नत्थि संदेहो ॥१६॥ नाणं पगासयं सोहओ तवो संजमो य गुत्तिकरो । तिण्हंपि समाओगे मोक्खो णेक्कस्सवि अभावे ॥१७॥ तस्सवि य सकंगाइ नाणादितिगस्स खंतिमादीणि । तेसिं चेक्केक्कपयं जत्थाणुद्वेज्जइ स यच्छो ॥१८॥ पुढविदगागणिवाऊवणप्फई तह तसाण विविहाणं । मरणंतेऽवि ण मणसा कीयइ पीडं तयं गच्छं ॥१९॥ जत्थ य बाहिरपाणस्स बिंदुमेत्तंपि गेम्हमादीसुं । तण्हासोसियपाणे मरणेवि मुणी ण इच्छंति ॥२०॥ जत्थ य सूलविसूइय अन्नयरे वा विचित्तमायंके । उत्पन्ने जलणुज्जालणाइं ण करेति मुणी तयं गच्छं ॥२१॥ जत्थ य तेरसहत्थे अज्जाओ परिहरंति णाणहरे । मणसा सुयदेवयमिव सव्वमवित्थी परिहरंति ॥२२॥ इ(२) तिहासखेडुकंदप्पणाहवादं ण कीरए जत्थ । धावणडेवणलंघण ण मयारजयारउच्चरणं ॥२३॥ जत्थित्थीकरफरिसं अंतरियं कारणेवि उप्पन्ने । दिट्ठीविसदित्तग्गीविसंव वज्जिज्जइ स गच्छो ॥२४॥ जत्थित्थीकरफरिसं लिंगी अरहावि सयमवि करेज्जा । तं निच्छयओ गोयम ! जाणिज्जा मूलगुणबाहा ॥२५॥ मूलगुणेहि उ खलियं बहुगुणकलियंपि लद्धिसंपन्नं । उत्तमकुलेवि जायं निद्धाडिज्जइ जहिं तयं गच्छं ॥२६॥ जत्थ हिरण्णसुवण्णे धणधन्ने कंसदूसफलिहाणं । सयणाण आसणाण य न य परिभोगो से तयं गच्छं ॥२७॥ जत्थ हिरण्णसुवण्णं हत्थेण परागयंपि नो छिप्पे । कारणसमप्पियंपि हु खणनिमिसद्धंपि तं गच्छं ॥२८॥ दुद्धबंभव्यपालणद्व अज्जाण चवलचित्ताणं । सत्तसहस्सापरिहारठाणवी जत्थित्थि तं गच्छं ॥२९॥ जत्थुत्तरवडपडिउत्तरेहिं अज्जा उ साहुणा सद्धिं । पलवंति सुकुद्धावी गोयम ! किं तेण गच्छेण ? ॥३०॥ जत्थ य गोयम ! बहुविहविकप्पकल्लोलचंचलमणाणं । अज्जाणमणुद्विज्जइ भणियं तं केरिसं गच्छं ? ॥३१॥ जत्थेक्कंगसरीरा साहू सह साहुणीहिं हत्थसया । उहं गच्छेज्जा बहिं गोयम ! गच्छंमि का मेरा ? ॥३२॥ जत्थ अज्जाहिं समं संलावुल्लावमाइववहारं । मोत्तुं धम्मवएसं गोयम ! तं केरिसं गच्छं ? ॥३३॥ भयवमणियतविहारं ण ताव साहूणं । कारणनीयावासं जो सेवे तस्स का वत्ता ? ॥३४॥ निम्ममनिरहंकारं उज्जुत्ते नाणदंसणचरित्ते । सयलारंभविमक्के अप्पडिबद्धे सदेहेवि ॥३५॥ आयारमायरते एगक्खेत्तेवि गोयमा ! मुणिणो । वाससयंपि वसंते गीयत्थे राहगे भणिए ॥३६॥ जत्थ समुदेलकाले साहूणं मंडलीए अज्जाओ । गोयम ! ठवंति पादे इत्थीरज्जं न तं गच्छं ॥३७॥ जत्थ य हत्थसएवि य रयणीचारं चउण्हमूणाओ । उहं दसण्हमसइ से (ण) करेति अज्जा तयं गच्छं ॥३८॥ अववाएणवि कारणवसेण अज्जा चउण्हमूणाउ । गाऊयमवि परिसक्कंति जत्थ तं केरिसं गच्छं ? ॥३९॥ जत्थ य गोयम ! साहू अज्जाहिं समं पहंमि अदूणा । अववाएणवि गच्छेज्ज तत्थ गच्छंमि का मेरा ? ॥४०॥ जत्थ य तिसट्ठिभेयं चक्खूरागग्गिदीरणं साहू । अज्जाउ निरिक्खेज्जा तं गोयम ! केरिसं गच्छं ? ॥४१॥ जत्थ य अज्जालद्धं पडिग्गहदंडादिविविहमुवमरणं । परिभुज्जइ साहूहिं तं गोयम ! केरिसं गच्छं ? ॥४२॥ अइदुलहं भेसज्जं बलबुद्धिविवद्धंपि पुट्टिकरं । अज्जालद्धं भुंजइ का मेरा तत्थ गच्छंमि ? ॥४३॥ सोऊण गइं सुकुमालियाए तह ससगभसगभइणीए । ताव न वीससियव्वं सेयट्ठी धम्मिओ जाव ॥४४॥ दढचारित्तं मोत्तुं आयुरियं मयहरं च गुणरासिं । अज्जा वट्ठावेई तं अणगारं न तं गच्छं ॥४५॥

श्री आगमगणमज्जा १३१८

महाणुभागा एरिसगुणजुत्ता चेव सुगहियनामधेज्जा विण्हुसिरी अणगारी भवेज्जा, तंपि णं जिणदत्तफग्गुसिरीनामं सावगमिहुणं बहुवासरवन्नणिज्जगुणं चेव भवेज्जा, तहा तेसिं सोलस संवच्छराइं परमं आउं अट्ठ य परियाओ आलोइयनीसल्लाणं च पंचनमोक्कारपराणं चउत्थभत्तेणं सोहम्मे कप्पे उववाओ, तयणंतरं च हिट्ठिमगमणं, तहावि ते एयं गच्छववत्थं णो विलंधिंसु । ८। से भयवं ! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा णं तहावि एयं गच्छववत्थं णो विलंधिंसु ? . गोयमा ! इओ आसन्नकालेणं चेव महायसे महासत्ते महाणुभागे सेज्जंभवे णामं अणगारे महातवस्सी महामई दुवालसंगसुयधारी भवेज्जा, से णं अपक्खवाएणं अप्पाउक्खे भव्वेसत्तेसु य अतिसएणं विन्नाय एक्कारसण्हं अंगाणं चउदसण्हं पुव्वाणं परमसारणवणीयभूयं सुपउणं सुपद्धरूज्ज (यधरोज्जो) यं सिद्धिमग्गं दसवेयालियं णाम सुयक्खंधं णिऊहेज्जा, से भयवं ! किं पडुच्च ? , गोयमा ! मणं पडुच्चा, जहा कहं नाम एयस्स णं मणगस्स पारंपरिएणं थेवकालेणेव महंतघोरदुक्खागराओ चउगइसंसारसागराओ निप्फेडो भवतु ? . सेऽवि ण विणा सव्वन्नवएसेणं, से य सव्वन्नवएसे अणोरपारे दुरवगाढे अणंतगमपज्जवेहिं नो सक्का अप्पेणं कालेणं अवगाहिउं, तहा णं गोयमा ! अइसएणं एवं चित्तेज्जा, एवं से णं सेज्जंभवे जहा 'अणंतपारं बहु जाणियव्वं, अप्पो अ कालो बहुले अ विग्घे । जं सारभूतं तं गिण्हियव्वं, हंसो जहा रवीरमिवंबुमीसं ॥ १२१॥ तेणं इमस्स भव्वसत्तस्स मणगस्स तत्तपरिन्नाणं भवउत्तिकाउणं जाव णं दसवेयालियं सुयक्खंधं णिरू (ज्जू)हेज्जा, तं च वोच्छिन्नेणं तक्कालदुवालसंगेण गणिपिडगेणं जाव णं दूसमाए परियंते दुप्पसहे ताव णं सुत्तत्थेणं वाएज्जा, से अ सयलागमनिस्संदं दसवेयालियसुयक्खंधं सुत्तओ अज्झीहीय गोयमा ! से णं दुप्पसहे अणगारे, तओ तस्स णं दसवेयालियसुत्तस्साणुगयत्थाणुसारेणं तहा चेव पवत्तिज्जा, णो णं सच्छंदयारी भवेज्जा, तत्थ अ दसवेयालियसुयक्खंधे तक्कालमिणमो दुवालसंगे सुयक्खंधे पइट्ठिए भवेज्जा, एएणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा तहावि णं गोयमा ! ते एवं गच्छववत्थं नो विलंधिंसु । ९। से भयवं ! जइ णं गणिणोवि अच्चंतविसुद्धपरिणामस्सवि केइ दुस्सीले सच्छंदत्ताएइ वा गारवत्ताएइ वा जायाइमयत्ताएइ वा आणं अइक्कमेज्जा से णं किमाराहगे भवेज्जा ? . गोयमा ! जे णं गुरु समसत्तुमित्तपक्खो गुरुगुणेषुं ठिए सययं सुत्ताणुसारेणं चेव विसुद्धासए विहरेज्जा तस्साणमइक्कंतेहिं णवणउएहिं चउहिं सएहिं साहूणं जहा तहा चेव अणाराहगे भवेज्जा । १०। से भयवं ! कयरे णं ते पंचसए एक्कविवज्जिए साहूणं जेहिं च णं तारिसगुणोववेयस्स महाणुभागस्स गुरुणो आणं अइक्कमिउं णाराहिंयं ? , गोयमा ! णं इमाए चेव उसभचउवीसिगाए अतीताए तेवीसइमाए चउवीसिगाए जाव णं परिनिव्वुडे चउवीसइमे अरहा ताव णं अइक्कंतेणं केवइएणं कालेणं गुणनिप्फन्ने कम्मसेलमुसुमूरणे महायसे महासत्ते महाणुभागे सुगहियनामधेज्जे वइरे णाम गच्छाहिवई भूए, तस्स णं पंचसयं गच्छं निग्गंथीहिं विणा, निग्गंथीहिं समं दो सहस्से य अहेसि, ता गोयमा ! ताओ निग्गंथीओ अच्चंतपरलोगभीरूयाउ सुविसुद्धनिम्मलंतकरणाओ खंताओ दंताओ मुत्ताओ जिइंदियाओ अच्चंतभणिरीओ नियसरीरस्साविय छक्कायवच्छलाओ जहोवइट्ठअच्चंतघोरवीरतवच्चरणसोसियसरीराओ जहा णं तित्थयरेणं पन्नवियं तहा चेव अदीणमणसाओ मायामयहंकारममकारइ(२) तिहासखेड्डकंदप्पणाहवायविप्पमुक्काओ तस्सायरियस्स सयासे सामन्नमणुचरंति, ते य साहुणो सव्वेवि गोयमा ! न तारिसे मणागा, अहऽन्नया गोयमा ! ते साहुणो तं आयरियं भणंति जहा जइ णं भयवं ! तुमं आणवेहिं ता णं अम्हेहिं तित्थयत्तं करिय चंदप्पहसामियं वंदिय धम्मचक्कं गंतूणमागच्छामो, ताहे गोयमा ! अदीणमणसा अणुत्तावलंगंभीरमहुराए भारतीए भणियं तेणायरिएणं जहा इच्छायारेणं न कप्पइ तित्थयत्तं गंतुं सुविहियाणं, ता जाव णं बोलेइ जत्तं ताव णं अहं तुम्हे चंदप्पहं वंदावेहामि, अन्नंच-जत्ताए गएहिं असंजमे पडिज्जइ, एएणं कारणेणं तित्थयत्ता पडिसेहिज्जइ. तओ तेहिं भणियं-जहा भयवं ! केरिसो उण तित्थयत्ताए गच्छमाणाणं असंजमो भवइ ? , सो पुणं इच्छायारेणं, बिइज्जवारं एरिसं उल्लावेज्जा बहुजणेणं वाउलग्गो भन्निहिसि, ताहे गोयमा ! चितियं तेणं आयरिएणं जहा णं ममं वइक्कमिय निच्छयओ एए गच्छिहिति तेणं तु मए समयं चडु (वट्ठु) तरेहिं वयंति, अह अन्नया सुबहुं मणसा संघारेऊणं चेव भणियं तेण आयरिएणं. जहा णं तुब्भे किंचिवि सुत्तत्थं वियाणह च्विय तो जारिसं तित्थयत्ताए गच्छमाणाणं असंजमं भवइ तारिसं सयमेव वियाणेह, किं एत्थ बहुपलविएणं ? , अन्नंच-विदियं तुम्हेहिपि संसारसहावं

जीवाइपयत्थतत्तं च, अहऽन्नया बहुउवाएहिं णं विणिवारितस्सवि तस्सायरियस्स गए चेव ते साहुणो कुब्बेणं कयंतेणं परियरिए तित्थयत्ताए, तेसिं च गच्छमाणाणं कत्थइ अणेसणं कत्थइ हरियकायसंघट्टणं कत्थइ बीयक्कमणं कत्थइ पिवीलियादीणं तसाणं संघट्टणपरितावणोद्ववणाइसंभवं कत्थइ वइट्टपडिक्कमणं कत्थइ ण कीरए चेव चाउक्कालियं सज्झायं कत्थइ ण संपाडेज्जा मत्तभंडोवयरगस्स विहीए उभयकालं पेहपमज्जणपडिलेहणपक्खोडणं, किं बहुणा ?, गोयमा ! कित्थियं भन्निहिइ ? अट्टारसण्हं सीलंगसहस्साणं सत्तरसविहस्स णं संजमस्स दुवालसविहस्स णं सबभंतरवाहिरस्स तवस्स जाव णं खंताइअहिंसालक्खणस्सेव य दसविहस्साणगारधम्मस्स जत्थेक्केक्कपयं चेव सुबहुएणंपि कालेणं थिरपरिचिएण दुवालसंगमहासुयक्खंधेणं बहुभंगसयसंघत्तणाए दुक्खं निरइयारं परिवालिऊणं जे, एयं च सव्वं जहाभणियं निरइयारमणुट्ठेयंति, एव संभरिऊणं चित्थियं तेणं गच्छाहिवइणा-जहा णं मे विप्परूक्खेण ते दुट्ठसीसे मज्झं अणाभोगपच्चएणं सुबहुं असंजमं काहेति तं च सव्वं ममऽच्छंतियं होही. जओ णं हं तेसिं गुरू ताहं तेसिं पट्ठीए गंतूणं पडिजागरामि जेणाहमित्थ पए पायच्छित्तेणं णो संबज्झेजेति वियप्पिऊणं गओ सो आयरिओ तेसिं पट्ठीए जाव णं दिट्ठे तेणं असमंजसेण गच्छमाणे, ताहे गोयमा ! सुमहुरमंजुलालावेणं भणियं तेणं गच्छाहिवइणा. जहा भो भो उत्तमकुलनिम्मलवंसविभूषणा मुगअमुगाइमहासत्ता साहू पहपडिवन्नाणं पंचमहव्वयाहिट्ठियतणूणं महाभागाणं साहुसाहुणीणं सत्तावीसं सहस्साइं थंडिलाणं सव्वदंसीहिं पन्नत्ताइं, ते य सुउवउत्तेहिं विसोहिज्जंति, ण उणं अन्नोवउत्तेहिं, ता किमेयं सुन्नासुन्नीए अणोवउत्तेहिं गम्मइ, इच्छायारेणं उवओगं देह, अन्नं च-इणमो सुत्तत्थं किं तुम्हाणं विसुमरियं भवेज्जा जं सारं सव्वपरमतत्ताणं जहा 'एगे बेइंदिए पाणी एगं सयमेव हत्थेण वा पाएण वा अन्नयरेण वा सलागाइअहिगरणभूओवगरणजाएणं जे णं केई संघट्टेज्जा वा संघट्टावेज्जा वाएवं संघट्ठियं वा परेहिं समणुजाणेज्जा से णं तं कम्मं जया उदिन्नं भवेज्जा तया जहा उच्छुखंडाइं जंते तहा निप्पीलिज्जमाणा छम्मासेणं खवेज्जा, एवं गाढे दुवालसेहिं संवेच्छरेहिं तं कम्मं वेदेज्जा, एवं अगाढपरियावणे वाससहस्सं, गाढपरियावणे दसवाससहस्से एवं अगाढकिलामणे वासलक्खं, गाढकिलामणे दसवासलक्खाइं, उद्ववणे वासकोडी, एवं तेइंदियाइसुं पि णेयं, ता एवं च वियाणमाणा मा तुम्हे मुज्झहत्ति, एवं च गोयमा ! सुत्ताणुसारेणं सारयंतस्सावि तस्सायरियस्स ते महापावकम्मे गमगमहल्लफलेणं हल्लोहलीभूएणं तं आयरियाणं वयणं असेसपावकम्मदुक्खविमोयगं णो बहु मन्नेति, ताहे गोयमा ! मुणियं तेणायरिएणं जहा निच्छयओ उम्मग्गपट्ठिए सव्वपगारेहिं चेव मे पावमई दुट्ठसीसे, ता किमट्टमहमिमेसिं पट्ठीए लल्लीवागरणं करेमाणोऽणुगच्छमाणो य सुक्खाए गयजलाए णदीए उवुज्झं, एए गच्छंतु दसदुवारेहिं, अहयं तु तावायहियमेवाणुचिट्ठेमी, किं मज्झं परकएणं सुमहंतएणावि पुन्न.पब्भारेणं थेवमवि किंची परित्ताणं भवेज्जा ?, सपरक्कमेणं चेव मे आगमुत्ततवसंजमाणुट्ठाणेणं भवोयही तरेयव्वो, एस उणं तित्थयराएसो जहा. 'अप्पहियं कायव्वं जइ सक्का परहियं च पयरेज्जा । अत्तहियपरहियाणं अत्तहियं चेव कायव्वं ॥१२२॥ अन्नं च-जइ एते तवसंजमकिरियं अणुपालिहिति तओ एएसिं चेव सेयं होहिइ, जइ णं करेहिति तओ एएसिं चेव दुग्गइगमणमणुत्तरं हवेज्जा, नवरं तहावि मम गच्छो समप्पिओ गच्छाहिवई अहयं भणामि, अन्नं च-जे तित्थयरेहिं भगवंतेहिं छत्तीस आयरियगुणे समाइट्ठे तेसिं तु अहयं एक्कमवि णाइक्कमामि जइवि पाणोवरमं भवेज्जा, जं चागमे इहपरलोगविरुद्धं तं णायरामि ण कारयामि ण कज्जमाणं समणुजाणामि, ता मेरिसगुणजुत्तस्सावि जइ भणियं णं करेति ताऽहमिमेसिं वेसग्गहणं उदालेमि, एवं च समए पन्नत्ती जहा-जे केई साहू वा साहुणी वा वायामित्तेणावि असंजममणुचेट्ठेज्जा से णं सारेज्जा चोएज्जा पडिचोएज्जा, से णं सारेज्जंते वा चोइज्जंते वा पडिचोइज्जंते वा जे णं तं वयणमवमन्निय अलसायमाणे वा अभिनिविट्ठेइ वा णं तहत्ति पडिवज्जिय इच्छं पउंजित्ताणं तत्थ णो पडिक्कमेज्जा से णं तस्स वेसग्गहणं उदालेज्जा, एवं तु आगमुत्तणाएणं गोयमा ! जाव तेणायरिएणं एगस्स सेहस्स वेसग्गहणं उदालियं ताव णं अवसेसे दिसोदिसं पणट्ठे ताहे गोयमा ! सो य आयरिओ सणियं तेसिं पट्ठीए जाउमारद्धो णो णं तुरियं २, से भयवं ! किमट्ठं तुरियं २ णो पयाइ ? गोयमा ! खाराए भूमीए जो महूरसंकमेज्जा महुराए खारं किण्हाए पीयं पीयाओ किण्हं जलाओ थलं थलाओ जलं संकमेज्जा तेणं विहीए पाए पमज्जिय २ संकमेयव्वं, णो पमज्जेज्जा तओ दुवालससंवच्छरियं पच्छित्तं भवेज्जा, एएणमट्ठेण गोयमा ! सो आयरिओण तुरियं २ गच्छे,

अहऽन्नया सुयाउत्तविहीए थंडिलसंकमणं करेमाणस्स णं गोयमा ! तस्सायरियस्स आगओ बहुवासरखुहापरिगयसरीरो वियडदाढाकरालकयंतभासुरो पलयकालमिव घोररूवो केसरी, मुणियं च ते ण महाणुभागेणं गच्छाहिवइणा जहा-जइ दुयं गच्छेज्जइ ता चुक्किज्जइ इमस्स, णवरं दुयं गच्छमाणाणं असंजमं ता वरं सरीरवोच्छेयं ण असंजमपवत्तणंति चित्तिऊण विहीए उवट्टियस्स सेहस्स जमुद्दालियं वेसग्गहणं तं दाऊण ठिओ निप्पडिक्कम्मपायवोवगमणाणसणेणं, सेऽवि सेहो तहेव, अहऽन्नया अच्चंतविसुद्धंतकरणे पंचमंगलपरे सुहज्झवसायत्ताए दुण्णिवि गोयमा ! वावाइए तेण सीहेणं अंतगडे केवली जाए अट्ठप्पयारमलकलंकमुक्के सिद्धे य, ते पुण गोयमा ! एकूणपंचसए साहूणं तक्कम्मदोसेणं जं दुक्खमणुभवमाणे चिद्धंति जं चाणुभूयं जं चाणुभविविहिति अणंतसंसारसागरं परिभमंते तं को अणंतेणंपि कालेणं भणिउं समत्थो ? एए ते गोयमा ! एगूणे पंचसए साहूणं जेहिं च णं तारिस गुणोववेतस्स णं महाणुभागस्स गुरूणो आणं अइक्कमियं णो आराहियं अणंतसंसारिए जाए। ११। से भयवं : किं तित्थयरसंतियं आणं णाइक्कमेज्जा उयाहु आयरियसंतियं ? गोयमा ! चउव्विहा आयरिया भवंति, तंजहा-नामायरिया ठवणायरिया दव्वायरिया भावायरिया, तत्थ णं जे ते भावायरिया ते तित्थयरसमा चेव दट्ठव्वा, तेसिं संतियाणं(ऽऽणा) णइक्कमेज्जा। १२। से भयवं ! कयरेणं ते भावायरिया भन्नंति ? गोयमा ! जे अज्जपव्वइएवि आगमविहीए पयं पएणाणुसंचरंति ते भावायरिए, जे उण वाससयदिक्खिएवि हुत्ताणं वायामेत्तेणंपि आगमओ बाहिं करंति ते णामठवणाहिं णिओइयव्वे, से भयवं ! आयरियाणं केवइयं पायच्छित्तं भवेज्जा ?, जमेगस्स साहुणो तं आयरियमयहरपवटिणीए सत्तरसगुणं, अहा णं सीलखलिए भवंति तओ तिलक्खगुणं,

जं न सुकरं, तम्हा सव्वहा सव्वप्पयारेहि णं आयरियमयहरपवत्तिणीए अ अत्ताणं पायच्छित्तस संरक्खेयव्वं, अक्खलियसीलेहिं च भवेयव्वं। १३। से भयवं ! जे णं गुरू सहसाकारेणं अन्नयरट्ठाणे चुक्केज्ज वा खलेज्ज वा से णं आराहगे ण वा ? गोयमा ! गुरूणं गुरूगुणेषु वट्ठमाणो अक्खलियसीले अपमादी अणालस्सी सव्वालंबणविप्पमुक्के समसत्तुमेत्तपक्खे सम्मग्गपक्खवाए जाव णं कहाभणिरे सद्धम्मजुत्ते भवेज्जा णो णं उम्मग्गदेसए अहिमाणरए भवेज्जा, सव्वहा सव्वपयारेहिं णं गुरूणा ताव अप्पमत्तेणं भवियव्वं, णो णं पमत्तेणं, जे उण पमादी भवेज्जा से णं दुरंतपंतलक्खणे अदट्ठव्वे महापावे, जइ णं सबीए हवेज्जा ता णं निययदुच्चरियं जहावत्तं सपरसीसगणाणं पक्खाविय जहा दुरंतपंतलक्खणे अदट्ठव्वे महापावक्कम्मकारी सम्मग्गपणासओ अहयंति एवं निदित्ताणं गरहित्ताणं आलोइत्ताणं च जहाभणियं पायच्छित्तमणुचरेज्जा से णं किंचुद्देसेणं आराहगे भवेज्जा, जइ णं नीसल्ले नियडीविप्पमुक्के, न पुणो सम्मग्गाओ परिभंसेज्जा, अहा णं परिभस्से तओ णाराहेइ। १४। से भयवं ! केरिसगुणजुत्तस्स णं गुरूणो गच्छनिक्खेवं कायव्वं ? गोयमा ! जे णं सुव्वए जे णं सुसीले जे णं दट्ठव्वए जे णं दट्ठचरित्ते जे णं अणिदियंगे जे णं अरहे जे णं गयरागे जे णं गयदोसे जे णं निट्ठियमोहनिच्छत्तमलकलंके जे णं उवसंते जे णं सुविन्नायजगट्ठितीए जे णं सुमहावेरग्गमग्गमल्लीणे जे णं इत्थी कहापडिणीए जे णं भत्तकहापडिणीए जे णं तेणगकहापडिणीए जे णं रायकहापडिणीए जे णं जणवयकहापडिणीए जे णं अच्चंतमणुकंपसीले जे णं परलोगपच्चवायभीरू जे णं कुसीलपडिणीए जे णं विम्मायसमयसब्भावे जे णं गहियसमयपेयाले जे णं अहन्निसाणुसमयं ठिए खंतादिअहिंसालक्खणदसविहे समणधम्मे जेणं उज्जुत्ते अहन्निसाणुसमयं दुवालसविहे तवोकम्मे जे णं सुउवउत्ते सययं पंचसमिईसु जे णं सुगुत्ते सययं तीसु गुत्तीसुं जे णं आराहगे ससत्तीए अट्ठारसण्हं सीलंगसहस्साणं जे णं अविराहगे एगंतेणं ससत्तीए सत्तरसविहस्स णं संजमस्स ज्जे णं उस्सग्गरुई जे णं तत्तरुई जे णं समसत्तुमेत्तपक्खे जे णं सत्तभयट्ठाणविप्पमुक्के जे णं अट्ठमयट्ठाणविप्पजडे जे णं नवण्हं बंभचेरगुत्तीणं विराहणाभीरू जे णं बहुसुए जेणं आयरियकुलुपन्ने जे णं अदीणे जे णं अकिविणे जे णं अणालसिए जेणं संजइवग्गस्स पडिवक्खे जे णं सययं धम्मोवएसदायगे जे णं सययं ओहसामायारीए परूवगे जे णं मेरा वट्ठिए जे णं असामायारीभीरू जे णं आलोयणारिहपायच्छित्तदाणपयच्छणक्खमे जे णं वंदणमंडलिविराहणाजाणगे जे णं पडिक्कमणमंडलिविराहणजाणगे जे णं सज्झायमंडलिविराहणजाणगे जे णं वक्खाणमंडलिविराहण जाणगे जे णं आलोयणामंडलिविराहणजाणगे जे णं उद्देसमंडलिविराहण जाणगे जे णं समुद्देसमंडलिविराहणजाणगे जे णं

श्री आगमगुणमञ्जूषा

ससुरासुरजगणमंसिए वीर। भुवणेक्कपायडजसे जहभणियगुणट्टिए गणिणो॥१२६॥ से भयवं ! जे णं केई अमुणियसमयसब्भावे होत्था विहीएइ वा अविहीएइ वा कस्सई गच्छायारस्स वा मंडलिधम्मस्स वा छत्तीसइविहस्स णं सप्पभेयनाणदंसणचरित्ततववीरियायारस्स वा मणसा वा वायाए वा काएण वा कहिचि अन्नयरे ठाणे केइ गच्छहिर्वई आयरिएइ वा अंतोविसुद्धपरिणामेवि होत्ताणं असई चोक्केज्ज वा खलेज्ज वा परुवेमाणे वा अणुट्ठेमाणे वा से णं आराहगे उयाहु अणाराहगे ?, गोयमा ! अणाराहगे, से भयवं ! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा णं गोयमा ! अणाराहगे ?, गोयमा ! णं इमे दुवालसंगे सुयनाणे अणप्पवसिए अणाइ. निहणे सभूयत्थपसाहणे अणाइसंसिद्धे से णं देविंदवंदाणं अतुलबलवीरिएसरियसत्तपरक्कममहापुरिसायारकंतिदित्तिलावन्नरूवसोहग्गाइसयकंलाकलावच्छिड्डमंडियाणं अणंतनाणीणं सयंसंबुद्धाणं जिणवराणं अणाइसिद्धाणं अणंताणं वट्टमाणसमयसिज्झमाणाणं अन्नेसिं च आसन्नपुरकडाणं अणंताणं सुगहियनामधेज्जाणं महायसाणं महासत्ताणं महाणुभागाणं तिहुयणिक्कतिलयाणं तेलोक्कनाहाणं जगपवराणं जगेक्कबंधूणं जगगुरूणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीण पवरवरधम्मतित्थंकराणं अरहंताणं भगवंताणं भूरभविस्साईयणागयवट्टमाणनिखिलासेसकसिणसगुणसपज्जयसव्ववत्थुविदियसब्भावाणं असहाए पवरे एकमेक्कमग्गे, से णं सुत्तत्ताए अत्थत्ताए गंथत्ताए, तेसिपि णं जहट्टिए चेव पन्नवणिज्जे जहट्टिए चेवाणुट्ठणिज्जे जहट्टिए चेव भासणिज्जे जहट्टिए चेव वायणिज्जे जहट्टिए चेव परुवणिज्जे जहट्टिए चेव वायरणिज्जे जहट्टिए चेव कहणिज्जे से णं इमे दुवालसंगे गणिपिडगे, तेसिपि णं देविंदवंदवंदाणं निखिलजगविदियसदव्वसपज्जवगइआगइ(इति)हासबुद्धिजीवाइतत्ते जाणए वत्थुसहावाणं अलंघणिज्जे अणइक्कमणिज्जे अणासायणिज्जे तहा चेव इमे दुवालसंगे सुयनाणे सव्वजगज्जीवपाणभूयसत्ताणं एणंतेणं हिए सुहे खमे नीसेसिए आणुगामिए पारगामिए पसत्थे महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए संसारूत्तारणयाएत्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरिंसु, किमुतमन्नेसिति, ता गोयमा ! जे णं केइ अमुणियसमयसब्भावेइ वा विइयसमयसारेइ वा अविहीएइ वा गच्छाहिर्वई वा आयरिएइ वा अंतोविसुद्धपरिणामेवि होत्था, गच्छायारमंडलिधम्मा छत्तीसइविही आयारादि जाव णं अन्नयरस्स वा आवस्सगाइकरणिज्जस्स णं पवयणसारस्स असती चुक्केज्ज वाखलेज्ज वा ते णं इमे दुवालसंगे सुयनाणे अन्नहा पयरेज्जा, जे णं इमे दुवालसंगसुयणाणनिबद्धंतरोवगयं एक्कं पयअक्खरमवि अन्नहा पयरे सेणं उम्मग्गे पयंसेज्जा, जे णं उम्मग्गे पयंसेसे णं अणाराहगे भवेज्जा, ता एणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा णं गोयमा ! एणंतेणं अणाराहगे ।२२। से भयवं ! अत्थि केई जणमिणमो परमगुरूणंपी अलंघणिज्जं परमसरणं फुडं पयडं पयडपयडं परमकल्लाणं कसिणकम्मट्टदुक्खनिट्ठवणं पवयणं अइक्कमेज्ज वा पइक्कमेज्ज वा लंघेज्ज वा खंडेज्ज वा विराहेज्ज वा आसाइज्ज वा से मणसा वा वयसा वा कायसा वा जाव णं वयासी ? गोयमा ! णं अणंतेणं कालेणं परिवट्टमाणेणं संपयं दस अच्छेरगे भविंसु, तत्थ णं असंखेज्जे अभव्वे असंखेज्जे मिच्छादिट्ठी असंखेज्जे सासायणे दव्वलिंगमासीय सच्छंदत्ताए डंभेणं सक्कारिज्जंते एच्छेए धम्मिगत्तिकाऊणं बहवे अदिट्ठकल्लाणे जइणं पवयणमभुवगम्मंति (२८६) तमभुवगमिय रसलोलत्ताए विसयलोलत्ताए दुइंदित्तिदियदोसेणं अणुदियहं जहट्टियं मग्गं निट्ठवंति उम्मग्गं च उस्सप्पयंति, ते य सव्वे तेणं कालेणं इमं परमगुरूणंपि अलंघणिज्जं पवयणं जाव णं आसायंति।२३। से भयवं ! कयरेऽणंतेणं कालेणं दस अच्छेरगे भविंसु ? गोयमा ! णं इमे तेणं कालेणं ते अ णं दस अच्छेरगे भवंति, तंजहा-तित्थयराणं उवसग्गे गब्भसंकामणे वामतित्थयरे तित्थयरस्स णं देसणाए अभव्वसमुदाएणं परिसाबंधे सविमाणाणं चंदाइच्चाणं तित्थयरसमवसरणे आगमणे वासुदेवाणं संखझुणीए अन्नयरेण वा रायकउहेण परोप्परमेलावगे इहइं तु भारहे खेत्ते हरिवंसकुलुप्पत्तीए चमरूप्पाए एगसमएणं अट्ठसयसिद्धिगमणं असंजयाणं पूयाकारगेत्ति।२४। से भयवं ! जे णं केई कहिचि कयाई पमायदोसओ पवयणमासाएज्जा से णं किं आयरियपयं पावेज्जा ?, गोयमा ! जे णं केई कहिंची कयाई पमायदोसओ असई कोहेण वा माणेण वा मायाए वा लोभेण वा रागेण वा दोसेण वा भएण वा हासेण वा मोहेण वा अन्नाणदोसेण वा पवयणस्स णं अन्नयरट्ठाणे वइमित्तेणंपि अणायारं असमायारिं परुवेमाणे वा अणुमन्नेमाणे वा पवयणमासाएज्जा से णं बोहिंपी णो पावे, किमंग आयरियपयलंभं ?, से भयवं ! किं अभव्वे मिच्छादिट्ठी आयरिए भवेज्जा ?, गोयमा ! भवेज्जा एत्थं च णं इंगालमइगाई नाए, से भयवं ! किं मिच्छादिट्ठी निक्खमेज्जा ? गोयमा ! निक्खमेज्जा, से भयवं ! कयरेणं लिगेणं से

णं वियाणेज्जा जहा णं धुवमेस मिच्छादिद्वी ? गोयमा ! जे णं कयसामाइए सव्वसंगविमुत्ते भवित्ताणं अफासुपाणं परिभुंजेज्जा जे णं अणगारधम्मं पडिवज्जित्ताणमसई सोईरियं वा तेउकायं सेवेज्ज वा सेवाविज्ज वा सेविज्जमाणे अन्ने समणुजाणेज्ज वा तहा नवण्हं बंभचेरगुत्तिरं अे केई साहू वा साहुणी वा एक्का मवि खंडिज्ज वा विराहेज्ज वा खंडिज्जमाणं वा विराहिज्जमाणं वा बंभचेरगुत्ती परेसिं समणुजाणेज्जा वा मणेण वा वायाए वा काएण वा से णं मिच्छादिद्वी, न केवलं मिच्छादिद्वी अभिगहियमिच्छादिद्वी वियाणेज्जा । २५। से भयवं ! जे णं केई आयरिएइ वा मयहरएइ वा असई कहिचि कयाई तहाविहं संविहाणगमासज्ज इणमोनिगंथं पवयणमन्नहा पन्नवेज्जा से णं किं पावेज्जा ? गोयमा ! जं सावज्जायरिएणं पावियं, से भयवं ! कयरे णं से सावज्जायरिए ? किं वा तेणं पावियंति ? गोयमा ! णं इओ य उसभादितित्थकरचउवीसिगाए अणंतेणं कालेणं जा अतीता अन्ना चउवीसिगा तीए जारिसो अहयं तारिसो चेव सत्तरयणी पमाणेणं जगच्छेरयभूओ देविंदविंदविंदिओ पवरवरधम्मसिरिनाम चरमधम्मतित्थंकरो अहेसि, तत्थ य तित्थे सत्त अच्छेरगे भूए, अहउन्नया परिनिव्वुडस्स णं तित्थंकरस्स कालक्कमेणं असंजयाणं सक्कारकारवणे णामउच्छरगे वहिउमारद्धे, तत्थ णं लोगाणुवत्तीए मिच्छत्तोवहयं असंजयपूयाणुरयं बहुजणसमूहंतिवियाणिऊण तेणं कालेणं ते णं समएणं अमुणियसमयसब्भावेहिं तिगाखमइरामोहिएहिं णाममेत्तआयरियमयहरेहिं सइढाईणं सयासाओ दविणजायं पडिगगहियरथंभसहस्सूसिए सकसके ममत्तिए चेइयालगे काराविऊणं ते चेव दुरंतपंतलक्खणहमाहमेहिं आसईएहिं ते चेव चेइयालगे नीसीय गोविऊणं चबलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमे संते बले संते वीरिए संते पुरिसक्कारपरक्कमे चइऊणं उग्गाभिग्गहे अणिययविहारं णीयावासमासइत्ताणं सिढिलीहोऊणं संजमाइसु ठिए, पच्छा परिचिच्चाणं इहलोगपरलोगावायं अंगीकाऊण सुदीहं संसारं तेसुं चेव मढदेवउलेसुं अच्चत्थं गथिरे मुच्छिरे ममीकारहंकारेहिं णं अभिभूए सयमेव विचित्तमल्लदामाईणं देवच्चणं काउमभ्भुज्जए, जं पुण समयसारं परं इमं सव्वन्नुवयणं तं दूरसुदूरयरेणं उज्झियंति तंजहा-सव्वे जीवा सव्वे पाणा सव्वे भूया सवे सत्ता ण हंतव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परियावेयव्वा ण परिघेत्तव्वा ण विराहेयव्वा ण किलामेयव्वा ण उहवेयव्वा, जे कई सुहुमा जे कई बायरा जे कई तसा जे कई थावरा जे कई पज्जत्ता जे कई अपज्जत्ता जे कई एगिंदिया जे कई बैदिया जे कई तेदिया जे कई चउरिंदिया जे कई पंचिंदिया तिविहंतिविहेणं मणेणं वायाए काएणं जं पुण गोयमा ! मेहुणं तं एगंतेणं ३ णिच्छयओ ३ बाढंइ तहा आउतेउसमारंभं च सव्वहा सव्वपयारेहिं सयं विवज्जेज्जा मुणीति एस धम्मे धुवे सासए णिइए समिच्च लोगं खेयन्नूहिं पवेइएत्ति । २६। से भयवं ! जे णं केई साहू वा साहुणी वा निगंथे अणगारे दव्वत्थयं कुज्जा से णं किमालवेज्जा ? गोयमा ! जे णं केई साहू वा साहुणी वा निगंथे अणगारे दव्वत्थयं कुज्जा से णं अजयएइ वा असंजएइ वा देवभोइएइ वा देवच्चगेइ वा जाव णं उम्मग्गपइट्टिएइ वा दूरुज्झियसीलेइ वा कुसीलेइवा सच्छंदयारिएइ वा आलवेज्जा । २७। एवं गोयमा ! तेसिं अणायारपवित्ताणं बहूणं आयरियमयहरादीणं एगे मरगयच्छवी कुवलयप्पहाभिहाणे णाम अणगारे महातवस्सी अहेसि, तस्स णं महामहंते जीवाइपयत्थे सुत्तत्थपरिन्नाणे सुमहंतं चेव संसारसागरे तासुं तासुं जोणीसुं संसरणभयं सव्वहा सव्वपयारेहिं णं अच्चंतं आसायणाभीरुयत्तणं, तक्कालं तारिसेउवी असंजमे अणायारे बहुसाहम्मियपवत्तिए तहावी सो तित्थयराणमाणं णाइक्कमेइ, अहउन्नया सो अणिगूहियबलवीरियपूरिसक्कारपरक्कमे सुसीसगणपरियरिओ सव्वन्नुप्पणीयागमसुत्तत्थोभयाणुसारोणं ववगयरागदोसमोहमिच्छत्तममकाराहंकारो सव्वत्थ अपडिबद्धो किं बहुणा ?, सव्वगुणगणाहिद्वियसरीरो अणेगगामागरनगरखेडकब्बडम-यडबदोणमुहाइसन्निवेसविसेसेसुं अणेगेसुं भव्वसत्ताणं संसारचारगविमोक्खणिं सद्धम्मकहं परिकहंतो विहरिंसु, एवं च वच्चंति दियहा, अन्नया णं सो महाणुभागो विहरमाणो आगओ गोयमा ! तेसिं णीयविहारीणमावासगे, तेहीं च महातवस्सी काऊण सम्माणिओ किइक्कमासणपयाणाइणा समुचिएणं, एवं च सुहनिसन्नो, चिद्वित्ताणं धम्मकहाइणाविणोएणं पुणो गंतुं पयत्तो, ताहे भणिओ सो महाणुभागो गोयमा ! तेहिं दुरंतपंतलक्खणेहिं लिंगोवजीवीहिं भट्ठायासुम्मग्गपवत्तगउभिग्गहीयमिच्छादिद्वीहिं, जहा णं भयवं ! जइ तुममिहइ एक्कं वासारतियं चाउम्मासियं पउजियं तो णमेत्थं एत्तिगे चेइयालगे भवन्ति णूणं तुज्झाणत्तीए, ता कीरओ अणुग्गहत्थमम्हाणं इहेव चाउम्मासियं, ताहे भणियं तेणे महाणुभागेणं गोयमा ! जहा भो भो पियंवए ! जइवि जिणालए तहावि सावज्जमिणं

गाहं वायमित्तेणंऽपेयं आयरिज्जा, एवं च समयसारपरंतत्तं जहद्वियं अविवरीयं णीसंकं भणमाणेणं तेसिं मिच्छादिद्वीलिंणीणं साहुवेसधारीणं मज्झे गोयमा ! आसकलियं तित्थयरणामकम्मगोयं तेणं कुवलयप्पभेणं, एगभवावसेसीकओ भवोयही, तत्थ य दिट्ठो अणुल्लविज्जनामसंघमेलावगो अहेसि, तेसिं च बहुहिं पावमईहिं लिगिणियाहिं परोप्परमेगमयं काऊणं गोयमा ! तालं दाऊणं विप्पलोइयं चेव तं तस्स महाणुभागसुमहतवस्सिणो कुवलयप्पहाभिहाणं कयं च से सावज्जायरियंभिहाणं, सद्वकरणं, गयं च पसिद्धीए, एवं सद्विज्जमाणोऽवि सो तेणापसत्थसद्वकरणेणं तहावि गोयमा ! ईसिंपि ण कुप्पे । २८। अहऽन्नया तेसिं दुरायाराणं सद्धम्मपरंमुहाणं अगारधम्मणगारधम्मोभयभट्ठाणं लिंगमेत्तनामपव्वइयाणं कालक्कमेणं संज्जाओ परोप्परं आगमवियारो जहा णं सद्धाणमसई संजया चेव मढ्ढेउले पडिजागरेति खंडपडिए य समारावयंति, अन्नं च जाव करणेज्जंतं पइ समारंभे कज्जमाणे जइस्सावि ण णत्थि दोससंभवं, एवं च केई भणंति-संजमं मोक्खनेयारं, अन्ने भणंति. जहा णं पासायवडिंसए पूयासक्कारबलिविहाणाईसु णं तित्थुच्छप्पणा चेव मोक्खगमणं, एवमेसिमविइयपरमत्थाणं पावकम्माणं जं जेण सिद्धं सो तं चेवुदामुस्सिंखलेणं मुहेणं पलवति, ताहे समुद्वियं वादसंघट्ठं, नत्थि य कोई तत्थ आगमकुसलो तेसिं मज्झे जो तत्थ जुत्ताजुत्तं वियारेइ जो य पमाणपुव्वमुवइसइ, तहा एगे भणंति जहा अमुगो अमुग त्थामि चिट्ठे, अन्ने भणंति-अमुगो, अन्ने भणंति-किमित्थ बहुणा पलविणं ?, सव्वेसिमम्हाणं सावज्जायरिओ एत्थ पमाणंति, तेहिं भणियं जहा एवं होउत्ति हक्कारावेह लहुं, तओ हक्काराविओ गोयमा ! सो तेहिं सावज्जायरिओ, आगओ दूरदेसाओ अप्पडिबद्धत्ताए विहरमाणो सत्तहिं, मासेहिं, जाव णं दिट्ठो एगाए अज्जाए, सा य तं कट्ठुगतवचरणसोसियसरीरं चम्मट्ठिसेसतणुं अच्चंतं तवसिरीए दिप्पंतं सावज्जायरियं पेच्छिय सुविम्हियं तक्कर-(क्ख)णा वियक्किउं पयत्ता-अहो किं एस महाणुभागे णं सो अरहा किं वा णं धम्मो चेव मुत्तिमंतो ?, किं बहुणा ?, तियसिंदवंदाणंपि वंदणिज्जपायजुओ एसत्ति चित्तिऊणं भत्तिभरनिब्भरा आयाहिणपयाहिणं काऊणं उत्तिमंगेणं संघट्टमाणी इडित्ति णिवडिया चलणेसुं गोयमा ! तस्स णं सावज्जायरियस्स, दिट्ठो य सो तेहिं दुरायारेहिं पणमिज्जमाणो, अन्नया णं सो तेसिं तत्थ जहा जगगुरुहिं उवइट्ठं तहा चेव गुरुवएसाणुसारेणं आणुपुव्वीए जहाद्वियं सुतत्थं वागरेइ तेऽवि तहा चेव सद्वहंति, अन्नया ताव वागरियं गोयमा ! जाव णं एक्कारसण्हमंगाणं चोइसण्हयपुव्वाणं दुवालसंगस्स णं सुयनाणस्स णवणीयसारभूयं सयलपावपरिहारट्ठकम्मनिम्महणं आगयं इणमेव गच्छमेरापन्नवणं महानिसीहसुयक्खंधस्स पंचममज्झयणं, एत्थेव गोयमा ! ताव णं वक्खाणियं जाव णं आगया इमा गाहा 'जत्थित्थीकरफरिसं अंतरियं कारणेवि उप्पन्ने । अरहाऽवि करेज्ज सयं तं गच्छं मूलगुणमुक्कं ॥ १२७॥ तओ गोयमा ! अप्पसंकिणं चेव चित्तियं तेणं सावज्जयरिणं जइ इह एयं जहद्वियं पन्नवेमि तओ जं मम वंदणं दाउमाणीए तीए अज्जाए उत्तिमंगेण चलपाग्गे पुट्ठे तं सव्वेहिपि दिट्ठमेएहिति ता जहा मम सावज्जायरियाभिहाणं कयं तहा अन्नमवि किंचि एत्थमुट्ठकं काहिति जेणं तु सव्वलोए अपुज्जो भविस्सं, ता अहमन्नहा सुत्तत्थं पन्नवेमि ?, ता णं महती आसायणा, तो किं करियवमेत्थंति ?, किं एयं गाहं परुवयामि ? किं वा ण ? अन्नहा वा पन्नवेमि ?, अहवा हाहा ण जुत्तमिणं उभयहावि अच्चंतगरहियं आयहियद्वीणमेयं, जओ णमेस समयाभिप्पाओ जहा णं-जे भिक्खू दुवालसंगस्स णं सुयनाणस्स असई चुक्खलियपमाया संकादीसभयत्तेणं पयक्खरमत्ताबिंदुमवि एक्कं परुविज्जा अन्नहा वा पन्नवेज्जा संदिद्धं वा सुत्तत्थं वक्खाणेज्जा अविहीए अओगस्स वा वक्खाणेज्जा से भिक्खू अणंतसंसारी भवेज्जा, ता किं एत्थं ?, जं होही तं च भवउ, जहद्वियं चेव गुरुवएसाणुसारेणं सुत्तत्थं पवक्खामिति चित्तिऊणं गोयमा ! पवक्खाया णिखिलावयवविसुद्धा सा तेण गाहा, एयावसरंमि चोइओ गोयमा ! सो तेहिं दुरंतपंतलक्खणेहिं जहा जइ एवं ता तुमंपि ताव मूलगुणहीणो जाव णं संभरतु तु जं तद्विवसं तीए अज्जाए तुज्झं वंदणं दाउकामाए पाए उत्तमंगेणं पुट्ठे, ताहे इहलोगायसभीरु खरसत्थ(मच्छ)रीहूओ गोयमा ! सो सावज्जयरिओ विचित्तिओ जहा जं मम सावज्जायरियाभिहाणं कयं इमेहिं तहा तं किंपि संपयं काहिति जे णं तु सव्वलोए अपुज्जो भविस्सं, ता किमित्थं परिहारं दाहामिति चिंतमाणेणं संभरियं तित्थयरवयणं, जहा णं के केई आयरिएइ वा मयहरएइ वा गच्छाहिवई सुयहरे भवेज्जा से णं जंकिंचि सव्वनुणंतनाणीहिं पावाववायट्ठाणं पडिसेहियं तं सव्वसुयाणसारेणं विन्नाय सव्वहा सव्वपयारेहिं णं णो समायरेज्जा णो णं समायरिज्जमाणं समणुजाणेज्जा, से कोहेण वा माणेण वा मायाए वा लोभेण वा भएण वा हासेण वा गारवेण

वा दप्पेण वा पमाएण वा असती चुक्खल्लिएण वा, दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा तिविहंतिविहेणं मणेणं वायाए काएणं एतेसिमेव पयाणं जे केई विराहणे भवेज्जा से णं भिक्खू भुज्जो २ निंदणिज्जे गरहणिज्जे खिंसणिज्जे दुगुंछणिज्जे सव्वलोगपरिभूए बहुवाहिवेयणापरिगयसरीरे उक्कोसठिईए अणंतसंसारसागरं परिभमेज्जा, तत्थ णं परिभममाणे खणमेक्कं पि न कहिंचि कदाइ निव्वुइं संपावेज्जा, तो पमायगोयरगयस्स णं मे पावाहमाहमहीणयत्तकाउरिसस्स इहइं चेव समट्टिया एमहंती आवई जेण ण सक्को अहमेत्थं जुत्तीखमं किंचि पडिउत्तरं पयाउं जे, तहा परलोणे य अणंतभवपरंपरं भममाणो घोरदारूणाणंतसो य दुक्खस्स भागीभविहामिऽहं मंदभग्गोत्ति चिंतयंतोऽवलक्खिओ सो सावज्जायरिओ गोयमा ! तेहिं दुरायारपावकम्मदुट्ठसोयारेहिं जहा णं अलियखरमच्छरीभूओ एस, तओ संखुद्धमणं खामच्छरीभूयं कलिऊणं च भणियं तेहिं दुट्ठसोयारेहिं जह जाव णं नो छिन्नमिणमो संसयं ताव णं उट्ठं वक्खाणं अत्थि, ता एत्थं तं परिहारणं वायरेज्जा जं पोढजुत्तीखमं कुग्गहणिम्महणपच्चलंति, तओ तेण चितियं जहा नाहं अदिन्नेणं परिहारणेण चुक्किमो मेसिं, ता किमित्थ परिहारणं दाहामित्ति चिंतयंतो पुणोवि गोयमा ! भणिओ सो तेहिं दुरायारेहिं जहा किमट्ठं चिंतासागरे णिमज्जिऊणं ठिओ ?, सिग्घमेत्थं किंचि परिहारणं वयाहि, णवरं तं परिहारणं भणिज्जा जं जहुत्तत्थीकि (त्थिक्क) याए अव्वभिचारी, ताहे सुइरं परितप्पिऊणं हियएणं भणियं सावज्जयरिणं जहा एएणं अत्थेणं जगगुरूहिं वागरियं जं अओगस्स सुत्तत्थं न दायव्वं, जआ 'आमे घडे निहतं जहा जलं तं घटं विणासेइ । इय सिद्धंतरहस्सं अप्पाहारं विणासेइ ॥१२८॥ ताहे पुणोवि तेहिं भणियं जहा किमेयाइं अरडबरडाइं असंबद्धाइं दुब्भासियाइं पलवह ?, जइ परिहारणं ण दाउं सक्के ता उप्पिड मुयसु आसणं ऊपर सिग्घं इमाओ ठाणाओ, किं देवस्स रूसेज्जा जत्थ तुमपि पमाणीकाऊणं सव्वसंघेणं समयसम्भावं वायरेउं जे समाइट्ठो ?, तओ पुणोवि सुइरं परितप्पिऊणं गोयमा ! अन्नं परिहारमलभमाणेणं अंगीकाऊणं दीहसंसारं भणियं च सावज्जायरिणं जहा णं उस्सग्गाववायेहिं आगमो ठिओ, तुब्भे ण याणहेयं, एगंतो मिच्छत्तं, जिणाणमाणामणेगंतो, एयं च वयणं गोयमा ! गिम्हायवसंताविएहिं सिहिउलेहिं व अहिणवपाउससजलघणोरल्लिमिव सबहुमाणं समाइच्छियं तेहिं दुट्ठसोयारेहिं, तओ एगवयरदोसेणं गोयमा ! निबंधिऊणाणंतं संसारियत्तणं अपडिमिऊणं च तस्स पावसमुदायमहाखंधमेलावगस्स मरिऊण उववन्नो वाणमंतरेसु सो सावज्जायरिओ तओ चुओ समाणो उववन्नो पवसियभत्ताराए पडिवासुदेवपुरोहियधूयाए कुच्छिसि, अहऽन्नया वियाणिउं तीए जणणीए पुरोहियभज्जाए जहा णं हा हा हा दिन्नं मसिकुच्चयं सव्वनियकुसलस्स इमीए दुरायाराए मज्झ धूयाए साहियं च पुरोहियस्स, तओ संतप्पिऊण सुइरं बहुं च हियएण साहारेउं निव्विसया कया सा तेणं पुरोहिणं, एमहंता असज्झदुन्निवारअयसभीरूणा, अहऽन्नया थेवकालंतरेणं कहिंचि थाममलभमाणी सीउणहवायविज्झडिया खुरका (हछा) मकंठा दुब्भिक्खदोसेणं पविट्ठा दासत्ताए रसवाणियगस्स गेहे, तत्थ य बहूणं मज्जंपाणगाणं संचियं साहरेइ अणुसमयमुच्छिट्ठगंति, अन्नया अणुदियं साहरमाणीए तमुच्चिट्ठं दट्ठुणं च बहुमज्जपाणगे मज्जमावियमाणे पोग्गलं च समुद्दिसंते तहेव तीए मज्जमंसस्सोवरिं दोहलगं समुप्पन्नं जाव णं तं बहुमज्जपाणं नडनट्ठत्तचारणभडोडुचेडतक्करासरिसजातीसु सुज्झियं खुरसीसपुंछकन्नट्ठिमयगयं उच्चिट्ठं वच्छू (उल्लू) रखंडं तं समुद्दिसिउं समारद्दा, ताहे तेसु चेव उच्चिट्ठकोडियगेसु जंकिंचि णाहीए मज्झं विवक्कं तमेवासाइउमारद्धा, एवं च कइवयदिणाइक्कमेणं मज्जमंसस्सोवरि दढं गेही संजाया, ताहे तस्सेव रसवाणिज्जगस्स गेहाउ परिमुसिऊणं किंचि कंसदूसदविणजायं अन्नत्थ विक्किणिऊणं मज्जं समंतं परिभुंजस, ताव णं विन्नायं तेण रसवाणिज्जगेण, साहियं च नरवइणो, तेणावि वज्झा समाइट्ठा, तत्थ य राउले एसो गोयमा ! कुलधम्मो जहा णं जा काइ आवन्नसत्ता नारी अवराहदोसेणं सा जाव णं नो पसूया ताव णं नो वावाएयव्वा, तेहिं विणिउत्तगणिगितगेहिं सगेहे नेऊण पसूइसमयं जाव णियंतिया रक्खेयव्वा, अहऽन्नया णीया तेहिं हरिएसजाईहिंसगेहिं, कालकमेण पसूया य दारणं तं सावज्जायरियजीवं, तओ पसूयमेत्ता चेव तं बालयं उज्झिऊण पणट्ठा मरणभयाहितत्था सा गोयमा ! दिसिमेक्कं गंतूणं, वियाणियं च तेहिं पावेहिं जहा पणट्ठा सा पावकम्मा, साहियं च नरवइणो सूणाहिवईहिं जहा णं देव ! पणट्ठा सा दुरायारा कयलिगब्भोवमं दारगमुज्झिऊणं, रत्तावि पहिभणियं-जहा णं जइ नाम सा गया ता गच्छउ तं बालगं पडिबालेज्जासु, सव्वहा तहा कायव्वं जहा तं बालगं ण वावज्जे, गिणहेसु इमे पंचसहस्सा दविणजायस्स, तओ नरवइणो संदेसेणं सुयमिव

परिवालिओ सो पंसुलीतणओ, अन्नया कालकमेणं मओ सो पावकम्मो सूणाहिवई, तओ रत्ता समणुजाणिओ तस्सेव बालगस्स घरसारं, कओ पंचण्ह सयाणं अहिवई, तत्थ य सूणाहिवइपए ठिओ समाणो ताई तारिसाई अकरणिज्जाई समणुठित्ताणं गओ सो गोयमा ! सत्तमाए पुढवीए अपइट्ठाणनामे निरयावासे सावज्जायरियजीवो, एवं तं तत्थ तारिसं घोरपचंडरोहं सुदारूणं दोक्खं तिच्चीसं सागरोवमं जाव कहकहवि किलेसेणं समणुभविऊणं इहागओ समाणो उववन्नो अंतरदीवे एगोरूयजाई, तओवि मरिऊणं उववन्नो तिरियजोणीए महिसत्ताए, तत्थ य जाई काइं पि णारगदुक्खाईं तेसिं तु सरिसनामाई अणुभविऊणं छव्वीसं संवच्छराणि तओ गोयमा ! मओ समाणो उववन्नो मणुएसु, तओ गओ वासुदेवत्ताए सो सावज्जायरियजीवो, तत्थवि अहाऊयं परविलिऊणं अणेगसंगामारंभपरिग्गहदोसेण मरिऊण गओ सत्तमाए, तओवि उव्वट्ठिऊण सुइरकाला उववन्नो गयकन्नो नाम मणुयजाई, तओवि कुणिमाहारदोसेणं कूरज्झवसायमई गओ मरिऊणं पुणोवि सत्तमाए तहिं चेव अपइट्ठाणे निरयावासे, तओ उव्वट्ठिऊणं पुणोवि उववन्नो तिरिएसु महिसत्ताए, तत्थवि णं नरगोवमं दुक्खमणुभवित्ताणं मओ समाणो उववन्नो बालविहवाए पंसुलीमाहणधूयाए कुच्छिसि, अहऽन्नया निउत्तपच्छन्नगम्भसाडणपाडणखारजुण्णजोगदोसेणं अणेगवाहिवेयणापरिगयसरीरो सिडिहिडंतो कुट्टवाहीए परिगलमाणो सलसलंतकिमिजालेणं खज्जंतो नीहरिओ नरओवमघोरदुक्खनिवासाओ गम्भवासाओ गोयमा ! सो सावज्जयरियजीवो, तओ सव्वलोगेहिं निदिज्जमाणो गरहिज्जमाणो दुगुंछिज्जमाणो खिसिज्जमाणो सव्वलोगपरिभूओ पाणखाणभोगोवभोगपरिवरिवज्जिओ गम्भवासपभितीए चेव विचित्तसारीरमाणसिगघोरदुक्खसंततो सत्त संवच्छरसयाई दो मासे य चउरो दिणे य जाव जीविऊणं मओ समाणो उववन्नो वाणमंतरेसुं, तओ चुओ उववन्नो मणुएसुं पुणोवि सूणाहिवत्ताए तओवि तक्कम्मदोसेणं सत्तमाए तओवि उव्वट्ठेऊणं उववन्नो तिरिएसुं चक्कियघरंसि गोणत्ताए, तत्थ य चक्कसगडलंगलायट्टणेणं अहन्निसं जुयारोवणेणं पच्चिऊणं कुहियउव्वियं खंधं संमुच्छिए य किमी ताहे अक्खमीहूयं खंधं जुयधरणस्स विण्णाय पट्टीए वाहिउमारद्धो तेणं चक्किणं, अहऽन्नया कालकमेणं जहा खंधं तहा पच्चिऊण कुहिया पट्टी, तत्थावि संमुच्छिए किमी, सडिऊण विगयं च पट्टिचम्मं, ता अकिंचियरं निप्पओयणंति णाऊइ मोक्कलिओ गोयमा ! तेणं चक्किणं तं सलसलित्तकिमिजालेहिं णं खज्जमाणं बइल्लं सावज्जायरियजीवं, तओ मोक्कलिओ समाणो परिसडियपट्टिचम्मो बहुकायसाणकिमिकुलेहिं सबज्झब्भंतरे विलुप्पमाणो एकूणतीसं संवच्छराई जाव आउयं परिवालेऊणं मओ समाणो उववण्णो अणेगवाहिवेयणापरिगयसरीरो मणुएसुं महाधण्णस्स णं इब्भस्स गेहे, तत्थ य वमणविरेयणखारकडुतित्तकसायतिहलागुग्गलकाढगे आवीयमाणस्स निच्चविसोसणाहिं च असज्झाणुवसम्मघोरदारूणदुक्खेहिं पज्जालियस्सेव गोयमा ! गओ निप्फलो तस्स मणुयजम्मो, एवं च गोयमा सावज्जायरियजीवो चोदसरज्जुयलोगं जम्ममरणेहिं णं निरंतरं पडियरी (डि) ऊणं सुदीहाणंतकालाओ समुप्पन्नो मणुयत्ताए अवरविदेहे, तत्थ य भागवसेणं लोगाणुवत्तीए गओ तित्थयरस्स वंदणवत्तियाए पडिबद्धो य पव्वइओ, सिद्धो अ इह तेवीसमतित्थयरपासणामस्स काले, एयं तं गोयमा ! सावज्जायरिएण पावियं, से भयवं ! किंपच्चइयं तेणाणुभूयं एरिसं दूसहं घोरदारूणं महादुक्खसंनिवायसंघट्टमित्तियकालं ति ?, गोयमा ! जं भणियं तक्कालसमयं जहा णं 'उस्सग्गाववाएहिं आगमो ठिओ, एगंतो मिच्छत्तं, जिणाणमाणा अणेगंतोत्ति' एयवयणपच्चइयं, से भयवं ! किं उस्सग्गाववाएहिं णं नो ठियं आगमं ?, एगंतं च पन्नविज्जइ ?, गोयमा 'उस्सग्गाववाएहिं चेव पवयणं ठियं, अणेगंतं च पन्नविज्जइ, णो णं एगंतं, णवरं आउक्कायपरिभोगं तेउकायसमारंभं मेहुणासेवणं च एते तओ थाणंतरे एगंतेणं ३ निच्छयओ ३ बाढं ३ सव्वहा सव्वपयारेहिं णं आवहियट्ठिणं निसिद्धंति, एत्थं च सुत्ताइक्कमे सम्मग्गवियसमारंभं उम्मग्गपरिसणं तओ य आणाभंगं आणाभंगाओ अणंतसंसारी, से भयवं ! किं तेण सावज्जायरिएणं मेहुणमासेवियं ?, गोयमा सेवियासेवियं, णो सेवियं णो असेवियं, से भयवं 'केण अट्टेणं एवं वुच्चइ ?, गोयमा ! जं तीए अज्जाए तक्कालं उत्तिमंगेणं पाए फरिसिए, फरिसिज्जमाणे य णो तेण आउंटिय संवरिए, एएणं अट्टेणं एवं गोयमा ! वुच्चइ, से भयवं ! एगभवावसेसीकओ आसी भवोयही ता किमेयमणंतसंसाराहिंडणंति ?, गोयमा ! निययपमायदोसेणं, तम्हा एयं वियाणित्ता भवविरहमिच्छमाणेणं गोयमा ! सुदिट्ठसमयसारेणं गच्छाहिवइणा सव्वहा सव्वपयारेहिं णं सव्वत्थामेसु अच्चंतं अप्पमत्तेणं गवियव्वंति बेमि ॥२९॥ ☆☆☆

महानिशीहसुयसुतं दुवालसंगसुयनाणस्स णवणीयसारनामं पंचमं अज्झयणं ॥५॥ ☆ ☆ ☆ भयवं ! जो रत्तिदियहं सिद्धंतं पढइ सुणेइ वक्खाणेइ चिंतए सततं सो किं अणायारमायरे ? , 'सिद्धंतगयमेगंपि, अक्खरं जो वियाणई । सो गोयम ! मरणंतेविऽणाचारं नो समायारे । १। से भयवं ! ता कीस दसपुव्वी णंदिसेणे महायसे पव्वज्जं चिच्चा गणिकाइ गेहं पविट्ठो य वुच्छई ? , गोयमा ! 'तस्स पसिद्धं मे भोगहलं खलियकारणं । भवभयभीओ तहावि दुयं, सो पव्वज्जमुवागओ ॥१॥ पायालं अवि अड्डमुहं, सग्गं होज्जा अहोमुहं । ण उणो केवलपन्नत्तं, वयणं अन्नहा भवे ॥२॥ अन्नं सो बहुवाए वा, सुयनिबद्धे वियारिउं । गुरूणो पामूले मोत्तूणं, लिंगं निव्विसओ गओ ॥३॥ तमेव वयणं सरमाणो, दंतभग्गो (दत्तभंगो) सकम्मुणा । भोगहलं कम्मं वेदेइ, बद्धपुट्टनिकाइयं ॥४॥ भयवं ! ते केरिसोवाए, सुयनिबद्धे वियारिए । जेणुज्झियसु सामन्नं, अज्जवि पाणे धेरइ सो ? ॥५॥ एते ते गोयमोवाए, केवलीहिं पवेइए । जहा विसयपराभूओ, सरेज्जा सुत्तमिमं मुणी ॥६॥ तंजहा- तवमुद्ध (मट्ठ) गुणं घोरं, आढवेज्जा सुदुक्करं । जया विसए उदिज्जंति, पडणासण विसं पिबे ॥७॥ उब्बंधिऊणं मरियव्वं, नो चरित्तं विराहए । अह एयाइं न सक्केज्जा, ता गुरूणं लिंगं समप्पिया ॥८॥ विदेसे जत्थ नागच्छे, पउत्ती तत्थ गंतूणं । अणुव्वयं पालेज्जा, णो णं भविया णिद्धंधसे ॥९॥ ता गोयम ! णंदिसेणेणं, गिरिपडणं जाव पत्थुयं । तावायासे इमा वाणी, पडिओवि णो मरिज्ज तं ॥१०॥ दिसामुहाइं जा जोए, ता पेच्छे चारणं मुणिं । अकाले नत्थि ते मच्चू विसमविसमादितुं गओ ॥१॥ ताहेवि अणहियासेहिं, विसएहिं जाव पीडिओ । ताव चिंता समुप्पन्ना, जहा किं जीविण मे ? ॥२॥ कुंदेन्दुनिम्मलयरागं, तित्थं पावमती अहं । उड्डाहिंतोऽह सुज्झिस्सं, कत्थ गंतुमणारिओ ? ॥३॥ अहवा सलंछणो चंदो, कुंदस्स उण कापहा । कलिकलुसमलकलंकेहिं, वज्जियं जिणसासणं ॥४॥ ता एयं सयलदारिदुहकिलेसक्खयंकरं । पवयणं खिंसावित्तो, कत्थ गंतूण सुज्झिहं ? ॥५॥ दुग्गटंकं गिरिं रोढुं, अत्ताणं चुन्निमो धुवं । जाव विसयवसो णाहं, किंचिऽत्थुड्डाहं करं ॥६॥ एवं पुणोवि आरोढुं, टंकुच्छिन्नं गिरीयडं । संवरे किल निरागारं, गयणे पुणरवि भाणियं ॥७॥ अयाले नत्थि ते मच्चू, चरिमं तुब्भं इमं तणुं । ता बद्धपुट्टं भोगहलं, वेइत्ता संजमं कुरू ॥८॥ एवं तु जाव बे वारा, चारणसमणेहिं सेहिओ । ताहे गंतूण सो लिंगं, गुरूपामूले निवेदिउं ॥९॥ तं सुत्तत्थं सरेमाणो, दूरं देसंतरं गओ । तत्थाहारनिमित्तेणं, वेसाए घरमागओ ॥२०॥ धम्मलाभं जा भणई, अत्थलाभं विभग्गिओ । तेणावि सिद्धिजुत्तेणं, एवं भवउत्ति भाणियं ॥१॥ अब्धतेरसकोडीओ, दविणजायस्स जा तहिं । हिरण्णविट्ठिं दावेउं, मंदिरा पडिगच्छइ ॥२॥ उत्तुंगथोरथणवट्ठा, गणिगा आलिगिउं दढं भन्ने किं जासिमं दविणं, अविहीए दाउ ? चुल्लगा ! ॥३॥ तेणवि भवियव्वयं एयं, कलिऊणेयं पभाणियं । जहा जा ते विही इट्ठा, तीए दव्वं प (आ) यच्छसु ॥४॥ गहिऊणाभिग्गहं ताहे, पविट्ठो तीइ मंदिरं । एवं जहा न ताव अहयं, भोयणपाणविहिं करे ॥५॥ दस दस ण बोहिए जाव, दियहे २ अणूणिगे । पइन्ना जा न पुन्नेसा, काइयमोक्खं न ता करे ॥६॥ अन्नं च न मे दायव्वा, पव्वज्जोवट्ठियस्सवि । जारिसगं तु गुरूलिंगं, भवे सीसंपि तारिसं ॥७॥ अखीणत्थं निहीकाउं, लुंचिओ खोसिओवि सो । तहाऽऽराहिओ गणिगाय, बद्धो जह पेमपासेहिं ॥८॥ आलावाओ पणओ पणयाउ रती रतीइ वीसंभो । वीसंभाओ णेहो पंचविहं वट्ठए पेम्मं ॥९॥ एवं सो पेम्मपासेहिं, बद्धोऽवि सावगत्तणं । जहोवइडं करमाणो, दस अहिए वा दिणे दिणे ॥३०॥ पडिबोहिऊण संविग्गगुरूपामूले पवेसई । संपयं बोहिओ सोवि (णी), दुम्मुहेण (ह भणे) जहा तुमं ॥१॥ धम्मं लोगस्स साहेसि, अत्तकज्जंमि मुज्झसि । णूणं विक्केणयं धम्मं, जं सयं णाणुचिट्ठसि ॥२॥ एयं सो वयणं सोच्चा, दुम्मुहस्स सुभासियं । थरथरथरस्स कंपंतो, निदिउं गरहिउं चिरं ॥३॥ हा हा हा हा अकज्जं मे, भट्ठसीलेण किं कयं ? । जेणं तु सुत्तोऽप्पसरे, गुंडिओऽसुइ किमी जहा ॥४॥ धी धी धी धी अहन्नेणं, पेच्छ जं मेऽणुचिट्ठियं । जच्चकंचणसमऽत्ताणं, असुइसरिसं मए कय ॥५॥ खणभंगुरस्स देहस्स, जा विवत्ती ण मे भवे । ता तित्थयरस्स पामूलं, पायच्छित्तं चरामिऽहं ॥६॥ एसमागच्छती एत्थं, चिट्ठंताणेव गोयमा ॥ घोरं चरिऊण पायच्छित्तं, संवेगाऽम्हेहिं भासियं ॥७॥ घोरवीरतवं काउं, असुहकम्मं खवेत्तु य । सुक्कज्झाणं समारूहिउं, केवलं पप्प सिज्झिही ॥८॥ ता गोयमेयणाएणं, बहू उवाए वियारिया । लिंगं गुरूस्स अप्पेउं, नंदिसेणेण जह कयं ॥९॥ उस्सग्गं ता तुमं बुज्झ, सिद्धंतेयं जहट्ठियं । तवंतराउदयं तस्स, महंतं आसि गोयमा ! ॥४०॥ तहावि जो विसउइन्ने, तवे घोरमहातवं । अट्ठगुणं तेणमणुचिन्नं, तावि विसए ण णिज्जए ॥१॥ ताहे विसभक्खणं पडणं, अणसणं

तेण इच्छियं । एयंपि चारणसमणेहिं, बे वारा जाव सेहिओ ॥२॥ ताव य गुरूस्स रयहरणं, अप्पिय तं देसंतरं गओ । एते ते गोयमोवाए, सुयनिबद्धे वियाणए ॥३॥ जहा=जाव गुरूणो न रयहरणं, पव्वज्जा य न अल्लिया । तावाकज्जं न कायव्वं, लिंगमवि जिणदेसियं ॥४॥ अन्नत्थ ण उज्झियव्वं, गुरूणो मोत्तूण अंजलिं । जइ सो उवसामिउं सक्को, गुरू ता उवसामई ॥५॥ अह अन्नो उवसिमउं सक्को, तोऽवी तस्स कहिज्जई । गुरूणावि तयं णऽन्नस्स, गिरा वेयव्वं कयाइऽवी ॥६॥ जो भवियो वीयपरमट्ठो, जगट्ठिइवियाणगो । एयाइं तु पयाइं जो, गोयमा ! णं विडंबए ॥७॥ मायापवंचडंभेणं, सो भमिही आसडो जहा । भयवं ! न याणिभो कोऽवि, मायासीलो हु आसडो ? ॥८॥ किं वा निमित्तमुवचरिओ, सो भमे बहुदुहट्ठिओ । चरिमस्सऽन्नस्स तित्थंमि, गोयमा ! कंचणच्छवी ॥९॥ आयरिओ आसि भूइक्खो, तस्स सीसो स आसडो । महव्वयाइं घेतूणं, अह सुत्तत्थं अहिज्जिया ॥५०॥ ताव कोऊहलं जायं, णो णं विसएहिं पीडिओ । चित्तेइ य जह सिद्धंते, एरिसो दंसिओ विही ॥१॥ तो तस्स पमाणेणं, गुरुर्यणं रंजिउं दढं । तवं चऽट्ठगुणं काउं, पडणाणसणं विसं ॥२॥ करेहामि जहाऽहंपि, देवयाए निवारिओ । दीहाऊ णत्थि ते मच्चू, भोगे भुंज जहिच्छिए ॥३॥ लिंग गुरूस्स अप्पेउं, अन्नं देसंतरं वय । भोगहलं वेइया पच्छा, घोरवीरतवं चर ॥४॥ अहवा हा हा अहं मुट्ठो, आयसल्लेण सल्लिओ । समणाणं णेरिसं जुत्तं, सयमवी मणसि धारिउं ॥५॥ पच्छा उ मे पच्छित्तं, आलोएत्ता लहुं धरे । अहवणं णं आलोउं, मायावी भन्निमो पुणो ॥६॥ ता दसवासे आयामं, मासक्खमणस्स पारणे । वीसायंबिलमादीहिं, दो दो मासाण पारणा ॥७॥ पणुवीसं वासे तत्थ, चंदायरेणेस य । छट्ठमदसमाइं, अट्ठ वासे यऽणूणगे ॥८॥ महघोरेरिसपच्छित्तं, सयमेवेत्थाणुचरं । गुरूपामूलेऽवि एत्थेयं, पायच्छित्तं मे ण अगगलं ॥९॥ अहवा तित्थयरेणेस, किमट्ठं वाइओ विही ? । जेणेयमहीयमाणोऽहं, पायच्छित्तस्स मेलिओ ? ॥६०॥ अहवा-सोच्चिय जाणेज्ज सव्वन्नू, पच्छित्तं अणुचराम्यहं । जमित्थं दुट्ठचितिययं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥१॥ एवं तं कट्ठं घोरं, पायच्छित्तं सयंमती । काऊणंपि ससल्लो सो, वाणमंतरियं गओ ॥२॥ हिट्ठिमोवरिमगेवेयविमाणे तेण गोयमा ! वयंतो आलोइत्ता, जइ तं पच्छित्तं कुव्विया ॥३॥ वाणमंतरदेवत्ता, चइऊणं गोयमा ! ऽऽसडो । रासहत्ताएँ तिरिच्छेसुं, नरिंदघरमागओ ॥४॥ निच्चं तत्थ वडवाणं, संघट्ठणदोसा तहिं । वसणे वाही समुप्पण्णा, किमी एत्थ संमुच्छिए ॥५॥ तओ किमिहं खज्जंतो, वसणदेसमि गोयमा ! मुक्काहारो खिइं लेढे, वियणत्तो ताव साहुणो ॥६॥ अदूरेण पवोलेत्ते, दट्ठुणं जाइं सरेत्तु य । निदिउं गरहिउं आया, अणसणं पडिवज्जिया ॥७॥ कागसाणेहिं खज्जंतो, सुद्धभावेणं गोयमा ! अरहंताणंति सरमाणो, संमं उज्झिय सं तणूं ॥८॥ कालं काऊण देविंदमहाघोससमाणिओ । जाओ तं दिव्वं इहिं, समणुभोत्तुं तओ चुओ ॥९॥ उववन्नो वेसत्ताए, जा (न) सा नियडी ण पयडिया । तओवि मरिऊणं बहू, अंतपंते कुलेऽडिओ ॥७०॥ कालक्कमेणं महुराए, सिवइंदस्स दियायणो । सुओ होऊणं पडिबुद्धो, सामन्नं काउं निव्वुडो ॥१॥ एयं तं गोयमा ! सिट्ठं, नियडीपुंजं तु आसडं । जे य सव्वन्नमुहभणिए, वयणं मणसा विडंबए ॥२॥ कोऊहलेणं विसयाणं, ण उणं विसएहिं पीडिए । सच्छंदपायच्छित्तेण, भमिओ भवपरंपरं ॥३॥ एयं नाऊणमिक्कंपि, सिद्धंतिगमालावणं । जाणमाणो हु उम्मगं, कुज्जा जे सेविया ण हि ॥४॥ जो पुण सव्वसुयन्नाणं, अट्ठं वा वयणंपि वा । णच्चा वएज्ज मग्गेणं, तस्स अहो ण बज्झई, एयं नाऊण मणसावि, उम्मगं नो पव्वत्तए ॥५॥ त्ति बेमि, 'भयवं ! अकिच्चं काऊणं, पच्छित्तं जो करेज्ज वा । तस्स लट्ठयरं पुरओ, जं अकिच्चं न कुव्वई ? ॥६॥ ताऽजुत्तं गोयमा ! मिणमो, वयणं मणसावि धारिउं । जहा काउमकत्तव्वं, पच्छित्तेणं तु सुज्झिहं ॥७॥ जो एयं वयणं सोच्चा, सद्धे अणुचरेस वा । भट्ठसीलाणं सव्वेसिं, सत्थवाहो स गोयमा ! ॥८॥ एसो काउंपि पच्छित्तं, पाणसंदेहकारणं । आणाअवराह दीवसिहं, पविसे सलभो जहा ॥९॥ भयवं ! जो बलं विरियं, पुरिसयारपरक्कमं । णिगूहंतो तवं चरइ, पच्छित्तं तस्स किं भवे ? ॥८०॥ तस्सेयं होइ पच्छित्तं, असढभावस्स गोयमा ! जो तं थामं वियाणेत्ता, वेरी सन्तिमवेक्खिया ॥१॥ जो बलं वीरियं सत्तं, पुरिसयारं निगूहए । सो सपच्छित्तपच्छित्तो, सढसीलो नराहमो ॥२॥ नीयागोयं दुहं घोरनरए सुक्कोसियट्ठितिं । वेदेत्तो तिरिजोणीए, हिडेज्जा चउगईए सो ॥३॥ से भयवं ! पावयं कम्मं, परं वेइय समुद्धरे । अणणुभूएण णो मोक्खं, पायच्छित्तेण किं तहिं ? ॥४॥ गोयमा ! वासकोडीहिं, जं अणेगाहिं संचियं । तं पच्छित्तरवुपट्ठं, पावं तुहिणं व विलीयइ ॥५॥ घणघोरंधयारतमतिमिस्सा, जह सूरस्स गोयमा ! पायच्छित्तरविस्सेयं, पावं कम्मं पणस्सए ॥६॥ णवरं जइ तं पच्छित्तं,

जह भणियं तह समुद्धरे । (बलवीरिय) असढभावो अणिगूहियपुरिसयारपरक्कमे ॥७॥ अन्नं च काउ पच्छित्तं, सव्वथेवं णमणुच्चरे जो । दसुद्धियसल्लो यऽप्पेसो, दीहं चाउग्गइयं अडे ॥८॥ भयवं ! कस्सालोएज्जा ?, पच्छित्तं को व देज्ज वा ? कस्स व पच्छित्तं देज्जा ? आलोयावेज्ज वा कहं ? ॥९॥ गोयमालोयणं ताव, केवलीणं बहूसुवि । जोयणसएहिं गंतूण, सुद्धभावेहिं दिज्जए ॥१०॥ चउनाणीणं तयाभावे, एवं ओहि मईसुए । जस्स विमलयरे तस्स, तारतम्मेण दिज्जई ॥१॥ उस्सग्गं पन्नविंतस्स, उस्सग्गे पट्टियस्स य । उस्सग्गरुइणो चेव, सव्वभावंतरेहिं णं ॥२॥ उवसंतस्स दंतस्स, संजयस्स तवस्सिणो । समितीगुत्तिपहाणस्स, दढचारित्तस्सासढभाविणो ॥३॥ आलोएज्जा पडिच्छेज्जा, दिज्जा दाविज्ज वा परं । अहन्निसं तदुद्धिदं, पायच्छित्तं अणुच्चरे ॥४॥ से भयवं ! कित्तियं तस्स, पच्छित्तं हवइ निच्छियं ? पायच्छित्तस्स ठाणाइं, केवइयाइं ? कहेहि मे ॥५॥ गोयमा ! जं सुसीलाणं, समणाणं दसण्ह उ । खलियागयपच्छित्तं, संजई तं नवगुणं ॥६॥ एक्का पावइ पच्छित्तं, जइ सुसीला दढव्वया । अह सीलं विराहेज्जा, ता तं हवइ सयगुणं ॥७॥ तीए पंचेदिया जीवा, जोणीमज्झे निवासिणो । सामन्नं नव लक्खाइं, सव्वे पासंति केवली ॥८॥ केवलनाणस्स ते गम्मा, णोऽकेवली ताइं पासती । ओहिनाणी वियाणेए णो पासे मणपज्जवी ॥९॥ ता पुरिसं संघट्ठंती, कोण्हगंमि तिले जहा । सव्वेसु सुसूरावेइ, रंतुं मत्ता महन्नि(न्ति)या ॥१०॥ चंक्कम्मंतीइ गाढाइं, काइयं वोसिरंतिया । वावाइज्जा य दो तिन्नि, सेसाइं परियावई ॥१॥ पायच्छित्तस्स ठाणाइं, संखाईयाइं गोयमा ॥ अणालोइयंतो हु एक्कंपि, ससल्लमरणं मरे ॥२॥ सयसहस्सनारीणं, पोढं फालित्तु निग्घिणो । सत्तट्ठमासिए गब्भे, चडप्फडंते णिगिंतई ॥३॥ जं तस्स जत्तियं यावं तत्तियं तं नवं गुणं । एक्कसि त्थीपसंगेणं, साहू बंधेज्ज मेहुणे ॥४॥ साहुणीए सहस्सगुणं, मेहुणेक्कसिं सेविए । कोडीगुणं तु बिज्जेणं, तइए बोही पणस्सई ॥५॥ जो साहू इत्थियं ददुं, विसयट्ठो रामेहिई । बोहिलाभा परिब्भट्ठो, कहं वराओ स होहीइ ? ॥६॥ अबोहिलाभियं कम्मं, संजओ अह संजई । मेहुणे सेविए आऊतेउक्काए पबंधई ॥७॥ जम्हा तीसुवि एएसु, अवरज्जंतो हु गोयमा ॥ उम्मग्गमेव ववहारे, मग्गं निट्ठपइ सव्वहा ॥८॥ भगवं ! ता एएण नाएणं, जे गारत्थी मउक्कडे । रत्तिदिया ण छडुंति, इत्थीयं तस्स का गई ? ॥९॥ ते सरीरं सहत्थेणं, छिदिऊणं तिलंतिलं । अग्गीए जइवि होमंति, तोऽवि सुद्धी ण दीसई ॥१०॥ तारिसोवि णिवित्तिं सो, रट्ठारस्स जई करे । सावगधम्मं च पालेइ, गई पावेइ मज्झिमं ॥१॥ भयवं ! सदारसंतोसे, जइ भवे मज्झिमं गई । ता सरीरेऽवि होमतो, कीस सुद्धिं णं पावई ? ॥२॥ सदारं परदारं वा, इत्थी पुरिसो व गोयमा ॥ रमतो बंधए पावं, णो णं भवइ अबंधगो ॥३॥ सावगधम्मं जहुत्तं जो, पाले परदारं चए । जावज्जीवं तिविहेणं, तमणुभावेण सा गई ॥४॥ णवरं नियमविहूणस्स, परदारगमण(ग)स्स य । अणियत्तस्स भवे बंधं, णिवित्तीए महाफलं ॥५॥ सुथेवाणंपि निवित्तिं, जो मणसावि विराहए । सो मओ दुग्गइं गच्छे, मेघमाला जहऽज्जिया ॥६॥ मेघमालज्जियं नाहं, जाणिमो भुवणबंधव ॥ मणसावि अणुनिव्वत्तिं, जा खंडिय दुग्गइं गया ॥७॥ वासुपुज्जस्स तित्थंमि, भोला कालगच्छवी । मेघमालऽज्जिया आसि, गोयमा ! मणदुब्बला ॥८॥ सा-नियमोगासे पक्खं दाउं, काउं भिक्खा य निग्गया । अन्नओ एत्थिणी सारमंदिरोवरि संठिया ॥९॥ आसन्नमंदिरं अन्नं लंघित्ता गंतुमिच्छगा । मणसाऽभिनंदेवं जा(व), ताव पज्जलिया दुवे ॥१०॥ नियमभंगं तयं सुहुमं, तीए तत्थ ण णिदियं । तनियमभंगदोसेणं, डज्झित्ता पढमियं गया ॥१॥ एवं नाउं सुहुमंपि, नियमं मा विराहिह । जेच्छिया अक्खयं सोक्खं, अणंतं च अणोवमं ॥२॥ तक्संजमे वएसुं च, नियमो दंडनायगो । तमेव खंडमाणस्स, ण वए णो व सजंमे ॥३॥ आजम्मेणं तु जं पावं, बंधेज्जा मच्छबंधगो । वयभंगं काउमणस्स, तं चेवऽट्ठगुणं मुणे ॥४॥ सयसहस्सं सलद्धीए जोवसामित्तु निक्खेमे । वयं नियमखंडंतो, जं सो तं पुन्नमज्जिणे ॥५॥ पवित्ता य निवित्ता य, गारत्थी संजमे तवे । जमणुट्ठिया तयं लाभं, जाव दिक्खा न गिण्हिया ॥६॥ साहुसाहुणीवग्गेणं, विन्नायव्वमिह गोयमा ॥ जेसिं मोत्तूण ऊसासं, नीसासं नाणुजाणियं ॥७॥ तमवि जयणाए अणुन्नायं, विजयणाए ण सव्वहा । अजयणाइ ऊससंतस्स, कओ धम्मो ? कओ तवो ? ॥८॥ भयवं ! जावइयं दिट्ठं, तावइयं कहऽणुपालिया । जे भवे अवीयपरमत्थे, किच्चाकिच्चमयाणगे ? ॥९॥ एगंतेणं हियं वयणं, गोयम ! दिस्संति केवली । णो बलमोडीइ कारेति, हत्थे घेतूण जंतुणो ॥१०॥ तित्थयरभासिए

वयणे, जे तहत्ति अणुपालिया । सिंदा देवगणा तस्स, पाए पणमंति हरिसिया ॥१॥ जे अविइयपरमत्थे, किच्चाकिच्चमजाणगे । अंधोअंधीए तेसिं समं, जलथलं गडुठिक्करं ॥२॥ गीयत्थो य विहारो, बीओ गीयत्थमीसओ । समुणुत्राओ सुसाहूणं, नत्थि तइयं वियप्पणं ॥३॥ गीयत्थे जे सुसंविग्गे, अणालस्सी दढव्वए । अखलियचारित्ते सययं, रागद्वोसविवज्जए ॥४॥ निद्ववियद्वमयद्वाने, समियकसाये जिइदिए । विहरेज्जा तेसिं सद्धिं तु, ते छउमत्थेवि केवली ॥५॥ सुहुमस्स पुढवीजीवस्स, जत्थेगस्स किलामणा । अप्पारंभं तयं बेति, गोयमा ! सव्वकेवली ॥६॥ सुहुमस्स पुढवीजीवस्स, वावत्ती जत्थ संभव । महारंभं तयं बिति, गोयमा ! सव्वकेवली ॥७॥ पुढवीकाइयं एक्कं, दरमलेतस्स गोयमा ! अस्सायकम्मबंधो हु, दुव्विमोक्खे ससल्लिए ॥८॥ एवं च आऊतेऊवाऊ तह वणस्सती । तसकाय मेहुणे तह, चिक्कणं चिणइ पावगं ॥९॥ तम्हा मेहुणसंकप्पं, पुढवादीण विराहणं । जावज्जीवं दुरंतफलं, तिविहंतिविहेण वज्जए ॥१०॥ ता जेऽविदियपरमत्थे, गोयमा ! णो य जे मुणे । तम्हा ते विवज्जेज्जा, दोग्गईपंथदायगा ॥१॥ गीयत्थस्स उ वयणेणं, विसं हलाहलं पिबे । निव्विकप्पो पभक्खेज्जा, तक्खणा जं समुद्वे ॥२॥ परमत्थओ विसं तोसं(नो तं), अमयरसायणं खु तं । णिव्विकप्पं णं संसारे, मओवि सो अमयस्समो ॥३॥ अगीयत्थस्स वयणेणं, अमयं पि ण घोट्टए । जेण अयरामरे हविया, जह कीला मरिज्जिया ॥४॥ परमत्थओ ण तं अमयं, संविसं तं हलाहल । ण तेण अयरामरो होज्जा, भक्खणा निहणं वए ॥५॥ अगीयत्थकुसीलेहिं, संगं तिविहेण वज्जए । मोक्खमग्गस्सिमे विग्घे, पढमी तेणगे जहा ॥६॥ पज्जलियं हुयवहं दटूतुं, णीसंको तत्थ पविसिउं । अत्ताणं पि डहिज्जासि, नो कुसीले समल्लिए, ॥७॥ वासलक्खं पि सूलीए संभिन्नो अच्छिया सुहं । अगीयत्थेण समं एक्कं, खणद्धपि न संवसे ॥८॥ विणावि तंतमंतेहिं, घोरदिट्ठीविसं अहिं । डसंतं पि समल्लीय, णागीयत्थं कुसीलाहमं ॥९॥ विसं खाजाए हलाहलं, तं किर मारेइ तक्खण । ण करेऽगीयत्थसंसग्गिं, विढवे लक्खं पि जं तहिं ॥१०॥ सीहं वग्घं पिसायं वा, घोररुवयभयंकरं । ओगिलमाणं पि लीएज्जा, ण कुसीलमगीयत्थं तहा ॥१॥ सत्तजम्मंतरं सत्तु, अवि मन्निज्जा सहोयरं । वयनियमं जो विराहेज्जा, जणयं पिक्खे तयं रिउं ॥२॥ वरं पविट्ठो जलियं हुयासणं, न यावि नियमं सुहुमं विराहियं । वरं हि मच्चू सुविसुद्धकम्मणो, न यावि नियमं भंतूण जीवियं ॥३॥ अगीयत्थत्तदोसेण, गोयमा ! ईसरेण उ । जं पत्तं तं निसामेत्ता, लहु गीयत्थो मुणी भवे ॥४॥ से भयवं ! णो वियाणेऽहं, ईसरां कोवि मुणिवरो । किं वा अगीयत्थदोसेणं, पत्तं तेण ? कहेहि णो ॥५॥ चउवीसिगाए अन्नाए, एत्थ भरहंमि गोयमा ! पढमे तित्थकरे जइया, विहीपुव्वेण निव्वुडे ॥६॥ तइया निव्वाणमहिमाए, कंतरुवे सुरासुरे । निवयंते उप्पयंते व, ददुं पच्चंतवासिउ ॥७॥ अहो अच्छेरयं अज्ज, मच्चलोयंमी पेच्छिमो । ण इंदजाल सुमिणं वावि दिट्ठं कत्थई पुणो ॥८॥ एवं वीहापोहाए, पुव्विं जाइं सरित्तु सो । मोहं गंतूण खणमेक्कं, मारुयाऽऽसीसिओ पुणो ॥९॥ थरथरथरस्स कंपंतो, निदिउं गरहिउं चिरं । अत्ताणं गोयमा ! धणियं, सामन्न गहिउमुज्जओ ॥१०॥ अह पंचमुट्ठियं लोयं, जावाढवइ महायसो । सविणयं देवया तस्स, रयहरणं ताव ढोयई ॥१॥ उग्गं कट्ठं तवच्चरणं, तस्स दट्ठूण ईसरो । लोओ पूयं करेमाणो, जाव उ गंतूण पुच्छई ॥२॥ केण तं दिक्खिओ ? कत्थ ? , उप्पन्नो को कुलो तव ? सुत्तत्थं कस्स पामूले, साइसयं हो समज्जियं ? ॥३॥ सो पच्चएगबुद्धो जा, सव्वं तस्स वियागरे । जाइं कुलं दिक्खा सुत्तं, अत्थं जह य समज्जियं ॥४॥ तं साऊण अहन्नो सो, इमं चित्तेइ गोयमा ! अलिया अणरिओ एदस, लोगं डंभेण परिमुसे ॥५॥ ता जारिसमेसं भासेइ, तारिसं सोऽवि जिणवरो । ण किंचित्थ वियारेणं, तुण्हिक्केई चिरंठिए ॥६॥ अहवा णहि णहि सो भगवं ! देवदाणवपणमिओ । मणोगयं पि जं मज्झ, तं पि च्छि-न्नज्ज संसयं ॥७॥ तावेस जो होउ सो होउ, किं वियारेण एत्थ मे ? अभिणंदामीह पव्वज्जं, सव्वदोक्ख(स)विमोक्खणिं ॥८॥ ता पडिगओ जिणिंदस्स, सयासे जा तं णेक्खई । भुवणेसं जिणवरं ताव, गणहरसामी पयट्ठिओ ॥९॥ परिनिव्वयंमि भगवंते, धम्मतित्थंकरे जिणे । जिणाभिहियसुत्तत्थं, गणहरो जा परुवई ॥१०॥ तावमालावगं एयं, वक्खाणंमि समागयं । पुढवीकाइमेगं जो, वावाए सो असंजओ ॥१॥ ता ईसरो विचित्तेई, सुहुमे पुढविकाइए । सव्वत्थ उद्विज्जंति, को ताइं रक्खिउं तरे ? ॥२॥ हलुईकरेइ अत्ताणं, एत्थं एस महायसो । असद्धेयं जणे सहलं(यले), किमत्थेयं पवक्खई ? ॥३॥ अच्चंतकडयडं एयं, वक्खाणं तस्सवी फुंड । कण्ठसोसो परं लाभे, एरिसं कोऽणुचिट्ठए ? ॥४॥ ता एयं विप्पमोत्तूणं, सामन्नं किंचि मज्झिमं । जं वा तं वा कहे धम्मं, ता लोउडम्हा ण उट्ठई ॥५॥ अहवा हा हा अहं मूढो, पावकम्मी णराहमो । णवरं जइ णाणुचिट्ठामि,

© Pearson Education International 2010_03

सोऊण पव्वइओ ॥२२०॥ तहिं संतेउरसुयधूओ, सुहपरिणामो अमुच्छिओ । उग्गं कट्ठं तवं घोरं, दुक्करं अणुचिट्ठई ॥१॥ अन्नया गणिजोगेहिं, सव्वेऽवी ते पवेसिया । असज्झाइल्लियं काउं, लक्खणदेवी ण पेसिया ॥२॥ सा एणंतेवि चिट्ठंती, कीडंते पक्खिरूल्लए । दट्ठूणेयं विचितेइ, सहलमेयाण जीवियं ॥३॥ जेणं पेच्छ चिडयस्स, संघट्ठंती चिडुल्लिया । समं पिययमंगेसुं, निव्वुइं परमं जणे ॥४॥ अहो तित्थंकरेणऽम्हं, किमट्ठं चक्खुदरिसणं ? । पुरिसेत्थीरमंताणं, सव्वहा विणिवारियं ॥५॥ ता णिदुक्खो सो अन्नेसिं, सुहदुक्खं ण याणई । अग्गी दहणसहाओवि, दिट्ठीदिट्ठो ण णिडडहे ॥६॥ अहवा न हि न हि भगवं ! तं, आणावितं न अन्नहा । जे ण मे दट्ठूण कीडंते, पक्खी पक्खुभियं मणं ॥७॥ जाया पुरिसाहिलासा मे, जा णं सेवामि मेहुणं । जं सुविणेवि न कायव्वं, तं मे अज्ज विचितियं ॥८॥ तहा य एत्थ जम्मंमि, पुरिसो ताव मणेणवि । णिच्छिओ एत्तियं कालं, सुविणंतेवि कहिचिवि ॥९॥ ता हा हा हा दुरायारा, पावसीला अहन्निया । अट्ठमट्ठाइं चिंतंती, तित्थयरमासाइमो ॥२३०॥ तित्थयरणावि अच्चंतं, कट्ठं कडयडं वयं । अइदुद्धरं समादिट्ठं, उग्गं घोरं सुदुद्धरं ॥१॥ ता तिविहेण को सक्को, एयं अणुपालेऊणं ? । वायाकम्मसमायरणेवि, रक्खं णो तइयं मणं ॥२॥ अहवा चित्तिज्जइ दुक्खं, कीरइ पुण सुहेण य । ता जो मणसावि कुसीलो, स कुसीलो सव्वकज्जेसु ॥३॥ ता जं एत्थ इमं खलियं, सहसा तुडिवसेण मे । आगयं तस्स पच्छित्तं, आलोइत्ता लहुं चरं ॥४॥ सईणं सीलवंतीणं, मज्झे पढमा महाऽऽरिया । धुरंमि दीयए रेहा, एयं सग्गेवि घूसई ॥५॥ तहा य पायधूली मे, सव्वोवी वंदए जणो । जहा किल सुज्झिज्जएमिमीए, इति पसिद्धा अहं जगे ॥६॥ ता जइ आलोयणं देमि, ता एयं पयडीभवे । मम भायरो पिया माया, जाणित्ता हुंति दुक्खिए ॥७॥ अहवा कहवि पमाणं, जं मे मणसा विचितियं । तमालोइयं नच्चा, मज्झ वग्गस्स को दुहे ? ॥८॥ जावेयं चित्तिउं गच्छे, तावुट्ठंतीए कंटगं । फुडियं ढसत्ति पाययले, ता णिसत्ता पडुल्लिया ॥९॥ चित्ते अहो एत्थ जम्मंमि, मज्झ पायंमि कंटगं । ण कयाइ खुत्तं ता किं, संपयं एत्थ होहिई ? ॥२४०॥ अहवा मुणियं तु परमत्थं, जाणगे (मए) अणुमती कया । संघट्ठंतीए चिडुल्लीए, सीलं तेण विराहियं ॥१॥ मूयंधकारबहिरंपि, कुट्ठं सिडिविडियं विडं । जाव सीलं न खंडेइ, ता देवेहिं थुव्वई ॥२॥ कंटगं चेव पाए मे, खुत्तमागासगामियं । एणं जं महं चुक्का, तं मे लाभं महंतियं ॥३॥ सत्तवि साहाउ पायाले, इत्थी जा मणसावि य । सीलं खंडेई सा णेइ, कहं जणणीए मे इमं ? ॥४॥ ता जं ण णिवडई वज्जं, पंसुविट्ठी ममोवरिं । सयसक्करं ण फुट्ठइ वा, हिययं तं महच्छेरगं ॥५॥ णवरं जइ मेयमालोयं, ता लोगा एत्थ चित्तिही । जहाऽमुगस्स धूयाए, एयं मणसा अज्झवसियं ॥६॥ तं नं तहवि पओगेणं, परववएसेणालोइमो । जहा जइ कोइ एयमज्झवसे, पच्छित्तं तस्स होइ किं ? ॥७॥ तं चिय सोऊण काहामि, तवेणं तत्थ कारणं । जं पुण भयवयाऽऽइट्ठं, घोरमच्चंतनिट्ठुरं ॥८॥ तं सव्वं सीलचारित्तं, तारिसं जाव नो कयं । तिविहंतिविहेण णीसल्लं, ताव पावे ण खीयए ॥९॥ अह सा परववएसेणं, आलोएत्ता तवं चरे । पायच्छित्तनिमित्तेण, पन्नासं संवच्छरे ॥२५०॥ छट्ठमदसमदुवालसेहिं, लयाहिं णेइ दस वरिसे । अकयमकारियसंकप्पिएहिं, परिभूयं (भुज्ज) भिक्खलब्धेहिं ॥१॥ चणगेहिं दुन्निवि भुज्जिएहिं सोलस मासखमणेहिं । वीसं आयामायंबिलेहिं, आवस्सगं अछड्डेती ॥२॥ चरई य अदीणमणसा, अह सा पच्छित्तनिमित्तं । ताहे य गोयमा ! चित्ते, जं पच्छित्ते कयं तवं ॥३॥ ता किं तमेव ण क (ग) यं मे, जं मणसा अज्झवसियं तया ? । इयरहेवि उ पच्छित्तं, इयरहेव उ मे कयं ॥४॥ ता किं तन्न समायरियं, चित्तेती निहणं गया । उग्गं कट्ठंतवं घोरं, दुक्करंपि चरित्तु सा ॥५॥ सच्छदपायच्छित्तेणं, सकलुसपरिणामदोसओ । कुत्थियकम्मा समुप्पन्ना, वेसाए परिचेडिया ॥६॥ खंडोद्वा णाम चडुगारी, मज्झखडहडगवाहिया । विणीया सव्ववेसाणं, थेरीए य चउग्गुणं ॥७॥ लावन्नकंतिकलियावि, बोडा जाया तहावि सा । अन्नया थेरी चितेइ, मज्झं बोडाए जारिसं ॥८॥ लावन्नं कंती रूवं, नत्थि भुवणेवि तारिसं । ता विरंगामि एईए, कन्ने णक्कं सहोडुयं ॥९॥ एसा उ ण जाव विउप्प (जु) ज्जे, मम धूयं कोवि णेच्छिही । अहवा हा हा ण जुत्तमिणं, धूया तुल्लेसावि मे णवरं ॥२६०॥ सुविणीया एसावि, उप्पऽन्नत्थं गच्छिही । ता तह करेमि जह एसा, देसंतरं गयावि य ॥१॥ ण लभेज्जा कत्थई थामं, आगच्छइ पडिल्लिया । देदेमि से वसीकरणं, गुज्झदेसं तु सीडिमो ॥२॥ निगडाइं च से देमि, भमडउ तेहिं नियंतिया । एवं सा जुन्नवेसा जा, मणसा परितप्पिउं सुवे ॥३॥ ता खंडोद्वावि सिमिणंमि, गुज्झं सीडिज्जंतगं । पिच्छइ नियडे य दिज्जंते, कन्ने नासं च वट्ठियं ॥४॥ सा सिमिणट्ठं वियारेउं, णट्ठा जह कोइ ण याणइ । कहकहवि परिभमंती सा, गामपुरनगरपट्टणे ॥५॥ छम्मासेणं तु संपत्ता,

सखंडं णाम खेडगं । तत्थ वेसमणसरिसविहवरंडापुत्तस्स सा जुया ॥६॥ परिणीया महिला ताहे, मच्छरेण पज्जच्छे (ले) दढं । रोसेण फुरफुरंती सा, जा दियहे केइ चिट्ठइ ॥७॥ निसाए निब्भरं सइयं, खंडोद्वीं ताव पिच्छई । तं ददुं धाइया चुल्लिं, दित्तं घेतुं समागया ॥८॥ तं पक्खिविऊणं गुज्झंते, फालिया जाव हियययं । जाव दुक्खसरक्कंता, चलचुलेवील्ल केरइ सा ॥९॥ ता सा पुणो विचितेइ, जावजीवं ण उड्डए । ताव देमी से दाहाइं, जेण मे भवसएसुवि ॥२७०॥ न तरई पिययमं काउं, इणमो पडिसंभरंति या । ताहे गोयम ! आणेउं, चक्खियसालाउ अयमयं ॥१॥ तावितु फुलिंगमेल्लंतं, जोणीए पक्खित्तं फुसं । एवं दुक्खभरक्कंता, तत्थ मरिऊण गोयमा ! ॥२॥ उववन्ना चक्कवट्टिस्स, महिलारयणत्तेण सा । इओ य रंडपुत्तस्स, महिला तं कलेवरं ॥३॥ जीवुज्झियंपि रोसेण, छेतुं सुसहुमयं सा । साणकागमादीणं, जाव घत्ते दिसोदिसिं ॥४॥ ताव रंडापुत्तोवि, बाहिरभूमीउ आगओ । सो य दोसगुणे णाउं, बहुं मणसा वियप्पिउं । गंतूण साहुपामूलं, पव्वज्जा काउ निव्वुडो ॥५॥ अह सो लक्खणदेवीए, जीवो खंडोद्वीयत्तणा । इत्थीयणं भवित्ताणं, गोयमा ! छट्ठियं तओ ॥६॥ तन्नेरइयं महादुक्खं, अइघोरं दारूणं तहिं । तिकोणे निरयावासे, सुचिरं दुखेण वेइउं ॥७॥ इहागओ समुप्पन्नो, तिरियजोणीए गोयमा ! । साणत्तेणाह मयकाले, विलग्गो मेहुणे तहिं ॥८॥ माहिसिएणं कओ घाओ, विच्चे जोणी समुच्छला । तत्थ किमिहं दसवरिसे, खब्धो मरिऊण गोयमा ! ॥९॥ उववन्नो वेसत्ताए, तओवि मरिउण गोयमा ! । एगूणं जाव सयवारं, आमगब्भेसु पच्चिओ ॥२८०॥ जम्मदरिद्वस्स गेहंमि, माणुसत्तं समागओ । तत्थ दोमासजायस्स, माया पंचत्तमुवगया ॥१॥ ताहे महया किलेसेणं, थन्नं पाउं घराघरिं । जीवावेऊण जणगेणं, गोउलिस्स समल्लिओ ॥२॥ तहियं नियजणिच्छीरं, आवियमाणे निबंधिउं । (छावरूए) गोणिओ दुहमाणेणं, जं बद्धं अंतराइयं ॥३॥ तेणं सो लक्खणज्जाए, कोडाकोडीभवंतरे । जीवो थन्नमलहमाणो (बज्झंतो रूज्झंतो नियलिज्जंतो हम्मंतो दम्मंतो) विच्छोइज्जंतो य हिडिओ ॥४॥ उववन्नो मणुजोणीए, डागिणित्तेण गोयमा ! । तत्थ य साणयपालेहिं, कीलिउं (या) छडिडउं गया ॥५॥ तओ उव्वट्टिऊणिहइं, तं लब्धुं माणुसत्तणं । जत्थ य सरीरदोसेणं, एमहंतमहिमंडले ॥६॥ जामद्धजामघडियं वा, णो लब्धं वेरत्तियं जहियं । पंचेव उ घरे गामे, नगरपुरपट्टेणसुवि ॥७॥ तत्थ य गोयम ! मणुयत्ते, णारयदुक्खाण सरिसए । अणेगे रण्णरण्णेणं, घोरे दुक्खेऽणुभोत्तुणं ॥८॥ सो लक्खणदेवीजीवो, सुरोद्वज्झाणदोसओ । मरिऊण सत्तमिं पुढविं, उववन्नो रवडोहणे ॥९॥ तत्थ य तं तारिसं दुक्खं, तिच्चीसं सागरोवमे । अणुभविऊणं उववन्नो, वंझागोणित्तेण य ॥२९०॥ खेत्तखलगाइं चमढेंती, भंजंती य चरंति या । सा गोणी बहुजणोहेहिं, मिलिऊणागाहपंकवलए पवेसिया ॥१॥ तत्थ खुत्ती जलोयाहिं, लूसिज्जंती तहेव य । कागमादीहिं लुप्पंती, कोहाविट्ठा मरेउणं ॥२॥ ताहे विजलधण्णे रण्णे, मरूदेसे दिट्ठीविसो । सप्पो होऊण पंचमगं, पुढविं पुणरवि गओ ॥३॥ एवं सो लक्खणज्जाए, जीवो गोयमा ! चिरं । घणघोरदुक्खसंततो, चउगइसंसारसागरे ॥४॥ नारयतिरियकुमणुएसुं, आहिंडित्ता पुणोविहं । होही सेणियजीवस्स, तित्थे पउमस्स खुज्जिया ॥५॥ तत्थ य दोहग्गखाणी सा, गामे नियजणणीओवि य । गोयम ! दिट्ठा न कस्सावि, अच्छीय रइदा तहिं भवे ॥६॥ ताह सब्वजणेहिं सा, उव्वियणिज्जत्तिकाउणं । मसिगेरूयविलित्तंगा, खरेरूढा भमाडिउं ॥७॥ गोयमा ! ओपक्खपक्खेहिं, वाइयखरविरसडिडिमं । निद्धाडिहिई ण अन्नत्थ, गामे लहिहिइ पविसिउं ॥८॥ ताहे कंदफलाहारा, रत्तवासे वसंति या । (दट्ठा) मच्छुंदरेण वियणत्ता, णाहीए मज्झदेसए ॥९॥ तओ सब्वं सरीरं से, भरिज्जंसुदराण य । तेहिं तु विलुप्पमाणी सा, दूसहघोरदुहाउरा ॥३००॥ वियणत्ता पउमत्तित्थयरं, तप्पएसे समोसढं । पेच्छिही जाव ता तीए, (अन्नेसिमवि बहुवाहिवेयणापरिगयसरीरारं तद्देसविहारिभव्वसत्ताणं नरनारिगणाणं तित्थयरदंसणा चेव) सब्वदुक्खं विणिट्ठिही ॥१॥ ताहे सो लक्खणज्जाए, तहियं खुज्जियत्ति जिओ । गोयम ! घोरं तवं चरिउं, दुक्खाण अंतं गच्छिही ॥२॥ एसा सा लक्खणदेवी, जा अगीयत्थदोसओ । गोयम ! अणुकलुसचित्तेणं, पत्ता दुक्खपरंपरं ॥३॥ जहा णं गोयमा ! एसा, लक्खणदेविऽज्जया तहा । सकलुसचित्ते गीयत्थे, ऽणंते पत्ते दुहावली ॥४॥ तम्हा एयं वियाणित्ता, सब्वभावेण सब्वहा । गीयत्थेहिं भवेयव्वं, कायव्वं तु (सुविसुद्धसुनिम्मलविमलनीसल्लं) निकलुसं मणंति बेमि ॥५॥ पणयामरमरूयमउडुग्घट्ठचलणसयवत्तजयगुरू ! । जगनाह ! धम्मत्तित्थयर, भूयभविस्सवियाणग ॥६॥ तवसा निदइढकम्मंस, वंमहवइरवियारण । चउकसाय (दल) निट्ठवण, सब्वजगजीववच्छल ॥७॥ घोरंधयारमिच्छत्ततिमिसतमतिमिरणासण ।

लोगालोगपगासगर, मोहवइरिनिसुंभण ॥८॥ दुरूज्झियरागदोसमोहमोस सोमसत्तसोम सिवकर । अतुलियबलविरियमाहप्पय, तिहुयणिकमहायस ॥९॥ निरूवमरूव
अणन्नसम, सासयसुहमुक्खदायग । सव्वलक्खणसंपुत्त, तिहुयणलच्छिविभूसिया ॥३१०॥ भयवं ! परिवाडीए, सव्वं जंकिंचि कीरए । अथक्के हुंडिदुद्धेणं, कज्जं तं
कत्थ लब्धई ? ॥१॥ सम्महंसणमेगंसि, बितिये जम्मे अणुव्वए । ततिए सामाइयं जम्मे, चउत्थे पोसहं करे ॥२॥ दुद्धरं पंचमे बंभं, छट्ठे सच्चित्तवज्जणं । एवं
सत्तट्ठेनवदसमे, जम्मे उद्धिठ्ठमाइयं ॥३॥ चिच्चेक्कारसमे जम्मे, समणतुल्लगुणी भवे । एयाए परिवाडीए, संजयं किं न अक्खसि ? ॥४॥ जं पुण सोऊण मइविगलो,
बालयणे (उव्वियइ) । केरिसस्स व सद्धं डगइ, जउइसिउं नासे दिसोदिसिं ॥५॥ तमीरिसं संजमं नाह !, सुदुल्ललिया उ सुमालया । सोऊणपि नेच्छंति, तऽणुट्ठींसु
कहं पुण ? ॥६॥ गोयम ! तित्थंकरे मोत्तुं, अत्तो दुल्ललिओ जगे । जइ अत्थि कोइ ता भणउ, अहा णं सुकुमालओ ? ॥७॥ जाणं-गब्भत्थाणंपि देविंदो, अमयमंगुठ्ठयं
कयं । आहारं देइ भत्तीए, संथवं सययं करे ॥८॥ देवलोगचुए संते, कम्मा से णं जहिं घरे । अभिजाएंति तहिं सययं, हिरण्णवुट्ठी पवरिस्सई ॥९॥ गब्भावन्नाण तद्देसे,
ईई रोगा य सत्तुणो । अणुभावेण खयं जंति, जायमित्ताण तक्खणे ॥३२०॥ आगंपियासणा चउरो, देवसंधा महीहरे । अभिसेयं सव्विड्ढीए, काउं सत्थामे गया ॥१॥
अहो लावन्नं कंती, दित्ती रूवं अणोवमं । जिणाणं जारिसं पायअंगुठ्ठगं ण तं इहं ॥२॥ सव्वेसु देवलोगेसु, सव्वदेवाण मेलिउं । कोडाकोडिगुणं काउं, जइवि
उण्हालिज्जए ॥३॥ अह जे अमरपरिग्गहिया, नाणत्तयसमन्निया । कलाकलावनिलया, जणमणाणंदकारया ॥४॥ सयणबंधवपरियारा, देवदाणवपूइया । पणइयणपूरियासा,
भुवणुत्तमसुहालया ॥५॥ भोगिस्सरियं रायसिरिं, गोयमा ! तं तवज्जियं । जा दियहा केई भुंजंति, ताव ओहीए जाणिउं ॥६॥ खणभंगुरं अहो एयं, लच्छी पावविवड्ढणी ।
ता जाणंतावि किं अम्हे, चारित्तं नाणुचिठ्ठिमो ? ॥७॥ जावेरिस मणपरिणामं, ताव लोगंतिगा सुरा । मुणिउं भणंति जगज्जीवहिययं तित्थं पवत्तिहा ॥८॥ ताहे
वोसठ्ठचत्तदेहा, विहवं सव्वजगुत्तमं । गोयमा ! तणमिव परिचिच्चा, जं इंदाणवि दुल्लहं ॥९॥ नीसंगा उग्गं कट्ठं, घोरं अइदुक्करं तवं । भुयणस्सवि उक्कट्ठं, समुप्पायं
चरंति ते ॥३३०॥ जे पुण खरहरफुट्ठसिरे, एगजम्मसुहेसिणो । तेसिं दुल्ललियाणंपि, सुट्ठवि नो हियइच्छियं ॥१॥ गोयम ! महुबिंदुस्सेव, जावइयं तावइयं सुहं ।
मरणंतेवी न संपज्जे, कयरं दुल्ललियत्तणं ? ॥२॥ अहवा गोयम ! पच्चक्खं, पेच्छय जारिसयं नरा । दुल्ललियं सुहमणुहुंति, जं निसुणिज्जा न कोइवी ॥३॥ केई
कारेति मासल्लिं, हालियगोवालत्तणं । दासत्तं तह पेसत्तं, गोडत्तं सिप्पे बहु ॥४॥ ओलगं किसिवाणिज्जं, पाणच्चायकिलेसियं । दालिहऽविहवत्तणं केई, कम्मं
काउण घराघरिं ॥५॥ अत्ताणं विगोवेउं, ढिणिढिणिते अ हिंडिउं । नग्गुग्घाडकिलेसेणं, जो समज्जंति परिह (हिर) णं ॥६॥ जरजुत्तफुट्ठसयछिहं, लद्धं कहकहवि
ओढणं । जा अज्जा कल्लिं करिमो, फट्ठं ता तमवि परिह (पहि) रणं ॥७॥ तहावि गोयमा ! बुज्झ, फुडवियडपरिफुडं । एतेसिं चेव मज्झाउ, अणंतरं भणियाण कस्सई
॥८॥ लोयं लोयाचारं च, चिच्चा सयणकियं तहा । भोगोवभोगं दाणं च, भोत्तूणं कदसणासणं ॥९॥ धाविउं गुप्पिउं सुइरं, खिज्जिऊण अहन्निसं । कागणिं कागणीकाओ,
अद्धं पाय विसोवगं ॥३४०॥ कत्थइ कहिंचि कालेणं, लक्खं कोडिं च मेलिउं । जा एगिच्छा मई पुत्ता, बीया णो संपज्जए ॥१॥ एरिसयं दुल्ललियत्तं, सुकुमालत्तं च
गोयमा ! । धम्मरंभंमि संपडइ, कम्मरंभे न संपडे ॥२॥ जेणं जस्स मुहे कवलं, गंडी अन्नेहिं धज्जए । भूमीए न ह (ठ) वए पायं, इत्थीलक्खेसु कीडए ॥३॥ तस्सावि
णं भवे इच्छा, अन्नं सोऊण सारियं । समुद्धहामि तं देसं, अह सो आणं पडिच्छउ ॥४॥ सामभेओवपयाणाइं, अह सो सहसा पउंजिउं । तस्स साहसतुलणट्ठा,
गूढचरिण वच्चइ ॥५॥ एगागी कप्पडाबीओ, दुग्गारन्नं गिरी सरी । लंघित्ता बहुकालेणं, दुक्खदुक्खं पत्तो तहिं ॥६॥ दुक्खं खुक्खामकंठो सो, जा भमडे घराघरिं । जायंतो
च्छिद्दमम्माइं, तत्थ जइ कहवि ण णज्जए ॥७॥ ता जीवंतो ण चुक्केज्जा, अह पुत्तेहिं समुद्धरे । तओ णं परिवत्तिय देहं, तारिसो स गिहे विसे ॥८॥ को तं सि परियणो
सन्ने ?, ताहे सो असणाइसु । नियचरियं पायडेऊण, जुज्झसज्जो भवेउण ॥९॥ सव्वबल (जाण) थामेणं, खंडाखंडेण जुज्झिउं । अह तं नरिंदं निज्जिणिइ, अहवा तेण
पराजिए ॥३५०॥ बहुपहारगलंतरूहिरंगो, गयतुरयाउव्व (ह) अहोमुहो । णिवडइ रणभूमीए, गोयमा ! सो जया तया ॥१॥ तं तस्स दुल्ललियत्तं, सुकुमालत्तं कहिं

वए ? । जो केवलं सहत्थेणं, अहोभागं च धोविउं ॥२॥ निच्छंतो पायं ठविउं, भूमीए न कयाइवि । एरिसोऽवी स दुल्ललिओ, एयावत्थमुवागओ ॥३॥ जइ भन्ने धम्मचिह्ने ता, पडिभणइ न सक्किमो । तो गोयमा ! अहन्नाणं, पावकम्माण पाणिणं ॥४॥ धम्मट्ठाणंमि मई, न कयावि भविस्सए । एएसिं इमो धम्मो, इक्कजंमीण भासए ॥५॥ जहा खंतपियंताणं, सव्वं अम्हाण होहिइ । ता जो जमिच्छे तं तस्स, जइ अणुकूलं पवेयए ॥६॥ ता वयनियमविहूणावि, मोक्खं इच्छंति पाणिणो । एए एते ण रूसंति, एरिसं चिय कहेयव्वं ॥७॥ णवरं ण मोक्खो एयाणं, मुसावायं व आवई । अन्नं च रागं दोसं च मोहं च, भयच्छंदाणुवत्तिणं ॥८॥ तित्थंकराणं णो भूयं, णो भवेज्जा उ गोयमा ! । मुसावायं ण भासंते, गोयमा ! तित्थंकरे ॥९॥ जेण तु केवलनाणेण, तेसिं पच्चक्खगं जगं । भूयं भव्वं भविस्सं च, पुन्नं पावं तहेव य ॥३६०॥ जंकिंचि तिसुवि लोएसु, तं सव्वं तेसि पायडं । पायालं अवि उड्ढमुहं, सग्गं एज्जा अहोमुहं ॥१॥ णूणं तित्थयरमुहभणियं, वयणं होज्ज न अन्नहा । नाणं दंसणचारित्तं, तवं घोरं सुदुक्करं ॥२॥ सोग्गइमग्गो फुडो एस, परूवंती जहट्ठिअं । अन्नहा न तित्थयरा, वाया मणसा व कम्मुणा ॥३॥ भणंति जइवि भुवणस्स, पलयं हवइ तक्खणे । जं हियं सव्वजगजीवपाणभूयाण केवलं, तं अणुकंपाए तित्थयरा, धम्मं भासंति अवितहं ॥४॥ जेणं तु समणुचिन्नेणं, दोहग्गदुक्खदारिद्रोगसोगकुगइभयं । ण भविज्जा उ बिइएणं, संतावुव्वेवगे तहा ॥५॥ भयवं ! णो एरिसं भणिमो, जह छंदं अणुवत्तय । णवरमेयं तु पुच्छामो, जो जं सक्के स तं करे ? ॥६॥ गोयमा ! णेरिसं जुत्तं, खणं मणसा विचित्तिउं । अह जइ एवं भवे णायं, तावं धारे हअं बलं ॥७॥ घयऊरे खंडरब्बाए, एक्को सक्केइ खाइयं । अन्नो समंसमज्जाई, अन्नो रमिऊण एत्थियं ॥८॥ अन्नो एयंपि नो सक्के, अन्नो जोएइ पक्खयं । अन्नो चडवडमुहे एसु (अन्नो एयंपि) भणिऊण ण सक्कुणोई ॥९॥ चोरियं जारियं अन्नो, अन्नो किंचि ण सक्कुणोई । भोत्तुं मोत्तुं सपत्थरिए, सक्के चिट्ठेत्तु मंचगे ॥३७०॥ मिच्छामि दुक्कडमियं हंत, एरिसं नो भणामऽहं । गोयमा ! अन्नंपि जं भणसि, तंपि तुज्झ कहेमऽहं ॥१॥ एत्थ जम्मे नरो कोई, कसिणुग्गं संजमं तवं । जइ णो सक्कइ काउं जे, तहवि सोगइपिवासिओ ॥२॥ नियमं पक्खिखी रस्स, एगं वालउप्पाडणं । रयहरणस्सेगियं दसियं, एत्तियंतु प (रि) धारियं ॥३॥ (सकुणोइ) एयंपि न जावजीवं, पालेउं ता इमस्सवी । गोयमा ! तुब्भ बुद्धीए, सिद्धिं खेत्तस्सऽओ परं ॥४॥ मंडवियाए भवेयव्वं, दुक्करकारि भवेत्तु य । णवरं एयारिसं भवियं, किमट्ठं गोयमा ! पयं ? ॥५॥ पुणो तं एयं पुच्छंमी, 'तित्थकरे चउन्नाणी, ससुरासुरजगपूइए । निच्छियंसिज्झियंवेऽवि, तंमि जम्मे न अन्नए, जम्मे ॥६॥ (तहावि) अणिगूहिता बलं विरियं, पुरिसयारपरक्कमं । उग्गं कट्ठं तवं घोरं, दुक्करं अणुचरंति ते ॥७॥ ता अन्नेसुवि सत्तेसुं, चउगइसंसार दुक्खभीएसु । (जं जहेव तित्थयरा भणंति) तहेव समणुट्ठेयव्वं, गोयम ! सव्वं जहट्ठियं ॥८॥ जं पुण गोयम ! ते भणियं, परिवाडीए कीरइ । अथक्के हुंडिदुद्धेणं, कज्जं तं कत्थ लब्भए ? ॥९॥ तत्थवि गोयम ! दिट्ठंतं, महासमुदंमि कच्छभो । अन्नेसि मगरमादीण, संघट्ठा भीउवट्ठओ ॥३८०॥ बुडनिब्बुड करेमारो (समलीसल्लोब्भली) पेल्लापेल्लीए कत्थई । (२८९) (उल्लीरिजंतो) तट्ठो णासंतो धावंतो, पलायंतो दिसोदिसिं ॥१॥ उच्छल्लं पच्छल्लं, हीलणं बहुविहं तहिं । सहंतो थाममलहंतो, खणनिमिसंपि कत्थई ॥२॥ कहकहवि दुक्खसंतत्तो, सुबहुकालेहिं तं जलं । अवगाहंतो गओ उवरिं, पउमिणीसंडसंघणं ॥३॥ छिड्डं महया किलेसेणं, लब्धुं ता तत्थ पेच्छई । गहनक्खत्तपरियरियं, कोमुइचंदं खहेऽमले ॥४॥ दिप्पंतकुवल्लयकल्हारं, कुमुयसयवत्तवणप्फइं । कुरूलियंते हंसकारंडे चक्कवाए सुणेइ य ॥५॥ जमदिट्ठं सत्तसुवि साहासु (अब्भुअं चंदमंडलं) । तं दट्ठुं विम्हिओ खणं, चिंतइ एयं जहा होही ॥६॥ एयं तं सग्गं ताऽहं, (बंधवाणं पमोययं) बंधवाणं पयंसिमो । बहुकालेणं गवेसेउं, ते घेत्तूण समागओ ॥७॥ घणघोरंधयाररयणीए, भद्वकिण्हचउदसीहिं तु । ण पेच्छे जाव तं रिद्धिं, बहुकाल निहालिउं ॥८॥ पुण कच्छभो नु जह उ, तहावि तं रिद्धिं न पेच्छइ । एवं चउगईभवगहणे, दुल्लभे माणुसत्तणे ॥९॥ अहिंसालक्खणं धम्मं, लहिऊणं जो पमायई । सो पुण बहुभवलक्खेसु, दुक्खेहिं माणुसत्तणं, लब्धुं पि न लब्भई धम्मं, तं रिद्धिं कच्छभो जहा ॥३९०॥ दियहाइं दो व तिन्नि व, अद्धाणं होइ जं तु लग्गे ण । सव्वायरेण तस्सवि, संबलयं लेइ पविसंतो ॥१॥ जो पुण दीहपवासो चुलसीईजोणिलक्खनियमेणं । तस्स तवसीलमइयं संबलयं किं न चित्तेह ? ॥२॥ जह २ पहरे दियहे मासे संवच्छरे य वोलंति । तह २ गोयम ! जाणसु दुक्खे आसन्नयं मरणं ॥३॥ जस्स न नज्जइ कालं न य वेला नेय दियहपरिमाणं । नाएवि नत्थि कोइवि जगंमि अजरामरो एत्थं ॥४॥ पावो पमायवसओ जीवो

संसारकज्जमुज्जुत्तो । दुक्खेहिं न निव्विन्नो सुक्खेहिं न गोयमा ! तिप्पे॥५॥ जीवेण जाणि उ विसज्जियाणि जाईसएसु देहाणि । थेवेहिं तओ सयलंपि तिहुयणं होज्ज पडिहत्थं ॥६॥ नहदंतमुद्धभमुहक्खिकेस जीवेण विप्पमुक्केसुवि । तेसुवि हविज्ज कुलसेलमेरुगिरिसन्निभे कूडे ॥७॥ हिमवंतमलयमंदरदीवोदहिधरणिसरिसरासीओ । अहिययरो आहारो जीवेणाहारिओ अणंतहुत्तो ॥८॥ गुरुदुक्खभरुक्कंतस्स अंसुनिवाएण जं जलं गलियं । तं अगडतलायनईसमुद्दमाईसु णवि होज्जा ॥९॥ आवीयं थणछीरं सागरसलिलाउ बहुयरं होज्जा । संसारंमि अणंते अबलाजोषीएँ एक्काए ॥१०॥ सत्ताहविवन्नसुकुहियसाणजोणीए मज्झदेसंमि । किमियत्तण केवलएण जाणि मुक्काणि देहाणि ॥१॥ तेसिं सत्तमपुढवीए सिद्धिखेत्तं च याव उक्कुरुडं । चोद्दसरज्जुं लोगं व अणंतभागेणवि भरेज्जा ॥२॥ पत्ते य कामभोगे कालमणंतं इहं सउवभोगे । अप्पुव्वं चिय मन्नइ जीवो तहवि य विसयसोक्खं ॥३॥ जह कच्छुल्लो कच्छुं कंडुयमाणो दुहं मुणइ सोक्खं । मोहाउरा मणुस्सा तह कामदुहं सुहं बिति ॥४॥ जाणंति अणुभवंति य जम्मजरामरणसंभवे दुक्खे । न य विसएसु विरज्जति (गोयमा !) दुग्गइगमणपत्थिए जीवे ॥५॥ सव्वगहाणं पभवो महागहो सव्वदोसपायट्ठी । कामगहो दुरप्पा जेणऽभिभूयं जगं सव्वं । (तस्स वसं जे गया पाणी) ॥६॥ जाणंति जडा भोगिहिसंपया सव्वमेव धम्मफलं । तहविं दढमूढहियए पावं काऊण दोग्गई जंति ॥७॥ वच्चइ खणेण जीवो पित्तानलधाउसिंभखोभेहिं । उज्जमह मा विसीयह तरतमजोगो इमो दुलहो ॥८॥ पंचिदियत्तणं माणुसत्तणं आयरिए जणे सुकुलं । साहुसमागमसुणणासद्दहणाऽरोगपव्वज्जा ॥९॥ सूलअहिविसविसूइयपाणिट्ठासत्थगिसंभमेहिं च । देहंतरसंकमणं करेइ जीवो मुहुत्तेण ॥१०॥ जावाउ सावसेसं जाव थेवोवि अत्थि ववसाओ । ताव करेज्ज अप्पहियं मा तप्पिहहा पुणो पच्छा ॥१॥ सुरधणुविज्जुखणदिट्ठनट्ठसंज्ञाणुरागसिमिणसमं । देहं इति तु वियलइ मम्मयभंडं व जलभरियं ॥२॥ इय जाव ण चुक्कसि एरिसस्स खणभंगुरस्स देहस्स । उगं कट्ठं घोरं चरसु तवं नत्थि परिवाडी ॥३॥ गोयमोत्ति ! 'वाससहस्संपि जई काऊणं संजमं सुविउलंपि । अंते किलिठ्ठभावो नवि सुज्झइ कंडरीउव्व ॥४॥ अप्पेणवि कालेणं केइ जहागहियसीलसामन्ना । साहंति निययकज्जं पोंडरियमहारिसिंव्व जहा ॥५॥ ण अ संसारंमि सुहं जाइजरामरणदुक्खगहियस्स । जीवस्स अत्थि जम्हा तम्हा मोक्खो उवाएओ ॥१६॥ सव्वपयारेहिं सव्वहा सव्वभावभावंतरेहिं णं गोयमोत्ति बेमि ☆☆☆ ॥ महानिसीहसुयक्खंधस्स छट्ठमज्झयणं गीयत्थववहारं नाम समत्तं ॥६॥ ☆☆☆ 'भयवं ! ता एयनाएणं, जं भणियं आसि मे तुमं (जहा) । परिवाडीए (तच्चं) किं न अक्खसि, पायच्छित्तं तत्थ मज्झवी ॥१॥ हंवइ गोयम ! पच्छित्तं, जइ तुमं तमालंबसि । नवरं धम्मवियारो ते, कओ सुवियारिओ फुडो ॥२॥ ण होइ तस्स पच्छित्तं, पुणरवि पुच्छेज्ज गोयमा ! । संदेहं जाव देहत्थं, मिच्छत्तं ताव निच्छयं ॥३॥ मिच्छत्तेणवि अभिभूए, तित्थयरस्स विभासियं । वयणं लंघित्तु विवरीयं, वाएत्ताणं पविसंति ॥४॥ (घोरतमतिमिरबहलंघयारं पायालं) णवरं सुवियारिउं काउं, तित्थयरा सयमेव य । भणंति तं जहा चेव, गोयमा ! समणुठ्ठए ॥५॥ अत्थेगे गोयमा ! पाणी, जे पव्वज्जिय जहा तहा । अविहिए तह चरे धम्मं, जह संसारा ण मुच्चए ॥६॥ से भयवं ! कयरे णं से विहिंसीलोगो ?, गोयमा ! इमे णं से विहिंसीलोगो, तंजहा चिइवंदणं पडिकमणं, जीवाइतत्तसब्भावं । समिइंदियदमगुत्ती, कसायनिग्गहणमुवओणं ॥७॥ नाऊण सो वीसत्थो सामायारिं कियाकलावं च । आलोइय नीसल्लो आगब्भा परमसंविग्गो ॥८॥ जम्मजरमरणभीओ चउगइसंसारकम्मदहणट्ठा । पइदियहं हियएणं एय अणवरय ज्ञायंतो ॥९॥ जरमरणमयणपउरे रोगकिलेसाइबहुविहतरंगे । कम्मट्ठकसायागाहगहिरभवजलहिमज्झंमि ॥१०॥ भमिहामि भट्टसम्मत्तनाणचारित्तलद्धवरपोओ । कालं अणोरपारं अंतं दुक्खारमलभंतो ॥१॥ ता कइया सो दियहो जत्थाहं सत्तुमित्तसमपक्खो । नीसंगो विहरिस्सं सुहझाणनिरंतरों पुणोंऽभवट्ठं ॥२॥ एवं चिरचितियभिमुहमणोरहोरुसंपत्तिहरिसमुल्लसिओ । भत्तिभरनिब्भरोणयरोमंचयकं चुपुलइयंगो ॥३॥ सीलंगसहस्सट्ठारसण्ह धरणे समोच्छयक्खंधो । छत्तीसायारुक्कंठनिट्ठवियासेसमिच्छत्तो ॥४॥ पडिवज्जे पव्वज्जं विमुक्कमयमाणमच्छरामरिसों । निम्मनिरहंकारो विहिणेवं गोयमा ! विहरे ॥५॥ विहगइवापडिबद्धो उज्जुत्तो नाणदंसणचरित्ते । नीसंगो घोरपरिसहोवसग्गाइं पजिणंतो ॥६॥ उग्गअभिग्गहपडिमाइ रागदोसेहिं दूरतरमुक्को । रूद्धज्झाणविवज्जिओ य विगहासु अ असत्तो ॥७॥ जो चंदणेण बाहुं आलिंपइ वासिणा व जो तच्छे । संथुणइ.जो अ निंदइ समभावो हुज्ज दुणहंपि ॥१८॥ एवं अणिगूहियबलविरिअपुरिसक्कारपरक्कमो

सममणतणमणिलिट्ठुकंचरो (केक्का) परिचत्तकलत्तपुत्तसुहिसयणमेत्तबंधवधणधन्नसुवन्नहिरण्णमणिरयणसारभंडारो अच्चंतपरमवेरग्गवासणाजणियपवर-
सुहज्झवसायपरमधम्मसद्धापरो अकिलिट्ठनिक्कलुसअदीणमाणसो पय (वय) नियमनाणचारित्ततवाइसयलभुवणिक्कमंगलअहिंसालक्खण-
खंताइदसविहधम्माणुट्ठाणेक्कं तबद्धलक्खो सव्वावस्सगतक्कालकरणसज्झायज्झाणमाउत्तो संखाइयअणेगकसिणसंजमपएसु अविखलिओ
संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मो अणियाणो मायामोसविवज्जिओ साहू वा साहुणी वा एवंगुणकलिओ जइ कहवि पमायदोसेणं असइं कहिचि कत्थइ वायाइ
वा मणसाइ वा कायेणेइ वा तिकरणविसुद्धीए सव्वभावंतरेहिं चेव संजममायरमाणो असंजमेणं छलेज्जा तस्स णं विसोहिपयं पायच्छित्तमेव, तेणं पायच्छित्तेणं
गोयमा ! तस्स विसुद्धिं उवदिसिज्जा, न अन्नहत्ति, तत्थ णं जेसुं जेसुं ठाणेसुं जत्थ जत्थ जावइयं पच्छित्तं तमेव निट्ठंकियं पच्छित्तं भन्नइ, से भयवं ! केणमट्ठेणं भन्नइ
जहा णं तमेव निट्ठंकियं भन्नइ ?, गोयमा ! अणंतराणंतरक्कमेणं इणमो पच्छित्तसुत्ता, अणेगे भव्वसत्ता चउगइसंसारचारगाओ बद्धपट्ठनिकाइयदुव्विमोक्खघोर-
पारद्धकम्मनियडाइं संचुत्तिऊण अचिरा विमुच्चिहिंति, अन्नंच-इणमो पच्छित्तसुत्तं अणेगगुणगणाइन्नस्स दढव्वयचरित्तस्स एगंतेणं जोगस्सेव विवक्खिए पएसो
चउकन्नं पन्नवेयव्वं, तहा य जस्स जावइएणं पायच्छित्तेणं परमविसोही भवेज्जा तं तस्स णं अणुयत्तणाविरहिण धम्मक्करसिएहिं वयणेहिं जहट्ठियं अणूणाहियं
तावइयं चेव पायच्छित्तं पयच्छेज्जा, एएणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा णं गोयमा ! तमेव निट्ठंकियं पायच्छित्तं भन्नइ । १। से भयवं ! कइविहं पायच्छित्तं समुवइट्ठं ?, गोयमा !
दसविहं पायच्छित्तं उवइट्ठं, तं च अणेगहा जाव णं पारंचिए । २। से भयवं ! केवइयं कालं जाव इमस्स णं पायच्छित्तसुत्तस्साणुट्ठाणं वहिही ?, गोयमा ! जाव णं कक्की
णामे रायाणे निहणं गच्छिय, एक्कजिणाययणमंडियं वसुहं सिरिप्पभे अणगारे, भयवं ! उड्ढं पुच्छा, गोयमा ! उड्ढं न केई पुण्णभागे होहि जस्स णं इणमो सुयक्खंधं
उवइसेज्जा । ३। से भयवं ! केवइयाइं पायच्छित्तस्स णं पयाइं ?, गोयमा ! संखाइयाइं पायच्छित्तस्स पयाइं, से भयवं ! तेसिं णं संखाइयाणं पायच्छित्तपयाणं किं तं
पढमं पायच्छित्तस्स णं पयं ?, गोयमा ! पइदिणकिरियं, से भयवं ! किं तं पइदिणकिरियं ?, गोयमा ! जमणुसमयाहन्निसा पाणोवरमं जावाणट्ठेयव्वाणि संखेज्जाणि
आवस्सगाणि, से भयवं ! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा णं आवस्सगाणि ?, गोयमा ! असेसकसिणट्ठ कम्मक्खयकारिउत्तमसम्मदंसणनाणचारित्त-
अच्चंतघोरवीरूग्गकट्ठएदुक्करतवसाहणट्ठा सुपरूविज्जंति नियनियविभत्तुदिट्ठपरिमिएणं कालसमएणं पयंपयेणाहन्निसाणुसमयमाजम्मं अवस्समेव तित्थयराइसु कीरंति
अणट्ठिज्जंति उवइसिज्जंति परूविज्जंति पन्नविज्जंति सययं, एएणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ गोयमा ! जहा णं आवस्सगाइं, तेसिं च णं गोयमा ! जे भिक्खू कालाइक्कमेणं
वेलाइक्कमेणं समयाइक्कमेणं अलसायमाणे अणोवउत्तपमत्ते अविहीए अन्नेसिं च असद्धं उप्पायमाणो अन्नयरमावस्सगं पमाइय संतेणं बलवीरिएणं सातलेहडत्ताए
आलंबणं वा किंचि घेत्तूणं चिराइयं पउरिय णो णं जहुत्तयालं समणुट्ठेज्जा से णं गोयमा ! महापायच्छित्ती भवेज्जा । ४। से भयवं ! किं तं बिइयं पायच्छित्तस्स णं पयं ?,
गोयमा ! बीयं तइयं चउत्थं पंचमं जाव णं संखाइयाइं पायच्छित्तस्स णं पयाइं ताव णं एत्थं चेव पढमपायच्छित्तपए अंतरोवगयाइं समणुविंदा, से भयवं ! केणं अट्ठेणं
एवं वुच्चइ ?, गोयमा ! जओ णं सव्वावस्सगकालाणुपेही भिक्खू णं रोहट्ठज्झाणरागदोसकसायगारवममकाराइसु णं अणेगपमायालंबणेसुं च सव्वभावभावंतरंतरेहिं
णं अच्चंतविप्पमुक्को भवेज्जा, केवलं तु नाणदंसणचारित्तं तवोकम्मसज्झायज्जाणसद्धम्मावसाणे (स्सगे) सु अच्चंतअणिगूहियबलवीरियपरक्कमे सम्मं अभिरमेज्जा,
जाव णं सद्धम्मावस्सगेसुं अभिरमेज्जा ताव णं सुसंवुडासवदारे हवेज्जा, जाव णं हवेज्जा ताव णं सजीववीरिएणं अराइभवगहणसंचियाणिट्ठदुट्ठकम्मरासीए
एगंतणिट्ठवणेक्कबद्धलक्खो अणुक्कमेण निरूद्धजोगी भवेत्ताणं निहइटासेसकम्मणो विमुक्कजाइजरामरणचउगइसंसारपासबंधणे य सव्वदुक्खविमोक्ख-
तेलोकसिहरनिवासी भवेज्जा, एएणं अट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहा णं एत्थं चेव पढमपए अवसेसाइं पायच्छित्तपयाइं अंतरोवगयाइं समणुविंदा । ५। से भयवं ! कयरे
ते आवस्सगे ?, गोयमा ! णं चिइवंदणादओ, से भयवं ! कम्हि आवस्सगे असइं पमायदोसेणं कालाइक्कमिए वा वेलाइक्कमिए वा समयातिकमिए वा अणोवउत्तपमत्तेहिं
अविहीए वा समणुट्ठिएइ वा णो णं जहुत्तयालं विहीए सम्मं अणुट्ठिए वा असंपट्ठि (डि) एइ वा वित्थंपडिएइ वा अकएइ वा पमाएइ वा केवइयं पायच्छित्तमुवइसेज्जा ?,

गोयमा ! जे केई भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिंहयपच्चक्खायपावकम्मे दिक्खादियाप्पभिईओ अणुदियहं जावज्जीवाभिग्गहेणं सुवीसत्थे भत्तिनिब्भरे जहुत्तविहीए सुत्तत्थमणुसरमाणो अणणमाणसेगग्गचित्ते तग्गयमाणससुहज्झवसाए थयथुईहिं ण तेकालियं चेइए वंदेज्जा तस्स णं एगाए वाराए खवणं पायच्छित्तं उवइसेज्जा बीयाए छेयं तइयाए उवट्ठावणं, अविहीए चेइयाइं वंदे तओ पारंचियं, जओ अविहीए चेइयाइं वंदेमाणो अत्तेसिं असब्बं संजणेईइकाऊणं, जो उण हरियाणि वा बीयाणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा पूयट्ठाए वा महिमट्ठाए वा सोभट्ठाए वा संघट्टेज्ज वा संघट्ठावेज्ज वा छिंदिज्ज वा छिंदावेज्ज वा संघट्टिज्जंताणि वा छिंदिज्जंताणि वा परेहिं समणुजाणेज्ज वा एएसुं सव्वेसुं उवट्ठावणं खमणं चउत्थं आयंबिलं एक्कासणगं निव्विगइयं गाढागाढभेदेणं जहासंखेणं णेयं । ६। जे णं चेइए वंदेमाणस्स वा संथुणेमाणस्स वा पंचप्पयारं सज्झायं वा पयरेमाणस्स वा विग्घं करेज्ज वा कारेज्ज वा कीरंतं वा परेहिं समणुजाणेज्ज वा से तस्स एएसुं दुवालस छट्ठं एक्कासणगं कारणिगस्स, निक्कारणिगे अवंदे संवच्छरं जाव पारंचियं काऊणं उवट्ठवेज्जा । ७। जे णं पडिक्कमणं नो पडिक्कमेज्जा से णं तस्सोवट्ठावणं निद्देसेज्जा, बइट्ठपडिक्कमणेणं खमणं, सुन्नासुन्नीए अणोवउत्तपमत्तो वा पडिक्कमणं करेज्जा दुवालसं, पडिक्कमणकालस्स चुक्कइ चउत्थं, अकाले पडिक्कमणं करेज्जा चउत्थं, कालेणं वा पडिक्कमणं णो करेज्जा चउत्थं, संथारगओ वा संथारगोवविट्ठो वा पडिक्कमणं करेज्जा दुवालसमं, मंडलीए ण पडिक्कमेज्जा उवट्ठावणं, कुसीलेहिं समं पडिक्कमणं करेज्जा उवट्ठावणं, परिभट्ठबंभचेरवएहिं समं पडिक्कमेज्जा पारंचियं, सव्वस्स समणसंघस्स तिविहंतिविहेण खमणमरिसामणं अकाऊण पडिक्कमणं करेज्जा उवट्ठावणं, पयंपएणाविच्चाभेलियं पडिक्कमणसुत्तं ण पयट्टेज्जा चउत्थं, पडिक्कमणं ण काऊणं संथारगेइ वा फलहगेइ वा तुयट्टेज्जा खमणं, दिया तुयट्टेज्जा दुवालसं, पडिक्कमणं काउं गुरुपामूलं वसहिं संदिसावेत्ताणं ण पच्चुप्पेहेइ चउत्थं, वसहिं पच्चुप्पेहिंऊणं ण संपवेएज्जा छट्ठं, वसहिं असंपवेएत्ताणं रयहरणं पच्चुप्पेहिज्जा पुरिमब्बं, रयहरणं विहीए पच्चुप्पेहिताणं गुरुपामूलं मुहणंतगे अपच्चुप्पेहिय उवहिं संदिसावेज्जा पुरिवट्ठं (मइढं), असंदेसावियं उवहिं पच्चुप्पेहिज्जा पुरिवट्ठं, अणुवउत्तो उवहिं वा वसहिं वा पच्चुप्पेहे दुवालसं, अविहीए वसहिं वा अन्नयरं वा भंडमत्तोवगरणजायं किंचि अणोवउत्तपमत्तो पच्चुप्पेहिज्जा दुवालसं, वसहिं वा उवहिं वा भंडमत्तोवगरणं वा अपडिलेहियं वा दुप्पडिलेहियं वा परिभुंजेज्जा दुवालसं, वसहिं वा उवहिं वा भंडमत्तोवगरणं वा ण पच्चुप्पेहिज्जा उवट्ठावणं, एवं वसहिं उवहिं पच्चुप्पेहिताणं जम्ही पएसे संथारयं जम्ही उ पएसे उवहीए पच्चुप्पेहणं कयं तं थामं णिउणं हलुयहलुयं दंडापुच्छणगेण वा रयहरणेण वा साहरेत्ताणं तं च कयवरं पच्चुप्पेहित्तु छप्पइयाउ ण पडिगाहिज्जा दुवालसं, छप्पइयाओ पडिगाहिताणं तंच कयवरं परिट्ठवेऊणं ईरियं ण पडिक्कमेज्जा चउत्थं, अपच्चुप्पेहियं कयवरं परिट्ठवेज्जा उवट्ठावणं, जइ णं छप्पइयाओ हवेज्जा अहा णं नत्थि तओ दुवालसं, एवं वसहिं उवहिं पच्चुप्पेहिऊणं समाहिं खइरोल्लगं च ण परिट्ठवेज्जा चउत्थं, अणुग्गए सूरिए समाहिं वा खयरोल्लगं वा परिट्ठवेज्जा आयंबिलं, हरियाकायसंसत्तेइ व बीयाकायसंसत्तेइ वा तसकायबेइदियाईहिं वा संसत्ते थंडिले समाहिं वा खइरोल्लगं वा परिट्ठवे अन्नयरं वा उच्चारइयं वा वोसिरिज्जा पुरिमइढं एक्कासणगायंबिलमहक्कमेणं जइ णं णो उद्वणं संभवेज्जा, अहा णं उद्वणासंभाविए तओ खमणं, तं च थंडिल्लं पुणरवि पडिजागरिऊणं नीसंकं काऊणं पुणरवि आलोएत्ताणं जहाजोगं पायच्छित्तं ण पडिगाहिज्जा तओ उवट्ठावणं, समाहिं परिट्ठवेमाणो सागारिएणं संचिक्खीयए संचिक्खीयमाणो वा परिट्ठवेज्जा खवणं, अपच्चुप्पेहियथंडिल्ले जंकिंचि वोसिरेज्जा तओ उवट्ठावणं, एवं वसहिं उवहिं पच्चुप्पेहेत्ताणं समाहिं खइरोल्लगं च परट्ठवेत्ताणं एगग्गमाणसो आउत्तो विहीए सुत्तत्थमणुसरमाणो ईरियं न पडिक्कमेज्जा एक्कासणगं, मुहणंतगेणं विणा ईरियं पडिक्कमेज्जा वंदणं पडिक्कमणं वा करेज्जा जंभाएज्ज वा सज्झायं वा करेज्जा वायणादी सव्वत्थ पुरिमइढं, एवं च ईरियं पडिक्कमित्ताणं सुकुमालपम्हलअचोप्पडअविक्रिटेणं अविद्धदंडेणं दंडापुच्छणगेणं वसहिं न पमज्जे एक्कासणगं, बोहारियाए वा वसहिं बोहारिज्जा उवट्ठावणं, वसहीए दंडापुच्छणगं दाऊणं कयरं ण परिट्ठवेज्जा चउत्थं, अपच्चुप्पेहियं कयवरं परिट्ठवेज्जा दुवालसं, जइ णं छप्पइयाउ ण हवेज्जा अहवा णं हवेज्जा तओ णं उवट्ठावणं, वसहीसंठियं कयवरं पच्चुप्पेहमाणेण जाओ छप्पइयाओ तत्थ अत्तेसिऊणं २ समुच्चिणिय २ पडिगाहिया ताओ जइ णं ण सव्वेसिं भिक्खूणं संविभइऊणं देज्जा तओ एक्कासणगं, जइ सयमेव अत्तणा ताओ छप्पइयाओ पडिगाहिज्जा अहणं ण संविभइउं

दिज्जा ण य अण्णण्णो पडिगाहेज्जा तओ पारंचियं, एवं वसहिं दंडापुच्छणणेणं विहीए य पमज्जिऊणं कयवरं पच्चुप्पेहेऊणं छप्पइयाओ संविभातिऊणं च तं कयवरं ण परिट्ठवेज्जा परिट्ठवित्ताणं च सम्मं विहीए अच्चंतोवउत्तएगगमणसेण पयंपएणं तु सुत्तत्थोभयं सरमाणे जे णं भिक्खू ण ईरियं पडिक्कमेज्जा तस्स अ आयंबिलं खमणं पच्छित्तं निद्देसेज्जा, एवं तु अइक्कमिज्जा णं गोयमा ! किंचूणं दिवड्ढं घडिगं पुव्वण्हिगस्स णं पढमजामस्स, एयावसरम्ही उ गोयमा ! जे णं भिक्खू गुरूणं पुरो विहीए सज्झायं संदिसाविऊणं एगगचित्ते सुयाउत्ते दढं धीइए घडिगोणपढमपोरिसी जावज्जीवाभिग्गहेणं अणुदियहं अपुव्वणाणगहणं न करेज्जा तस्स दुवालसमं पच्छित्तं निद्देसेज्जा, अपुव्वनाणाहिज्जणस्स असई जमेव पुव्वहिज्जियं तं सुत्तत्थोभयमणुसरमाणो एगगमाणसे न परावत्तेज्जा भत्तित्थीरायतक्करजणवयाइ-विचित्तिविगहासु अ णं अभिरमेज्जा अवंदणिज्जे, जेसिं च णं पुव्वहिज्जियं सुत्तं णत्थेव अउव्वनाणगहणस्स णं असंभवो वा तेसिमवि घडिगूणपढमपोरिसी पंचमंगलं पुणो २ परावत्तणीयं, अहा णं णो परावत्तिया विगहं कुव्वीया वा निसामिया वा से णं अवंदे, एवं घडिगूणगाए पढमपोरिसीए जे णं भिक्खू एगगचित्तो सज्झायं काऊणं तओ पत्तगमत्तगकमढाई भंडोवगरणस्स णं अवक्खित्ताउत्तो विहीए पच्चुप्पहेणं ण करेज्जा तस्स णं चउत्थं पच्छित्तं निद्देसेज्जा, भिक्खुसदो पच्छित्तसदो अ इमे सव्वत्थ पइपयं जोजणीए, जइ णं तं भंडोवगरणं ण भुंजीया अहा णं परिभुंजे दुवालसं, एवं अइक्कंता पढमपोरिसी, बीयपोरसीए अत्थगहणं न करेज्जा पुरिमड्ढं, जइ णं वक्खाणस्स णं अभावो, अहा णं वक्खाणं अत्थेव तं ण सुणेज्जा अवंदे, वक्खाणस्सासंभवे कालवेले जाव वायणाइसज्झायं न करेज्जा दुवालसं, एवं पत्ताए कालवेलाए जंकिंचि अइयराइयदेवसियाइयारे निदिए गरहिए आलोइए पडिक्कंते जंकिंचि काइगं वा वाइगं वा माणसिगं वा उस्सुत्तायरणेण वा उम्मगायरणेण वा अकप्पासेवणेण वा अकरणिज्जसमायरणेण वा दुज्झाइएण वा दुव्विचित्तिएण वा अणायारसमायरणेण वा अणिच्छियव्वसमायरणेण वा असमणपाउग्गसमायरणेण वा नाणे दंसणे चरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तियादीणं चउण्हं कसायादीणं पंचण्हं महव्वयादीणं छण्हं जीवनिकायादीणं सत्तण्हं पिडेसणमाईणं अट्ठण्हं पवयणमाइयाईणं नवण्हं बंभचेरगुत्ती (ताई) णं दसविहस्स णं समणधम्मस्स एवं तु जाव णं एमाइअणेगालावगमाईणं खंडणे विराहणे वा आगमकुसलेहिं णं गुरूहिं पायच्छित्तमुवइठ्ठं तंनिमित्तेणं जहासत्तीए अणिगूहियबलवीरियपुरिसयारपरक्कमे असढत्ताए अदीणमाणसे अणसणाइ सबज्झंतंरं दुवालसविहं तवोकम्मं गुरूणमंतिए पुणरवि णिड्ढंकिऊणं सुपरिफुडं काऊणं तहत्ति अभिनंदित्ताणं खंडाखंडीविभत्तं वा एणपिंडट्ठियं वा ण सम्ममणुचेट्ठेज्जा से णं अवंदे, से भयवं ! केणं अट्ठेणं खंडाखंडीए काऊणमणुचिट्ठेज्जा ?, गोयमा ! जे णं भिक्खू संवच्छरं चाउम्मासं मासखमणं वा एक्कोलगं काऊणं न सक्कुणोइ ते णं छट्ठमदसमदुवालसद्धमासक्खमणेहिं णं तं पायच्छित्तं अणुपवेसेइ, अन्नमवि जंकिंचि पायच्छित्ताणुगयं, एतेणं अट्ठेणं खंडाखंडीए समणुचिट्ठे, एवं तु समोगाढं किंचूणं पुरिमड्ढं, एयावसरंमि उ जे णं पडिक्कमंतेइ वा वंदंतेइ वा सज्झायं करेतेइ वा परिभमंतेइ वा संचरंतेइ वा गएइ वा ठिएइ वा बइड्डलगेइ वा उट्ठियलगेइ वा तेउकाएण वा फुसिल्लियल्लगे भवेज्जा से णं आयंचिऊणं ण संवरेज्जा तओ चउत्थं, अन्नेसिं तु जहाजोगं जहेव पायच्छित्ताणि पविसंति, तहा ससत्तीए तवोकम्मं णाणट्ठेइ तओ चउग्गुणं पायच्छित्तं तमेव बीयदियहे उवइसेज्जा, जेसिं च णं वंदंताण वा पडिक्कमंताण वा दीहं वा मज्जारं वा छिदिऊणं गयं हवेज्जा तेसिं च णं लोयकरणं अन्नत्थ गमणं तंमाणं उग्गतवाभिरमणं, एयाइ ण कुव्वंति तओ गच्छबज्झे, जे णं तु तं महोवसग्गसाहगं उप्पायगं दुन्निमित्तममंगलावहं हविया, जे णं पढमपोरिसीए वा बीयपोरिसीए वा चंक्रमणियाए वा परिसक्कएज्जा अगालसन्निहीए वा छइडी करेइ वा से णं जइ चउव्विहेणं ण संवरेज्जा तओ छट्ठं, दिया थंडिले पडिलेहिए राओ सन्नं वोसिरेज्जा समाहीए वा एगासणं गिलाणस्स, अन्नेसिं तु छट्ठमेव, जइ णं दिया णं थंडिलं पच्चुप्पेहियं णो णं समाही संजमिया अपच्चुप्पेहिए थंडिले अपेहियाए चेव समाहीए रयणीए सन्नं वा काइयं वा वोसिरिज्जा एगासणं गिलाणस्स, सेसाणं दुवालसं, अहा णं गिलाणस्स मिच्छुक्कडं वा, एवं पढमपोरिसीए बीयपोरिसीए वा सुत्तत्थाहिज्जणं मोत्तूणं जे णं इत्थीकहं वा भत्तकहं वा देसकहं वा रायकहं वा तेणकहं वा गारत्थियकहं वा अन्नं वा असंबद्धं रोद्धज्झाणोदीरणाकहं पत्थावेज्ज वा उदीरेज्ज वा कहेज्ज वा कहावेज्ज वा से णं संवच्छरं जाव अवंदे, अहा णं पढमबीयपोरिसीए जइ णं कयाई महया कारणवसेणं (घडिगं वा) अब्धघडिगं वा सज्झायं न कयं तत्थ मिच्छुक्कडं गिलाणस्स, अन्नेसिं निव्विगइयं,

दढनिदुरतेण वा गिलाणेण वा जइ णं कहिचि केणइ कारणेणं जाएणं असई गीयत्थगुरूणा अणणुत्ताएणं सहसा कयादी बइदुपडिक्कमणं कयं हवेज्जा तओ मासं जाव अवंदे, चउमासे जाव मूणव्वयं च, जे णं पढमपोरिसीए अणइक्कंताए तइयाए पोरिसीए अइक्कंताए भत्तं वा पाणं वा पडिगाहेज्ज वा परिभुंजेज्ज वा तस्स णं पुरिमइढं, चेइएहिं अवंदिएहिं उवओगं करेज्जा पुरिमइढं, गुरूणो अंतिए णोवओगं करेज्जा चउत्थं, अकएणं उवओगेणं जंकिंचि पडिगाहेज्जा चउत्थं, अविहीए उवओगं करेज्जा खवणं, भत्तट्टाए वा पाणट्टाए वा सकज्जेण वा गुरूकज्जेण वा बाहिरभूमीए निग्गच्छंते गुरूणो पाए उत्तिमंगेणं संघट्टेत्ताणं आवस्सियं ण करेज्जा पविसंते घंघसालाईसु णं वसहीदुवारे णिसीहियं ण करेज्जा पुरिमइढं, सत्तण्हं कारणजायाणमसई वसहीए बहिं निग्गच्छे गच्छबज्झो, रागा गच्छे छेओवट्टावणं, अगीयत्थस्स गीयत्थस्स वा संकणिज्जस्स भत्तं वा पाणं वा भेसज्जं वा वत्थं वा पत्तं वा दंडगं वा अविहीए पडिगाहेज्जा गुरूणं च णालोइज्जा तइयवयस्स छेदं मासं जाव अवंदे मूणव्वयं च, भत्तट्टाए वा पाणट्टाए वा भेसज्जट्टाए वा सकज्जेण वा गुरूकज्जेण वा पविट्ठो गामे वा नगरे वा रायहाणीए वा तिगचउक्कचच्चरपरिसागिहेइ वा तत्थ कहं वा विकहं वा पत्थावेज्जा उवट्टावणं, सोवाहणो परिसक्केज्जा उवट्टावणं, उवाहणाउ पडिगाहिज्जा खवणं, तारिसे णं संविहाणगे उवाहणाउ ण परिभुंजेज्जा खवणं, गओ वा ठिओ वा केणइ पुट्ठो निउणं महुं थोवं कज्जावडियं अगव्वियमतुच्छं निदोसं सयलजणमणाणंदकारयं इहपरलोगसुहावहं वयणं ण भासेज्जा अवंदे, जइ णं नाभिग्गहिओ, सोलसदोसविरहियंपी ससावज्जं भासेज्जा उवट्टावणं, बहु भासे उवट्टावणं, पडिनायं भासे उवट्टावणं, कसाएहिं जि (जु) ज्जे अवंदे, कसाएहिं समुइन्नेहिं भुंजे रयणिं वा परिवसेज्जा मासं जाव मूणव्वए अवंदे य उवट्टावणं च, परस्स वा कस्सई कसाए समुदीरेज्जा दरकसायस्स वा कसायवुडिढं करेज्जा मम्मं वा किंचि वाले (आलवे) ज्जा एतेसुं गच्छबज्झो, फरुसं भासे दुवालसं, कक्कसं भासे दुवालसं, खरफरुसकक्कसणिदुरमणिद्वं भासेज्जा उवट्टावणं, दुब्बोलं देइ खमणं, किलिकिलिकिधं (वं) कलहं झंझं डमरं वा करेज्जा गच्छबज्झो, मगारजगारं वा बोल्ले खवणं, बीयवाराए अवंदे, वहंतो संघबज्झो, हणंता संघबज्झो, एवं खणंतो भंजंतो ल्हसंतो लडिंतो जलित्तो जालावंतो पयंतो पयावयंतो, एतेसु सव्वेसु पत्तेगं संघबज्झो, गुरूपि पडिसूरेज्जा अन्नं वा मयहराइयं कहिचि हीलेज्जा गच्छायां वा संघायां वा वंदणपडिक्कमणमाइमंडलीधम्मं वा अइक्कमेज्जा अविहीए वा पव्वावेज्ज वा उवट्टावेज्ज वा अओगस्स वा सुत्तं वा अत्थं वा उभयं वा परूवेज्जा अविहीए सारेज्ज वा वारिज्ज वा वाएज्ज वा विहीए वा सारणवारणचोयणं ण करेज्जा उम्मग्गपट्टियस्स वा जहाविहीए जाव णं सयलजणसन्निज्झं परिवाडीएणं भासेज्जा अहियभासं सपक्खउगुणावहं, एतेसु सव्वेसु पत्तेगं कुलगणसंघबज्झो, कुलगणसंघबज्झीकयस्स णं अच्चंतघोरवीरतवाणट्टाणाभिरयस्सावि णं गोयमा ! अप्पेही, तम्हा कुलगणसंघबज्झीकयस्स णं खणखणद्धघडिगद्धघडिगं वा ण चिट्ठेयव्वंति, अपच्चुप्पेहिए थंडिल्ले उच्चारं वा पासवणं वा खेलं वा सिंघाणं वा जल्लं वा परिट्टावेज्जा निसीयंतो संडासगे ण पमज्जेज्जा निव्विगइयायंबिलमहक्कमेणं, भंडमतोवगरणजायं जंकिंचि दंडगाइं ठवंतेइ वा निक्खिवंतेइ वा साहरंतेइ वा पडिसाहरंतेइ वा गिण्हंतेइ वा पडिगिण्हंतेइ वा अविहीए ठवेज्जा वा निक्खिवेज्ज वा साहरेज्ज वा पडिसाहरेज्ज वा गेणहेज्ज वा पडिगेणहेज्ज वा, एतेसु असंसत्तखेत्ते चउरो आयंबिले, संसत्तखित्ते उवट्टावणं, दंडगं वा रयहरणं वा पायपुंछणं वा अंतरकप्पणं वा चोलपट्टणं वा वासाकप्पं वा जाव णं मुहणंतगं वा अन्नयरं वा किंचि संजमोवगरणजायं अप्पडिलेहियं वा दुप्पडिलेहियं वा ऊणाइरित्तं गणणाए पमाणेण वा परिभुंजे खवणं सव्वत्थ पत्तेगं, अविहीए नियंसणुत्तरीयं रयहरणं दंडगं वा परिभुंजे चउत्थं, सहसा रयहरणं खंधे निक्खिवइ उवट्टावणं, अंगं वा उवंगं वा संवाहावेज्जा खवणं, रयहरणं सुसंघट्टे चउत्थं, पमत्तस्स सहसा मुहणंताइ किंचि संजमोवगरणं विप्पणस्से तत्थ णं जाव खमणोवट्टावणं, जहाजोगं गवेसणं मिच्छुक्कदं वोसिरणं पडिगाहणं च, आउकायतेउकायस्स णं संघट्टणाई एगंतेणं णिसिद्धे, जो उण जोईए अंतलिकखबिंदुवारेहिं वा आउत्तो वा अणाउत्तो वा सहसा फुसेज्जा तस्स णं पकहियं चेवायंबिलं, इत्थीणं अंगावयवं किंचि हत्थेण वा पाएण वा दंडगेण वा करधरियकुसग्गेण वा लणखवणं वा संघट्टे पारंचियं, सेसं पुणोवि सत्थाणे पबंधेण भाणिहिइ, एवं तु आगयं भिक्खाकालं, एयावसरम्ही उ गोयमा ! जे णं भिक्खू पिडेसणाभिहिएणं विहिणा अदीणमणसो 'वज्जेतो बीयहरियाइं, पाणे य दगमट्टियं । उववायं विसमं खाणुं, रत्तो गिहवईणं च ॥१९॥ संकट्टाणं विवज्जंतो

पंचसमिइतिगुत्तिजुत्तो गोयरचरियाए पाहुडियं न पडियरिया तस्स णं चउत्थं पायच्छित्तं उवइसेज्जा जइ णं नो अभत्तट्ठी, ठवणकुलेसु पविसे खवणं, सहसा पडिवुत्थं (वत्थुं) पडिगाहितं तक्खणा ण परिट्ठवे निरोवद्दवे थंडिले खवणं, अकप्पं पडिगाहेज्जा चउत्थाइ जहाजोगं, कप्पं वा पडिसेहेइ उवट्ठावणं, गोयरपविट्ठो कहं वा विकहं वा उभयकहं वा पत्थावेज्ज वा उदीरेज्ज वा कहेज्ज वा निसामेज्ज वा छट्ठं, गोयरमागओ य भत्तं वा पाणं वा भेसज्जं वा जं जेण दिन्नयं जहा य पडिग्गहियं तं तहा सव्वं णालोएज्जा पुरिवइढं, इरियाए अपडिक्कंताए भत्तपाणाइयं आलोएज्जा पुरिवइढं, ससरक्खेहिं पाएहिं अपमज्जिएहिं इरियं पडिक्कमेज्जा पुरिव (म) इढं, इरियं पडिक्कमिउकामो तिन्नि वाराउ चलणगाणं हेट्ठिमं भूमिभागं ण पमज्जेज्जा णिव्विइणं, कन्नोड्डियाए वा मुहणंतगेण वा विणा इरियं पडिक्कमे मिच्छुक्कडं पुरिमइढं वा, पाहुडियं आलोइत्ता सज्झायं पट्ठवेत्तु तिसराइं धम्मोमंगलाइं ण कडेढज्जा चउत्थं, धम्मोमंगलगेहिं च णं अपरियट्ठिएहिं चेइयसाहूहिं च अवंदिएहिं पारावेज्जा पुरिवइढं, अपाराविएणं भत्तं वा पाणं वा भेसज्जं वा परिभुंजे चउत्थं, गुरूणो अंतियं ण पारावेज्जा नो उवओगे करेज्जा नो णं पाहुडियं आलोएज्जा ण सज्झायं पट्ठवेज्जा, एतेसुं पत्तेयं उवट्ठावणं, गुरूवि य जे णं नो उवउत्ते हवेज्जा से णं पारंचियं, साहम्मियाणं संविभागेणं अविइन्नेणं जंकिंचि भेसज्जाइ परिभुंजे छट्ठं, भुंजंतेइ वा परिवेसंतिए वा पारिसाडियं करेज्जा छट्ठं, तित्तकडुयकसायंबिलमहुरलवणाइं रसाइं आसाइंते वा पलिसायंते वा परिभुंजे चउत्थं, तेसुं चेव रसेसुं रागं गच्छे खमणमट्ठमं वा, अकएण काउस्सग्गेणं विगई परिभुंजे पंचेव आयंबिलाणि, दोण्हं विगईणं उइढं परिभुंजे पंच निव्वइयगाणि, अकारणिगो विगइपरिभोगं कुज्जा अट्ठमं, असणं वा पाणं वा भेसज्जं वा गिलाणस्स अइन्नाणुव्वरियं परिभुंजे पारंचियं, गिलाणाणं अपडिजागरिएणं भुंजे उवट्ठावणं, सव्वमवि णियकत्तव्वं परिचिच्चाणं गिलाणकत्तव्वं न करेज्जा अवंदे, गिलाणकत्तव्वमालंबिऊणं निययकत्तव्वं पमाएज्जा अवंदे, गिलाणकप्पं ण उत्तारेज्जा अट्ठमं, गिलाणेणं सद्धिं एगसद्देण गंतुं जमाइसे तं न कुज्जा पारंचिए, नवरं जइ णं से गिलाणे सत्थचित्ते, अहा णं सन्निवायादीहिं उब्भामियमाणसे हवेज्जा तओ जमेव गिलाणेणमाइढंतं न कायव्वं, तस्स जहाजोगं कायव्वं, ण करेज्जा संघबज्झो, आहाकम्मं वा उद्देसियं वा पूईकम्मं वा मीसजायं वा ठवणं वा पाहुडियं वा पाओयरं वा कीयं वा पामिच्चं वा परियट्ठियं वा अभिहडं वा उब्भिन्नं वा मालोहडं वा अच्छेज्जं वा अणिसट्ठं वा अज्झोयरं वा धाईदूइनिमित्तेणं आजीववणीमगतिगिच्छाकोहमाणमायालोभेणं पुव्विसंथवपच्छासंथवविज्जा-मंतचुन्नजोगे संकियमक्खियनिक्खित्तपिहियसाहरियदायगुम्मीसे अपरिणयलित्तछडिडययाए बायालाए दोसेहिं अन्नयरदोसेण दूसियं आहारं वा पाणं वा भेसज्जं वा परिभुंजेज्जा सव्वत्थ पत्तेगं जहाजोगं कमेण खमणायंबिलादी उवइसेज्जा, छण्हं कारणजायाणमसइं भुंजे अट्ठमं, सधूमं सइंगालं भुंजे उवट्ठावणं, संजोइय २ जीहालेहडत्ताए भुंजे आयंबिलखवणं, संते बलवीरियपुरिसयारपरक्कमे अट्ठमिचउइसीनाणपंचमीपज्जोसवणचाउम्मासिए चउत्थट्ठमछट्ठे ण करेज्जा खवणं, कप्पं णावियइ चउत्थं, कप्पं परिट्ठवेज्जा दुवालसं, पत्तगमत्तगकमढगं वा अन्नयरं वा भंडोवगरणजायं अतिप्पिऊणं ससिणिद्धं वा असिणिद्धं वा अणुल्लेहियं ठवेज्जा चउत्थं, पत्ताबंधस्स णं गंठीउ ण छोडिज्जा ण सोहेज्जा चउत्थं पच्छित्तं, समुद्देसमंडलीउ संघट्टेज्जा आयामं संघट्टं वा, समुद्देसमंडलिं छिविऊण दंडापुंछणगं न देज्जा निव्विइयं, समुद्देसमंडलीं छिविऊण दंडापुंछणगं च दाऊणं इरियं न पडिक्कमेज्जा निव्विइयं, एवं इरियं पडिक्कमित्तु दिवसावसेसियं ण संवरेज्जा आयामं, गुरूपुरओ ण संवरिज्जा पुरिमइढं, अविहीए संवरेज्जा आयंबिलं, संवरित्ताणं चेइयसाहूणं वंदणं ण करेज्जा पुरिमइढं, कुसीलस्स वंदणगं दिज्जा अवंदे, एयावसरम्ही उ बहिरभूमीए पाणियकज्जेणं गंतूणं जावायामे ताव णं समोगाढेज्जा किंचूणा तइयपोरिसी, तमवि जाव णं इरियं पडिक्कमित्ताणं विहीए गमणागमणं च आलोइऊणं पत्तगमत्तगकमढगाइयं भंडोवगरणं निक्खिवइ ताव णं अणूणाहिया तइयपोरिसी हवेज्जा, एवं अइक्कंताए तइयपोरिसीए गोयमा ! जे णं भिक्खू उवहिं थंडिलाणि विहिणा गुरूपुरओ संदिसावित्ताणं पाणगस्स य संवरेऊणं कालवेलं जाव सज्झायं ण करेज्जा तस्स णं छट्ठं पायच्छित्तं उवइसेज्जा, एवं च आगयाए कालवेलाए गुरूसंतियं उवहिं थंडिल्ले वंदणपडिक्कमणसज्झायमंडलीओ वसहिं च पच्चुप्पेहित्ताणं समाहीए खइरोल्लगे य संजमिऊणं अत्तणगं उवहिं थंडिल्ले पच्चुप्पेहित्तु गोयरयरियं पडिक्कमिऊणं कालो गोयरचरियाघोसणं काऊण तओ देवसियाइयारविसोहिनिमित्तं काउस्सगं करेज्जा, एएसुं पत्तेगं उट्ठावणं पुरिमइढेगासणगोवट्ठावणं

जहासंखेणं णेयं, काऊणं काउस्सगं मुहणंतं पच्चुप्पेहेउं विहीए गुरूणो किइकम्मं काऊणं जंकिंचि कत्थइ सूरूग्गमपभिईए चिट्ठंतेण वा गच्छंतेण वा चलंतेण वा भमंतेण वा संभरं (मं) तेण वा पुढवीदगअगणिमारूयवणस्सइहरियतणबीयपुप्फफलकिसलयपवालंकुरदलबितिचउपंचिदियाणं संघट्टणपरियावणकिलावणउद्वणं वा कयं हवेज्जा तहा तिण्हं गुत्तादीणं चउण्हं कसायाईणं पंचण्हं महव्वयादीणं छण्हं जीवनिकायादीणं सत्तण्हं पाणपिडेसणाणं अट्ठण्हं पवयणमायादीणं नवण्हं बंभचेरादीणं दसविहस्स समणधम्मस्स नाणदंसणचारित्ताणं च जं खंडियं जं विराहियं तं निदिऊणं गरहिऊणं आलोइऊणं पायच्छित्तं च पडिवज्जेऊणं एगग्गमाणसे सुत्तत्थोभयं धणियं भावेमाणे पडिक्कमणं ण करेज्जा उवट्ठावणं, एवं तु अदंसणं गओ सूरिओ, चेइएहिं अवंदिएहिं पडिक्कमेज्जा चउत्थं, एत्थं च अवसरं विचेयं, पडिक्कमिऊणं च विहीए रयणीए पढमजामं अणूणं सज्झायं न करेज्जा दुवालसं, पढमपोरिसीए अणइक्कंताए संथारगं संदिसावेज्जा छट्ठं, असंदिसाविण्णठ संथारगेणं संथारेज्जा चउत्थं, अपच्चुप्पेहिए थंडिल्ले संथारेइ दुवालसं, अविहीए संथारेज्जा चउत्थं, उत्तरपट्टगेणं विणा संथारेइ चउत्थं, दोउडं संथारेज्जा चउत्थं, सुसिरं सणप्पयादी संथारेज्जा सयं आयंबिलाणं, सव्वस्स समणसंघस्स साहम्मिया (णमसाहम्मिया) णं च सव्वस्सेव जीवरासिस्स सव्वभावभावंतरेहिं णं तिविहंतिविहेणं खामणमरिसावणं अकाऊणं चेइएहिं तु अवंदिएहिं गुरूपामूलं च उवहिदेहस्सासणादीणं च सागारेणं पच्चक्खाणेणं अकएणं कन्नविवरेसुं च कप्पासरूवेणं तुट्ठ (अट्ठ) इएहिं संथारमही ठाएज्जा, एएसुं पत्तेणं उवट्ठावणं, संथारगमही ठाऊणमिमस्स णं धम्मसरीरस्स गुरूपारंपरिएणं समुवलद्धेहिं तु इमेहिं परममंतक्खरेहिं दससुवि दिसासुं अहिहरिदुट्ठपंतवाणमंतरपिसायादीणं रक्खं ण करेज्जा उवट्ठावणं, दससुवि दिसासु रक्खं काऊणं दुवालसहिं भावणाहिं अभावियाहिं सोविज्जा पणुवीसं आयंबिलाणि, एक्कं निदं मोऊणं पडिबुद्धे ईरियं पडिक्कमेत्ताणं पडिक्कमणकालं जाव सज्झायं न करेज्जा दुवालसं, पसुत्ते दुसुमिणं वा कुसुमिणं वा उग्गहेज्जा सएण ऊसासाणं काउस्सगं, रयणीए छीएज्ज वा खासेज्ज वा फलहगपीढगदंडगेण वा खुडुक्कगं पउरिया खमणं, दिया वा राओ वा हासखेइडकंदप्पणाहवायं करेज्जा उवट्ठावणं, एवं जे णं भिक्खू सुत्ताइक्कमेणं कालाइक्कमेणं आवासगं कुव्वीया तस्स णं कारणिगस्स मिच्छउक्कडं गोयमा ! पायच्छित्तं उवइसेज्जा, जे य णं अकारणिगे तेसिं तु णं जहाजोगं चउत्थाइ उवएसे, जे णं भिक्खू सद्धे करेज्जा सद्धे उवइसेज्जा सद्धे गाढागाढसद्धे य सव्वत्थ पइपयं पत्तेयं सव्वपएसुं संबज्झावेयव्वे, एवं जे णं भिक्खू आउकायं वा तेउकायं वा इत्थीसरीरावयवं वा संघट्टेज्जा नो णं परिभुंजेज्जा से णं तस्स पणुवीसं आयंबिलाणि उवइसेज्जा, जे उण परिभुंजेज्जा से णं दुरंतपंतलक्खणे अदट्ठव्वे महापावकम्मे पारंचिए, अहा णं महातवस्सी हवेज्जा सत्तरिं मासखमणाणं सयरिं अब्बमासखमणाणं सयरिं दुवालसाणं सयरिं दसमाणं सयरिं अट्ठमाणं सयरिं छट्ठाणं सयरिं चउत्थाणं सयरिं आयंबिलाणं सयरिं एगट्ठाणाणं सयरिं सुद्धायामेगासणाणं सयरिं निव्विगइयाणं जाव णं अणुलोमपडिलोमेणं निदिसेज्जा, एवं च पायच्छित्तं जे य णं भिक्खू अविस्संतो समणुट्टेज्जा से णं आसण्णपुरक्खडे नेये । ८। से भयवं ! इणमो सयरिं सयरिं अणुलोमपडिलोमेणं केवइयं कालं जाव समणुट्ठिहिइ ?, गोयमा ! जाव णं आयारमगं वा (ठा) एज्जा, भयवं ! उड्ढं पुच्छा, गोयमा ! उड्ढं केई समणुट्टेज्जा केई णो समणुट्टेज्जा, जे णं समणुट्टेज्जा से णं वंदे से णं पुज्जे से णं दट्ठव्वे से णं सुपसत्थसुमंगले सुगहीयणामधेज्जे तिण्हंपि लोगाणं वंदणिज्जेत्ति, जे णं तु णो समणुट्टे से णं पावे से णं महापावे से णं महापावपावे से णं दुरंतपंतलक्खणे जाव णं अदट्ठव्वेत्ति । ९। जया णं गोयमा ! इणमो पच्छित्तसुत्तं वोच्छिज्जिहिइ तया णं चंदाइच्चगहरिक्खतारगाणं सत्त अहोरत्ते तेयं णो विफुरेज्जा । १०। इमस्स णं वोच्छेदे गोयमा ! कसिणसंजमस्स अभावो, जओ णं सव्वपावपणिट्ठवगे चेयं पच्छित्ते, सव्वस्स णं तवसंजमाणुट्ठाणस्स पहाणमंगे परमविसोहीपए, पवयणस्सावि णं णवणीयसारभूए पन्नत्ते । ११। इणमो सव्वमवि पायच्छित्ते गोयमा ! जावइयं एगत्थ संपिडियं हवेज्जा तावइयं चेव एगस्स णं गच्छाहिवइणो मयहरपवत्तणीए य चउगुणं उवइसेज्जा, जओ णं सव्वमवि एसिं पयंसियं हवेज्जा, अहा णमिमे चेव पमायं संगच्छेज्जा तओ अन्नेसिं संते धीबलवीरिय (ए) सुट्ठतरागमब्भुज्जमं ह (हा) वेज्जा, अहा णं किंचि सुमहंतमवि तओऽणुट्ठाणमब्भुज्जमेज्जा ता णं न तारिसाए धम्मसद्धाए, किं तु मंदुच्छाहे समणुट्टेज्जा, भग्गपरिणामइस य निरत्थगमेव कायकेसे, जम्हा एयं तम्हा उ अचिंताणंतनिरणुबंधिपुत्तपन्नभारेणं संभु (जु) ज्जमाणेवि साहुणो न संजुज्जंति, एवं च

सव्वमवि गच्छाहिवइयादीणं दोसेणेव पवत्तेज्जा, एणं पवुच्चइ गोयमा ! जहा णं गच्छाहिवइयाईणं इणमो सव्वमवि पच्छित्तं जावइयं एगत्थ संपिडियं हवेज्जा तावइयं चेव चउग्गुणं उवइसेज्जा । १२ । से भयवं ! जे णं गणी अप्पमादी भवेत्ताणं सुयाणुसारेणं जहुत्तविहाणेहिं चेव सययं अहन्निसं गच्छं न सारवेज्जा तस्स किं पायच्छित्तमुवइसिज्जा ?, गोयमा ! अप्पउत्ती पारंचियं उवइसेज्जा, से भयवं ! जस्स उण गणिणो सव्वपमायालंबणविप्पमुक्कस्सावि णं सुयाणुसारेणं जहुत्तविहाणेहिं चेव सययं अहन्निसं गच्छं सारवेमाणस्सं उ केई तहाविहे दुट्ठसीले न सम्मग्गं समायरेज्जा तस्सवि किं पच्छित्तमुवइसेज्जा ?, गोयमा ! उवइसेज्जा, से भयवं ! केणं अट्ठेणं ?, गोयमा ! जओ णं तेणं अपरिक्खियगुणदोसे निक्खमाविए हवेज्जा एणं, से भयवं ! किं तं पायच्छित्तमुवइसेज्जा ?, गोयमा ! जे णं एवंगुणकलिए गणी से णं जया एवंविहं पावसीलं गच्छं तिविहंतिविहेणं वोसिरित्ताणं आयहियं नो समणुट्ठेज्जा तया णं संघबज्झे उवइसेज्जा, से भयवं ! जया णं गणिणा गच्छे तिविहेणं वोसिरिए हवेज्जा तया णं ते गच्छे आदरेज्जा ?, जइ संविग्गे भवेत्ताणं जहुत्तं पच्छित्तमणुचरेत्ता अन्नस्स गच्छाहिवइणो उवसंपज्जित्ताणं सम्मग्गमणुसरेज्जा तओ णं आयरेज्जा, अहा णं सच्छंदत्ताए तहेव चिट्ठे तओ णं चउव्विहस्सावि समणसंघस्स बज्झं तं गच्छं णो आयरेज्जा । १३ । से भयवं ! जया णं से सीसे जहुत्तसंजमकिरियाए वट्ठति तहाविहे य केई कुगुरु तेसिं दिक्खं परूवेज्जा तया णं सीसा किं समणुट्ठेज्जा ?, गोयमा ! घोरवीरतवसंजमं, से भयवं कहं ?, गोयमा ! अन्नगच्छे पविसेत्ताणं, तस्स संतिणं सिरिगारेणं अलिहिए समाणे अन्नगच्छेसुं पवेसमेव ण लभेज्जा तया णं किं कुव्विज्जा ?, गोयमा ! सव्वपयारेहिं णं तं तस्स संतियं सिरियारं फुसावेज्जा, से भयवं ! केण पयारेणं तं तस्स संतियं सिरियारं सव्वपयारेहिं णं फुसियं हवेज्जा ?, गोयमा ! अक्खरेसुं, से भयवं ! किं णामे ते अक्खरे ?, गोयमा ! जहा णं अपडिगाहे कालकालंतरेसुंपि अहं इमस्स सीसाणं वा सीसणीगाणं वा, से भयवं ! जया णं एवंविहे अक्खरे ण पयादी ?, गोयमा ! जया णं एवविहे अक्खरे ण पयादी तया णं आसन्नपावयणीणं पकहित्ताणं चउत्थादीहिं समक्कमित्ताणं अक्खरे दावेज्जा, से भयवं ! जया णं एणं पयारेणं से णं कुगुरु अक्खरे ण पदेज्जा तया णं किं कुज्जा ?, गोयमा ! जया णं एणं पयारेणं से णं कुगुरु अक्खरे नो पयच्छे तया णं संघबज्झे उवइसेज्जा, से भयवं ! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ ?, गोयमा ! सुट्ठ पयट्ठे इणमो महामोहपासे गेहपासे तमेव विप्पजहित्ताणं अणेगसारीरिगमणोसमुत्थचउगइसंसारदुक्खभयभीए कहकहवि मोहमिच्छत्तादीणं खओवसमेणं सम्मग्गं समोवलभित्ताणं निव्विन्नकामभोगे निरणुबंधं पुन्नमहिज्जे, तं च तवसंजमाणुट्ठाणेणं, तस्सेव तवसंजमकिरियाए जाव णं गुरु सयमेव विग्घं पयरे अहा णं परेहिं कारवे कीरमाणे वा समणुवेक्खे सपक्खेण वा परपक्खेण वा ताव णं तस्स महाणुभागस्स साहुणो संतियं विज्जमाणमवि धम्मवीरियं पणस्से जाव णं धम्मवीरियं पणस्से ताव णं जे पुन्नभागे आसन्नपुरक्खडे चेव सो पणस्से, जइ णं णो समणलिंगं विप्पजहे ताहे जे एवंगुणोववए से णं तं गच्छमुज्झिय अन्नं गच्छं समुप्पयाइ, तत्थवि जाव णं संपवेसं ण लभे ताव णं कयाइ उण अविहीए पाणे पयहेज्जा कयाइ उण मिच्छत्तभावं गच्छिय परपासंडियमासएज्जा कयाइ उण दाराइसंगहं काऊणं अगारवासे पविसेज्जा अहा णं से ताहे महातवस्सी भवेत्ताणं पुणो अतवस्सी होऊणं परकम्मकरे हवेज्जा जाव णं एयाइं न हवन्ति ताव णं एगंतेणं वुडिढं गच्छे मिच्छत्ततमे जाव णं मिच्छत्ततमंधीकए बहुजणनिवहे दुक्खेणं समणुट्ठेज्जा दुग्गइनिवारए सोक्खपरंपरकारए अहिंसालक्खणसमणधम्मे, जाव णं एयाइं भवन्ति ताव णं तित्थस्सेव वोच्छित्ती, ताव णं सुदूरववहिए परमपए, जाव णं सुदूरववहिए परमपए ताव णं अचंतसुदुक्खिए चेव भव्वसत्तसंघाए पुणो चउगईए संसरेज्जा, एणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ गोयमा ! जहा णं जे णं एणेव पयारेणं कुगुरु अक्खरे णो पएज्जा से णं संघबज्झे उवइसेज्जा । १४ । से भयवं ! केवइएणं कालेणं पहे कुगुरु भविहिति ?, गोयमा ! इओ य अद्धतेरसणहं वाससयाणं साइरेगाणं समइक्कंताणं परओ भविंसु, से भयवं ! केणं अट्ठेणं ?, गोयमा ! तक्कालं इड्ढीरससायगारवसंगए ममीकारअहंकारग्गीए अंतो संपज्जलंतबोदी अहमहंतिकयमाणसे अमुणियसमयसब्भावे गणी भविंसु, एणं अट्ठेणं, से भयवं ! किणं सव्वेऽवी एवंविहे तक्कालं गणी भवींसु ?, गोयमा ! एगंतेणं नो सव्वे, केई पुण दुरंतपंतलक्खणे अदट्ठव्वे एगाए जणणीए जमगसमगं पसूए निम्मेरे पावसीले दुज्जायजम्मे सुरोदपयंडाभिग्गहियदूरमहामिच्छद्दिट्ठी भविंसु, से भयवं ! कहं ते समुवलक्खेज्जा ?, गोयमा ! उस्सुत्तउम्मग्गपवत्तणुदिसणअणुमइपच्चएण । १५ । से भयवं ! जे

णं गणी किंचियावस्सगं पमाएज्जा ?, गोयमा ! जे णं गणी अकारणिगे किंची खणमेगमवि पमाए से णं अवंदे उवइसेज्जा, जे णं तु सुमहाकारणिगेवि संते गणी खणमेगमवी ण किंचि णिययावस्सगं पमाए से णं वंदे पूए दट्ठवे जाव णं सिद्धे बुद्धे पारगए खीणद्वकम्ममले नीरए उवइसेज्जा, सेसं तु महया पबंधेणं सत्थाणे चेव भाणिहिइ । १६। 'एवं पच्छित्तविहिं, सोऊण णाणुचिद्धती । अदीणमणो, जुंजइ य जहथामं, जे से आराहेगे भणिए ॥ २०॥ जलजलणदुट्ठसावयचोरनरिंदाहियोगिणीण भए । तह भूयजक्खरक्खसखुद्वपिसायाण मारीणं ॥ २१॥ कलिकलहविग्घरोहगकंताराडइसमुद्धमज्जे य । दुच्चितिय अवसउणे संभरियव्वा वट्ठइ इमा विज्जा ॥ २२॥ पअस्एइजण- आमदेणउज्अन्णज्झाण- इउम्मएटइमत्तइवइ- कमउणआहइएहुइमपव्वाण- आगउइहअणहरउचउइहम्- ममहमुउअणउम्वइदएउ- आणअमचउणहम्इम्- सुखगक्अल्अमघएहपइसस्अमचउ (प्रत्यंतरे पआएहइंजन्अमइन्उज्मन्इन्इउमम्- एहइमत्तइवइक्कम्उन्- आहइएहइमपव्वान् आगओहइअरपहर- उचउदुइम्महसउउ- अणउमथइटए- ओअन्अमत्तउए- हमइम्वधस्इखकअ- उल्अमथएहवइसम्अमत्तउ) एयाए पवरविज्जाए विहीए अत्ताणं समहिमंतिऊणं इमेए सत्तक्खरे उत्तमंगोभयखंधकुच्छीचलणतलेसु संणिसेज्जा तंजहा अउम् उत्तमंगे क्उ वामखंधगीवाए रउवामकुच्छीए क्उ वामचलणयले ल्ए दाहिणचलणयले स्वआ दाहिणकुच्छीए हआ दाहिणखंधगीवाए । १७। 'दुसुमिणदुन्निमित्ते गहपीडुवसग्गमारिरिद्धभए । वासासणिविज्जूए वायारिमहाजणकिरोहे ॥ २३॥ जं चउत्थि भयं लोगे, तं सव्वं निदले इमाए विज्जाए । सत्थपहे (सट्ठ (ब्झ) झणहे मंगलयरे पावहरे सयलवरऽक्खयसोक्खदाई काउमिमे) पच्छित्ते, जइ णं तु ण तब्भवे सिज्जे ॥ २४॥ ता लहिरुण विमाणं (गयं) सुकुलुप्पत्तिं दुयं च पुण बोहिं । सोक्खपरंपरणं सिज्जे कम्मद्वबंधरयमलविमुक्के ॥ २५॥ गोयमोत्ति बेमि । से भयवं ! किं प (ए) याणुमेत्तमेव पच्छित्तविहाणं जेणेवमाइस्से ?, गोयमा ! एयं सामन्नेणं दुवालसण्ह कालमासाणं पइदिणमहन्निसाणुसमयं पाणोवरमं जाव सबालवुडढसेहमयहररायणियमाईणं, तहा य अपडिवायमहोऽवहिमणपज्जवनाणीउ छउमत्थतित्थयराणं एगंतेणं अब्भुट्ठाणारिहावस्सगसंबंधियं चेव सामन्नेणं पच्छित्तं समाइट्ठं, नो णं एयाणुमेत्तमेव पच्छित्तं, से भयवं ! किं अपडिवायमहोऽवहीमणपज्जवनाणी छउमत्थवीयरगे सयलावस्सगे समणुट्ठीया ?, गोयमा ! समणुट्ठीया, न केवलं समणुट्ठीया जमगसमगमेवाणवरयमणुट्ठीया, से भयवं ! कहं ?, गोयमा ! अचित्तबलवीरियबुद्धिनाणाइसयसत्तीसामत्थेणं, से भयवं ! केणं अट्ठेणं ते समणुट्ठीया ?, गोयमा ! मा णं उस्सुत्तुम्मग्गपवत्तणं मे भवउत्तिकाऊणं । १८। से भयवं ! किं तं सविसेसं पायच्छित्तं जाव णं वयासी ?, गोयमा ! वासारत्तियं पंथगामियं वसहिपारिभोगियं गच्छायारमइक्कमणं संघायारमइक्कमणं गुत्तीभेयपयरणं सत्तमंडलीधम्माइक्कमणं अगीयत्थगच्छपयाणजायं कुसीलसंभोगजं अविहीए पव्वज्जादाणोवट्ठावणाजायं अउग्गस्स सुत्तत्थोभयपण्णवणजायं अणाणयणिक्कऽक्खरवियरणाजायं देवसियं राइयं पक्खियं मासियं चउमासियं संवच्छरियं एहियं पारलोइयं मूलगुणविराहणं उत्तरगुणविराहणं आभोगाणाभोगयं आउट्ठिपमायदप्पकप्पियं वयसमणधम्मसंजमतवनियमकसायदंडगुत्तीयं मयभयगारवइंदियजं वसणाइकरोदट्ठज्झणरागदोसमोहमिच्छत्तदट्ठकूरज्झवसायसमुत्थं ममत्तमुच्छापरिग्गहारंभजं असमिइत्तपट्ठीमंसाभित्तधम्मंतरायसंतावुव्वेवगासमाहाणुप्पइयागं संखाईया आसायणा अन्नयरासायणयं पाणवहसमुत्थं मुसावायसमुत्थं अदत्तादाणगहणसमुत्थं मेहुणसेवणासमुत्थं परिग्गहकरणसमुत्थं राइभोयणसमुत्थं माणसियं वाइयं काइयं असंजमकरणकारवणअणुमइसमुत्थं जाव णं णाणदंसणचारित्ताइयारसमुत्थं, किं बहुणा ?, जावइयाइं तिगालचिइवंदणादओ पायच्छित्तट्ठाणाइं पन्नत्ताइं तावइयं च पुणो विसेसेण गोयमा ! असंखेयहा पन्नविज्जंति (अ-ओ) एवं संधारेज्जा जहा णं गोयमा ! पायच्छित्तसुत्तस्स णं संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जाओ संगहणीओ संखिज्जाइं अणुओगदाराइं संखेज्जे अक्खरे अणंते पज्जवे जाव णं दंसिज्जंति उवदंसिज्जंति आघविज्जंति पन्नविज्जंति परुविज्जंति कालाभिग्गहत्ताए दव्वाभिग्गहत्ताए खेत्ताभिग्गहत्ताए भावाभिग्गहत्ताए जाव णं आणुपुव्वीए अणाणुपुव्वीए जहाजोगं गुणठाणेसुंति बेभि । १९। से भयवं ! एरिसे पच्छित्तबाहुले से भयवं ! एरिसे पच्छित्तसंघट्टे से भयवं ! एरिसे पच्छित्तसंगहणे अत्थि केई जे णं आलोइत्ताणं निदिताणं गरहित्ताणं जाव णं अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तमणुचरित्ताणं सामन्नमाराहेज्जा पवयणमाराहिज्जा जाव णं आयहियट्ठयाए उवसंपज्जित्ताणं सकज्जं तमट्ठं आराहेज्जा ?, गोयमा ! णं चउव्विहं आलोयणं

विंदा, तंजहा=नामालोयणं ठवणालोयणं दव्वाल्लोयणं भावाल्लोयणं, एते चउरोऽवि पए अणेगहावि चउधा जोइज्जंति, तत्थ ताव समासेण णामालोयणं नाममेत्तेणं, ठवणालोयणं पोत्थयाइसुमालिहियं, दव्वाल्लोयणं नाम जं आलोएत्ताणं असढभावत्ताए जहोवइद्वं पायच्छित्तं नाणुचिट्ठे, एते तओऽवि पए एगंतेणं गोयमा ! अपसत्थे, जे णं से चउत्थं भावाल्लोयणं नाम ते णं तु गोयमा ! आलोएत्ताणं निदिताणं गरहिताणं पायच्छित्तमणुचरित्ताणं जाव णं आयहियद्वाए उवसंपज्जित्ताणं सकज्जुत्तममद्वं आराहेज्जा, से भयवं ! कयरे णं से चउत्थे पए ?, गोयमा ! भावाल्लोयणं, से भयवं ! किं तं भावाल्लोयणं ?, गोयमा ! जे णं भिक्खू एरिसे संवेगवेरग्गए सीलतवदाणभावणचउखंधसुसमणधम्ममाराहणेकंतरसिए मयभयगारवादीहिं अच्चंतविप्पमुक्के सब्बभावभावंतरेहिं णं नीसल्ले आलोइत्ताणं विसोहिपयं पडिगाहिताणं तहत्ति समणुद्वीया सव्वुत्तमं संजमकिरियं समणुपालिज्जा ॥२०॥ तंजहा- 'कयाइं पावाइं ईसाहिं, जे हिअट्ठी ण बज्झए । तेसिं तित्थयरवयणेहिं, सुद्धी अम्हाण कीरओ ॥६॥ परिचिच्चाणं तयं कम्मं, घोरसंसारदुक्खदं । मणोवयकायकिरियाहिं, सीलभारं धरेमिऽहं ॥७॥ जह जाणइ सब्बन्नू, केवली तित्थंकरे । आयरिए चारित्तइडे, उवज्झायसुसाहुणो ॥८॥ जह पंच लोयपाले य, सत्ता धम्मे य जाणते । तहाऽऽलोएमिऽहं सव्वं, तिलमित्तं पि न निण्हवं ॥९॥ तत्थेव जं पायच्छित्तं, गिरिवरगुरूयं पि आवए । तमणुच्चरेमि दे सुद्धिं, जह पावे झत्ति विलिज्जए ॥३०॥ मरिऊणं नरयतिरिएसुं, कुंभीपाएसु कत्थई । कत्थइ करवत्तजंतेहिं, कत्थइ भिन्नो उ सूलिए ॥१॥ घंसणं घोलणं कहिमि, कत्थइ छेयणभेयणं । बंधणं लंघणं कहिमि, कत्थइ दमणमंकणं ॥२॥ णत्थणं वाहणं कहिमि, कत्थइ वहणतालणं । गुरूभारक्कमणं कहिचि, कत्थइ जमलारविंधणं ॥३॥ उरपट्ठिअट्ठिकडिभंगं, प्रवसो तण्हं छुहं । संतावुव्वेगदारिहं, वीसहीहामि पुणोविहं ॥४॥ ता इहहं चेव सव्वं पि, नियदुच्चरियं जहट्ठियं । आलोइत्ता निदिता गरहिता, पायच्छित्तं चरित्तुणं ॥५॥ निद्वहामि पावयं कम्मं, झत्ति संसारदुक्खयं । अब्भुट्ठित्ता तवं घोरं, धीरवीरपरक्कमं ॥६॥ अच्चंतकडयडं कट्ठं, दुक्करं दुरणुच्चरं । उग्गुग्गयरं जिणाभिहियं, सयलकल्लाणकारणं ॥७॥ पायच्छित्तनिमित्तेणं, पारसं थारकारयं । आयरेणं तवं चरिमो, जेणुभं सोक्खई तणुं ॥८॥ कसाए विहलीकट्ठुं, इंदिए पंच निग्गहं । मणोवईकायदंढाणं, निग्गहं धणियमारभे ॥९॥ आसवदारे निरुंभेत्ता, चत्तमयच्छरअमरिसो । गयरागदोसमोहोऽहं, नीसंगो निप्परिग्गहो ॥१०॥ निम्ममो निरहंकारो, सरीरअच्चंतनिप्पिहो । महव्वयाइं पालेमि, निरइयांराइं निच्छिओ ॥१॥ हद्धी धी हा अहन्नोऽहं, पावो पावमती अहं । पाविट्ठो पावकम्मोऽहं पावाहमाहमयरोऽहं ॥२॥ कुसीलो भट्ठचारिती, भिल्लसूणोवमो अहं । चिलातो निक्खिवो पावी, कूरकम्मीह निग्घिणो ॥३॥ इणमो दुल्लभं लभित्तं, सामन्नं नाणदंसणं । चारित्तं वा विराहेत्ता, अणालोइयनिदियागरहियअकयपच्छित्तो, वावज्जंतो जई अहं ॥४॥ ता निच्छयं अणुत्तरे, घोरे संसारसागरे । निबुड्डो भवकोडीहिं, समुत्तरंतो ण वा पुणो ॥५॥ ता जा जरा ण पीडेइ, वाही जाव न केई मे । जाविदिया न हायंति, ताव धम्मे चरेत्तुऽहं ॥६॥ निद्वहमइरेण पावाइं, निदिउं गरहिउं चिरं । पायच्छित्तं चरित्ताणं, निक्कलंको भवामिऽहं ॥७॥ निक्कलुसनिक्कलंकाणं, सुद्धभावाण गोयमा ! । तन्नो नद्वं जयं गहियं, सुदूरमवि परिवलित्तुणं ॥८॥ एवमालोयणं दाउं, पायच्छित्तं चरित्तुण । कलुसकम्ममलमुक्कं, जइ णो सिज्झिज्ज तक्खणं ॥९॥ ता वए देवलोगंमि, निच्चुज्जोए सयंपहे । देवदुदुहिनिग्घोसे, अच्छरासयसंकुले ॥१०॥ तओ चुया इहागंतुं, सुकुलूपत्तिं लभेत्तुणं । निव्विन्नकामभोगा य, तवं काउं मया पुणो ॥१॥ अणुत्तरविमाणेसुं, निवसिऊणेहमागया । हवंति धम्मतित्थयरा, सयलतेलोकबंधवा ॥२॥ एस गोयम ! विन्नेये, सुपसत्थे चउत्थे पए । भावाल्लोयणं नाम, अक्खयसिवसोक्खदायगो ॥३॥ त्ति बेमि, से भयवं ! एरिसं पप्प, विसोहिं उत्तमं वरं । जे पमाया पुणो असई, कत्थइ चुक्के खल्लिज्ज वा ॥४॥ तस्स किं भवे सोहिपयं, सुविसुद्धं चेव लक्खिए । उयाहु णो समुल्लिक्खे ?, संसयमेयं वियागरे ॥५॥ गोयमा ! निदिउं गरहिउं सुइरं, पायच्छित्तं चरित्तुणं । निक्खारियवत्थमिवाएण खंपणं जो न रक्खए ॥६॥ सो सुरहिगंधुब्भिण्णगंधोदयविमलनिम्मलपवित्ते । मज्जिअ खीरसमुद्धे, असुईगइडाए जइ पडइ ॥७॥ एता पुण तस्स सामग्गी, (सव्वकम्मक्खयंकरा) । अह होज्ज देवजोग्गा, असुईगंधं खु दुद्धरिसं ॥८॥ एवं कयपच्छित्ते, जे णं छज्जीवकायवयनियमं । दंसणनाणचरित्तं, सीलंगे वा भवंगे वा ॥९॥ कोहेण व माणेण व, मायालोभे कसायदोसेणं । रागेण पओसेण व, (अन्नाण) मोहमिच्छत्तहासेणं (वावि) ॥१०॥ (भएणं कंदप्पदप्पेणं) एएहि य अन्नेहि य गारवमालंबणेहिं जो खंडे । सो सव्वद्विमाणे, पत्ते अत्ताणगं निरए ॥१॥ (खिवे) से भयवं ! किं आया संरक्खेयव्वो उयाहु छज्जीवनिकायमाइसंजमे संरक्खेयव्वो ?, गोयमा ! जे णं छक्कायसंजमं रक्खे से णं

अणंतदुखपयायगाउ दोग्गइगमणाउ अत्ता संरक्खे, तम्हा छक्कायाइसंजममेव रक्खेयव्वं होइ ॥२१॥ से भयवं ! केवतिए असंजमट्टाणे पन्नत्ते ? , गोयमा ! अणेगे असंजमट्टाणे पन्नत्ते, जाव णं कायासंजमट्टाणा, से भयवं ! कयरे णं से कायासंजमट्टाणे ? , गोयमा ! कायासंजमट्टाणे अणेगहा पन्नत्ता, तंजहा-
 'पुढविदगागणिवाऊवणप्फई तह तसाण विविहाणं । हत्थेणवि फरिसणया वज्जेज्जा जावजीवंपि ॥२॥ सीउण्हखारखत्ते अग्गीलोणूस अंबिले णेहे । पुढवादीण परोप्पर खयंकरे वज्झसत्थेए ॥३॥ ण्हाणुम्मइणसोभणहत्थंगुलिअक्खिसोयकरणेणं । आवीयते अणंते आऊजीवे खयं जंति ॥४॥ संधुक्कणजलणुज्जालणेण उज्जोयकरणमादीहिं । वीयणफूमणउब्भावणेहिं सिहिजीवसंघायं ॥५॥ जाइ खयं अन्नेऽविय छज्जीवनिकायमइणए जीवे । जलणो सुद्धुइओवि हु संभक्खइ दसदिसाणं च ॥६॥ वीयणगतालियं टयचामरउक्खेवहत्थतालेहिं । धावणडेवणलंघणऊसासाईहिं वाऊणं ॥७॥ अंकूरकुहरकिसलयपवालपुप्फफलकंदलाईणं । हत्थफरिसेण बहवे जंति खयं वणप्फई जीवे ॥८॥ गमणागमणनिसीयणसुयणुट्टाणअणुवउत्तयपमत्तो । वियलिति बितिचउपंचेदियाण गोयम ! खयं नियमा ॥९॥ पाणाइवायविरई सिवफलया गिण्हिऊण ता धीमं । मरणावयंमि पत्ते मरेज्ज विरइं न खंडेज्जा ॥१०॥ अलियवयणस्स विरइं सावज्जं सच्चमवि न भासिज्जा । परदव्वहरणविरइं करेज्ज दिन्नेवि मा लोभं ॥१॥ धरणं दुद्धरबंभवयस्स काउं परिग्गहच्चायं । राईभोयणविरइं पंचिदियनिग्गहं विहिणा ॥२॥ अन्ने य कोहमाणा रागदोसे य (आ) लोयणं दाउं । ममकारअहंकारे पयहियव्वे पयत्तेणं ॥३॥ जह तवसंजमसज्झायझाणमाईसु सुद्धभावेहिं । उज्जमियव्वं गोयम ! विज्जुलयाचंचले जीवे ॥४॥ किं बहुणा ? गोयमा ! एत्थं, दाऊणं आलोयणं । पुढविकायं विराहेज्जा, कत्थ गंतुं स सुज्झिही ? ॥५॥ किं बहुणा गोयमा ! एत्थं, दारूणं आलोयणं । बाहिरपाणं तहिं जम्मे, जे पिए कत्थ सुज्झिही ? ॥६॥ किं० । उण्हवइ जालाई जाओ, फुसिओ वा कत्थ सुज्झिही ? ॥७॥ किं० । वाउकायं उदीरेज्जा, कत्थ गंतूण सुज्झिही ? ॥८॥ किं० । जो हरियतणं पुप्फं वा, फरिसे कत्थ स सुज्झिही ? ॥९॥ किं० । अक्कमई बीयकायं जो, कत्थ गंतुं स सुज्झिही ? ॥१०॥ किं० । वियलेंदी (बितिचउ) पंचिदिय परियावे, जो कत्थ स सुज्झिहि ? ॥१॥ किं० । छक्काए जो न रक्खेज्जा, सुहुमे कत्थ स सुज्झिही ? ॥२॥ किं बहुणा गोयमा ! एत्थं, दाऊणं आलोयणं । तसथावर जो न रक्खे, कत्थ गंतुं स सुज्झिही ? ॥३॥ आलोइयनिदियगरहिओवि कयपायच्छित्तणीसल्लो । उत्तमठाणंमि ठिओ पुढवारंभं परिहरिज्जा ॥४॥ आलोइ० । उत्तमठाणंमि ठिओ, जोईए मा फुसावेज्जा ॥५॥ आलोइ० संविग्गो । उत्तमठाणंमि ठिओ, मा वियावेज्ज अत्ताणं ॥६॥ आलोइ० संविग्गो । छिन्नंपि तणं हरियं, असई मणगं मा फरिसे ॥७॥ आलोइय० संविग्गो । उत्तमठाणंमि ठिओ, जावज्जीवंपि एतेसिं ॥८॥ बेदियतेदियचउरोपंचिदियाण जीवाणं । संघट्टणपरियावणकिलावणोद्वण मा कासी ॥९॥ आलोइ० संविग्गो । उत्तमठाणंमि ठिओ, सावज्जं मा भणिज्जासु ॥१०॥ आलोइय० संविग्गो । लोयत्थे णवि भूई गहिया गिहिउक्खिविउ दिन्ना ॥१॥ आलोइ० नीसल्लो । जे इत्थी संलविज्जा, गोयम ! कत्थ स सुज्झिही ? ॥२॥ आलोइय० संविग्गो । चोइसधम्मवगरणे, उड्डं मा परिगहं कुज्जा ॥३॥ तेसिपि निम्ममत्तो अमुच्छिओ अगडिढओ दढं हविया । अह कुज्जा उ ममत्तं ता सुद्धी गोयमा ! नत्थि ॥४॥ किं बहुणा ? गोयमा ! एत्थं, दाऊणं आलोयणं । रयणीए आविए पाणं, कत्थ गंतुं स सुज्झिही ? ॥५॥ आलोइयनिदियगरहिओवि कयपायच्छित्तनीसल्लो । छाइक्कमे ण रक्खे जो, कत्थ सुद्धिं लभेज्ज सो ? ॥६॥ अपसत्थे य जे भावे, परिणामे य दारूणे । पाणाइवायस्स वेरमणे, एस पढमे अइक्कमे ॥७॥ तिब्बरागा य जा भासा, निट्ठुरखरफरूसककसा । मुसावायस्स वेरमणे, एस बीए अइक्कमे ॥८॥ उवग्गहं अजाइत्ता, अचियत्तंमि उवग्गहे । अदत्तादाणस्स वेरमणे, एस तइए अइक्कमे ॥९॥ सद्दा रूवा रसा गंधा, फासाणं पवियारणे । मेहुणस्स वेरमणे, एस चउत्थे अइक्कमे ॥१०॥ इच्छा मुच्छा य गेही य, कंखा लोभे य दारूणे । परिग्गहस्स वेरमणे, पंचमगेसाइक्कमे ॥१॥ अइमत्ताहार होइत्ता, सूरक्खित्तंसि संकिरे । राईभोयणस्स वेरमणे, एस छट्ठे अइक्कमे ॥२॥ आलोइयनिदियगरहिओवि कयपायच्छित्तणीसल्लो । जयणं अयाणमाणो, भवसंसारं भमे जहा सुसढो ॥१०३॥ भयवं ! को उण सो सुसढो ? कयरा वा सा जयणा ? जमजाणमाणस्स णं तस्स आलोइयनिदियगरहिओ (यस्सा) वि कयपायच्छित्तस्सावि संसारं णो विणिट्ठियंति ? , गोयमा ! जयणा णाम अट्टारसण्हं सीलंगसहस्साणं सत्तरसविहस्स णं संजमस्स चोइसण्हं भूयगामाणं तेरसण्हं किरियाठाणाणं सवज्झब्भंतरस्स णं दुवालसविहस्स

तवोऽणुव्वाणस्स दुवालसण्हं भिक्खुपडिमाणं दसविहस्स णं समणधम्मस्स णवण्हं चेव बंभगुत्तीणं अट्ठण्हं तु पवयणमाईणं सत्तण्हं चेव पाणपिडेसणाणं छण्हं तु जीवनिक्कायाणं पंचण्हं तु महव्वयाणं तिण्हं तु चेव गुत्तीणं जाव णं तिण्हमेव सम्महंसणनानाणचरित्ताणं भिक्खू कंतारदुब्भिक्खायंकाईसु णं सुमहासमुप्पन्नेसु अंतोमुहुत्तावसेसकंठगयपाणेसुंणि णं मणसावि उ खंडणं विराहणं ण करेज्जा ण कारवेज्जा ण समणुजाणेज्जा जाव णं नारभेज्जा न समारंभेज्जा जावज्जीवाएत्ति, से णं जयणाए भत्ते से णं जयणाय धुवे से णं जयणाए व दक्खे से णं जयणाए वियाणएत्ति, गोयमा ! सुसढस्स उण महती संकहा परमविम्हयजणणी य । ★★ २२॥

चूलिया पढमा एगंतनिज्जरा, चू १ अ ७ ॥ ★★ से भयवं ! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ ?, तेणं कालेणं तेणं समएणं सुसढनामधेज्जे अणगारेह भूयवं, तेणं च एगेगस्स णं पक्खस्संतो पभूयट्ठाणियाओ आलोयणाओ विदिन्नाओ सुमहंताइं च अच्चंतघोरसुदुक्कराइं पायच्छित्ताइं समणुचिन्नाइं तहावि तेणं वरणं विसोहिपयं न समुवलद्धंति, एतेणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ, से भयवं ! केरिसा उ णं तस्स सुसढस्स वत्तव्वया ?, गोयमा ! अत्थि इह चेव भारहे वासे अवंती णाम जणवओ, तत्थ य संबुक्के नामं खेडगे, तम्मि य जम्मदरिदे निम्मेरे निक्खिवे किविणे णिराणुकंप्पे अइक्कूरे निक्कलुणे नित्तिसे रोदे चंडरोदपयंडदंडे पावे अभिग्गहियमिच्छादिट्ठी अणुच्चरियनामधेज्जे सुज्जसिवे नाम धिज्जाइ अहेसि, तस्स य धूया सुज्जसिरी, सा य परितुलियसयतिहुयणनरनारीगणा लावन्नकंतिदित्तिरूवसोहग्गाइसएणं अणोवमा अत्तग्गा, तीए अन्नभवंतरंमि इणमो हियएण दुच्चितियं अहेसि, जहा णं-सोहणं हवेज्जा जइ णं इमस्स बालगस्स माया वावज्जे तओ मज्झ असवक्कं भवे, एसो य बालगो दुज्जीविओ भवइ ताहे मज्झ सुयस्स रायलच्छी परिणमेज्जति, तक्कम्मदोसेणं तु जायमेत्ताए चेव पंचत्तमुवगया जणणी, तओ गोयमा ! तेणं सुज्जसिवेणं महया किलेसेणं छंदमाराहमाणेणं बहूणं अहिणवपसूयजुवतीणं घराघरिं थन्नं पाऊणं जीवाविया सा बालिया, अहन्नया जाव णं बालभावमुत्तिन्ना सा सुज्जसिरी ताव णं आगयं अमायापुत्तं महारोखं दुवालससंवच्छरियं दुब्भिक्खंति, जाव णं फेट्टाफेट्ठीए जाउमारद्धे सयलेवि णं जणसमूहे, अहऽन्नया बहुदिवसखुहत्तेणं विसायमुवगएणं तेण चित्तियं जहा किमेयं वावाइऊणं समुद्दिसामि किं वा णं इमीए पोग्गलं विक्किणिऊणं चेव अन्नं किंचिवि वणिमगाउ पडिगाहित्ताणं पाणवित्तिं करेमि, णो णमन्ने केई जीवसंधारणोवाए संपयं मे हविज्जति, अहवा हद्धी हा हा ण जुत्तमिणंति, किंतु जीवमाणिं चेव विक्किणामित्ति चित्तिऊणं विक्किया सुज्जसिरी महारिद्धीजुयस्स चोदसविज्जाठाणपारगस्स णं माहणगोविंदस्स गेहे, तओ बहुजणेहिं धिद्धीसद्दोवहओ तं देसं परिचिच्चाणं गओ अन्नदेसंतरं सुज्जसिवो, तत्थावि णं पयट्ठो सो गोयमा ! इत्थेव विन्नाणे जाव णं अन्नेसिं कन्नगाओ अवहरित्ताणं अवहरित्ताणं अन्नत्थ विक्किणिऊणं मेलियं सुज्जसिवेण बहुं दविणजायं, एयावसरंमि उ समइकंते साइरेगे अट्ठसंवच्छरे दुब्भिक्खस्स जाव णं वियलियमसेसविहवं तस्सावि णं गोविंदमाहणस्स, तं च वियाणिऊणं विसायमुवगएणं चित्तियं गोयमा ! तेणं गोविंदमाहणेणं, जहा णं होही संधारकालं मज्झ कुडुंबस्स, नाहं विसीयमाणे बंधवे खणद्धमवि दट्ठूणं सक्कुणोमि, ता किं कायव्वं संपयं अम्हेहित्ति चिंतयमाणस्सेव आगया गोउलाहिवइणो भज्जा खइयगविक्रणणत्थं तस्स गेहे जाव णं गोविंदस्स भज्जाए तंदुल्लमल्लगेणं पडिगाहियाउ चउरो घणविगईमीसखइयगकगोलियाओ, तं च पडिगाहियमेत्तमेव परिभुत्तं डिभेहिं, भणियं च महीयरीए-जहा णं भट्टिदारिगे ! पयच्छाहिं णं तं अम्हाणं तंदुलमल्लगं चिरं वट्टे जेणऽम्हे गोउलं वयामो, तओ समाणत्ता गोयमा ! तीए माहणीए सा सुज्जसिरी जहा णं हला ! तं जम्हा णरवइणा णिसावयं णहियं पेहियं तत्थ जं तं तंदुल्लमल्लगं तं मग्गाहि लहुं जेणाहमिमीए पयच्छामि, जाव ढंढवसिऊणं नीहरिया मंदिरं सा सुज्जसिरी नोवलद्धं तं तंदुलमल्लगं, साहियं च माहणीए, पुणोवि भणियं माहणीए जहा हल्ला ! अमुगं थाममणुदुदुया अन्नेसिऊणमाणेह, पुणोवि पयट्ठा अलिंदगे जाव णं ण पिच्छे ताहे समट्ठिया सयमेव सा माहणी जाव णं तीएवि ण दिट्ठं तं पुण, सुविम्भियमाणसा णिउणमन्नेसिउं पयत्ता, जाव णं पिच्छे गणिगासहायं पढमसुयं पयरिके ओयणं समुद्दिसमाणं, तेणावि पडिदट्ठुं जणणी आगच्छमाणीं चित्तियं अहन्नेणं जहा चलिया अम्हाणं ओयणं अवहरिउकामा पायमेसा, ता जइ इहासन्नमागच्छिही तओऽहमेयं वावाइस्सामित्ति चिंतयंतेणं भणिया दूरास्सन्ना चेव महासट्ठेणं सा माहणी-जहा णं भट्टिदारिगा ! जइ तुमं इहयं समागच्छिहिसि तओ मा एवं तं बोल्लिया जहा णं रो परिकहियं, निच्छयं अहयं ते बावाएस्सामि, एवं च अणिट्ठवयणं सोच्चाणं वज्जासणिहया इव

धसत्ति मुच्छिऊणं निवडिया धरणिवट्टे गोयमा ! माहणित्ति, तओ णं तीए महीयरीए परिवालिऊणं किंचि कालक्खणं वुत्ता सा सुज्जसिरी जहा णं हला ! कन्नगे ! अम्हा णं चिरं वट्टे ता भणसु सिग्घं नियजणणिं जहा णं एह लहुं पयच्छ तुममम्हाणं तंदुलमल्लगं अहा णं तंदुलमल्लगं विप्पणट्ठं तओ णं मुग्गमल्लगमेव पयच्छसु, ताहे पविट्ठा सा सुज्जसिरी अलिंदगे जाव णं दट्ठुणं तमवत्थंतरगयं माहणीं महया हाहारवेणं धाहाविउं पयत्ता सा सुज्जसिरी, तं चायन्निऊणं सह परिवग्गेणं धाइओ सो माहणो महीयरी अ, तओ पवणजलेण आसासिऊणं पट्ठा सा तेहिं जहा भट्टिदारिगे ! किमेयं किमेयंति ?, तीए भणियं-जहा णं मा मा अत्ताणं दरमएणं दीहेणं खावेह, मा मा विगयजलाए सरियाए उब्भेह, मा मा अरज्जुएहिं पासेहिं नियंतिए मज्झ (ज्ज) मोहेणाऽऽणप्पेह, जहा णं किल एइ पुत्ते एसा धूया एस णत्तुगे एसा सुण्हा एस जामाउगे एसा णं माया एस णं जणगे एसो भत्ता एइ णं इट्ठे मिट्ठे पिए कंते सुहीयसयणमित्तबंधुपरिवग्गे इहइं पच्चक्खमेवेयं विविट्ठ अलियमलिया चेव सा बंधवासा, सकज्जत्थी चेव संभयए लोओ, परमत्थओ न केइ सुही, जाव णं सकज्जं ताव णं माया ताव णं जणगे ताव णं धूया ताव णं जामाउगे ताव णं णत्तुगे ताव णं पुत्ते ताव णं सुण्हा ताव णं कंता ताव णं इट्ठे मिट्ठे पिए कंते सुहीसयणजणमित्तबंधुपरिवग्गे, सकज्जसिद्धीविरहेणं तु ण कस्सई काइ माया न कस्सई केइ जणगे ण कस्सई काइ धूया ण कस्सई केइ जामाउगे ण कस्सई केइ पुत्ते ण कस्सई काइ सुण्हा न कस्सई केइ भत्ता ण कस्सई केइ कंता ण कस्सई केइ इट्ठे मिट्ठे पिए कंते सुहीसयणमित्तबंधुपरिवग्गे, जे णं तु पेच्छ पेच्छ मए अणेगोवाइयसउवलद्धे साइरेगणवमासकुच्छीएवि धारिऊणं च अणेगमिट्ठमहुरउसिणतिकख-सुलुसुलियसणिद्धआहारपयाणसिणाणुव्वट्ठणधूयकरणसंवाहण (धण) धन्नपयाणाईहिं णं एमहंतमणुस्सीकए जहा किल अहं पुत्तरज्जंमि पुत्तपुत्तमणोरहा सुहंसुहेणं पणइयणपूरियासा कालं गमीहामि, ता एरिसं एयं वइयरंति, एयं च णाऊण मा धवाईसुं करेह खणद्धमवि अणुं पि पडिबंधं, जहा णं इमे मज्झ सुए संवुत्ते तहा णं गेहे गेहे जे केइ भूए जे केइ वट्ठंति जे केइ भविंसु एए तहा णं एरिसे, सेऽवि बंधुवग्गे केवलं तु सकज्जलुद्धे चेव घडियामुहुत्तपरिमाणमेव कंचि कालं भएज्जा वा, ता भो भो जणा ! ण किंचि कज्जं एतेणं कारिमबंधुसंताणेणं अणंतसंसारघोरदुक्खपदायगेणंति, एगो चेव वाहन्निसाणुसमयं सययं सुविसुद्धासए भयह धम्मं, धम्मं धणं मिट्ठ पिए कंते परमत्थसुही सयणजणमित्तबंधुपरिवग्गे, धम्मे य णं दिट्ठिकरे धम्मे य णं पट्ठिकरे धम्मे य णं बलकरे धम्मे य णं उच्छाहकरे धम्मे य णं निम्मलजसकित्तीपसाहगे धम्मे य णं माहप्पजणगे धम्मे य णं सुट्ठसोक्खपरंपरदायगे से णं सेव्वे से णं आराहणिज्जे से य णं पोसणिज्जे से य णं पालणिज्जे से य णं करणिज्जे से य णं चरणिज्जे से य णं अणुट्ठिज्जे से य णं उवइस्सणिज्जे से य णं कहणिज्जे से य णं भणणिज्जे से य णं पन्नवणिज्जे से य णं कारवणिज्जे से य णं धुवे सासये अक्खए अव्वए सयलसोक्खनिही धम्मे से य णं अलज्जणिज्जे से य णं अउलबलवीरिएसरियसत्तपरक्कमसंजुए पवरे वरे इट्ठे पिए कंते दइए सयलऽसोक्खदारिदसंतावुव्वेगअ-यसऽभक्खाणलंभजरामरणाइअसेसभयनिन्नासगे अणणसरिसे सहाए तेलोक्केक्कसामिसाले, ता अलं सुहीसयणजणमित्तबंधुगणधणधन्नसुवण्णहिरण्ण-रयणोहनिहीकोससंचयाइ सक्रचावविज्जुलयाडोवचंचलाए सुमिणिंदजालसरिसाए खणदिट्ठनट्ठभंगुराए अधुवाए असासयाए संसारवुडिढकारिगाए णिरयावयारहेउभूयाए सोग्गइमग्गविग्घदायगाए अणंतदुक्खपयायगाए रिद्धीए, सुदुल्लहाउ वेलाउ भो धम्मस्स साहणी सम्मदंसणनाणचरित्ताराहणी नीरुत्ताइसामग्गी अणवरयमहन्निसाणुसमएहिं णं खंडाखंडेहिं तु परिसडइ अदढघोरनिट्ठुरासब्भचंडाजरासणिसणिवायसंचुणिणए सयजजरभंडएइव अकिंचिकरे भवइ उ दियहाणुदियहेणं इमे तणू, किसलयदलग्गपरिसंठियजलबिंदुमिवाकंडे निमिसद्धब्भंतरेणेव लहुं टलइ जीविए, अविट्ठत्तस्स परलोगपत्थयणाणं तु निप्फले चेव मणुयजम्मे, ता भो ण खमे तणुयतरेवि ईसिपि पमाए, जओ णं एत्थं खलु सब्बकालमेव समसत्तुमित्तभावेहिं भवेयव्वं, अप्पमत्तेहिं च पंचमहव्वए धारेयव्वे, तंजहा-कसिणपाणाइवायविरती अणलियभासित्तं दंतसोहणमित्तस्सवि अदिन्नस्स वज्जणं मणोवयकायजोगेहिं तु अखंडियअविराहियणवगुत्तीपरिवेढियस्स णं परमपवित्तस्स सब्बकालमेव दुद्धस्वब्भचेरस्स धारणं वत्थपत्तसंजमोवगरणेसुं पि णिम्ममत्तया असणपाणाईणं तु चउव्विहेणेव राईभोयणच्चाओ उग्गमउप्पायणेसणाईसु णं सुविसुद्धपिंडग्गहणं संजोयणाइपंचदोसविरहिणं परिमिएणं काले तिन्ने पंचसमिति विसोहणं तिगुत्तीगुत्तया ईरियासमिईमाईउ भावणाओ अणसणाइतवोवहाराणट्ठाणं

मासाइभिकखुपडिमाउ विचित्ते दव्वाईअभिग्गहे अहो (हा) णं भूमीसयणे केसलोए निप्पडिकम्मसरीरया सव्वक्कालमेव गुरूनिओगकरणं
 खुहापिवासाइपरीसहाहियासणं दिव्वाइउवसग्गविजओ लद्धावलद्धवित्तिया, किं बहुणा ?, अच्चंतदुव्वहे भो वहियव्वे अवीसामंतेहिं चेव सिरिमहापुरिसवूढे
 अट्टारससीलंगसहस्सभारे तरियव्वे अ भो बाहाहिं महासमुद्धे अविसाईहिं च णं भो भक्खियव्वे णिरासाए वालुयाकवल्ले परिसक्केयव्वं च भो
 णिसियसुतिक्खदारूणकरवालधाराए पायव्वा य णं भो सुहुयहुयवहजालावली भरियव्वे णं भो सुहुमपवणकोत्थलगे गमियव्वं च णं भो गंगापवाहपडिसोएणं
 तोलेयव्वं भी साहसतुलाए मंदरगिरिं जेयव्वे य णं भो एगागिएहिं चेव धीरत्ताए सुदुज्जए चाउरंगे बले विधेयव्वा णं भो परोप्परविवरीयभमंतअट्टचक्कोवरिवामच्छिम्मि
 उंवी (उ धी) उल्लिया गहेयव्वा णं भो सयलतिहुयणविजया णिम्मलजसकित्ती जयपडागा, ता भो भो जणा एयाओ धम्माणट्ठाणाओ सुदुक्करं णत्थि
 किंचिमन्नंति, 'वुज्झंति नाम भारा ते च्विय वुज्झंति वीसमंतेहिं । सीलभरो अइगुरूओ जावज्जीवं अविस्सामो ॥१॥ ता उज्झिऊण पेम्मं घरसारं पुत्तदविणमाईयं ।
 णीसंगा अविसाई पयरह सव्वुत्तमं धम्मं ॥२॥ णो धम्मस्स भडक्का उक्कचण वंचणा य ववहारो । णिच्छम्मो तो धम्मो मायादीसल्लरहिओ उ ॥३॥ भूएसु जंगमत्तं
 तेसुवि पंचेदियत्तमुक्कोसं । तेसुवि अ माणुसत्तं मणुयत्ते आरिओ देसो ॥४॥ देसे कुलं पहाणं कुले पहाणे य जाइमुक्कोसा । तीए रूवसमिद्धी रूवे य बलं पहाणयरं ॥५॥
 होइ बले चिय जीयं जीए य पहाणयं तु विन्नाणं । विन्नाणे सम्मत्तं सम्मत्ते सीलसंपत्ती ॥६॥ सीले खाइयभावो खाइयभावे य केवलं नाणं । केवलिए पडिपुत्ते पत्ते
 अयरामरो मोक्खो ॥७॥ ण य संसारंमि सुहं जाइजरामरणदुक्खगहियस्स । जीवस्स अत्थि जम्हा तम्हा मोक्खो उवाएओ ॥८॥ आहिंडिऊण सुइरं अणंतहुत्तो हु
 जोणिलक्खेसुं । तस्साहणसामग्गी पत्ता भो भो बहू इण्हिं ॥९॥ तो एत्थ जन्न पत्तं तदत्थ भो उज्जमं कुणह तुरिययं । विबुहजणणिदियमिणं उज्झह संसारअणुबंधं
 ॥१०॥ लहिउं भो धम्मसुइं अणेगभवकोडिलक्खसुविदुलहं । जइ णाणुट्ठह सम्मं ता पुणरवि दुल्लहं होही ॥१॥ लद्धेल्लियं च बोहिं जो णाणुट्ठे अणागयं पत्थे । सो
 भो अन्नं बोहिं लहिही कयरेण मोल्लेणं ? ॥२॥ जाव णं पुव्वजाईसरणपच्चएणं सा माहणी एत्तियं वागरेइ ताव णं गोयमा ! पडिबुद्धमसेसंपि बंधुजणे बहुणागरजणो
 य, एयावसरंमि उ गोयमा ! भणियं सुविदियसोग्गइपहेणं तेणं गोविंदमाहणेणं-जहा णं धिद्धिद्धि वंचिया एयावन्तं कालं, जतो वयं मूढे अहो णं कट्टमन्नाणं
 दुविन्नेयमभागधिज्जेहिं खुद्दसत्तेहिं अदिट्ठघोरूग्गपरलोगपच्चवाएहिं अतत्ताभिणिविदुदुदुदुहिं पक्खवायमोहसंधुकिक्कयमाणसेहिं रागदोसोवहयबुद्धीहिं परं तत्तधम्मं,
 अहो सजीवेणेव परिमुसिए एवइयं कालसमयं, अहो किमेस णं परमप्पा भारियाछलेणासिउ मज्झ गेहे उदाहु णं जो सो णिच्छिओ मीमंसएहिं सव्वन्नू सोच्चिएस
 सूरिए इव संसयतिमिरावहारित्तेण लोगावभासे मोक्खमग्गसंदरिसणत्थं सयमेव पायडीहूए, अहो महाइसयत्थपसाहगाउ मज्झ दइयाए वायाओ, भो भो
 जण्णयत्तविणहुयत्त (२९२) जण्णदेवविस्सामित्तसुमिच्चादओ मज्झ अंगया ! अब्भुट्ठाणारिहा ससुरासुरस्सावि णं जगस्त एसा तुम्ह जणणित्ति, भो भो पुरंदरपभित्तीउ
 खंडिया ! वियारह णं सोवज्झायभारियाओ(ए) जगत्तयाणंदाओ कसिणकिव्विसणिहुहणसीलाओ वायाओ पसन्नोऽज्ज तुम्ह गुरू आराहणेक्कसीलाणं परमप्पबलं
 जजणजायणज्झयणाइणा छक्कम्माभिसंगेणं तुरियं विणिज्जिणेह पंचेदियाणि परिच्चयह णं कोहाइए पावे वियाणेह णं
 अमेज्झाइजंबालपंकपडिपुण्णासुतीकलेवरपवि(वे)समोवणत्तं, इच्चेवं अणेगाहिवेरग्गजणणेहिं सुहासिएहिं वागरंतं चोदसविज्जाठाणपारगं भो गोयमा ! गोविंदमाहणं
 सोऊण अच्चंतं जम्मजरामरणभीरुणो बहवे सप्पुरिसे सव्वुत्तमं धम्मं विमरिसिउं समारद्धे, तत्थ केइ वयन्ति जहा एस धम्मो पवरो, अन्ने भणंति जहा एस धम्मो
 पवरो, जाव णं सव्वेहिं पमाणीकया गोयमा ! सा जातीसरा माहिणित्ति, ताहे तीय संपवक्खायमहिंसोलक्खियमसंदिद्धं खंताइदसविहं समणधम्मं दिट्ठंतहेऊहिं च
 परमपच्चयं विणीयं तेसि तु, तओ य ते तं माहणिं सव्वन्नूमिति काऊणं सुरइयकरकमलंजलिणो सम्मं पणमिऊणं गोयमा ! तीए माहणीए सद्धिं अदीणमणसे बहवे
 नरनारिगणे चेच्चाणं सुहि-यजणमित्तबंधुपरिवग्गगिहविहवसोक्खमप्पकालियं निक्खंतं सासयसोक्खसुहाहिलासिणो सुनिच्छियमाणसे समणत्तेण
 सयलगुणोहधारिणो चोदसपुव्वधरस्स चरिमसरीरस्स णं गुण-धरथविरस्स सयासेत्ति, एवं च ते गोयमा ! अच्चंतघोरवीरतवसंजमाणुट्ठाणसज्झायझाणाईसु णं

असेसकम्मक्खयं काऊणं तीए माहणीए समं विहुयरयमले सिद्धे गोविंदमाहणादओ णरणारिगणे सव्वेऽवी महायसेत्तिबेमि । १। भयवं ! किं पुण काऊणं एरिसा सुलहबोही जाया सा सुगहियनामधिज्जा माहणी जाए एयावइयाणं भव्वसत्ताणं अणंतसंसारघोरदुक्खसंतत्ताणं सद्धम्मदेसणाइएहिं तु सासयसुहपयाणपुव्वगमब्भुद्धरणं कयंति ?, गोयमा ! जं पुव्वं सव्वभावभावंतरंतरेहिं णं णीसल्ले आजम्मालोयणं दाऊणं सुद्धभावाए जहोवइद्वं पायच्छित्तं कयं, पायच्छित्तसमत्तीए य समाहिए य कालं काऊणं सोहम्मे कप्पे सुरिंदग्गमहिंसी जाया तमणुभावेणं, से भयवं ! किं से णं माहणीजीवे तब्भवंतरंमि सगणी निगंथी अहेसि ?, जे णं णीसल्लमालोइत्ताणं जहोवइद्वं पायच्छित्तं कयंति, गोयमा ! जे णं से माहणीजीवे से णं तज्जम्मे बहुलद्धिसिद्धिजुए महिइढीपत्ते सयलगुणाहारभूए उत्तमसीलाहिद्वियतणू महातवस्सी जुगप्पहाणे समणे अणगारे गच्छाहिवई अहेसि, णो णं समणी, से भयवं ! ता कयरेणं कम्मविवागेणं तेणं गच्छाहिवइणा होऊणं पुणो इत्थित्तं समज्जियन्ति ?, गोयमा ! मायापच्चएणं, से भयवं ! कयरे णं से मायापच्चए जे णं पयणी(णू) कयसंसारेवि सयलपावोयएणावि बहुजणणिदिए सुरहिबहुद्वघयखंडचुण्णसुसंकरिय-समभावपमाणपागनिप्फन्नं मोयगमल्लगे इव सव्वस्स भक्खे सयलदुक्खकेसाणमालए सयलसुहासणस्स परमपवित्तुत्तमस्स णं अहिंसालक्खणसमणधम्मस्स विग्घे सग्गगलानिरयदारभूये सयलअयसअकित्तीकलंककलिकलहवे-राइपावनिहाणे निम्मलस्स कुलस्स णं दुद्धरिसअकज्जकज्जलकण्हमसीखंपणे तेणं गच्छाहिवइणा इत्थीभावे णिव्वत्तिए त्ति ?, गोयमा ! णो तेणं गच्छाहिवइत्तठिएणं अणुमवि माया कया, से णं तथा पुहइवई चक्कहरे भवित्ताणं परलोगभीरुए णिव्विन्नकामभोगे तिणमिव परिचेच्चाणं तं तारिसं चोद्वस रयण नव निहीतो चोसट्ठीसहस्स वरजुवईणं बत्तीसं साहस्सी ओअणा-दिवरनरिंद छन्नउई गामकोडीओ जाव णं छक्खंडभरहवासस्स णं देवेंदोवमं महारायलच्छिं तीयं बहुपुन्नचोइए णीसंगे पव्वइए अ, थोवकालेणं सयलगुणोहधारी महातवस्सी सुयहरे जाए, जोग्गे णाऊण सुगुरुहिं गच्छाहिवई समणुण्णाए, तहिं च गोयमा ! तेणं सुदिद्वसुग्गइपहेण जहोवइद्वं समणधम्मं समणुद्वेमाणेणं उग्गाभिग्गहविहारित्ताए घोरपरीसहोवसग्गा-हियासणेणं रागदोसकसायविवज्जणेणं आगमाणुसारेणं तु विहीए गणपरिवालणेणं आजम्मं समणीकप्पपरिभोगवज्जणेणं छक्कायसमारंभविवज्जणेणं ईसिपि दिव्वोरालियमेहुणपरिणामविप्पमुक्केणं इहपरलोगासंसाइणियाणमायाइसल्लविप्पमुक्केणं णीसल्लालोयणनिंदणगरहणेणं जहोवइद्वपायच्छित्तकरणेणं सव्वत्थापडिबद्धत्तेणं सव्वपमायालंबणविप्पमुक्केणं अणिदद्वअवसेसीकए अणेगभवसंचिए कम्मरासी, अण्णभवे तेणं माया कया तप्पच्चइएणं गोयमा ! एस विवागो, से भयवं ! कयरा उण अन्नभवे तेणं महाणुभागेणं माया कया जीए णं एरिसो दारुणो विवागो ?, गोयमा ! तस्स णं महाणुभागस्स गच्छाहिवइणो जीवो अणूणाहिए लक्खइमे भवग्गहणे सामन्ननरिंदस्स णं इत्थीत्ताए धूया अहेसि, अन्नया परिणीयाणंतरं मओ भत्ता, तओ नरवइणा भणिया-जहा भद्दा ! एते तुब्भं पंचसए सगामाणं, देसु जहिच्छाए अंधाणं विगलाणं अयंगमाणं अणाहाणं बहुवाहिवेयणापरिगयसरीराणं सव्वलोयपरिभू-याणं दारिद्वदुक्खदोहग्गकलंकियाणं जम्मदारिद्वाणं समणाणं माहणाणं विहलियाणं च संबंधिबंधवाणं जं जस्स इद्व भत्तं वा पाणं वा अच्छायणं वा जाव णं धणधन्नसुवन्नहिरणं वा कुणसु य सयलसोक्खदायगं संपुण्णं जीवदयंति, जे णं भवंतरेसुं पि ण होसि सयलजणमुहाप्पियगारिया सव्वपरिभूया गंधमल्लतंबोलसमालहणा-इजहिच्छियभोगोवभोगवज्जिया हयासा दुज्जम्मजाया णिदद्वानामिया रंडा, ताहे गोयमा ! सा तहत्ति पडिवज्जिऊण पगलंतलोयणंसुजलणिद्धोयकवोलदेसा ऊसरसुभसुमणुघघरसरा भणिउमाढत्ता-जहा णं ण याणिमोऽहं पभूयमालवित्ताणं, णिगच्छावेह लहुं कद्वे रएह महइं चियं णिद्वहेमि अत्ताणगं, ण किंचि मए जीवमाणीए पावाए, माऽहं कहिंचि कम्मपरिणइवसेणं महापावित्थीचवलसहावत्ताए एतस्स तुज्झं असरिसणामस्स णिम्मलजसकित्तीभरियभुवणोयरस्स णं कुलस्स खंपणं काहं, जेण मलिणीभवेज्जा सव्वमवि कुलं अम्हाणंति, तओ गोयमा ! चित्तिं तेणं णरवइणाजहा णं अहो धन्नोऽहं जस्स अपुत्तस्साविय एरिसा धूया अहो विवेगं बालियाए अहो बुद्धी अहो पन्ना अहो वेरग्गं अहो कुलकलंकभीरुयत्तणं अहो खणे खणे वंदणीया एसा जीए एमहन्ते गुणे ता जाव णं मज्झं गेहे परिवसे एसा ताव णं महामहंते मम सेए, अहादिद्वए संभरियाए संलावियाए चेव सुज्झीयए इमीए, ता अपुत्तस्स णं मज्झं एसा चेव पुत्ततुल्लत्ति चित्तिऊणं भणिया गोयमा ! सा तेणं नरवइणा-जहा णं न एसो कुलक्कमो अम्हाणं

वच्छे ! जं कट्टारोहणं कीरइत्ति, ता तुमं सीलचारित्तं परिवालेमाणी दाणं देसु जहिच्छाए कुणसुय पोसहोववासाइं विसेसेणं तु जीवदयं, एयं रज्जं तुज्झंति, ता णं गोयमा ! जणगेणं एवं भणिया ठिया सा समप्पिया य कंचुईणं अंतेउररक्खपालाणं, एवं च वच्चंतेणं कालसमएणं तओ णं कालगए से नरिंदे अन्नया संजुज्जिऊणं महामईहिं णं मंतीहिं, कओ तीए बालाए रायाभिसेओ, एवं च गोयमा ! दियहे दियहे देइ अत्थाणं, अहऽन्नया तत्थ णं बहुवंदचट्टभट्ट-तडिगकप्पडिगचउरवियक्खणमंतिमहंतगाइपुरिससयसंकुलअत्थाणमंडवमज्झंमि सीहासणोवविट्ठाए कम्मपरिणइवसेणं सरागाहिलासाए चक्खूए निज्झाए तीए सव्वुत्तमरूवजोव्वण-लावण्णसिरिसंपओववेए भावियजीवाइपयत्थे एगे कुमारवरे, मुणियं च तेण गोयमा ! कुमारेणं-जहा णं हा हा ममं पेच्छिय गया एसा वराई घोरंधयारमणंतदुक्खदायगं पायालं, ता अहन्नोऽहं जस्स णं एरिसे पोगलसमुदाए तणू रागजंतं, किं मए जीविणं ?, दे सिग्घं करेमि अहं इमस्स णं पावसरीरस्स संथारं, अब्भुट्टेमि णं सुदुक्करं पच्छित्तं, जाव णं काऊण सयलसंगपरिच्चायं समणुट्टेमि णं सयलपावनिद्वलणं अणगारधम्मं, सिढिलीकरेमि णं अणेगभवंतरविइन्ने सुदुव्विमोक्खे पावबंधणसंघाए, धिद्धिद्धी अव्ववत्थियस्स णं जीवलोगस्स जस्स एरिसे अणप्पवसे इंदियगामे अहो अदिट्ठपरलोगपच्चवायया लोगस्स अहो एकजम्माभिणिविट्ठचित्तया अहो अविण्णायकज्जाकज्जया अहो निम्मेरया अहो निप्परिहासया अहो परिच-त्तलज्जया हा हा हा न जुत्तमम्हाणं खणमवि विलंबिउं एत्थं एरिसे सुदुत्तिवारसज्जपावागमे देसे, हा हा हा धट्टारिए ! अहन्नेणं कम्मट्टरासी जमुइरियं एइए रायकुलबालियाए इमेणं कुट्टपावसरीरूवपरिदंसणेणं गयणेसुं रागाहिलासे, परिचिच्चाणं इमे विसाए तओ गेण्हामि पव्वज्जंति चित्तिऊणं भणियं गोयमा ! तेणं कुमारवरेणं, जहा णं खंतमरिसियं णीसल्लं तिविहंतिविहेणं तिगरणसुद्धीए सव्वस्स अत्थाणमंडवरायउलपुरजणस्सेति भणिऊणं विणिग्गओ रायउलाओ, पत्तो य निययावासं, तत्थ णं गहियं पत्थयणं, दोखंडीकाऊणं वऽस्सियं फेणावलीतरंगमउयं सुकुमालवत्थं परिहिएणं अब्धफलगे गहिएणं दाहिणहत्थेणं सुयणजणहियए इव सरलवित्तलयखंडे, तओ काऊणं तिहुयणेक्कगुरुणं अरहंताणं भगवंताणं जग-प्पवराणं धम्मतित्थंकराणं जहुत्तविहिणाऽभिसंथवणं वंदणं, से णं चलचलगई पत्ते णं गोयमा ! दूरं देसंतरं से कुमारे जाव णं हिरण्णुक्करडी णाम रायहाणी, तीए रायहाणीए धम्माय-रियाण गुणविसिट्ठाणं पउतिं अन्नेसमाणे चित्तिउं पयत्ते से कुमारे-जहा णं जाव णं ण केई गुणविसिट्ठे धम्मायरिए मए समुवलद्धे ताविहइं चेव मएवि चिट्ठियव्वं, तो गयाणि कइव-याणि दियहाणि, भयामि णं एस बहुदेसविक्खायकित्तीं णरवरिदं, एवं च मंतिऊणं जाव णं दिट्ठो राया, कयं च कायव्वं, सम्माणो य णरणाहेणं, पडिच्छिया सेवा, अन्नया लद्धा-वसरेणं पुट्ठो सो कुमारो गोयमा ! तेणं नरवइणा-जहा भो भो महासत्ता ! कस्स नामालंकिए एस तुज्झं हत्थंमि विरायए मुद्धारयणो ?, को वा ते सेविओ एवइयं कालं ?, के वा अ-वमाणए कए तुह सामिणत्ति ?, कुमारेणं भणियं-जहा णं जस्स नामालंकिए णं इमे मुद्धारयणे से णं मए सेविए एवइयं कालं, जे णं मे सेविए एवइयं कालं तस्स नामालंकिए णं इमे मुद्धारयणे, तओ नरवइणा भणियं-जहा णं किं तस्स सद्वकरणंति ?, कुमारेणं भणियं-नाहं अजिमिएणं तस्स चक्खुकुसीलाहम्मस्स णं सद्वकरणं समुच्चारेमि, तओ रण्णा भ-णियं-जहा णं भो भो महासत्त ! केस एसो चक्खुकुसीलो भण्णे ? किं वा णं अजिमिएहिं तस्सद्वकरणं नो समुच्चारियए ?, कुमारेण भणियं-जहा णं चक्खुकुसीलोत्ति सद्धाए, थाणंतरे-हिंतो जइ कहा(दा)इ इह तं दिट्ठपच्चयं होही तो पुण वीसत्थो साहीहामि, जं पुण तस्स अजिमिएहिं सद्वकरणं एतेणं णं समुच्चारियए, जहा णं जइ कहा(दा)इ अजिमिएहिं चेव तस्स वे राया सह कुमारेणं असेसपरियणेणं च, (आणावियं) अट्टारसखंडखज्जयवियप्पं णाणाविहमाहारं, एयावसरंमि भणियं नरवइणा-जहा णं भो भो महासत्त ! भणसु णीसंको तुमं संपयं तस्स णं चक्खुकुसीलस्स णं सद्वकरणं, कुमारेणं भणियं-जहा णं नरनाह ! भणिहामि भुत्तुत्तरकालेणं, णरवइणा भणियं-जहा णं भो भो महासत्त ! दाहिणकरधरिएणं कवलेणं संपयं चेव भणुस जे णं खु जइ एयाए कोडीए संठियाणं केई विग्घे हवेज्जा ताणमम्हावि सुदिट्ठपच्चए संते पुरपुरस्सरे तुज्झाणत्तीए अत्तहिंयं समणुचिट्ठामो, तओ णं गोयमा ! भणियं तेण कुमारेणं-जहा णं एयं एयं अमुगं सद्वकरणं तस्स चक्खुकुसीलाहम्मस्स णं दुरंतपंतलक्खणअदद्वव्वदुज्जायम्मस्सत्ति, ता गोयमा ! जाव णं चेवइयं समुल्लवे से णं कुमारवरे ताव णं अणोहिपवित्तिच एणेव समुद्धासियं तक्खणा परचक्केणं तं रायहाणी, समुद्धाइए णं सन्नद्धबद्धुद्धए णिसियकरवालकुंतविप्फुरंतचक्काइपहरणाडोववग्गपाणी हणहणहणरावभीसणा बहुसमरसंघट्टादिण्ण-पिट्ठी जीयंतकरे अउलबलपरक्कमे णं महाबले परबले जोहे,

एयावसरम्हि य कुमारस्स चलणेसु निवडिऊणं दिट्ठपच्चए मरणभयाउलत्ताए अण्णियकुलक्कमपुरिसयारं विप्पणासे, दिसिमे-क्कमासइत्ताणं सपरिगरे पण्ढे से णं नरवरिदे, एत्थंतरंमि चित्तिं गोयमा ! तेणं कुमारेणं-जहा णं नो सरिसं कुलक्कमेऽम्हाणं जं पडिं दाविज्जइ, णो णं तु पहरियव्वं मए कस्सावि णं अहिंसालक्खणधम्मं वियाणमाणेणं कयपाणाइवायपच्चक्खाणेणं च, ता किं करेमि णं ?, सागारे भत्तपाणाईणं पच्चक्खाणे अहवा णं करेमि ?, जओ दिट्ठे णं ताव मए दिट्ठीमित्तकुसीलस्स णामग्गहणेणावि एमहंतसंविहाणणे, ता संपयं सीलस्सावि णं एत्थं परिकखं करेमि चित्तिऊणं भणिउमाढत्ते णं गोयमा ! से कुमारे-जहा णं जइ अहयं वायामित्तेणावि कुसीलो ता णं मा णीहरेज्जाह अक्खयतणू खेमेणं एयाए रायहाणीए, अहा णं मणोवइकायतिएणं सब्बपयारेहिं णं सीलकलिओ ता मा वहेज्जा ममोवरिं इमे सुनिसिए दारूणे जीयंतकरे पहरणणिहाए, णमो २ अरहंताणंति भणिऊणं जाव णं पवरतोरणदुवारेणं चलचवलगई जाउमारद्धो, जाव णं पडिक्कमे थेवं भूमिभागं ताव णं हल्लावियं कप्पडिगवेसेणं गच्छइ एस नरवइत्तिकाऊणं सरहसं हण हण मर मरत्ति भणमाणुक्खित्तकरवालादिपहरणेहिं पवरबलजोहेहिं, जाव णं समुद्धाए अच्चंतं भीसणे जीयंतकरे परबलजोहे ताव णं अविसण्ण अणुदुयाभीयअतत्थअदीणमाणसेणं गोयमा ! भणियं कुमारेणं-जहा णं भो भो दुट्ठपुरिसा ! ममोवरिं चेह एरिसेणं घोरतामसभावेण अन्तिए, असइं पि सुहज्जवसायसंचियपुण्णपब्भारे एस अहं, से तुम्ह पडिसत्तू अमुगो णरवती, मा पुणो भणियासु जहा णं णिलुक्को अम्हाणं भएणं, ता पहरेज्जासु जइ अत्थि वीरियंति, जावेत्तियं भणे ताव णं तक्खणं चेव थंभिए ते सव्वे गोयमा ! परबलजोहे सीलाहिट्ठियत्ताए तियसाणं पि अलंघणिज्जाए तस्स भारतीए, जाए य निच्चलदेहे, तओ य णं धसत्ति मुच्छिऊणं णिच्चिट्ठे णिवडिए धरणिवट्ठे से कुमारे, एयावसरम्ही उ गोयमा ! तेणं णरिंदाहमेणं गुहियमायाविणा वुत्ते धीरे सब्बत्थावी समत्थे सब्बलोयभमंते धीरे भीरू वियक्खणे मुखे सूरै कायरे चउरे चाणक्के बहुपवंचभरिए संधिविग्गहिए निज्जत्ते छइल्ले पुरिसे जहा णं भो भो (गिणहेह) तुरियं रायहाणीए वज्जिंदनीलससिसूरकंतादीए पवरमणिरयणरासीए हेमज्जुणतवणीयजंबूणयसुवन्नभारलक्खाणं, किं बहुणा ?, विसुद्धबहुजच्चमोत्तियविट्ठुमखारिलक्खपडिपुन्नस्स णं कोसस्स चाउरंगस्स (य) बलस्स, विसेसओ णं तस्स सुगहियनामगहणस्स पुरिससीहस्स सीलसुद्धस्स कुमारवरस्सेतिपउत्तिमाणेह जेणाहं णिव्वुओ भवेयं, ताहे नरवइणो पणामं काऊणं गोयमा ! गए ते निउत्तपुरिसे जाव णं तुरियं चलचवलजइणकमपवणवेगेहिं णं आरूहिऊणं जच्चतुरंगमेहिं निउंजगिरिकंदरूद्देसपइरिकाओ खणेण पत्ते रायहाणिं, दिट्ठो य तेहिं वामदाहिणभुयाए पल्लवेहिं वयणसिरोरूद्दे विलुप्पमाणो कुमारो, तस्स य पुरओ सुक (व) त्राभरणवेत्था दसदिसासु उज्जोयमाणी जयजयसद्दमंगलमुहला रयहरणवावडोभयकरकमलविरइयंजली देवया, तं च दट्ठुण विम्हयभूयमणे लिप्पकम्मणिम्मविए (ठिए), एयावसरम्हि उ गोयमा ! सहरिसरोमंचकंचुपुलइयसरीराए णमो अरहंताणंति समुच्चरिऊण भणिरे गयरट्ठियाए पवयणदेवयाए से कुमारे-तंजहा 'जो दलइ मुट्ठिपहरेहिं मंदरं धरइ करयले वसुहं । सव्वोदहीणवि जलं आयरिसइ एकघोटेणं ॥१३॥ टाले सग्गाउ हरिं कुणइ सिवं तिहुयणस्सवि खणेणं । अक्खंडियसीलाणं कुत्तोऽवि ण सो पहुप्पेज्जा ॥४॥ अहवा सोच्चिय जाओ गणिज्जए तिहुयणस्सवि स वंदो । पुरिसो व महिलिया वा कुलुग्गउ जो न खंडए सीलं ॥५॥ परमपवित्तं सप्पुरिससेवियं सयलपावनिम्महणं । सव्वुत्तमसोक्खनिहिं सत्तरसविहं जयइ सीलं ॥६॥ ति भणिऊणं गोयमा ! इत्ति मुक्का कुमारस्सोवरिं कुसुमवट्ठिं पवयणदेवयाए, पुणोऽवि भणिउमाढत्ता देवया-तंजहा 'देवस्स देति दोसे पवंचिया अत्तणो सकम्मेहिं । ण गुणेसु ठवितंऽप्यं सुहाई मुद्धाए जोएति ॥१७॥ मज्झत्थभाववती समदरिसी सब्बलोयवीसासो । निक्खेवयपरियत्तं दिव्वो न करेइ तं ढोए ॥८॥ ता बुज्झिऊण सव्वुत्तमं जणा सीलगुणमहिइढीयं । तामसभावं चिच्चा कुमारपयपंकयं णमह ॥१९॥ ति भणिऊणं अहंसणं गया देवया इति, ते छइल्लपुरिसे लहुं व गंतूणं साहियं तेहिं नरवइणो, तओ आगओ बहुविकप्पकल्लोलमालाहिं णं आऊरिज्जमाणहिययसागरो हरिसविसायवसेहिं भीउड्ड (ट्ट) या तत्थचकियहियओ सणियं गुज्झसुरंगखडकियादारेणं कंपंतसव्वगतो महया कोउहल्लेणं, कुमारदंसणुक्कंठिओ य तमुद्देसं, दिट्ठो य तेणं सो सुगहियणामधेज्जो महायसो महासत्तो महाणुभावो कुमारमहरिसी, अपडिवाइमहोहीपच्चएणं साहेमाणो संखाइयाइभवाणुहूयं दुक्खसुहं सम्मत्ताइलंभं संसारसहावं कम्मबंधट्ठितीविमोक्खमहिंसालक्खणमणगारे वयरबंधं णरादीणं सुहणिसन्नो

सोहम्माहिवइधरिउवरिपंडुरायवत्तो, ताहे य तमदिठ्ठपुव्वमच्छरेरगं दट्ठुण पडिबुद्धो सपरिग्गहो पव्वइओ य गोयमा ! सो राया परचक्काहिवईवि, एत्थंतरंमि पहयसुस्सरगंभीरगहीरदुंदुभिनिग्घोसपुव्वेणं समुग्घुट्ठं चउव्विहदेवनिकाएणं, तंजहा- 'कम्मट्ठगंठिमुसुमूरण, जय परमेट्ठिमहायस । जय जय जयाहि चारित्तदंसणणाणसमणिय ! ॥२०॥ सच्चिय जणणी जगे एक्का, वंदणीया खणे । २। जीसे मंदरगिरिगरूओ, उयरे वुच्छो तुमं महामुणि ॥२१॥ त्ति भणिऊणं विमुंचमाणे सुरभिकुसुमवुट्ठिं भत्तिभरनिब्भरे विरइयकरकमलंजलीउत्ति निवडिअ ससुरीसरे देवसंधे गोयमा ! कुमारस्स णं चलणारविदे, पणच्चियाओ देवसुंदरीओ, पुणो पुणो भिसं थुणिय णमंसिय चिरं पज्जुवासिऊणं सत्थाणेसु गए देवनिवहे । २। से भयवं ! कहं पुण एरिसे सुलभबोही जाए महायसे सुगहियणामधेज्जे से णं कुमारमहरिसी ?, गोयमा ! तेणं समणभावट्ठिएणं अन्नजम्मंमि वायादंडे पउत्ते अहेसि तंनिमित्तेणं जावज्जीवं मूणव्वए गुरुवएसेणं साधारिए, अन्नंच-तिन्नि महापावट्ठाणे संजयाणं तंजहा-आऊ तेऊ मेहुणे, एते य सव्वोवाएहिं परिवज्जिए, तेणं तु से एरिसे सुलभबोही जाए, अहउन्नया णं गोयमा ! बहुसीसगणपरिगए से णं कुमारमहरिसी पत्थिए सम्मेयसेलसिहरे देहच्चायनिमित्तेणं, कालक्कमेणं तीए चेव वत्तणीए (गए) जत्थ णं से रायकुलबालियाणरिंदे चक्खुकुसीले, जाणावियं च रायउले, आगओ य वंदणवत्तियाए सो इत्थीनरिंदो उज्जाणवरंमि, कुमारमहरिसिणो पणामपुव्वं च उवविट्ठो सपरिकरो जहोइए भूमिभागे, मुणिणावि पबंधेणं कया देसणा, तं च सोऊणं धम्मकहावसाणे उवट्ठिओ सपरिवग्गो णीसंगत्ताए, पव्वइओ गोयमा ! सो इत्थीनरिंदो, एवं च अच्चंतघोरवीरूग्गकट्ठदुक्करतवसंजमाणुट्ठाणकिरियाभिरयाणं सव्वेसिपि अपडिकम्मसरीराणं अपडिबद्धविहारत्ताए अच्चंतणिप्पिहाणं संसारिएसुं चक्कहरसुरिंदाइइडिडसमुदयसरीरसोक्खेसुं गोयमा ! वच्चइ कोई कालो जाव णं पत्ते सम्मेयसेलसिहरब्भासं, तओ भणिया गोयमा ! तेणं महरिसिणा रायकुलबालियाणरिंदसमणी-जहा णं दुक्करकारिगे ! सिग्घं अणुदुदयमाणसा सव्वभावभावंतरेहिं णं सुविसुद्धं पयच्छाहि णं णीसल्लमालोयणं, आढवेयव्वा य संपयं सव्वेहिं अम्हेहिं देहच्चायकरणेक्कबद्धलक्खेहिं णीसल्लालोइयनिंदियगरहियजहुत्तसुद्धासय-जहोवइठ्ठकयपच्छित्तुद्धियसल्लेहिं च णं कुसलदिट्ठ संलेहणत्ति, तओ णं जहुत्तविहीए सव्वमालोइयं तीए रायकुलबालियाणरिंदसमणीए जाव णं संभारिया तेणं महामुणिणा जहा णं जह मं तया रायत्थाणमुवविट्ठाए तए गारत्थभावंमि सरागाहिलासाए संचिक्खिओ अहेसि तमालोएहि दुक्करकारिए ! जेणं तुम्हं सव्वुत्तमविसोही हवइ, तओ णं तीए मणसा परितप्पिऊणं अइचवलासयनियडीनिकेयपावित्थीसभावत्ताए मा णं चक्खुकुसीलत्ति अमुगस्स धूया समणीणमतो परिवसमाणी भन्निहामित्ति चित्तिऊणं गोयमा ! भणियं तीए अभागधिज्जाए-जहा णं भगवं ! ण मे तुमं एरिसेणं अट्ठेणं सरागाए दिट्ठीए निज्झाइओ जओ णं अहयं तं अहिलसेज्जा, किंतु जारिसे णं तुब्भे सव्वुत्तमरूवतारूणणजोव्वणलावन्नकंतिसोहग्गकला-कलावविण्णाणणाइसयाइगुणोहविच्छइडमंडिए होत्था विसएसुं निरहिलासे सुविरे ता किमेयं तहत्ति किं वा णो णं तहत्तित्ति तुज्झं पमाणपरितोलणत्थं सरागाहिलासं चक्खुं पउत्ता, णो णं चाभिलसिउकामाए, अहवा इणमेत्थ चेवालोइयं भवउ किमित्थ दोसंति, मज्झमवि गुणावहयं भवेज्जा, किं तित्थं गंतूण मायाकवडेणं ?, सुवण्णसयं केइ पयच्छे, ताहे य णं अच्चंतगरूयसंवेगमावन्नेणं विदिट्ठसंसारचलित्थीसभावस्स णंति चित्तिऊणं भणियं मुणिवरेणं-जहा णं धिद्धिद्धिरत्थु पावित्थीचलस्सभावस्स जे णं तु पेच्छ २ एदहमेत्ताणुकालसमएणं केरिसा नियडी पउत्तत्ति ?, अहो खलित्थीणं चलचवलचडुलचंचलसिट्ठी (न) एगट्ठमाणसा खणमेगमवि दुज्जम्मजायाणं अहो सयलाकज्जभंडोहलियाणं अहो सयलायसक्तीवुडिडकराणं अहो पावकम्माभिणिविट्ठज्झवसायाणं अहो अभीयाणं परलोगगमणंधयारघोरदारूणदुक्खकंडूकडाहसामलिकुंभीपागाइदुरहियासाणं, एवं च बहुं मणसा परितप्पिऊण अणुयत्तणाविरहियधम्मिक्करसियसुपसंतवयणेणं पसंतमहुरक्खेरेहिं णं धम्मदेसणापुव्वगेणं भणिया कुमारेणं रायकुलबालियानुरिंदसमणी गोयमा ! तेणं मुणिवरेणं-जहा णं दुक्करकारिए ! मा एरिसेणं मायापबंधेणं अच्चंतघोरवीरूग्गकट्ठसुदुक्करतवसंजमसज्झाययज्झाणाईहिं समज्जिए निरणुबंधि पुण्णपब्भारे णिप्फले कुणसु, ण किंचि एरिसेणं मायाडंभेणं अणंतसंसारदायणेणं पओयणं, नीसंकमालोइत्ताणं णीसल्लमत्ताणं कुरू, अहवा अंधयारणट्ठिगाणट्ठमिव धन्नि (मि) यसुवण्णमिव एक्काए पूया (फुक्का) ए जहा तहा णिरत्थयं होही तुज्झेयं वालुप्पाडणभिक्खाभूमीसेज्जाबावीसपरी-

सहोवसग्गाहियासणाइएकायकिलेसेत्ति, तओ भणियं तीए भग्गलक्खणाए-जहा भगवं ! किं तुम्हेहिं सद्धिं छम्मेणं उल्लविज्जइ ? , विसेसेणं आलोयणं दाउमाणेहिं, णीसंगं पत्तिया, णो णं मए तुमं तक्कालं अभिलसिउकामाए सरागाहिलासाए चक्खूए निज्झाइउत्ति, किंतु तुज्झ परिमाणतोलणत्थं निज्झाइओत्ति भणमाणी चेव निहणं गया, कम्मपरिणइवसेणं समज्जित्ताणं बद्धपट्टनिकाइयं उक्कोसट्ठिइं इत्थीवेयं कम्मं गोयमा ! सा रायकुलबालियानरिंदसमणित्ति, तओ य ससीसगणे गोयमा ! से णं महच्छेरगभूए णं सयंबुद्धकुमारमहरिसीए विहिए संलिहिऊणं अत्ताणगं मासं पाओवगमणेणं सम्मेयसेलसिहरंमि अंतगओ केवलित्ताए सीसगणसमणिए परिनिव्वुडेत्ति । ३। सा उण रायकुलबालियाणरिंदसमणी गोयमा ! तेण मायासल्लभावदोसेणं उववन्ना विज्जुकुमारीणं वाहणत्ताए नउलीरूवेणं किंकरीदेवेसुं, तओ चुया समाणी पुणो २ उववज्जंती वावज्जंती आहिडिया माणुसतिरिच्छेसुं सयलदोहग्गदुक्खदारिद्रपरिगया सव्वलोयपरिभूया सकम्मफलमणुभवमाणी गोयमा ! जाव णं कहकहवि कम्माणं खओवसमेणं बहुभवंतरेसु तं आयरियपयं पाविऊण निरइयारसामन्नपरिवालणेणं सव्वत्थामेसुं च सव्वपमायालंबणविप्पमुक्केणं तु उज्जमिऊणं निदइढावसेसीकयभवंकुरे तहावि गोयमा ! जा सा सरागा चक्खू णालोइया तया तक्कम्मदोसेणं माहणित्थीत्ताए, परिनिव्वुडे णं से रायकुलबालियाणरिंदसमणीजीवे । ४। से भयवं ! जे णं केई सामण्णमब्भुट्ठेज्जा से णं एक्काइ जाव णं सत्तट्ठभवंतरेसु नियमेण सिज्झिज्जा ता किमेयं अणूणाहियं लक्खभवंतरपरियडणंति ? , गोयमा ! जे णं केई निरइयारे (२९३) सामन्ने निव्वाहेज्जा से णं नियमेणं एक्काइ जाव णं अट्ठभवंतरेसु सिज्झे, से उण सुहुमे बायरे वा केई मायासल्ले वा आउकायपरिभोगे वा तेउकायपरिभोगे वा मेहुणकज्जे वा अन्नयरे वा केई आणाभंगे काऊणं सामण्णमइयरेज्जा से णं जं लक्खेण भवग्गहणेणं सिज्झे तं महइ लाभे, जओ णं सामन्नमइयरित्ता बोहिपि लभेज्जा दुक्खेणं, एसा सा गोयमा ! तेणं माहणीजीवेणं माया कया जीए य एदमेत्ताएवि एरिसे पावे दारूणे विवागित्ति । ५। से भयवं ! किं तीए महीयारीए तेहिं से तंदुलमल्लगे पयच्छिए ? किं वा णं सावि य महयरी तत्थेव तेसिं (हिं) समं असेसकम्मक्खयं काऊणं परिनिव्वुडा हवेज्जत्ति ? , गोयमा ! तीए महियारीए तस्स णं तंदुल्लमल्लगस्सऽट्ठाए तीए माहणीए धूयत्ति काऊणं गच्छमाणी अवंतकाले चेव अवहरिया सा सुज्जसिरी, जहा णं मज्झं गोरसं परिभोत्तूणं कहिं गच्छसि संपयन्ति ? , आह वच्चामो गोउलं, अण्णंच-जइ तुमं मज्झं विणीया हवेज्जा ताहेऽहं तुज्झं अहिच्छाए तेकालियं बहुगुलघएणं अणुदियहं पायसं पयच्छिहामि, जाव णं एयं भणिया ताव णं गया सा सुज्जसिरी तीए महयरीए सद्धिं, तेहिंपि परलोगाणुट्ठाणेक्कसुहज्झवसायक्खित्तमाणसेहिं न संभरिया ता गोविंदमाहणाईहिं, एवं तु जहा भणियं मयहरीए तहा चेव तस्स घयगुलपायसं पयच्छे, अहऽन्नया कालक्कमेण गोयमा ! वोच्छिन्ने णं दुवालससंवच्छरिए महारोरवे दारूणे दुब्भिक्खे जाए य णं रिद्धित्थिमियसमिद्धे सव्वेऽवि जणवए, अहऽन्नया पुण वीसं अणग्घेयाणं पवरससिसूरकंताईणं मणिरयणाणं घेतूण सदेसगमणनिमित्तेणं दीहद्धाणपरिखिन्नअंगयट्ठी पहपडिवन्ने णं तत्थेव गोउले भवियव्वयानियोगेणं आगए अणुच्चरियनामधेज्जे पावमती सुज्जसिवे, दिट्ठा य तेणं सा कन्नगा जाव णं परितुलियसयलतिहुयणणरणारीरूवकंतिलावण्णा, तं सुज्जसिरिं पासिय चवलत्ताए इंदियाणं रम्मयाए किंपागफलोवमाणं अणंतदुक्खदायगाणं विसयाणं विणिज्जियासेसतिहुयणस्स णं गोयरगए णं मयरकेउणो, भणिया णं गोयमा ! सा सुज्जसिरी तेणं महापावकम्मेणं सुज्जसिवेणं-जहा णं हे हे कन्नगे ! जइ णं इमे तुज्झ सन्तिए जणणीजणगे समणुमन्नंति ता णं तु अहयं तं परिणेमि, अन्नंच-करेमि सव्वंपि ते बंधुवग्गमदरिदंति, तुज्झमवि घडावेमि पलसयमणूणं सुवन्नस्स, तो गच्छ अइरेणेव साहसु मायावित्ताणं, तओ गोयमा ! जाव णं पहट्ठतुट्ठा सा सुज्जसिरी तीए महयरीए एयवइयरं पकहेइ ताव णं तक्खणमागंतूण भणिओ सो महयरीए-जहा भो भो पयंसेहि णं जं ते मज्झ धूयाए सुवन्नपलसए सुंकिए, ताहे गोयमा ! पयंसिए तेण पवरमणी, तओ भणियं महयरीए-जहा तं सुवन्नसयं दाएहिं, किमेएहिं डिंभरमणगेहिं पंचिट्ठगेहिं ? , ताहे भणियं सुज्जसिवेणं-जहा णं एहि वच्चामो णगरं दंसेमि ण अहं तुज्झमिमाणं पंचिट्ठगाणं माहप्पं, तओ पभाए गंतूण नगरं पयसियं ससिसूरकंतपवरमणीजुवलणं तेणं नरवइणो, णरवइणावि सद्दाविऊणं भणिए पारिक्खी-जहा इमाणं परममणीणं करेह मुल्लं, तोल्लंतेहिं तु न सक्किरे तेसिं मुल्लं काऊणं, ताहे भणिया नरवइणा-जहा णं भो भो माणिक्खंडिया ! णत्थि केइ इत्थ जे णं एसिं

मुल्लं करेज्ज, तो गिण्हसु णं दस कोडीओ दविणजायस्स, सुज्जसिवेणं भणियं-जं महाराओ पसायं करेति, णवरं इणमो आसण्णपव्वयसन्निहिंए अम्हाणं गोउलं तत्थ एणं च जोयणं जाव गोणीणं गोयरभूमी तं अकरभरं तं विमुंचसुत्ति, तओ नरवइणा भणियं-जहा एवं भवउत्ति, एवं च गोयमा ! सव्वमदरिदमकरभरं गोउलं काऊणं तेणं अणुच्चरियनामधेज्जेण परिणीया सा निययधूया सुज्जसिरी सुज्जसिवेणं, जाया परोप्परं तेसिं पीई, जाव णं नेहाणुरागरंजियमाणसे गमिति कालं किंचि ताव णं दट्ठुणं गिहागए साहुणो पडिनियत्ते हाहाकंदं करेमाणी पुट्ठा सुज्जसिवेणं सुज्जसिरी=जहा पिए ! एयं अदिट्ठपुव्वं भिक्खायरजुयलयं दट्ठुणं किमेयावत्थं गया सि ?, तओ तीए भणियं-जहा णणु मज्झ सामिणी एरिसी, महया भक्खन्नपाणेणं पत्तभरणं करियं, तओ य हट्ठतुट्ठमाणसा उत्तमंगेणं चलणग्गे पणमयंतीता, मए अज्ज एएसं परिदंसणेणं सा संभरियत्ति, ताहे पुणोवि पुट्ठा सा पावा तेणं-जहा णं पिए ! का उ तुज्झं सामिणी अहेसि ?, तओ गोयमा ! णं दढं ऊसुरूसुवंतीए समणुगग्गरविसंथुलंसुगगिराए साहियं सव्वं पि णिययवुत्तं तस्सेति, ताहे विण्णायं तेण महापावकम्मेण-जहा णं निच्छयं एसा सा ममंगया सुज्जसिरी, ण अण्णाय महिलाए एरिसा रूवकंतीदितीलावण्णसोहग्गसमुदयसिरीभवेज्जति चित्तिऊणं भणिउमाढत्तो-तंजहा 'एरिसकम्मरयाणं जं न पडे धडहडितं वज्जं । (णूण इमे) चित्तेइ सोवि जहित्थीउ चिओ मे कत्थ सुज्झिस्सं ? ॥२२॥ ति भणिऊणं चित्तिउं पयत्तो सो महापावयारी जहा णं किं छिंदामि अहयं सहत्थेहिं तिलंतिलं सगत्तं ? किं वा णं तुंगगिरियडाउ पक्खिविउं दढं संचुत्तेमि इणमो अणंतपावसंघायसमुदयं दुट्ठुं ? किं वा णं गंतूणं लोहयारसालाए सुतत्तलोहखंडमिव घणखंडाहिं चुन्नावेमि सुइरमत्ताणगं ? किं वा णं फालावेऊण मज्झोमज्झीए तिक्खकरवत्तेहि अत्ताणगं पुणो संभरावेमि अंतो सुकट्ठियतउयतंबकंसलोहलोणूससज्जियाखारस्स ? किं वा णं सहत्थेणं छिंदामि उत्तमंग ? किं वा णं पविसामि मयरहरं ? किं वा णं उभयरूक्खेसु अहोमुहं विणिबंधाविऊणमत्ताणगं हेट्ठा पज्जलावेमि जलणं ?, किं बहुणा ?, णिद्वहेमि कट्ठेहिं अत्ताणगंति चित्तिऊणं जाव णं मसाणभूमीए गोयमा ! विरइया महती चिई, ताहे सयलजणसन्निज्झं सुइरं निदिऊण अत्ताणगं साहियं च सव्वलोगस्स-जहा णं मए एरिसं एरिसं कम्मं समायरियंति भणिऊणं आरूढो चिइयाए, जाव णं भवियव्वयाए निओगेणं तारिसदव्वचुन्नजोगाणुसंसट्ठे ते सव्वेवि दारुत्तिकाऊणं फूइज्जमाणेवि अणेगपयारेहिं तहावि णं ण पयलिए सिही, तओ य णं धिद्धिकारेणोवहओ सयललोगवयणेहिं जहा भो भो पिच्छ पिच्छ हुयासणंपि ण पज्जलौ पावकम्मकारिस्सत्ति भणिऊणं निद्धाडिए ते बेडवि गोउकालाओ, एयावसरंमि उ अण्णसन्नसन्निवेसाओ आगए णं भत्तपाणं गहाय तेणेव मग्गेणं उज्जाणाभिमुहं मुणीण संघाडगे, तं च दट्ठुणं अणुमग्गेणं गए ते बेडवि पाविट्ठे, पत्ते य उज्जाणं जाव णं पेच्छंति सयलगुणोहधारिं चउनाणसमन्नियं बहुसीसगणपरिकिन्नं देविंदनरिंदवंदिज्जमाणपायारविंदं सुगहियनामधिज्जं जगाणंदं नाम अण्णगारं, तं च दट्ठुणं चित्तिथं तेहिं-जहा णं दै मग्गणामि विसोहिण्णं एसा महायसेत्ति, चित्तिऊणं तओ पणामपुव्वगेणं उवविट्ठे ते जहोइए भूमिभागे पुरओ गणहरस्स, भणिओ य सुज्जसिवो तेण गणहारिणा-जहा णं भो भो देवाणुप्पिया ! णीसल्लमालोएत्ताणं लहुं करेसु सिग्घं असेसपाविट्ठकम्मनिट्ठवणं पायच्छित्तं, एसा उण आवन्नसत्ताएयाए पायच्छित्तं णत्थि जाव णं णो पसूया, ताहे गोयमा ! सुमहच्चंतपरममहासंवेगए से णं सुज्जसिवे, आजम्मओ नीसल्लालोयणं पयच्छिऊणं जहोवइट्ठं घोर सुदुक्करं महंतं पायच्छित्तं अणुच्चरित्ताणं तओ अच्चंतविसुद्धपरिणामो सामण्णमब्भुट्ठिऊणं छव्वीसं संवच्छरे तेरस य राईदिए अच्चंतघोरवीरूग्गकट्ठदुक्करतवसंजमं समणुचरिऊणं जाव णं एगदुत्तिचउप्रंचछम्मासिएहिं खम्मणेहिं खवेऊणं निप्पडिकम्मसरीरत्ताए अपमाययाए सव्वत्थामेसु अणवरयमहन्निसाणुसमयं सययं सज्झायज्झाणाईसु णं णिद्वहिऊणं सेसकम्ममलं अउव्वकरणेणं खवगसेठीए अंतगडकेवली जाए सिद्धे य । ६। से भयवं ! तं तारिसं महापावकम्मं समायरिऊणं तहावी कहं एरिसे णं से सुज्जसिवे लहुं थेवेणं कालेणं परिनिव्वुडेत्ति ?, गोयमा ! तेणं जारिसभावट्ठिएणं आलोयणं विइन्नं जारिससंवेगएणं तां तारिसं घोरदुक्करं महंतं पायच्छित्तं समणुत्थियं जारिसं सुविसुद्धसुहज्जवसाएणं तं तारिसं अच्चंतघोरवीरूग्गकट्ठसुदुक्करतवसंजमकिरियाए वट्ठमाणेणं अखंडियअविराहिये मूलुत्तरगुणे परिवालयंतेणं निरइयारं सामन्न णिव्वाहियं जारिसेणं रोहट्ठज्झाणविप्पमुक्केणं णिठियरागदोसमोहच्छित्तमयभयगारवेणं मज्झत्थभावेणं अदीणमाणसेणं दुवालस वासे संलेहणं काऊणं पाओवगममणसणं पडिवन्नं तारिसेणं

एगंतसुहज्झवसाएणं ण केवलं से एगे सिज्झेज्जा जइ णं कयाई परकयकम्मसंकमं भवेज्जा ता णं सब्वेसिपि भव्वसत्ताणं असेसकम्मक्खयं काऊणं सिज्झेज्जा, णवरं परकयकम्मं ण कयादी कस्सई संकमेज्जा, जं जेण समज्जियं तं तेणं समणुभवियव्वंति, गोयमा ! जया णं निरुद्धजोगे हवेज्जा तथा णं असेसंपि कम्मद्वरासिं अणुकालविभागेणव णिठ्वेज्जा, सुसंवुडासेसासवदारे जोगनिरुहेणं तु कम्मक्खए दिट्ठे, ण उण कालसंखाए, जओ णं 'कालेणं तु खवे कम्मं, कालेणं तु पबंधए । एगं बंधे खवे एगं, गोयम ! कालमणंतगं ॥२३॥ णिरुद्धेहिं तु जोगेहिं, वेए कम्मं ण बंधए । पोराणं तु पहीएज्जा, णवगस्साभावमेव उ ॥२४॥ एवं कम्मक्खयं विदे, ण एत्थं कालमुद्दिसे । अणाइकाले जीवे य, तहवि कम्मं ण णिठ्वए ॥५॥ खओवसमेण कम्माणं, जया विरई समुच्छले । कालं खेत्तं भवं भावं, दव्वं संपप्प जाव तथा ॥६॥ अप्पमादी खवे कम्मं, जे जीवे तं कोडिं चडे । जो पमादी पुणोऽणंतं, कालकम्मं णिबंधिया ॥७॥ णिवसेज्जा चउगईए उ, सब्वद्धाऽच्चंतदुक्खिए । तम्हा कालं खेत्तभवं, भावं संपप्प गोयमा !, मइमं अइरा कम्मं खयं करे ॥२८॥ से भयवं ! सा सुज्जसिरी कहिं समुववन्ता ?, गोयमा ! छट्ठीए णरगपुढवीए, से भयवं ! केणं अट्ठेणं ?, गोयमा ! तीए पडिपुन्नाणं साइरेगाणं णवण्हं मासाणं गयाणं इणमो विचिन्तियं जहा णं पच्चूसे गब्भं पडावेमिति, एवमज्झवसमाणी चेव बालयं पसूया, पसूयमेत्ता य तक्खणं निहणं गया, एतेणं अट्ठेणं गोयमा ! सा सुज्जसिरी छट्ठियं गयत्ति, से भयवं ! जं तं बालगं पसविऊणं मया सा सुज्जसिरी तं जीवियं किंवा ण वत्ति ?, गोयमा ! जीवियं, से भयवं ! कहं ?, गोयमा ! पसूयमेत्तं तं बालगं तारिसेहिं जराजरजलुसजंबालपूइरूहिरखारदुगंधासुईहिं विलित्तमणाहं विलवमाणं दट्ठुणं कुलालचक्कस्सोवरि काऊणं साणेणं समुद्दिसिउमारद्धं, ताव णं दिट्ठं कुलालेणं, ताहे धाइओ सघरणिओ कुलालो, अविणासियबालतणू णट्ठो साणो, तओ कारूण्हियएणं अपुत्तस्स णं पुत्तो एस मज्जं होहिति वियप्पिऊणं कुलालेणं समप्पिओ णं से बालगो गोयमा ! सदइयाए, तीए य सब्भावणेहेणं परिवालिऊणं माणुसीकए से बालगे, कयं च नामं कुलालेण लोगाणुवित्तीए सजणगाहिहाणेणं जहा णं सुसढो, अन्नया कालकमेणं गोयमा ! सुसाहुसंजोगदेसणापुव्वेणं पडिबुद्धे णं सुसढे पव्वइए य, जाव णं परमसद्धासंवेगवेरगगए अच्चंतघोरवीरूग्गकट्टसुदुक्करं महाकायकेसं करेइ संजमजयणं ण याणेइ, अजयणादोसेणं तु सब्वत्थ असंजमपएसु णं अवरज्झे, तओ तस्स गुरुहिं भणियं=जहा भो भो महासत्त ! तए अन्नाणदोसओ संजमजयणं अयाणमाणेणं महंते कायकेसे समाढत्ते, णवरं जइ निच्चालोयणं दाऊणं पायच्छित्तं ण काहिसि ता सब्वमेयं निप्फलं होही, ता जाव णं गुरुहिं चोइए ताव णं से अणवरयालोयणं पयच्छे, सेऽवि णं गुरु तस्स तहा पायच्छित्ते पयाइ जहा णं संजमजयणं भूयगं, तेणेव अहन्निसाणुसमयरोद्धज्झाणाइविप्पमुक्के सुहज्झवसाये निरंतरं पविहरेज्जा, अहऽन्नया णं गोयमा ! से पावमती जे केइ छट्ठमदसमदुवालसद्धमासमासजावणंछम्मासखवणाइए अन्नयरे वा सुमहं कायकेसाणुगए पच्छित्ते से णंतहत्ति समणुट्ठे, जे य उण एगंतसंजमकिरियाणं जयणाणुगए मणोवइकायजोगे सयलासवनिराहे सज्झायज्झाणावस्सगाइए असेसपावकम्मरासिनिद्धणे पायच्छित्ते से णं पमाए अवमन्ने अवहेले असइहे सिढिले जाव णं किल किमित्थ दुक्करंति काऊणं न तहा समणुट्ठे, अन्नया णं गोयमा ! अहाउयं परिवालेऊणं से सुसढे मरिऊणं सोहम्मे कप्पे इंदसामाणि महिडढी देवे समुप्पन्ने, तओवि चविऊणं इहई वासुदेवो होऊणं सत्तमपुढवीए समुप्पन्ने, तओ उव्वट्ठे समाणे महाकाए हत्थी होऊणं मेहुणासत्तमाणसे मरिऊणं अणंतवणस्सतीए गयत्ति, एस णं गोयमा ! से सुसढे जे णं 'आलोइयनिदियगरहिए णं कयपायच्छित्तेवि भवित्ताणं । जयणं अयाणमाणे भमिही सुइरं तु संसारे ॥२९॥ से भयवं ! कयरा उण तेणं जयणा ण विन्नाया जओ णं तं तारिसं दुक्करं कायकेसं काऊणंपि तहावि णं भमिहिइ सुइरं तु संसारे ?, गोयमा ! जयणा णाम अट्ठारसण्हं सीलंगसहस्साणं संपुन्नाणं अखंडियविराहियाणं जावजीवमहन्निसाणुसमयं धारणं कसिणसंजमकिरियं अणुमन्नंति, तं च तेण न विन्नायंति, तेणं तु से अहन्ने भमिहिइ सुइरं तु संसारे, से भयवं ! केणं अट्ठेणं तं च तेण ण विन्नायंति ?, गोयमा ! तेणं जावइए कायकेसे कए तावइयस्स अट्ठभागेणव जइ से बाहिरपाणगं विवज्जेन्तो ता सिद्धीएमणुवयंतो, णवरं तु तेण बाहिरपाणगे परिभुत्ते, बाहिरपाणगपरिभोइस्स णं गोयमा ! बहुएवि कायकेसे णिरत्थगे हवेज्जा, जओ णं गोयमा ! आऊ तेऊ महुणे एए तओऽवि महापावट्ठाणे अबोहिदायगे एगं तेणं विवज्जियव्वे एगंतेणं ण समायरियव्वे सुसंजएहिति, एतेणं अट्ठेणं, तं च तेणं ण विण्णायन्ति, से भयवं ! केणं अट्ठेणं आऊतेऊमेहुणत्ति

અબોહિદાયગે સમક્ષાએ ?, ગોયમા ! સવ્વમવિ છકાયસમારંભે મહાપાવઢાણે, કિં તુ આડતેડકાયસમારંભે ણં અણંતસત્તોવઢાએ, મેહુણાસેવણે ણં તુ સંઘેજ્ઞાસંઘેજ્ઞસત્તોવઢાએ ઘણરાગદોસમોહાણુગએ એણંતઅપ્પસત્થજ્ઞવસાયત્તમેવ, જમ્હા એવં તમ્હા ડ ગોયમા ! એતેસિં સમારંભાસેવણપરિભોગાદિસુ વઢમાણે પાણી પઢમમહવ્વયમેવ ણ ધારેજ્ઞા, તયભાવે અવસેસમહવ્વયસંજમાણુઢાણસ્સ અભાવમેવ, જમ્હા એવં તમ્હા સવ્વહા વિરાહિએ સામણે, જઓ એવં તઓ ણં પવિત્તિયસમ્મગ્ગપણાસિત્તેણેવ ગોયમા ! તં કિંપિ કમ્મં નિબંધિજ્ઞા જેણં તુ નરયતિરિયકુમાણુસેસુ અણંતખુત્તો પુણો ૨ ધમ્મોત્તિ અક્ખરાઈં સિમિણેડવિ ણં અલભમાણે પરિભમેજ્ઞા, એણં અઢેણં આઠતેઠમેહુણે અબોહિદાયગે ગોયમા ! સમક્ષાયત્તિ, સે ભયવં ! કિં છઢ્ઢમદસમદુવાલસદ્ધમાસમાસજાવણંછમ્માસખવણાઈં અચ્ચંતઘોરવીરૂગ્ગકઢ્ઢસુદુક્રે સંજમજયણાવિયલે સુમહંતેડવિ ડ કાયકેસે કએ ણિરત્થગે હવેજ્ઞા ?, ગોયમા ! ણં ણિરત્થગે હવેજ્ઞા, સે ભયવં ! કેણં અઢેણં ?, ગોયમા ! જઓ ણં ધરૂદ્ધમહિસગોણાડઓડવિ સંજમજયણાવિયલે અકામનિજ્જરાએ સોહમ્મકપ્પાદિસુ વયંતિ, તઓડવિ ભોગખણં ચુએ સમાણે તિરિયાદિસુ સંસારમણુસરેજ્ઞા, તહા ય ઢુગ્ગંધામિજ્ઞાવિલીણખારપિત્તોજ્ઞસિંભપઢિહત્થે વસાજલુસપૂયદુઢિડણિવિલિવિલે રૂહિરચિક્ખલ્લે ઢુદ્ધંસણિજ્ઞબીભચ્છતિમિસંઘયારએ ગંતુવ્વિયણિજ્ઞગભ્ભપવેસજમ્મજરામરણાઈંઅરેગસારીરમણોસમુત્થસુઘોરદારૂણદુક્ખાણમેવ ભાયણં ભવતિ, ણ ડ ણ સંજમજયણાએ વિણા જમ્મજરામરણાઈંએહિં ઘોરપયંડમહારૂદ્ધારૂણદુક્ખાણં ણિઢવણમેગંતિયમચ્ચંતિયં ભવેજ્ઞા, એતેણં સંજમજયણાવિયલે સુમહંતેડવી કાયકેસે પકએ ગોયમા ! નિરત્થગે ભવેજ્ઞા, સે ભયવં ! કિં સંજમજયણં સમુ (મણુ) પ્પેહમાણે સમણુપાલેમાણે સમણઢેમાણે અઢેરેણં જમ્મજરામરણાદીણં વિમુચ્ચેજ્ઞા ?, ગોયમા ! અત્થેગે જે ણં ણ અઢેરેણં વિમુચ્ચેજ્ઞા અત્થેગે જે ણં અઢેરેણં વિમુચ્ચેજ્ઞા, સે ભયવં ! કેણં અઢેણં એવં વુચ્ચઈ-જહા ણં અત્થેગે જે ણં અઢેરેણં વિમુચ્ચેજ્ઞા અત્થેગે જે ણં અઢેરેણં વિમુચ્ચેજ્ઞા ?, ગોયમા ! અત્થેગે જે ણં કિંચિ ડ ઈસિમણગં અત્થાણગં અણવલક્ખેમાણે સરાગસસલ્લે સંજમજયણં સમણઢે જે ણં એવંવિહે સે ણં ચિરેણં જમ્મજરામરણાઈંઅણેગસંસારિયદુક્ખાણં વિમુચ્ચેજ્ઞા, અત્થેગે જે ણં ણિમ્મૂલુદ્ધિયસવ્વસલ્લે નિરારંભપરિગ્ગંહે નિમ્મમે નિરહંકાર વવગયરાગદોસમોહમિચ્છત્તકસાયમલકલંકે સવ્વભાવભાવંતરેહિં ણં સુવિસુદ્ધાસએ અદીણમાણસે એણંતેણં નિજ્જરાપેહી પરમસદ્ધાસંવેગવેરગ્ગએ વિમુક્કાસેસભયગારવવિચિત્તાણેગપમાયાલંબણે જાવ ણં નિજ્ઞિયઘોરપરીસહોવસગ્ગે વવગયરોદ્ધજ્ઞાણે અસેસકમ્મક્ખંયઢાએ જહુત્તસંજમજયણં સમણુપેહિજ્ઞા અણુપાલેજ્ઞા સમણુપાલેજ્ઞા જાવ ણં સમણુઢેજ્ઞા જે ણં એવંવિહે સે ણં અઢેરેણં જમ્મજરામરણાઈંઅણેગસંસારિયસુદુવ્વિમોક્ખદુક્ખજાલસ્સ ણં વિમુચ્ચેજ્ઞા, એતેણં અઢેણં એવં વુચ્ચઈ-જહા ણં ગોયમા ! અત્થેગે જે ણં ણો અઢેરેણં વિમુચ્ચેજ્ઞા અત્થેગે જે ય ણં અઢેરેણેવ વિમુચ્ચેજ્ઞા, સે ભયવં ! જમ્મજરામરણાઈંઅણેગસંસારિયદુક્ખજાલવિમુક્કે સમાણે જંતૂ કહિં પરિવસેજ્ઞા ?, ગોયમા ! જત્થ ણં ન જરા ન મચ્ચૂ ન વાહિઓ ણો અયસડ્ઢભક્ષાણસંતાવુવ્વેગકલિકલહદારિદ્ધદાહપરિકેસં ણ ઇઢ્ઢવિઓગો, કિં બહુણા ?, એણંતેણં અક્ખયધુવસાસયનિરૂવમઅણંતસોક્ખં મોક્ખં પરિવસેજ્ઞત્તિ બેમિ ॥૭॥ મહાનિસીહસ્સ બિડયા ચૂલિયા ॥અં ૮ ક્કક્ક ॥ સમત્તં મહાનિસીહસુયક્ખંથં ॥ ક્કક્ક ॐ નમો ચડપીસાએ તિત્થંકરાણં ॐ નમો તિત્થસ્સ ॐ નમો સુયદેવયાએ ભગવતીએ ॐ નમો સુયકેવલીણં ॐ નમો સવ્વસાહૂણં ॐ નમો સવ્વસિદ્ધાણં નમો ભગવઓ અરહઓ સિજ્ઞડ મે ભગવઈં મહઙ મહાવિજ્ઞા વ્ઙરૂએ મહ્અવ્ઙરૂએ સ્સેણવ્ઙરૂએ વઢ્ઢઅમ્અઅણવ્ઙરૂએ વઙમ્અઅણવ્ઙરૂએ જયએ વ્ઙજયએ જયઅન્તએ અપરઅઅજ્ઙએ સ્વઅઅહઅઅ, ડપચારો ચડત્થભત્તેણં સાહિજ્ઙએ એસા વિજ્ઞા, સવ્વગડ ણ્ઙત્થઅઅરગ્અપ્પારગ્અડ હોઙ, ડવઢ્ઢઅઅવણ્અઅઅ ગણસ્સ વા અણ્અન્ણાએ એસા સત્ત વારા પરિજવેયવ્વા, ણિત્થારગપારગો હોઙ, જિણકપ્પસમ (સંપ) તીએ વિજ્ઞાએ અભિમંતિઠુણ (એ) વિઘવિણાયગા આરાહંતિ, સૂરે સંગામે પવિસંતો અપરાજિઓ હોઙ, જિણકપ્પસમતીએ વિજ્ઞા અભિમંતિઠુણં ડેમવહણી ભવઙ ॥૮॥ ‘ચત્તારિ સહસ્સાસં પંચ સયાઓ તહેવ ચત્તારિ । એવં ચ સિલોગાવિય મહાનિસીહંમિ પાવએ ॥૩૦॥

સોજન્ય :- પ.પૂ. વિદુષી સાધવી શ્રી ચાણલતાશ્રીજીના પ્રેરણાથી મુલુન્ડ (પશ્ચિમ) અચલગચ્છ ના ભાઈ બહેનો તરફથી)